सरस्वती-साहित्य-सदन का २ सरा पुष्प

माधव-माधुरी

रचयिता—

स्वर्गीय पं० रामसेवक चौबे

प्रकाशक—

सरस्वतीप्रसाद सिंह रघुवंशी

सरस्वती-साहित्य-सदन,

भोजूबीर, बनारस कैंट।



[प्रथमावृत्ति १०००]

मुद्रक—मारकण्डेय सिंह,
भारत प्रिंटिंग वर्क्स, भोजूबीर, बनारस कैंट ।

समर्पण

सुप्रसिद्ध विद्याप्रेमी, उदारमना, सहृदय, सज्जन

श्रीमान् राजा वीरेन्द्रविक्रम सिंह जू देव

एम० एल० सी०, पयागपुराधीश

के

कर कमलों में

यह ग्रन्थ

माधव-माधुरी

सादर समर्पित है।

विनीत—

सरस्वतीप्रसाद सिंह रघुवंशी

॥ ओ३म् ॥

प्राक्कथन

मानव हृदय भावों की निवास-भूमि है। जिस प्रकार सिनेमा के चित्र-पटपर नाना प्रकार के चित्र आते और विलीन होते रहते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में भी रंग-बिरंगे भाव आविर्भूत और तिरोभूत होते रहते हैं। इन भावों की गणना असंख्य है, परन्तु फिर भी हम इन्हें स्थूलतः दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। वे हैं—प्रेम और घृणा। विश्व के जितने जीव अथवा पदार्थ हैं, उनमें से प्रत्येक के प्रति मनुष्य के येही—प्रेम और घृणा—दो प्रकार के भाव हो सकते हैं। जिसकी ओर उसका प्रेम होगा, उसे वह अपनाने की चेष्टा करेगा और जिससे वह घृणा करेगा, उससे वह दूर रहने का प्रयत्न करेगा। दूसरे शब्दों में, पहले की ओर उसकी प्रवृत्ति होगी और दूसरे की ओर निवृत्ति। मनुष्य के इन्हीं प्रवृत्ति और निवृत्ति-मूलक भावों का सृष्टि के साथ सम्बन्ध जोड कर उनकी जो कल्पनामय आदर्श-प्रधान व्यञ्जना की जाती है, वही कविता है। कविता जगत् की वस्तु होते हुए भी काल्पनिक है। यथार्थवाद के रथ पर चढी हुई भी यह सदैव आदर्श-वाद के गगन में विचरण करती है। आत्म विस्मृति की रज्जु के सहारे टिके हुए भाव-दोल पर लेटी कविता कल्पना के मधुर झोंको से मन्द मन्द झूलती है। कभी-कभी तो यह आँखें खोल अपने चतुर्दिक् फैले विभु का विलास देख लेती है, परन्तु प्राय यह आँखें बन्द किए अतीन्द्रिय

जगत् का स्वप्न ही देखा करती है। कविता अपनी इसी मस्ती में आदर्श विधान करती है। सचमुच आदर्श निरूपण ही कविता का प्रमुख ध्येय है।

हिन्दी की कविता प्राय इसी आदर्श-वाद को लेकर चलती है। ससार के कुटिल वात्याचक्र में सूखे तृण की तरह उडने की इसकी इच्छा नहीं। यह जीवन के कठोर एव नग्न सत्य से मुँह मोड लेती है और अपने लिए एक नया लोक बनाती है। हिन्दी-कविता 'ऐसा है' के पचडे मे कभी नहीं पडती, प्रत्युत 'ऐसा हो' का ही राग अलापा करती है। यह इसी दृष्टि-कोण का फल है कि हिन्दी-साहित्य मे हम सत्य, सुन्दर और कल्याण का उच्चतम आदर्श पाते हैं। इन तीनों में भी 'सुन्दर' का तो जैसा भव्य और अलौकिक निरूपण हिन्दी-साहित्य मे हुआ है, वैसा सस्कृत को छोड शायद ही किसी अन्य साहित्य मे हुआ हो। इस आदर्श-सौन्दर्य के प्रतीक हैं कृष्ण और इसका निरूपण है कृष्ण काव्य। कृष्ण की सुन्दरता अनुपम और भुवन-व्यापिनी है, जिस पर मानव हृदय ही मुग्ध नहीं होता, अपितु पशु पक्षी लताद्रुमादि तथा सर-सरितायें, सभी लोटपोट होती पाई गई हैं।

ऐसे कृष्ण के सौन्दर्य-वर्णन की सौम्य परिपाटी ललित 'गीत गोविन्द' के रचयिता की कोमल-कान्त पदावलियों से चली और मैथिल-कोकिल से होते हुए सूर-प्रभृति वल्लभी कवियो द्वारा पुष्ट हो अपने चरम विकास को पहुँची। सूर प्रमुख अष्ट-छाप के कवियों ने कृष्ण के सौन्दर्य का तथा उनके स्वरूप और प्रभाव का बड़ा ही मर्मिक, विस्तृत और मादक वर्णन किया है। लेकिन इतना ध्यान रहे कि इन परम भागवत कवियों की सौन्दर्य-उपासना में कुत्सित लिप्सा और पैशाचिक कुवृत्ति की प्रचार प्रेरणा

नहीं। यदि है तो पूजा की सरस वृत्ति है और भक्ति की भव्य भावना। हिन्दी के समस्त कृष्ण-काव्य को पढ़ जाइये, आप को शृंगार का अविरल रस-स्रोत सर्वत्र बड़े वेग से कलकल करता और बहता हुआ मिलेगा। परन्तु यदि तनिक भी आप ध्यान से देखेंगे और थोड़ा-बहुत भी सूक्ष्म दृष्टि से काम लेंगे, तो आप को इस सतह पर की कल्लोलमयी धारा के नीचे भक्ति की एक गंभीर अन्तर्धारा मिलेगी, जिसमें शीतलता है और अपार शान्ति है। शृंगार और भक्ति की यही गंगा-जमुनी कृष्ण-काव्य का सर्वस्व और सुरसिक भक्तों का प्राण है। यह ताप-तप्त संसृति के लिए शीतल छाया और सुखद विश्राम है। इसके सम्पर्क में आने से व्यथित जीव अपना दुख-द्वन्द्व भूल-सा जाता है—वह काव्यानन्द के साथ-साथ ब्रह्मानन्द का अनुभव-सा करने लगता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'माधव-माधुरी' इसी कोटि का ग्रन्थ है। इसमें भी कृष्ण-काव्य की उसी पुरानी परिपाटी का अवलम्बन किया गया है। परम्परानुसार इसमें भी कृष्ण जीवन का वही अंश विशेष रूप से चित्रित किया गया है, जो प्रधानतः सौन्दर्य्य-बुद्धि को ही तृप्त करता है। इसके कृष्ण योगेश्वर कृष्ण नहीं, महाभारत का घोर युद्ध कराने वाले कूटनीतिज्ञ कृष्ण नहीं। इसके कृष्ण तो सूरसागर के कृष्ण की भाँति पहले सुन्दरता की खानि हैं, तो पीछे और कुछ हैं। यह लीला-धाम हैं, 'ठुमुक-ठुमुक पैंजनियाँ' बजाने वाले मनमोहन हैं, और ब्रज के घर-घर घूम गोरस की तलाश करने वाले माखनचोर हैं। यह नटवर वेष धारण कर बन-बन धेनु चराने वाले हैं और 'वृन्दावन की कुञ्ज-गलिन' में 'वंशीवट तर' त्रिभंगी मूर्त्ति बनाए वंशी बजाने वाले और रास-लीला करने वाले हैं। वस्तुत

'माधव माधुरी' एक मधुशाला है, जिसमें माधव के मञ्जुल रूप और लीला की मधुर पेया के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। इसका प्रत्येक पद मानो मधु-पात्र है, जिसमे यह हाला लबालब भरी है।

इसके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध में कृष्ण की बाल-लीला, रूप, मुरली और रास तथा गोपी विरह का माधुर्य पूर्ण वर्णन हुआ है। उत्तरार्द्ध मे हम कृष्ण के जीवन का वह अंश पाते हैं, जिसे उन्होंने मथुरा और द्वारका मे बिताया। उत्तरार्द्ध बहुत थोड़े में है। इसे देखने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो कवि ने कृष्ण के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करने के मन्तव्य से यह एक परिशिष्ट जोड़ दिया है। 'माधव-माधुरी' मुक्तक काव्य है। भावों की लपेट मे लिखे गये पद पाठक के हृदय तक सीधे पहुँच जाते हैं। इनमे भाव-प्रवणता है और पूरी स्वाभाविकता है। पाण्डित्य प्रदर्शन का तो कहीं गन्ध भी नहीं। प्रत्येक प्रकार के भाव अपने निसर्ग सिद्ध रूप मे यथावसर प्रसंग-वश इस तरह आते गये हैं, मानो कवि ने उनके लिए बिल्कुल प्रयास ही न किया हो, शुद्ध हृदय का ऐसा ही मनोरम उद्गार, विमल वाणी का ऐसाही निर्मल सदेश जीवन को प्रभावित करता है। भक्त हृदय की ऐसी ही पुनीत भाव-दशा समाज का स्रोत बदलने में समर्थ होती है। शृंगार के स्थायी भाव के अतिरिक्त विविध सचारी भावों का भी उन्मेष यत्र-तत्र बड़ा ही सुन्दर हुआ है, जो कवि की सहृदयता और सूक्ष्म-दर्शिता का परिचय देता है। पुस्तक में सर्वत्र भावुकता की गहरी छाप है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कवि भाव भक्ति की तरंग म आत्म-विस्मृत हो गया है और इसी लोकोत्तर दशा में उसके दिल में जो कुछ उठा है, उसे वह कहता गया है।

रीति, छन्द, अलकार आदि काव्य-लक्षणों पर उसने तनिक भी ध्यान नहीं दिया है। वस्तुत माधव माधुरी के सभी भाव स्वत-प्रसूत हैं।

'माधुरी' गीति-काव्य है। इसमे राग रागनियों का सफल प्रयोग हुआ है। सभी पद गेय हैं, जो वाद्य-यन्त्रो के सहयोग मे गाए जा सकते हैं। यह प्राय सभी जानते होंगे कि सगीत और काव्य का चोली-दामन का साथ है। साथ ही नहीं, इनमे एक दूसरे की पुष्टि भी होती है। इन दोनों का मनोरम सहयोग कला के उत्कर्ष-साधन के लिए अपेक्षणीय है। मधुर कण्ठ-लहरी से निस्सृत माधुरी-सिक्त पद ऐसे सुखद होते हैं, मानो वे रग-भरी पिचकारी से निकले हुए शीतल और सुगन्धित फुहारे हों। ऐसे ही भावुक पद सगीत के बल पर रसिकों के हृदय मे दूनी दृढता से घर कर लेते हैं। यदि सभी नहीं, तो 'माधुरी' के अधिकाश पद ऐसे ही हैं।

'माधुरी' शृगार-प्रधान है। इसमें शृगार रस के सयोग और वियोग दोनों पक्षों का विशद और मार्मिक वर्णन हुआ है। इसका राम लीला-प्रकरण बडा ही मादक और मनोरजक है। इसमें जीवन का कल नाद स्पष्ट सुनाई पडता है। गोपियाँ कृष्ण के प्रेम मे मतवाली हैं। वे घर की सुध-बुध भूल सी गई हैं। पति पुत्र उनके प्रेम मार्ग के बाधक नहीं, लोक लज्जा और कुल की कानि उनके मार्ग मे अडचन नहीं डाल सकतीं, वे दीवानी हैं। कृष्ण भी सुन्दरता की मूर्ति हैं। गोपियों को रिझाने में वे कोई कोर-कसर नहीं रखते। उनकी मोहिनी वशिका मे जादू है, जिसके एक-एक स्वर पर विश्व लोट-पोट हो जाता है। प्रेमोन्मत्त गोपिया मनमोहन पर निसार हैं और 'बाँसुरी वाले श्याम' भी प्रमदा गोपियों के यौवन सर में निमग्न-से हो रहे हैं।

इतना ही नहीं, सारी प्रकृति भी साथ-साथ उन्मादिनी हो गई है। देखिए, कवि ने ध्वन्यात्मक शब्दों के सहारे मतवाली प्रकृति का कैसा मादक चित्र खींचा है —

रिमझिम रिमझिम देव बरसत री।
हरि बिनु निसि जीव तरसत री॥
उमड़ि घुमड़ि चहुँ चलत बदरवा गन गन गन घन गरजत री॥
सननन सननन चलत पवनवा तन तन तन तन तरजत री॥
इन्द्र-धनुष सर-बूँद अधिक चलु भमभम झमझम झमकत री॥
चपला इत उत चहुँ निशि धावति चमचम चमचम चमकत री॥
अँग अँग गध सुगध पुष्प बहु गमगम गमगम गमकत री॥
आइ गई निसि केलि कीन्ह हरि गोपिन के भय बरजत री॥
सुख प्रद रामसेवक चहुँ युग हरि अँग अँग कर सिर परसत री॥

अहा! इसके वर्णों में कैसी आनुप्रासिकता है, इसके शब्दों मे कैसी सरस सुस्वरता है, इसके चरणों में कितनी अवाध गति है और इस पूरे पद मे कितनी तन्मयता, विह्वलता और उल्लास भरा हुआ है।

यह बात ठीक है कि प्रस्तुत काव्य मे शृगार रस का प्राधान्य है, परन्तु साथ ही यह भी ठीक है यह शृगार वर्णन अश्लील और विकारोत्पादक नहीं। यह शुद्ध है और धार्मिक भावों से ओत-प्रोत है। कृष्ण-काव्य के अन्य ग्रन्थो की भाँति 'माधुरी' की भी यही विशेषता है कि इसमें भक्ति और शृगार का सुखावह सम्मिश्रण है। इसमे जहा कहीं भी शृगार का वर्णन हुआ है, वहा अवश्य भक्ति का गहरा पुट दिया गया है। बड़ी तत्परता से सर्वत्र इसका ध्यान रखा गया है कि कहीं भी मानसिक शैथिल्य न आने पावे, प्रत्युत भगवद्भक्ति की दृढता का उत्तरोत्तर

विकास हो। गोपी और कृष्ण का वर्णित सयोग इन्द्रिय-लोलुप विलासियो का घृणित मिलन नहीं, इसमे नैतिक पतन की ओर सकेत मात्र भी नहीं। यह तो आत्मा और परमात्मा के आध्यात्मिक किन्तु मधुर मिलन की ओर सूक्ष्म निर्देश करता है। जो हो, इतना तो अवश्य है कि कृष्ण और गोपियो की यह केलि-लीला हमारे अध्ययन और परिशीलन की वस्तु है।

शृगार रस के अतिरिक्त भक्ति-रस का भी—जैसा ऊपर कहा जा चुका है—इस ग्रन्थ मे बडा ही सुन्दर प्रस्फुटन हुआ है। स्वर्गीय कवि भक्त हृदय है, उसमे भक्तों की-सी दीनता है और वह सदैव अपने का नगण्य और दोषी समझता है। परन्तु उसे अपने प्रभु—श्री कृष्ण पर अपार भरोसा है। उसे स्वामी क दया दाक्षिण्य पर, उनकी चारु चरितावली और सौम्य विरुदावली पर पूरा विश्वास है। उसे इस बात का दृढ निश्चय है कि भगवान् कृष्ण भाव के भूखे हैं और वे मेरी विनय पर अवश्य ध्यान देंगे। इसी लिये कवि की विनयावलियों में अनूठे भावों का कोष छिपा हुआ है, जिसमें दैन्य है, निश्छलता (sincerity) है, प्रीति और प्रतीति है, तथा अविचल अनन्यता है। 'माधुरी' के 'कल्याण' राग वाले प्राय अधिकाश पद विनय के हैं, जिसमे सस्कृत के स्तोत्रों अथवा गोस्वामी तुलसीदासजी की 'विनय-पत्रिका' के स्तोत्रों का-सा स्वाद मिलता है।

अपने दोषों और त्रुटियों के बारे मे कवि, देखिए, कितनी सचाई से कहता है —

> तोहिं कवनि जतन सो रिझाओं रे हरी ॥
> कबहीं न जस देव, गावो रे सरी ॥

दान नहिं ज्ञान-भक्ति नहिं कोइ पुण्य शक्ति
जोग नहिं जग्य व्रत तप न चरी ॥
पूजा नहिं देवी-देवा नहिं द्विज सन्त-सेवा
धर्म-गति-हीन तीर्थ एको न करी ॥
नहिं सतसग करु हरि जस सुनि धरु
सतगुरु वाक्य वर उर न धरी ॥

परन्तु फिर भी उसे प्रभु की भक्त-वत्सलता पर पूरा विश्वास है —

'राम सेवक दास बोलि कीन्ह पावन'
अथवा—' धारि मनुज रूप रामसेवक पालन'

इस प्रकार पुस्तक मे सर्वत्र कवि का 'आत्म-निवेदन' का भाव और उसका विश्वास स्पष्ट दीख पडते हैं।

हाँ, एक बात और। कुछ लोग काव्य की बाहरी रूप-रेखा का विशेष ध्यान रखते हैं। भाषा की सफाई, अलकारों की विलक्षण योजना तथा छन्दो का सूक्ष्म निर्वाह आदि बातो पर ही किसी कृति की सफलता और असफलता की नाप-जोख करते हैं। वे कलाबाजी पर अधिक ध्यान देते हैं, कलात्मकता पर नहीं। भाव चाहे साधारण ही क्या न हो, लेकिन अगर बाहरी तडक-भडक है, तो वे उस रचना की दिल खोल कर प्रशसा करेंगे। यदि इस दृष्टि बिन्दु से, 'माधव माधुरी' का अवलोकन किया जाय, तो यह अवश्य सदोष मिलेगी, क्योंकि इसमें न तो भाषा की स्वच्छता है और न कला का आडम्बर-पूर्ण निदर्शन ही। इसकी भाषा मुख्यत ब्रज भाषा है, पर पूरी असयत और ऊबड-खाबड। इसमें शब्दों का अनिश्चित प्रयोग हुआ है। व्याकरण की अशुद्धियाँ भी मिलती हैं। छन्दोभग दोष भी सरलता से मिल

जायँगे। इसमें कल्पना की भी ऊँची उड़ान नहीं और न तो अनोखी लाक्षणिक मूर्त्तिमत्ता ही है। परन्तु केवल इन्हीं कारणों से यह पुस्तक नगण्य नहीं कही जा सकती। जैसा ऊपर कहा जा चुका है काव्य का प्राण तो भाव है। भावों से ही काव्य की परख होनी चाहिए और कविता में भाव के आगे कला को सदैव गौण स्थान देना चाहिए। यदि भाव के सामने कला का स्थान अप्रधान है, तो फिर कलाबाजी का तो कोई कहना ही नहीं, सच पूछिए तो काव्य के मूल्य निर्धारण में इसका तो कोई स्थान ही नहीं होना चाहिए। खैर, यदि इस कसौटी पर कस कर इस पुस्तक की परीक्षा की जाय, तो यह अपना विशेष स्थान रखती है। बाहरी सजधज के न होने पर भी इसका अपना निराला आकर्षण है। भाषा की रूक्षता होते हुए भी इसमें आन्तरिक स्निग्धता है। छन्दोभंग दोष रहते हुए भी इसके पदों में अविरल गति है। चामत्कारिक अलंकारों का अभाव होते हुए भी इसमें आह्लाद-कारिणी शक्ति है। इसमें विगताडम्बर का सौन्दर्य, सारल्य की मधुरिमा और सद्भाव की पवित्रता है।' यह 'माधुरी' पीयूष-माधुरी है, जिसमें अपूर्व सजीवनी शक्ति भरी पड़ी है।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि 'माधव-माधुरी' शृंगार-प्रधान भक्ति-काव्य है, जिसमें मधुर-मूर्त्ति माधव की माधुर्य-पूर्ण माधुरी का सरस वर्णन हुआ है। सुरसिक पाठक गण इसमें अपनी वृत्ति को रमावें, देखें इसमें उन्हें कितना सुख, कितना स्वाद और कितना सन्तोष मिलता है! हाँ, एक बात आवश्यक है—उन्हें मधुप-वृत्ति रखनी होगी। यदि ऐसा किया जायगा तो पाठक भ्रमरों के हृदय-कोष में वह मधु तैयार होगी, जो भव रुज के लिये अमोघ औषधि सिद्ध होगी,

रामायण का काम करेगी। बस, इससे अधिक मैं इसके विषय में नहीं कहना चाहता।

अन्त में, मैं इसके स्वर्गीय रचयिता के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थी हूँ कि वह इस भक्त हृदय को स्वर्ग में शाश्वत शान्ति प्रदान करें। यह ग्रन्थ-रत्न धर्म प्राण हिन्दू जनता का कण्ठ-हार और भावुक सज्जनों की प्यारी सम्पत्ति होगी— यह मेरा पूरा विश्वास है।

उदयप्रताप कालेज,
काशी।
नागपञ्चमी, सं० १९९२ वि०। } मार्कण्डेय सिंह एम ए



दो शब्द



परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से 'सदन' का दूसरा पुष्प पाठकों के समक्ष उपस्थित करने में मुझे हार्दिक उल्लास है। 'माधव-माधुरी' के रचयिता स्वर्गीय प० रामसेवक चौबे तालुका डोभी, जिला जौनपुर के सुप्रसिद्ध ग्राम हरिहर पुर के निवासी थे। आप का जन्म सम्वत् १८३७ के लगभग हुआ था। बाल-ब्रह्मचारी थे। पक्के शैव होते हुए भी विष्णु के भक्त थे, जैसी कि प्राचीन काल के भक्तजनों में कम प्रवृत्ति पाई जाती है। आप की शिक्षा-दीक्षा ग्राम में हुई थी, सम्भवत कुछ समय तक काशी में भी संस्कृत का अध्ययन आप ने किया था। स्वर्गीय चौबे जी को लोग महाराज जी के नाम से स्मरण करते हैं और इनके सम्बन्ध में अलौकिक कथायें भी प्रसिद्ध हैं। इन्होंने पैदल ही चारो धाम की यात्रा की थी। खूब हृष्ट-पुष्ट थे। उनके साथ चलने वालों दुलकी दौड़ना पड़ता था। महाराज जी ने ब्रज-भाषा में कई काव्य-ग्रन्थ रचे थे और मेरे घर पर असावधानी से रखे रहने के कारण दीमक तथा झींगुर द्वारा उनका सर्वनाश कर दिया गया। आज भी 'भक्त माल' के १८"×१२" के लम्बे-चौडे आकार के पृष्ठों की धुँधली स्मृति हृदय में हूक उत्पन्न किये देती है। आप के लिखे दो एक काव्य-ग्रन्थ मेरे पास अब भी हैं। मेरे स्वर्गीय पितामह श्रीयुत ठाकुर देवकी नन्दन सिंह जी, महाराज जी के अनन्य भक्तों में से थे। महाराज जी की भी उनपर कृपा रहती थी और वह हमेशा मेरे पूज्य

पितामह जी के यहाँ ही रहते थे। पूज्य चौबे जी द्वारा स्थापित शिव जी की मूर्ति अब भी मेरे यहाँ स्थान को पवित्र कर रही है। आप का ध्यान बाग और कुओं की ओर बहुत था। अपने जन्म स्थान हरिहर पुर में बड़ा सुन्दर राम-बाग और सीता-कूप निर्माण कराया था, किन्तु आये दिन वे अच्छी हालत में नहीं है। बनारस आजमगढ़ वाली सड़क पर डोभी स्टेशन से कुछ ही दूर आगे श्रमित पथिकों की तृषा बुझाने वाला पक्का कुआँ महाराज जी की ही धवल कीर्ति है। यह कुआँ खुदवाया ही जा रहा था कि आप अस्वस्थ हुये और जब हालत बहुत खराब मालूम हुई तो पुण्यधाम काशी में लाये गये, किन्तु उन्होंने प्रथम ही कह दिया था कि जब तक कुए में पानी निकलने का समाचार न मिलेगा, मेरी मृत्यु न होगी। अस्तु, हुआ भी ऐसा ही। आप का स्वर्गवास सम्वत् १९३५ में हुआ। जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ, स्वर्गीय महाराज जी ने आमरण ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णत पालन किया, उनके भाइयो की सतान में श्रीयुत प० शिवनायक चौबे और प० जगन्नाथ चौबे की पर्याप्त प्रतिष्ठा है।

'माधव-माधुरी' के प्रकाशन मे सुहृद्वर श्रीमान् ठाकुर ताल्लुकेदार सिंह साहब, पयागपुर ने जो अमूल्य सहायता दी है उसके लिये मैं आप का विशेष आभारी हूँ। आप की ही कृपा का फल है कि पुस्तक इस रूप में प्रकाशित हो सकी है। उदय प्रताप कालेज काशी के सुयोग्य हिन्दी प्रोफेसर श्रीयुत ठाकुर मार्कण्डेय सिंह एम० ए० को सुन्दर एव विद्वत्ता पूर्ण भूमिका लिखने के लिये मैं धन्यवाद देता हूँ।

प्रकाशक

माधव-माधुरी

अर्थात्

श्रीकृष्ण भक्तावली



दोहा

श्री गणपति पद कमल रज वदत दोउ कर जोरि ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य देहु करहु विशद बुद्धि मोरि ॥ १ ॥
श्री गुरु कमल पुनीत रज सुमिरि सुमिरि मनलाय ।
दिव्य चक्षु उर विशद लहि कहब चरित यदुराय ॥ २ ॥
शम्भु शिवा पग बंदि शुभ भक्ति पाय गुरु ज्ञान ।
कृष्ण चरित कछु कहब अब लहु जेहि कलि कल्यान ॥ ३ ॥
मह जुत योगिनि पद कमल वदत मन चित लाय ।
लोकपाल दिगपाल पद वदत बहु शिर नाय ॥ ४ ॥
विघ्न कोइ नहिं निकट रहु भक्ति ज्ञान थिर होय ।
सेस सारदा कहत बुध मति निमल होय मोय ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश पद नमत बारहिं बार ।
उद्भव थिति लय करत प्रभु त्रयगुण के अनुसार ॥ ६ ॥
अवस्था त्रयगुण सकल पचकोश नहि होय ।
जीवेश्वर तजि देह त्रय देव तीनि नहि कोय ॥ ७ ॥
तुरिया शुद्ध सरूप प्रभु करत जगत व्यवहार ।
ब्रह्मा विष्णु महेश मिलि करहु मोहि भवपार ॥ ८ ॥

ब्रह्माणी पद कमल रज रमा उमा पद धूरि।
वदत वारहिं वार शुचि करु मम अघ दुख, दूरि॥९॥
पुरा सुसन्त समाज जुत देव पितर समुदाय।
गंगादि सलिल तिरथ मन करु मम सदा सहाय॥१०॥
भैरव अष्ट अधार जग करता भरता लोक।
गदा दंड कर धारि प्रभु हरु मम अघ उर शोक॥११॥
शक्ति न जुत पदकमल रज वदत सुर मुनि भारि।
ज्ञान भक्ति वैराग्य सुख देहु सर्व अघ टारि॥१२॥
नव जोगी परधान शुक नारद मुनि सनकादि।
तत्व विचार मो निपुन अति लखत जगत सब वादि॥१३॥
तत्व विचारि न पदकमल वदत द्वौ कर जोरि।
तत्व ज्ञान मोहि देहु प्रभु बाल बुद्धि लखि मोरि॥१४॥
पंच देव को भक्त जोइ भूत भव्य व्रतमान।
माँगतैसु कर जोरि कर ताहि दानी परधान॥१५॥
विषय विराजित ते वहत हाथ जोरि शिर नाय।
विषय मुक्त करि भक्ति धरि देहु ज्ञान हरषाय॥१६॥
कविता जोइ जुग चारि वर ग्रंथ कीन्ह बहु सोय।
तेहिते माँगत छंद गति भूत भव्य होय कोय॥१७॥
श्रुति पुराण कविता परम सेस महेश दिनेश।
विधि बानी हनुमान कवि भृगु गुरु चन्द्र गणेश॥१८॥
वालमीक मृकंडु-सुत व्यास कीन्ह बहु ग्रंथ।
सतजुग त्रेता द्वापरहिं कवि जन हित कर पंथ॥१९॥
कलि महँ कविता अमित वर ग्रंथ विविधि विधि कीन्ह।
सुगम पंथ नर नारि हित अगम सुलभ सुख दीन्ह॥२०॥
वन्द पद जदेव कवि रसिक कृष्ण पद लीन।
चमत्कार कविगन महँ रस तहि तन पीन॥२१॥

तुलसी सूर कबीर कवि नानिक पद धरु माथ।
कृपा करहु गुण भक्ति निरि मम शिर अब धरु हाथ ॥२२॥
सकल कविन सब भक्त पद ज्ञानिन पद शिर नाय।
ग्रंथ लिखूं भक्तावली करत कृपा मोहं पाय ॥२३॥
ग्राम सुस्वर मूर्छल सहित राग ज्ञान जेहि होय।
करहु कृपा कवि मन सकल देव भक्त सब कोय ॥२४॥
ग्रंथ कृष्ण भक्तावली नाम धरत हरराय।
नाम लेत जेहि ग्रंथ वर कृपा करहि यदुराय ॥२५॥
हन्दु संत दोन दयाल अति दीन बंधु सियराम।
ज्ञान भक्ति वैराग्य देइ पूर्ण करहि मन काम ॥२६॥
सन वश द्विज वश पद वन्दत बारहि बार।
ग्रंथ शोधि देइ भक्ति वर करु मोहि भव निधि पार ॥२७॥
सारद जिह्वा कठ सुचि असत कहत बुध वेद।
मन भावे तस ग्रंथ करु करि न लोहर्त कोइ खेद ॥२८॥
कलि महँ नाम प्रधान हरि गावत वेद पुरान।
राम सेवक उर धरु हरि नाम करिहि कल्यान ॥२९॥

राग बेलावल

श्री सत गुरु अब होहु सहाई। कलि कल्मष जेहि थापु नसाई ॥टेक॥
कृपा पाय गुरु मन ठहराई। राम कृष्ण कछु जस कहु गाई ॥
हरि अखण्ड नहिं खंड जनाई। लोक चराचर महँ समाई ॥
रूप परम गुरु देत देखाई। हरि जुत हरि जन उर रहु छाई ॥
राम सेवक सरनागत आई। कृष्ण चरित गुरु देहु बताई ॥ १ ॥

श्री गणपति पद कमल नमामी। प्रथम पूज्य जय पुर उर गामी ॥टेक॥
एक दंत लम्बोदर नामी।
वारण बदन सर्व उर जामी॥
सकल सिद्धि प्रद सब जग स्वामी।
सब जस सुर मुनि सकल बखानी॥
समगामी वृत्त दक्षिण वामी।
अनय अशेष सकुच समुचामी॥
राम सेवक लोभी अति कामी।
माँगत भक्ति जो त्रिभुवन धामी॥ २॥

बंदौ मारुत-सुत जग वन्दन।
ज्ञान भक्ति प्रद सुर अभिनंदन॥ टेक॥
दीन दयाल शत द्विज रंजन।
राम बसत उर खल दल गंजन॥
राम उमा बंदत पद सारद।
शुक सनकादिं भक्त मुनि नारद॥
दीन-बंधु जन पाल अमानी।
भक्त सकल मुनि शंभु भवानी॥
राम सेवक उर लखि बरदानी।
माँगत भक्ति सकल सुख खानी॥ ३॥
बंदत निर्गुण ब्रह्म तुलारी।
जो तिहुँ काल एक गति सारी॥ टेक॥
अलख निरंजन कहु श्रुति चारी।
परिपूरण वरणत मुनि भारी॥
शुद्ध अकाश समान सुरारी।
अज अनवद्य जानु अधिकारी॥

सगुण सोई वपु जन हित धारी।
चरित अमित करि जग विस्तारी॥
राम सेवक मोह सरन सबारी।
भव निधि ते प्रभु मोहि उतारी॥ ४॥

राग श्री

हरि अमित रूप भुवि धारी।
हारि सकल भुवि भार महा रुज कर नर नारि सुरारी॥टेक॥
मत्स्यव्रत हित रूप मीन वर ब्रह्म रात्रि भय टारी।
मंदर पृष्टि धरन हित कच्छप अमृत दीन्ह सुर भारी॥
पृथ्वी हेतु तन सूकर धरि हरि हिरण्याक्ष कहँ मारी।
नर हरि रूप कनककश्यप हित निज जनजस विस्तारी॥
बलि हित वामन रूप महा प्रभु दीन्ह इन्द्र सुखकारी।
क्षत्रिय दुष्ट बधन हित भृगु पति कर द्विज भुवि अधिकारी॥
रावणबध हित राम रूप धर वेद वचन अनुसारी।
कृष्ण कस वध हेतु धारु तन सुख लहु भज नर नारी॥
बौध सरूप वेद निंदा हित जेहिं सुख सुर मुनि भारी।
कल्कि सरूप मलिछन वध हित धरि कलिकल्मष जारी॥
दस अवतार चरित अति पावन जिमि गंगा सरिवारी।
कहत सुनत उर निर्मल करु जन अघ करि सिंह विदारी॥
कपिलादिक अवतार अपर जित चरित सकल भ्रमहारी।
सेस महेश दिनेश कहत बुध दूरि महत अघ हारी॥
अधम उधारन नाम रूप हरि चरित कहत श्रुति चारी।
अमित पतित कहँ दीन्ह कृष्ण गति राम सेवक अब पारी॥ ५॥

गो लोक शोक भ्रमहारी ।
जहँ हरि रूप अनूप सोहावन अति विस्तरपुर भारी ॥ टेक ॥
ब्रह्मादिक सुर खोजत चहुँ जुग दरशन लहु त्रिपुरारी ।
सुगम नहीं कोइ काल अगम अति कहु बुध जन श्रुति चारी ॥
एक लाख हजार अधिक वर राम अनूप सवारी ।
राम विलास हुलास करत हरि रात्रि दिवस सुखसारी ॥
चित्रित अति गो लोक महा छवि जय पुर शोभा डारी ।
सकल सुकृत फल लहत ताहि पुर कृष्ण भक्त अधिकारी ॥
निगमागम पौराण कहत सब सेसादिक कवि झारी ।
महिमा गोपुर की अति भारी पार न लहु उर धारी ॥
अति उदार गोलोक शोक हर पालत सब नरनारी ।
सरनागत जन राम सेवक प्रभु भवनिधि पार उतारी ॥ ६ ॥

गो लोक सकल सुख रासी ।
महा प्रलय भो नाश नाहि कोइ महिमा वेद प्रकासी ॥ टेक ॥
राम विलास करत प्रति जुग हरि-रात्रि दिवस बहुधा सी ।
कोटिन कामदेव रति निलमत रवि शत तेज प्रभा सी ॥
अग अग प्रति भूषन राजत बसन पीत सुखमा सी ।
श्याम गौर तन क्रीडत गोपुर शोभा परम हुलासी ॥
भूषन बसन तडित इव त्रियगन हरि तन मेघ घटा सी ।
गान सुराग अमृत सम बरसत पियत त्रास हरि दासी ॥
सकल लोक हर शोक लोक यह कृष्ण जनित दुख नासी ।
ध्यान करत कोई जल थल महँ बसि होत सोइपुरवासी ॥
ललचत मन सुनि जोग भोग वर लहु सुख प्रेम पिआसी ।
अचल अगम सुख राम सेवक लहि प्रमुदित कृष्ण उपासी ॥७॥

हरि धाम अमित बुध गाई ।
तजि भुवितल प्रभु आई ॥ टेक ॥
चीर सिंधु सतान लोक कोइ कोउ वैकुंठ बताई ।
सत्य लोक कोइ संत लोक कहु कोउ सरवत्र जनाई ॥
कोइ कहत गोलोक रास बहु कृष्ण रूप अधिकाई ।
एक रास जन हिय प्रमुदित अति ब्रज भुवि हरि प्रगटाई ॥
सोई हरि चरित सेस बुध बरनै श्रुति कहि पार न पाई ।
लोक परम हरि वास निरखि कवि गोपुर मति न समाई ॥
नर नारायण देव धारि तन ब्रज भुवि प्रगट देखाई ।
अनत शिर केश कहत कोइ कृष्ण राम दोउ भाई ॥
देवकिसन प्रभु आपु आत्म गति जन्म तीनि दरसाई ।
सोइ अन राम सेनेक उर गहि भुर कछु जस कज यदुराई ॥८॥

हरिचरित सकल सुख कारी ।
बधि खल मुनि रुज टारी ॥ टेक ॥
जन्म लीन्ह वसुदेव देवकि गृह रूप अनूप सवारी ।
नंद जसोदा भक्ति निरखि वर गोकुल तुरित सिधारी ॥
मारि पूतना प्रथम मरत लीला श्रीधर विप्र दुलारी ।
उलटि शकट शकटासुर बधि हरि अघा बकासुर मारी ॥
वत्स सुरधेनुका परलवा बध करि हरि सुख सारी ।
वत्सपाल ब्रज रूप अमित धरि विधाता भ्रमहारी ॥
कालि नाग कहँ रवण दीप करि करू यमुना शुभ वारी ।
गोवर्द्धन शिर धारि छत्र इव मद हरि हरि जल जारी ॥
नल कूबर कहँ दीन्ह विविध गति जमलार्जुन भुवि डारी ।
शरव चूड़ बध करि केशी बधि भ्रात खाय द्विज नारी ॥
अक्रूरहिं लेइ चलेउ कृष्ण कहँ सुनि गोपी मन गारी ।
विरह विकल हरि त्याग सहत नहिं हरि धिर करि पुर धारी ॥

अग्रज निज जान देइ जल रज वहि मारु पछारी।
वस्त्र पहिरि माला गल धरि सब कुबरिहिं कीन्ह सुधारी॥
धनुष भंग करि रक्षक वधि मोड़ हस्ति प हस्ति निदारी।
मुष्टिक आदि चाँणूर वीर वधि कच गहि कंस प्रचारी॥
नृपहि शरल भेजु गोकुल हरि चलेउ नयन जल ढारी।
देवकि अरु वसुदेव अनदित हरि कहु पितु महँतारी॥
खल वध करि सुरनर मुनि सुख धरि हरेउ भार सुविभागी।
अमित जित गति कीन्ह कृष्ण सुवि रामसेवक अघपारी॥

दोहा

एक लाख एकईस सहस गोपुर हरि घर रास।
रात्रि दिवस सुख करन मन करु हरि रास विलास॥ १॥
क्ष राम रूप जस शंभु कहँ विधि कहँ अति अवगाह।
सेस बेद नहिं पार लहु अपर लहै किमि थाह॥ २॥
एक रास ब्रज आउ सोइ करन जगत उपकार।
तासु चरित मिलि सकल कवि कहत लहत नहिं पार॥ ३॥
जेहि जल बूडत मदर गज कहँ अति अवगाह।
राम सेवक मत पिपिलिका लेन चला शठ थाह॥ ४॥
व्यास वरनि कहँ सूर मत अपर कविन मतधारि।
कृष्ण चरित निज मति सरिस कछु कहु पथ सोइ धारि॥ ५॥

राग श्री

भुवि भार अधिक गरुवाई।
सहि सकत न उर अकुलाई॥ टेक॥
वन पर्वत जल भरि नहिं जाई गज रथ तुरँग वडाई।

नर पशु अपर चरात धरनी पर गृह पषान बहु छाई ॥
मख हित खात करत, नर बहु निधि जल हित खात सोठाई ।
उठत चलत बैठत सोवत नर धावत दुख न जनाई ॥
सत बश द्विज बश धरत पद भुवि उर पुर सुख पाई ।
भक्त कोइ सोपचादि धरत पद सुख लहु भुवि अधिकाई ॥
परदारा पर द्रोह निरत जोइ अवकृत जन समुदाई ।
कोइ विधि चरन धरत धरनी तल शिर धुनि भुवि पछताई ॥
कसादिक खल भार अधिक लहि नहिं भुवि उर सहि जाई ।
विकलता सुनि राम सेवक हरु दीन-बधु यदुराई ॥१०॥

गो रूप धरणि बरधारी ।
लखि कसादिक अघ भारी ॥ टेक ॥
सहि नहिं सकेउ भार धरणी उर मुनि गन जाइ पुकारी ।
बोध न लहु मुनि गन जुत पुनि सुनि देवन सकल दुलारी ॥
देवन सो नहिं हानि दु ख कोइ को सुनि भार उतारी ।
सकल देव मुनि धेनु सहित पुनि गो विधि भवन विचारी ॥
धेनु रोय निज दुख विधि सन कहु करु विधि तोपि सुरारी ।
सुर मुनि मिलि विधि क्षीरसिंधु चलु सग धेनु त्रिपुरारी ॥
सिंधु तीर धरि धीर देव सन धेनु सहित मुनि झारी ।
एक टक निरखत राम सेवक सब निधि अस्तुति अनुसारी ॥११॥

राग कल्यान

जयति जयति जय मुकुन्द जयति द्वन्द भजन ।
त्रि तै ताप पाप शाप अघ समस्त गजन ॥ टेक ॥
जैति चरन सरन पाल सुर मुनि लखि महि विहाल ~
लीजय पनाव सदा भक्त रजनं ॥

भमत सकल एक साथ सुर मुनि महि जोरि हाथ
मातु भ्रातु आदि पाहि करुप मनों ॥
जयति श्याम कमल गात मृदुल चरन चिन्ह प्रात
मुनि गन मन भृग पान करत सदनं ।
सेसोपरि शयन नाथ करत धरत सकल माथ
शोक मोह टारि उरमि सुखद चरन ॥
जयति रमा गहिं पाद उरसि लाय मृदुल वाद
जनन हेतु करत शोच देव मदनं ।
देवमुनि समाज नाथ दुरित धरत चरन माथ
वरहु अब सनाथ साथ धरणि मदन ।
जयति क्षीर सिंधु वास करत चरन सकल आस
रहत नाहि डर प्यास शोच मोचनं ॥
सुर नर मुनि करत ध्यान चहुँ जुग जन होत ज्ञान
सीवत अब देहु देव कमल लोचन ।
जयति नाथ अति उदार धरणि भार हरणि हार
अमित रूप धारि दुष्ट सकल धारान ॥
मनुज रूप नाथ धारि कंस आदि दुष्ट मारि
हारि धरणि भार रामसेवक पालन ॥१२॥
नौमि अज अनादि ब्रह्म सकल लोक आयन ।
एक त्व अनेक रूप करत उदधि सायन ॥ टेक ॥
उद्भव स्थिति लय त्वमेकमद्भुत चर्य
निराटमिधर निभु प्रभु समस्त नायक ।
अज अप्रद निर्गुण धृत सरूप सगुण
[illegible] चरित पावन स्वभक्त ज्ञान दायक ॥
मत्स कच्छ क्रोड तनु धृत नृसिंह बामन
परशुराम रूप चरित सर्व लोक लायक ॥

धृत अनूप रूप त्व पवित्र वश भानुज
बध कृत दशानन मुवारि धनुष सायक।
मत कृत स्तुति श्रुत वृत अनेक विग्रह
प्रमोद त्व नमामि देव शोच मोचन ॥
सीदति न महति न रोरति न विलापन
तवाघ्रि श्राश्रित सदा विलोकु कमल लोचन।
श्रुत स्तन कृत अह्न समस्त लायक नज
प्रसन्नानन कृत स्वरूप भावन ॥
समस्त दुःख भजन कृत सुधेनु रजन
रामसेवक दास बोरि कीन्ह पावन ॥१३॥

राग धनश्री

बिधि बिनय कीन्ह अति भारी।
हाथ जोरि शिर मोरि पुलक तन मर हित ध्यान गुरारी ॥टेक॥
अस्तुति सुनि बिधि पर हित घृत सम ब्रह्म हृदय विचारी।
देश काल अवसर निज लगि सब धरणि भार अधिकारी ॥
बिनु शरीर बानी नभ सन भइ बिधि उर प्रविसि दुलारी।
श्रवण कीन्ह बिधि ध्यान करत उर हरि वर रूप निहारी ॥
अस्तुति करु बिधि रूप निरखि हरि अरु उर वचन सवारी।
सुर मुनि धेनु न सुनु हरि वानी रूप न लगु त्रिपुरारी ॥
बिधि देवन सन कहु हरि बानी अज सुनि चल जुन नारी।
हरि तन धरि अज शुचि क्रीडहिं अब गोप गोपिन मिलि म्हारी ॥
करि लीला नर भार हरु मुनि दसकंठ रिपु मारी।
अस बहि भवन गवन निज करु बिधि रामसेवक सुर सारी ॥१४॥

सुनि वचन धात्रि सुख पाई ।
सुर गन महि मुनि समुदाई ॥ टेक ॥
महि थिर होय हरि पद आश्रित रहु मुनि गन ध्यान लगाई ।
देव सकल प्रमुदित मन त्रिय जुत नर तन धरु ब्रज आई ॥
सकल लोक सम्पत्ति उत्सव जुत ब्रज भुवि आइ समाई ।
गोप गोपिन की वृद्धि भई बहु गोधन भूति भलाई ॥
चित्रित नगर डगर चित्रित सब शोभा बरनि न जाई ।
हरि आगवन उछाह अधिक उर बाजत अनद बधाई ॥
नद भवन त्रय लोक सम्पदा आइ सकल सुख छाई ॥
राजित ब्रज सब जीव गुल्म तरु नद घरनि अधिकाई ।
बसुदेव मन मुदित रात्रि दिन यदुकुल प्रीति जनाई ॥
उर पुर रामसेवक निति निरखत श्याम रूप यदुराई ॥१५॥

दोहा

प्रभु अज्ञा सुनि कान विधि देवन सकल बुझाय ।
त्रियन सहित सब देव गन ब्रज नर तन धरु आय ॥ १ ॥
हरि को जन्म विचारि ब्रज हर्षित बहु त्रय लोक ।
उत्सव सकल सकेलि ब्रज प्रमुदित रहु गत शोक ॥ २ ॥
जन्म भूमि का कहत अब जेहि थल हरि अवतार ॥
प्रीति विरोध जनाइ खल जिमि उतरा भुवि भार ॥ ३ ॥

राग श्री

उग्रसेन राज सुख भारी ।
जेहि हरषित रहु नर नारी ॥टेक॥
चद्र-वंश-अवतंश जजाती तासु तनय सुख सारी ।
यदु अरु पूरु भ्रातृ जग जानत बहु पुराण श्रुति चारी ॥

यदुबंशी वसुदेव राज नहिं कौतुन एह जग भारी।
पूर बंश उग्रसेन राज करु रहु ब्रज सकल सुखारी॥
देवक की कन्या देवकी वर तेहि जग सकल दुलारी।
कंस छोह करु लखि भगिनी लघु नृप कहँ अति उर प्यारी॥
कृष्ण वास थल अगम सुगम लखि छवि शोभा तन गारी।
देव सम अय पुरन नारि कोइ ध्यान करत जन भारी॥
सुता विवाह योग्य वर निरखत उर पुर थिर करि धारी।
हरि प्रेरित वसुदेव भाउ मन रामसेवक गुनधारी॥१६॥

दोहा

शुक्र सुता गुरु सुना मन वाद कारि गिरु कूप।
आखेटक मों जाय ढिग कर गहि काढेउ भूप॥१॥
कर विवाह भृगु ताहि सन बहुरि साप तेहि दीन्ह।
जीर्ण जानि नृप सुता दुरव सापानुग्रह कीन्ह॥२॥
जुवा अपर तन बदलि नृप कर तुम भोग बिलास।
देव जानी सम सुता थर तजत न तन पद पास॥३॥
ज्येष्ठ सुत यदु नृपति को तन जाँच्यो नहिं दीन्ह।
पुर दीन्ह तन हर्ष जुत पितु आज्ञा जस लीन्ह॥४॥
अमित काल करि विषय सुख तन देइ दीन्ह स्वराज।
उग्रसेन प्रूरु कुल कर सुख राज समाज॥५॥

राग टोडी

उग्रसेन नृप निज उरसि विचारि के।
कन्या जोग भोग वसुदेव को निहारि के॥टेक॥
सुनि पुर नर नारी सदल सुमत्री चारी
सुत परिवार वर बचन सवारि के।

मंडप मझारि पुर गृह उर सुख सारी
चित्रित अटारी मणि दीप यहु वारि के॥
नृत गान अधिकार गृह गृह शुभ चार
देवकी विवाह सुख यहु नर नारि के।
बजत बधाइ सुख तिहुँ पुर रहु छाई
कंस हरषाइ बहु भगिनी दुलारि के॥
वसुदेव साज साजो न्याह हित रथ राजी
आये द्वार नृप पट पीत वर धारि के।
पूजि पद हरखाई दान देइ सुख छाइ
मिलवाइ दुख शुभ थल बैठारि के॥
देवक सहित रानी कुश जल कन्या पानी
वसुदेव कर दीन्ह आरती उतारि के।
भोजन कराइ वारि उचित सुनाइ गारी
वेद बिधि कर द्विज वाक्य अनुसारि के॥
दाईज अमित दीन्ह वसुदेव सब लीन्ह
उचित सुरग इत उत अग डारि के।
पट वसुदेव रामसेवक सकल सेन
उग्रसेन कंस प्रीति रीति चित धारि के॥१७॥
चलु वसुदेव पुर बाजन बजाई के।
पाइ नर नारि शुभ रथ बैठाई के॥टेक॥
हिलि मिलि पुरजन दान देइ द्विज गन
उग्रसेन देवक चरन शिर नाई के।
मंगल निशान गान नृत जुत हित ज्ञान
हरष प्रवाह इत उत रहु छाई के॥
भगिनी मोह बस कंस उर छोह अस
तजि पुरजन संग चलु पुराई के।

रज्जु रथ गहि कर कस चलु ताहि बर
देवकी प्रीति रीति लखि सुख पाई के ॥
अशरीर बानी नभ अमृत विषय सानी
कंस तैं अबुध कस चलु हरखाई के।
प्रीति करु अस जेहि काल सब जाय येहि
अष्टम सुगर्भ बाल मरु तोहि धाई के ॥
सुनत अकाश बानी कंस छाडि रथ पानी
कच गहि कर असि शिर भरमाई के।
देवकी को कंप गात वसुदेव पछतात
कंस त्रास बस छन रहु ठकुठाई के ॥
साम भेद कहि कहि रिसि त्रास सहि सहि
वसुदेव नीति शास्त्र ज्ञान सों बुझाई के।
मृत्यु नहीं होय एही नभ बानी कहु जेहि
सोइ सुत देव एहि तजु लेइ बडाई के ॥
वचन बिचारी बारी वसुदेव सत्य सारी
कंस गृह गत केस तजि सकुचाई के।
चढि रथ दंपती मगन लेइ संपती
गृह सुख लहु रामसेवक स्व आई के ॥१८॥

श्री राग

वसुदेव देवकी रानी।
बसु भवन मानि रजधानी ॥टेक॥
भोग विलास करत उर सुख लहि हित अनहित पहिचानी।
प्रथम पुत्र स्मृतिमत भयो वर छवि शोभा की खानी ॥
लेइ पुत्र वसुदेव चलेउ वर अनृत न होय मम बानी।
स्वतन कहँ न अदेय होइ जग सुत धन धाम न प्रानी ॥

कंस देखि सुत गोद शुभ गवर सत्य सराहि को मानी।
लेइ जाहु सुत फेरि भवन अब एहि सन मम नहिं हानी॥
चले वसुदेव हरष नहिं मन लागि सुत हित करत गलानी।
बहुरि कस सुत बोलि न वध कर होइ न कोइ तन जानी॥
नारद आइ बुझाइ कंस कह कंस तुम भो अज्ञानी।
काल पाइ गृहसन किमि फेरत अष्टम कोका जानी॥
ताहि तजि व्रज सुर नारि पुरुष जत भव की बुद्धि सयानी।
रिपु ऋण रिंचक राखु नहिं कोइ अस सुनि मति अरगानी॥
अस कहि मुनि निधि भवन गवन कर पिय अमृत रससानी।
कंस बोलि वसुदेव प्रथम सुत मारेसि उर करि कानी॥
पाप बढ़ै खल माप छुटै शिशु वध करु जेहि निज पानी।
सुर नर मुनि हित राम सेवक कहु नारद मुनि जिव दानी॥१९॥
सुनि नारद वचन रिसाई।
करि कोप स्वर्ग नोलाई॥टेक॥
कंस महा पापी अभिमानी सुर वैरी दुखदाई।
काल नेमि अवतार महाखल पूर्व बयर उर आई॥
देव जानि व्रजनारि सकल नर दुख दीन्हेउ अधिकाई।
देस त्यागि बहु गयउ अपर पुर कोइ दुख सहि रहु भाई॥
देवकि अरु वसुदेव धारि कर शृखल पद पहिराई।
शत्रु महा तेहि मानि कंस खल गृह भीतर बैठाई॥
पितु वर राज छीनि राजा बनु फेरेसि आप दोहाई।
दंड निदंड जथा रचि कंस शठ नीति शास्त्र बिलगाई॥
मख वर स्राद्ध कोइ नहिं द्विज कर वार वार पछताई।
कृष्ण कृपालहिं रामसेवक सुख व्रजन बहु उर पाई॥२०॥
हरि निज अवतार जनाई।
भुवि भार अधिक गरुआई॥टेक॥

जेहि विधि धर्म कर्म श्रुति हानि पाप होय अधिकाई।
तब होय मनुज दनुज कुल मारव सुरत्र त्रय पुर रहु छाई॥
हरि को मन नारद श्रुति गावत तेहिते खलहिं बुझाई।
नारद बचन सत्य सब मानत सुर नर मुनि समुदाई॥
इत उत नारद भ्रमत फिरत जग हरि इच्छा सम गाई।
षट सुत मुनि मरीच कर सापित देवकी गर्भ सोइ आई॥
कंस हाथ वध साप छुटै सोइ पुनि आपनि गति पाई।
नारद पर उपकार करत फिर हरि इच्छा गहि धाई॥
नारद नाम नर जन्य ज्ञान हरि भगवत धर्म धराई।
सग सुरामसेवक करवावत ज्ञान भक्ति दरसाई॥२१॥

हरि इच्छा जग विस्तारी।
पाप पुन्य अनुसारी॥टेक॥
कंस जोहत प्रतिहार राखि गृह जहँ बसुदेव दुलारी।
सुनत कान भयो पुत्र शुभग शुचि मारि वालि पटचारी॥
प्रति सबत एक एक सुत जनमत हरि इच्छा एह भारी।
देवकी गर्भसन षट सुत सुन्दर भयेउ सोइ खल मारी॥
साप छुटी मरीच सुतन की पाप कम्म अधिकारी।
देवकी कर दुख लखि सुरत्र रिपु कर मीन्त त्रय पुर भारी॥
हरि विचारि निज रूप सेस धर देवकी गर्भ थिर थारी।
सप्तम गर्भ उदित लखि उर बहु कीन्ह रखवारी॥
चहुँ दिशि भट गृह द्वार घेरि बसु कर यह अस्त्र सुधारी।
सुरत्र त्रय पुर लहु रामसेवक उर गर्भ की रासि ओजियारी॥२२॥

राग टोडी

हरि आज्ञा दीन्ह जोग माया के बोलाई के।
चल सुर-कार करु नन्द गृह जाई के॥टेक॥

सुर नर मुनि हित आज्ञा मन धरि नित
हर मुनि भार देवि तन प्रगटाई के।
मुनि तन बहु नाम होई तव भ्रम धाम
धाम बहु धाम जग मग दरसाई के॥
भद्रकाली महाकाली अम्बिके ऋगानकाली
कुमुदेति चडी नाम रहु मुनि गाई के।
दुरगा नगणी नयरा यर शाङ्नी
नर जापु नित नाम बहु पुलकाई के॥
होहुगे परेश्वरी सकल लोक ईश्वरी
नाम वर लेत अघ भागु समुचाई के।
विन्ध्य अद्रि यामिनी सकल जग स्वामिनी
कलि घर धाम नाम जगत जनाई के॥
भक्ति ज्ञान सुख खानी होहु कलि जीव दानी
नर तोहि पूजि मुनि बहु सुख पाई के।
पूजु नर नारी क्वारी आश्रम वरण चारी
अर्थ धर्म काम मोक्ष लहु जस गाई के॥
देवकी गरभ धाम जोइ सेस नामक
रची रोहिणी उर धरु अब धाई के।
आज्ञा शिर धरि रामसेवक सकल करि
जोग माया हरि निज तन दरसाई के॥२३॥
आई जोग माया हरि आज्ञा शिर धारि के।
रोहिणी को गर्भ करु हरिहिं निहारि के॥टेक॥
देवकी गरभ जोइ सप्तम सो गयो खोइ
सोर पुर भयो सुख दुख नर नारि के।
देवकी सोचत वारि नयन मोचत वारि
कंस त्रास आस सुत रहु मन मारि के।

कस अचरज ताहि भद सो बोलि कहि
गर्भ किमि पात रिपु लखहु विचारि के ॥
अस्त्र शस्त्र कर धारि घेरि रहु चहुँ द्वारि
अब आई काल मम मारु हहकारि के।
हरि लखि जन त्यास देवकी गरभ वास
कीन्ह अंश धारि निज सकल सवारि के ॥
गर्भ तेज चलत प्रचंड अति दंड देत
खल उर ताप साधु गन सुख सारि के।
अष्टम गरभ बाल कस लखु निज काल
त्रास वस रात्रि दिवस रहत सँभारि के॥
जन्म हरि सुनि कान कस उर कंप मान
छन नहिं थिर मन रहत खिझारि के।
जोग माया करि कार इत उत शुभ चार
यशोमति उर गत रहु थिर धारि के॥
देव मुनि सुख साज सकल सुकृत राज
कृष्ण उर वसु रामसेवक दुलारि के॥२५॥

दोहा

नंद सखा वसुदेव कर जानत सकल जहान।
देवकि छीर न पिवहिं प्रभु लखि के कै वरदान॥ १॥
यशुमति छिरहिं पान हित बाल केलि सुख छाय।
दंपति तप फल प्रगट हित पुत्र कहाइव जाय॥ २॥
पत्नी वर वसुदेव की रोहिणि नँद के धाम।
आकरखनते गर्भ कर ज्येष्ट होहिं जेहि राम॥ ३॥
कौशल्या अवतार वर रोहिणि कर हरि कीन्ह।
हरि माया हरि केलि लखि हरि इच्छा रचि दीन्ह॥ ४॥

राग कल्यान

जयति जयति जयति नाथ जय त्रिलोक नायक।
सृष्टि स्थिति नाश हाय सिद्धि सकल लायक ॥टेक॥
सत्य सध सत्य बसत काल त्रिपुर पर चरत
उदय करि भरत धारि अमित विग्रहं।
निर्गुण गुण हीन तीन पूर्ण वपुष शक्ति लीन
सुर मुनि नर हेतु कीन्ह मनुज समहं॥
सकल देव शरण पाहि भरण लाज जाहि त्राहि
रक्ष रक्ष रज देव करत वंदनं।
पाप ताप जीव जगत यहुँ जुग जुग हरत भरत
पातु त्रातु अवतु सुतन उरसि चन्दनं॥
एक आयन परम त्रिलोक कारणं नर
युगल फल अनूप सुखद दुखन गायनं।
सत रज तम बृक्ष मूल लायक जरा अमित सूल
अर्थ धर्म काम मोक्ष रस रसायनं।
पंच प्राण वायु कंध उर्मि षट बृक्ष बंध
सप्त धातु त्वचा अष्टग परायनं॥
चतुराम्नि छिद्र अरु पत्र पत्र सम निसरू
अचल अस अनादि वृक्ष जगत आयनं।
साक्षि भूत वृक्ष रहत पक्षी दुइ निय चरत
ईश्वर अरु जीव भिन्न देह पावनं॥
सुर समूह नमत माथ पद सरोज धारि माथ
रामसेवक पालु सकल भूत भावनं ॥२५॥
नौमि निर्गुण अज अखंड खंड वर्जितं।
समस्त पाप तापह समस्त लोक चर्चितं ॥टेक॥

त्वद त्रिमूलज धृत विविक्त सेवन कृत
भवार्णव तर तिते स्वरूप दर्शितवर।
महत सुपध्न्व कृत पदाब्ज त्वौं मनोवृत
सुशांति सकुल शुभ लभंति सर्व शंकर॥
मत्स कच्छ क्रोड त्व धृत नृसिंह वामन
परशुराम राम त्व कृत चरित्र पावन॥
अनेक विग्रह धृत चरित्र पावन कृत
प्रभु विभु निरंजन जोगिन्द्र जोग भावन॥।
श्रुणति जे कथामृत गृणति जे समादृत
लभति ते पर पद पतति नो भावार्णव।
त्वदंघ्रि ध्यान ज धृत पवित्र मानस कृत
नमति वार वार त्व भुवि पद सुतार्णव॥
सुर्वि सुचिन्हित प॰ सदेवो लोक्न शर्म
नमामि भक्त वत्सल कृपाल त्व जनार्दनं।
जनानि कार्य कारण समस्त ताप हारण
सदा भुभार दारण दैत्य मार्दन॥
कौमल पद विभु सुवाल मगल प्रभु
विलोकि धरणि भार ताप लोक नाशन।
शिशु सुध्यान मगल चलति ग्राम जगल
हरति पाप ताप कारि दुष्ट शासन॥।
धहन समस्त देव करत नाथ चरन सेव
यदुकुल धरि मनुज रूप दनु गजन।
गजन महि मार सार रंजन सुर द्विज अचार
लीला अघहार ,काम , क्रोध भजन॥
देवकी अत्र निर्भय होहु देखहु शुभ तनय सोहु
भवताप यदुपाल दुष्ट कंस खंडन,।

विविध विनय देव कीन्ह देवकी कहँ बोध दीन्ह
प्रगट हेतु कृष्ण लोक सकल मंडन ॥
अस्तुति करि देव धाम गयो सकल पाइ काम
देवकी लहि हर्ष पुत्र शत्रु घालन।
कृष्ण कमल लोचन दयालु शोच मोचन
धारि मनुज रूप रामसेवक पालन ॥२६।

दोहा

गर्भास्तुति सुर कीन्ह बहु धीरज देवकि दीन्ह।
देव गवन निज भवन कर हरि सुर अज्ञा कीन्ह ॥ १ ॥

राग धनाश्री

हरि चरित जगत सुखकारी।
सुनि विनय देव उर धारी ॥टेक॥
जन्म काल निज जोग लगन ग्रह रात्रि निशीथ विचारी।
अगम रूप जेहि होइ सुगम जस तिहुँ पुर मो विस्तारी ॥
कलि प्रभाव कलिजुग उद्भव लखि रुग राग सुखसारी।
हिलि मिलि क्रीड़ा करव गोकुल महँ मोहि सकल व्रज नारी ॥
मम लीला सुनि कान गान करि उतरहिं भव निधि वारी।
कलि कल्मष कलि दोष नहीं रहु कलि जन होहिं सुखारी ॥
एह विचारि निज काल निरखु प्रभु कलिजुग सग सचारी।
कृष्ण जन्म निज समय विलोकत रामसेवक अघ हारी ॥२७॥

श्री राग

श्री कृष्ण प्रगट भुवि आये ।
देवकी गर्भ वास सुर बरणत अतुल रूप बनाये ॥टेक॥
भाद्र कृष्ण अष्टिमी बुध बासर निधि बर नखत बीताये ।
जोग लगन अनकूल सकल ग्रह चन्द्रोदय मन भाये ॥
रात्रि निशीथ शीथिल जल धरा चर निद्रा बस अलसाये ।
मृतक समान कारि कलादिक रक्षक सकल सोवाये ॥
बोलन हित बसुदेव देवकि सन हरि सोइ रयन जगाये ।
अस बर काल चारि माया निज देवकी गृह प्रगटाये ॥
शंख चक्र गदा पदुम चारि भुज भूषन बसन सोहाये ।
देवकी अरु बसुदेव देखि हरि कंस त्रास बिसराये ॥
मन संकल्प सहस दस कह गौ दपति उर हरखाये ।
कृष्ण रूप छवि धाम बिलोकत रामसेवक सुख पाये ॥२८॥

राग कल्यान

जयति जय कृपा अगार हरण सकल धरणि भार
ब्रह्म अज अनादि अखिल नर सरूप धारी ।
प्रथम भुजा धारि चारि भक्तन बिश्वास कारि
अमित रूप अमित बार अमित दुष्ट मारी ॥टेक॥
देखत बसुदेव रूप श्याम काम शत अनूप
भुजा अस्त्र सहित चारि शोभा छविहारी ।
भूषन बर बसन अंग निरखत मन उर उमङ्ग
ब्रह्म जन्म जानि भवन अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि हाथ मोरि शीश कहत सुनत जगत ईश
त्रिभुवन तिहुँ काल एक माया बिस्तारी ।

उद्भव स्थिति नाश हाथ अपर नाहिं कोपि साथ
त्रय गुण त्रय रूप धरि करत केलि भारि ॥
शुद्ध ब्रह्म एक भास पूर्ण सर्व सम अकास
निर्मल निरलेप अगुन गावत श्रुति चारी ।
कारण भव लोक नाथ कारज जग जीव हाथ
माया गहि सूत्र स्ववश राखत जन भारी ॥
ज्ञान भक्ति जोग हेतु करण शास्त्र वेद सेतु
सगुण रूप अमित धारि पालत नरनारी ।
ग्रसित मोह जाल व्याल ग्रसित हेरि कस काल
त्राहि त्राहि नाहि सरण राखु अज मुरारी ॥
पिता बाँध कृष्ण कीन्ह ज्ञान भक्ति दरस दीन्ह
नद भवन त्रास रहित कर दुलारी ।
ज्ञान भक्ति अचल पाय कस घात कृष्ण गाय
रामसेवक कृष्ण तात आत्म गति सवारी ॥२९॥
देखत तन कृष्ण श्याम शोभा शत कोटि काम
सुतिका घर भवन गवन कीन्ह जब मुरारी ।
शख चक्र गदा राज कंज चारि भुजा भ्राज
शीश मुकुट केस हेरि नयन अति सुखारी ॥टेक॥
भूषन वर बसन भ्राज नखशिख शोभा बिराज
दपति गत त्रास पास धीरज धरु भारी ।
देवकी कर जुगल जोरि बन्न निरखि शीश मोरि
नयन नीर चलत प्रेम अस्तुति अनुसारी ॥
निर्गुण गुण रहित नाथ उद्भव स्थिति नाश हाथ
माया गहि साथ त्रिगुण रूप बहु सवारी ।
कारण करतृत्व काज सकल भास एक राज
लोक तीनि छन बनाय महिमा विस्तारी ॥

कोटिन घट देखु भास जल समीप रवि अकास
नीर रहित एक रूप निरखत जन भारी।
माया प्रपंच ओट लखि न परत ब्रह्म मोट
व्यापक ब्रह्माण्ड एक देखत अधिकारी॥
दुष्ट कंस त्रास मोहिं बार बार कहत तोहिं,
पापी खट तनय मोर रिपु बखानि मारी।
सुनत कंस आइ धाय मारिहि तोहि रिपुजनाय
देवकी कहु अम्ब होय रूप वर निहारी॥
कृष्ण मातु तोष कीन्ह तीनि जन्म ज्ञान दीन्ह
वृष्णी अदिती बताय गर्भ भवति धारी।
शुद्ध हृदय मातु जानि धास करत भक्त मानि
रामसेवक जन्म कृष्ण कहत वेद चारी॥३०॥

राग टोडी

कृष्ण जन्म हेतु कछु कहत बुझाइ के।
परम भेद बहु रुचि मन ठहराइ के॥टेक॥
देवकी यशोदा प्रीति कहु कछु वेद रीति
मथुरा ते गोकुल गवन हरि गाइ के।
हित स्राप ध्यान पुष्प गरभ ज्ञान व्याज
कर कलश सुधारि चलु धाइ के॥
सर तट वृक्ष वट थिर भई धरि घट
रोदन करत बहु विधि बिलखाइ के।
यशोमति ढिग आय प्रेम करु मित्र पाय
सुत घात सब गाय गरभ बताइ के॥
कन्या निज देन कहि यशोमती बोधु तेहि
जन्म एक काल सुत सुता दरसाइ के।

कंस निज दूत पेरि बोलि लिन्हो भट घेरि
पद बेंगि डारि गृह रामु बैठाइ के ॥
निज रूप त्याग करि हरि शिशु रूप धरि
थरि निज माया सब ठहत मो आइ के ।
लखि जन्म काल बाल पति सन कहु हाल
देवकी यशोदा गर्भ कन्या सु जनाइ के ॥
सुत निज दोइ जाउ कन्या सोइ लेइ आइ
गृह केरि सहि सुख लहब छपाइ के ।
सुनि वसुदेव गमसेवक अचल भेव
हरि सुत मानि उर पुर पुलकाइ के ॥३१॥
चलु वसुदेव सुत उर टापटाय के ।
कस बर ग्राम तन गगन छपाय के ॥टेक॥
सोइ गये रखवार कंस वर सहकार
बेरि पद भागि गइ आपु सनथाय के ।
हरि इच्छा बल पाइ रवि लखि तम जाइ
खुहत कपाट द्वार द्वार अलगाय के ॥
यमुना नदी प्रबाह मिलत न कोइ थाह
भय यम चलु सुत काँधे बैठाय के ।
कटि जल बर पाइ भट गल मुख जाइ
तजत न सुत पद रहत लोभाय के ॥
कर से उठाइ शिर सुत गहि नाहिं थिर
को लेउ को लेउ बाल कहु बहु गोहराय के ।
कोल वर ग्राम नाम अजहुँ कहत वाम
मध्य सरी नर नारी रहु गृह छाय के ॥
पिता को विकल हेरि यमुना को प्रेम पेरि
चरन छुआयो हरि भक्त चढाय के ।

जल थल सम भयो वसुदेव गृह गया
नद रानी सुता दीन्ह वहु हरखाय के ॥
वसुदेव सुता लेइ गृह आइ सुत देइ
शृंखल कपाट जस तस भयो आय के ।
जानि वसुदेव रामसेवक करत सेव
सुता लेइ सुत देइ रह पुलकाय के ॥१८॥

दोहा

कल्प भेद हरि चरित यह वहु पुराण बुध वेद ।
श्रवण मनन निदि ध्यास करि कोइ न लहत उर खेद ॥ १ ॥
देवकि यशुमति कल्प कोइ सवत सर तट कीन्ह ।
देवकि सुत लेइ सुता निज वचन सत्य हित दीन्ह ॥ २ ॥
देवकि गर्भ कन्या जनम कंस सुना जब कान ।
धाइ गोद सन छोरि शठ हरन हेतु सोइ प्रान ॥ ३ ॥
कोल नाम जोइ रजक रास पट सुत प्रथम सो मारु ।
कन्या दीन्हेउ तासु कर झटित भुजा द्वौ धारु ॥ ४ ॥
पटकन लागे शयल पर हरि माया बलवान ।
भुजा उपारि आकास गत बोली वचन प्रमान ॥ ५ ॥
गोकुल महँ भयो वधिक तव नन्द भवन सुरा छाय ।
कल्प एक एहि भाव सन हरि माया कहु गाय ॥ ६ ॥
अपर कल्प की हाल कछु कहत हरिहि शिर नाय ।
कहि वसुदेव ते जन्म निज गोकुल निमि हरि आय ॥ ७ ॥

राग केदारा

हरि वर रूप धरि भुवि आय ।
हरण हित महिभार खल अत्र करण हित प्रगटाय ॥टेक॥

चारि भुज वर अस्त्र गहि निज भूषन वसन बनाय।
देवकी वसुदेव की वर भक्ति जानि लखाय॥
विनय सुनि पितु की वर प्रेम लहि सुपाय।
नंद गृह निज चलन हित प्रभु पितहि राह बताय॥
जोग माया नंद गृह मम गर्भ यशुमति जाय।
देइ मोहिं लेइ आउ कन्या करिहि वचन सहाय॥
पश्चि जोइ तब नंद गृह गत रोहिणी सुख छाय।
अश मम जोइ गर्भ देवकी सेम सप्त गाय॥
जोग माया लेइ रोहिणी गर्भ सुख पवढाय।
जन्म लीन्ह सोइ भग क्षित अब चल चक्री दुख भाय॥
कंस आदि खल बधब तब हित दिवस कछुक गनाय।
भार धरणी हरण हित सुर कीन्ह विनय अधाय॥
भक्ति तव लगि देव,भुनि हित संत द्विज सुखलाय।
अजन जन्म जग मूल कारण सकल तोहि रमाय॥
मातु की वर विनय सुनि प्रभु पितहिं बहु समुझाय।
भयो शिशु हित रामसेवक गायक सुख समुझाय॥३३॥
हरि वर बाल रूप मनारी।
दंपति दुख टारी॥टेक॥
अंग अंग अनंग राजित कोटि सुखमा सारि।
लहेउ सुख वसुदेव देवकी तनय वदन निहारि॥
गोद लीन्ह वसुदेव शिशु जब कीन्ह जतन मुरारि।
मृतक सम गयो सोय नगर अस्त्र सब भुवि टारि॥
देवकी वसुदेव पद वर वेरि दीन्ह उतारि॥
गृहत अति कपाट द्वारन सकल दीन्ह उघारि।
हाय नहि निज देखि पथ थल रात्रि बरु अति कारि॥
भाद्र नहि कोइ कारा रजनी भइ अम अधियारि।

मद मद धुनि मेघ गरजत झीन बुँद जल झारि ॥
सेस निज फणि छाँह करि चलु छत्र जिमि कर धारि ।
सिंधु रामहि दीन्ह पथ जिमि उतर तिमि मरि पारि ॥
उतरि यमुना पुलक तन अति गयो नद गृह द्वारि ।
नन्द घरनि शिथिल तन लखि गोद सुत निज ढारि ॥
लेइ कन्या आउ गृह पुनि जानु नहि नद नारि ।
पूर्ववत सब भयो जल थल बेरि पद पर भारि ॥
दपती सुख रामसेवक सुता लहि अब मारि ॥२४॥

राग श्री

हरि चरित अगम श्रुति गाई ।
कहि पार न कोइ कवि पाई ॥टेक॥
सुत देइ गृह बसुदेव आउ जब कन्या यशोमति ल्याई ।
कन्या रोदन कीन्ह बाल सम हरि माया पुलकाई ॥
रक्षक कस गर्भ अष्टम लखि निद्रा बस अलसाई ।
रोदन बाल सम शब्द कान सुनि उठि बैठेउ अकुलाई ॥
अस्त्र शस्त्र गहि सजग भयो सब कोइ आइ यस जनाई ।
सुनत कस निज काल काल कहि खड्ग लेइ खल धाई ॥
मारु मारु बध करहु धरहु कहु काल न जाइ पराई ।
विकल कस एहि भाँति पुकारत देवकी गृह घेरवाई ॥
चहुँ दिशि वीर घेरि देवकी गृह खोजत काल लडाई ।
प्रमुदित रामसेवक हरि माया निरखत दल समुदाई ॥३५॥
खल कस वीर ललकारी ।
करि जतन दिशा बर चारी ॥टेक॥
भागै नहि कोइ राह काल मम मारेहु मिलि पछारी ।
अस कहि कस आपु सुतिका गृह गयेउ खड्ग सुधारी ॥

देवकी लखि भ्राता निज आवत उर पुर भयेउ दुखारी ।
कन्या गोद लगाइ रोदत बहु भ्राता जनि एहि मारी ॥
षट तनय मम अति सुन्दर बधु सप्तम गर्भ नवारी ।
अब मम गर्भ कोइ नहिं होइहि एह अष्टम सुख सारी ॥
तुम दानी करता भरता जग देहु सुता एहि पारी ।
तव रिपु नहिं एहि तात रूप लखु पुरुष नहीं एह नारी ॥
देवकी अधीन दीन इव बोलत जानत पुत्र मुरारी ।
कस गोद सन छीनि सुता लियो रामसेवक देइ गारी ॥३६॥

राग विहाग

कहत बुध हरि निज जन भव तारी ।
प्रथम दास कहँ देत अमित दुख पुनि बहु भांति सुखारी ॥टेक॥
कृष्ण मातु देवकी कहँ कहु बुध कहु पुराण श्रुति चारी ।
सोपि लहेउ दुख अपर कहौ किमि प्रह्लाद गति भारी ॥
कुररी इव देवकी निति रोवत सुनि सुत गर्भ मुरारी ।
वेरी सहु षट सुत तहि कारण कस अधम मन मारी ॥
कन्या अष्टम हित तहि बहु बिधि कस विनय अनुसारी ।
तुम दानी दाता सब लायक देहु सुता एहि पारी ॥
भ्राता तुम मम होहु विधाता कन्या दान सवारी ।
षट सुत रिपु लखि मारु प्रथम मम पुरुष रहेउ एह नारी ॥
करि विलाप देवकी बहु रोदत कन्या एहि उर धारी ।
रामसेवक शठ कस न मानत हरि इच्छा कोइ टारी ॥३७॥
दुखित अति देवकी हरि महतारी ।
निज कृत कर्म भोग सुख दुख करु काह पुरुष का नारी ॥टेक॥
देवकिनदन नाम कृष्ण बर कहत सेस श्रुति चारी ।
हरि सरवज्ञ सुनत देखत सब कीन्ह न तुम्हि गोहारी ॥

मंगल मूल सूल हर सुखप्रद अस वर नाम मुरारी।
देवकि अरु वसुदेव सहत दुख नाम न्हदय पुकारा ।।
निज कृत कर्म अचल नहिं डोलत हरि इच्छा बल भारी।
गृह भीतर करु कैद सुनि रिपु हरि बानी अनुसारी ।।
चहुँ दिशि धीर घेरि गृह राखत शृंखल दोउ पट डारी।
कुररी इव निशि बासर रोवत नयन झरत बहु बारी ।।
समुझि समुझि पट सुत सुंदर बध कन्या गहि उर धारी।
रामसेवक देवकि अस भाखत भ्राता जनि एह मारी ।।२८।।

राग श्री

हरि कौतुक कोउ न जनाई।
निगम अगम सारद मति सकुचत शिव विधि की न [illegible] ।।
हरि ईक्षा भारी बश त्रय पुर गावत लोग [illegible]
हानि लाभ सुत मातु पितृ वदि पति धन धाम ला राई ।।
हरि माया देवकी गृह गत जब कंस सुनत गयो धाई।
देखत त्राम भइ देवकी उर कन्या गोद छपाई ।।
रोदत वदन पट सुत वध कहि कहि भ्राता होहु सहाई।
धर्म प्रजा अन देहु दान मोहि अस कहि गहि उर लाई।
कंस छोरि कन्या झट कर गहि रज कहि दीन्ह देखाई।
रजक लेइ पटकन जब लायो गई नभ करनि गुटाई ।।
चमक भई कोटिन दामिनि सम कहु माया मोहगाई।
मद कंस किमि बाल मारु पट [illegible] गोर व्रज माई ।।
कन्या गुम भई नभ ऊपर कंसहि भेद बताई
अचरज लहि गृह गवन कंस कर रामसेवक समुझाई ।।२९।।
हरि माया की गति भारी।
कहि सकत न सुर श्रुति चारी ।।टेक।।

करनि सुखाइ रजक मन नभ गत भुजा अष्ट वर धारी।
शंख चक्र गदा कंज चर्म असि सूल धनुष सर भारी॥
स्रग चन्दन चर्चित रति शत तन भूषन बसन सवारी।
कृष्ण जन्म व्रज माखि कंस मन सुर मुनि मनोज सुखारी॥
भय लहु सकल असुर गन देखत जब रिपु भुजा उपारी।
सुर मुनि पुष्प वृष्टि करि प्रमुदित जय कहि मातु पुकारी॥
बहुत नाम बहु धाम ग्राम कहि महिमा जग निस्तारी।
नंद गोप कन्या धन्या कहु हरि अनुजा दुख टारी॥
विंध्याद्रि वासिनि खल त्रासिनि कहि सुख लहु नर नारी।
अष्ट भुजी कहि परम वैष्णवी रामसेवक रिपु मारी॥४०॥

राग सारंग

जय जय जग जननि देवि चरन सकल लोक सेवि
महिमा अपार विश्व आदि कारिणी।
जगत करणि जगत भरणि जगत हरणि स्वामिनी
गामिनी समस्त लोक लोक सकल तारिणी॥टेक॥
भुजा अष्ट वर सवारि अस्त्र शस्त्र अष्ट धारि
दुष्ट दलन हेतु धरणि भार हारिणी
सुर नर मुनि गन दुलारि ज्ञान भक्ति दान सारि
तोष पोष कारि भूति विमल सारिणी॥
नंद गोप गृह स्वजाय यशोमति उर सभजाय
देवकी ढिग आय कंस त्रास दारिणी।
देवकी वसुदेव सरणि सकल त्रास मोह हरणि
सुगम अगम करणि रजक भुज उदारिणी॥
देवन हित लाय मातु सकल लोक एक पातु
भुक्ति मुक्ति रिद्धि वृद्धि भार भारिणी।

सत फज हम भरणि दुख दरिद्र शोक हरणि
हरणि सय अरिष्ट दैत्य वंश मारिणी ॥
अद्भुत तव रूप देखि डरत असुर काल लेखि
मारत गल सब शीश उर विदारिणी।
सुर नर मुनि साधु पेखि प्रेम मगन एक टेकि
जानत सुग देह भव दुखारि वारिणी ॥
प्रेम सफल विनय कीन्ह माया हरि अभय दीन्ह
भूषण वर वसन संत हित मकारिणी।
वार वार विनय करत चरन कमल शीश धरत
रामसेवक उरमि अष्ट भुजा धारिणी ॥४१॥
जय जय जय जगत जोति भूषण वर वसन मोति
भुजा अष्ट अस्त्र धारि जग प्रकासिनी।
आज्ञा उर विष्णु धारि इत उत भुनि फार कारि
पत्नी वसुदेव दोउ उर हुलासिनी ॥टेक॥
नद भवन गवन आस यशोमति उर करि सुवास
देवकी गृह प्रगटि आय भाव भासिनी।
रजक भुज उपारि मारि देवकी वसुदेव वारि
गगन करि अकास कस त्रास त्रासिनी ॥
पूर्ण सर्वलोक करत भरत बहुरि सोपि धरत
याम तव समस्त लोक वर अकासिनी ॥
सगन सकल देव देखि सुर नर मुनि असुर सेवि
पालव समान दास वर उपासिनी।
दुष्ट यर अरिष्ट घात नाम करत पाप पात
भूत ग्रह पिशाच प्रेत सकल नासिनी ॥
सेवत अघ दूरि जात भूरि शत्रु होत पात
महिमा अपार जानु दास दासिनी।

नाम धाम गुन अपार कहि न सकत कोपि सार
। नेक कहत सुनत समन त्रास सासिनी ॥
अर्थ धर्म सहित काम मोक्ष परम देत नाम
। एक बार कहत कृष्ण अनुजा सुख धासिनी ।
अस्तुति करि सुर समाज भवन गवन कीन्ह राज
। पूजत नर नारि सकल मास मासिनी ॥
पूजत एक धाम नाम पावत मन सकल काम
।, रामसेवक उरसि बसहु बिन्ध्यबासिनी ॥४२॥

राग टोडी

हरि गुण भूरि यश कहत जनाय के ।
मम मति थोरी कोइ कवि नहि कहु ब्योरी
कलि लहि भोरी उरपुर सकुचाय के ॥टेक॥
बसुदेव सुत देइ यशोमति सुता लेइ
वेरि पद लहु पुनि निज गृह आय के ।
कृष्ण जन्म ब्रज गाई हरि माया दिनि जाई
इत उत सुख दुख बहु दरसाय के ॥
यशोमति नहि जानी निद्रा बश अलसानी
सुत चिन्ह सुता भुवि रह सुरुझाय के ।
नंदरानी सुख खानी लहि हरि भई ज्ञानी
निद्रा हानी सुत जानी उबु हर खाय के ॥
वत्न निहारी मारी अग पद दुख हारी
नख सुख लहु तन सुधि निसराय के ।
लहि गुरु ज्ञान ध्यान शिशु हरि पहिचान
यशोमति भाग्यनिधि कहु कवि गाय के ॥

जन्म सुत सुनि कान नद उर लहु ज्ञान
ब्रह्म सुख लहि गृह द्विजन बोलाय के।
नवी मुख श्राद्ध करि जात करम सारि
धेनु बहु दीन्ह दान रतन लुटाय के॥
नृत्त गान होन लाग गोकुल सुकृत जाग
दान देत नद बहु बजन बजाय के।
बजत बधाइ शिशु रूप वर गाइ गाइ
सुख रामसेवक रहेउ उर छाय के॥४३॥
महा मन नद दान देत हरखाय के।
नृत्त गान जुत बहु बजन बजाय के॥टेक॥
सुनि पुर नर नारी लहि सुख अधिकारी
गोपी गन गोप देह सुधि निसराय के।
आरती सवारि थारी मगल सुवस्तु धारी
चहुँ दिशि होय आइ नद गृह धाय के॥
मगल सुगान कारी प्रविशत नन्द द्वारी
सुकृत निचारि बाल देखु पुलकाय के।
सुख उर पुर लहि ब्रह्म शिशु कहि कहि
आरती करत भुवि जन्म फल पाय के॥
देखि देखि शिशु तन बन्न मुदित मन
गोपी नृत्त गान करू उर मो बसाय के।
करत निनोद नेवछावरी सुकरि करि
तन धन मन शिशु पद मो लगाय के॥
नद रानी महारानी गुणखानी गुरज्ञानी
सुत उपजाई तिहुँ पुर सुख छाय के।
कहु ब्रज नारी सारी सुकृत सराहि वारी
यशोमति फल चारी दियो ब्रज आय के॥

भूषन बसन, साजी दीन्ह नंद मन राजी
, , , सुख लहु तिहुँ पुर जन्म सुधि पाय के।
कृष्ण तन देखि रामसेवक मुदित मन
नंद नन्दरानी बहु रतन लुटाय के ॥४४॥

राग असावरी, कृष्ण जन्म मंगल

भाद्र कृष्ण तिथि आठ वार बुध नागर ये ॥ललना॥
नखत रोहिणी सौभाग्य जोग सुख सागर ये ॥टेक॥
सिंह राशि गत सूर्य चन्द्र वृष रासि गये ॥ल०॥
अपर कृष्ण मुनि देव निकट खउपासि गये।
जुग्म लग्न अनकूल लहर सब जग ये ॥ल०॥
ग्रह ऊँचे शुभ चारि अपर चलु श्रुति मग ये।
अर्द्ध रात्रि भरि पूर दूरि ग्रह निरखत ये ॥ल०॥
मंद मंद धुनि मेघ भीन बुंद बरखत ये।
चन्द्रोदय ओजिआर काल सुख दायक ये ॥ल०॥
अभिजित श्रेष्ठ मूहूर्त प्रीति हरि लायक ये।
सोइ गयो रखवार शिथिल सब जल थल ये ॥ल०॥
शुभग जन्म हरि काल दायक सब जन फल ये।
जानि परम निज काल जगतपति प्रगट ठये ॥ल०॥
हरख लहेउ त्रयलोक कंस उर डरु शठ ये।
चारि भुजा जुत अस्त्र रूप अद्भुत अति ये ॥ल०॥
मेघ वरण तन श्याम दायक शुभ जन गति ये।
वक्ष स्थल भृगु चरण रेख वर राजत ये ॥ल०॥
गल वैजंति की माल सकल छवि साजत ये।
नासा शुभग कपोल दंत छवि छाजत ये ॥ल०॥

शीश मुकुट कच केश कुण्डल श्रुति भ्राजत ये।
भाल विशाल सुतिलक काम शत विलसत ये ॥ल०॥
चरन कमल कर कज भक्त गिर परसत ये।
भूषन अंग सुदेस पीत शुचि वरट ये ॥ल०॥
देखु देवकी वसुदेव गोचर जोइ सब घट ये।
सुर उर हरख अपार गयो सब भुवि दुख ये ॥ल०॥
रामसेवक वसुदेव देवकी लहु वर सुख ये ॥४५॥

भक्त हेतु भुज चारी अस्त्र सब कर धरु ये ॥ल०॥
देवकी सहित वसुदेव विनय करु सब निधि ये ॥टेक॥
गोकुल की हाल पिता सन कहु सब ये ॥ला॥०
सुनि देवकी विनय प्राकृत शिशु वनु तब ये।
शृँखल गयो पद निकरि सोइ गयो वानर ये ॥ल०॥
खुलि गयो सकल कपाट सिथिल थल मानव ये।
लेइ सुत चलु वसुदेव गोकुल प्रमुदित मन ये ॥ल०॥
सेवा हित सब देव प्रफुल्लित मुनि जन ये।
अस्तुति करु झरि पुष्प निरखि वर बालक ये ॥ल०॥
सेस महेश दिनेश कहत सुर पालक ये।
मद मद सुख रूप मेघ सुर गरजत ये ॥ल०॥
झीन झीन शुचि बुद सुखद मद बरसत ये।
चद्र उदय सुख रास भास नभ भ्राजित ये ॥ल०॥
सेस कीन्ह फणि छाहँ छत्र इव राजित ये।
यमुना उतरु बसुदेव सेतु सम सागर ये ॥ल०॥
कन्या लीन्ह नद घरनी देइ सुत नागर ये।
गृह आये वसुदेव सुता लेइ धरु जब ये ॥ल०॥
कन्या लेइ खल कस रजक कर करु तब ये।

कन्या नभ तल जाइ अमृत जस गावत ये ।।ल०।।
रामसेवक बसुदेव देवकी सुख पावत ये ।।४६।।

यशोमति निद्रा विगित जानु सुत जागत ये ।।ल०।।
शिशु वर रूप निहारि चरन अनुरागत ये ।।टेक।।

जिमि जोगी करि जोग ब्रह्म सुख पावत ये ।।ल०।।
तिमि यशोमति सुख पाइ स्वहृदयँ बसावत ये ।
नद श्रवन सुत करत हरषि उठि धावत ये ।।ल०।।
लहि सुख ब्रह्म अनूप द्वार निज आवत ये ।
नद आनद शुभाय तें द्विज न बोलावत ये ।।ल०।।
स्वस्ति पठत द्विज आइ सुखारु बजावत ये ।
करि नदी मुख श्राद्ध कर्म जातक करु ये ।।ल०।।
धेनु बसन मणि अमित नद द्विज कर धरये ।
बोलि लीन्ह भट्ट बगरी निहरि शिशु चीन्हत ये।।ल०।।
निरखत बाल अनूप नार नहिं छीनत ये ।
हित बेलन करि ठनगन धन बहु मागत ये ।।ल०।।
निरखि निरखि शिशु रूप पाप उर भागत ये ।
नद महा मन दीन्ह जोइ सोइ भावत ये ।।ल०।।
नार छीनि शिशु ध्यान करत चलु गावत ये ।
नहिं कोइ नार बेवहार न शिशु दरसावत ये ।।ल०।।
हरि दपति हित प्रेम सकल करवावत ये ।
नन्द भवन उत्साह लोक तिहुँ छावत ये ।।ल०।।
हरस विनोद अपार कलुष सकुचावत ये ।
एक प्रविसत, एक निकसत जन बहु धावत ये ।।ल०।।
रामसेवक नन्द मुदित सुर तन लुभावत ये ।।४७।।

सुनत नंद सुत जन्म सकल सुख पावत ये ॥ल०॥
गोप गोपी गन सकल प्रफुल्लित धावत ये ॥टेक॥
सजि आरति भरि थारे भूषन भूषित अँग ये ॥ल०॥
गावत प्रविसत द्वार गोपी सब एक सँग ये।
जाइ लखेउ शिशु धाइ सरूप मनोहर ये ॥ल०॥
उर पुर धारा बसाइ गीत करु मनोहर ये।
नृत गान सुनि धाय गयो तिहुँ पुर दुख ये ॥ल०॥
ब्रह्म सगुण रस रूप लहेउ सब जन सुख ये।
दधि घृत छीर मिलाइ हरदि जुत छिरकत ये ॥ल०॥
मनहु मोर गन नाच चहूँ दिशि फिरकत ये।
इत उत रंग भँरा डारि बहुरि तन करसत ये ॥ल०॥
चहुँ दिशि होय जनु मेघ कुँकि जल बरसत ये।
दधि घृत छीर अपार चहूँ जनु भरि चल्लु ये ॥ल०॥
घृत दधि हरदी मिलाउ सु इत उत सुख भल्लु ये।
भूषन बसन विचित्र नंद पहिरावत ये ॥ल०॥
भूषन बसन सँवारि रंग तन डारत ये।
जाचक सकल अजाचक दरश शिशु जाँचत ये ॥ल०॥
विप्र पाइ धन भूरि स्वस्ति शिशु बाँचत ये।
लूटत सोपि लुटाउ मोद मन भावत ये ॥ल०॥
रामसेवक धन बहुरि स्वनंद लुटावत ये ॥ ४८ ॥

राग सोरठी

बहु नंद भवन सुरा छैया। ~ ..
बाजत अनंद बधैया ॥ टेक ॥
यशोमति सुत सुनि सकल गोपिन धाइ धाइ सब ऐया।
हेरि हेरि शिशु चरनकमल वर निरखत बदन लोभैया ॥

करु नवछावरि 'आरति करि करि वार वार बलिजैया।
गोपी गन नर शिस शिशुनिरखत उर पुर बहु पुलकैया ॥
जन्म महोत्सव करत बेद विधि हिलि मिलि मगल गैया।
ढोल मृदग कारि करतल धुनि नाचत ताता थैया ॥
स्वस्ति पठत द्विज शास शब्द करि देव पुष्प झरि लैया।
दधि घृत क्षीर मिलाइ हरदि रग इत उत अग बहैया ॥
दधि कॉंदव ब्रज सकल ग्राम पुर नद भवन बरसैया।
बाल रूप हरि निरखि निरखि सब रामसेवक सुख पैया ॥४९॥

बजै नद भवन सुवधाई।
सुनि सुनि त्रिय आई ॥ टेक ॥
दधि घृत छीर हरीद्रा मिश्रित छिरकत रग बनाई ॥
इत उत रग परसपर डारत लहत मोद समुदाई ॥
नद भवन मानहु परत वर चलु सरि विविध सोहाई।
पीत सेत धूसर रग जल चलु शोभा वरणि न जाई ॥
अस वर वृष्टि भई न कोइ जुग दधि घृत छिर अधिकाई ॥
कृष्ण जन्म उत्सव सुर गावत करि बहु नद बडाई।
दधि कॉंन्द नर नारि धरत पद रग सकल तन छाई ॥
हरखि हरखि पुर नारि देखि शिशुहिं हिलि मिलि मगल गाई।
भूषन बसन विचित्र जथोचित नद मुदित पहिराई ॥
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु दपति वर सुख पाई ॥५०॥

रागिनी दास्या ठुमरी

नद भवन शुभ दधि कर कीच।
परसत सुर मुनि नहिं जन नीच ॥टेक॥

दधि घृत छीर हरीद्रा घोरि घोरि
प्रेम विबस कर गहि सिर सींच।
भवन ते इत उत चलु बहु बहि बहि
दधि काँदव बिथिनिन त्रिय बीच॥
बजत बधाइसुनि त्रिय हरखाइ गाइ
अरुझाइ अंग रंग कर गहि घींच।
कर गहि लपटाइ अंग सब दरसाइ
बसन सुरंग एक एक गहि फींच॥
एक रस भाव गहि दधि छीर घृत महि
हरदी मिलाइ सम करि नहि मीच।
त्रय दिसि दधि घृत छीर बहि सरि गत
दूरि बहुत बही दिसा उदीच॥
गोपी गन तन धन हरि अरपन कत
मोहन जिमि बैरोचन दधीच।
जीवन मुक्त रामसेवक सकल त्रिय
जिमि सनकादि मुनि नारद मरीच॥५१॥
नंद के भवन दधि छीर सम पाथरी।
बहत प्रबाह सुनु बहुत थता थरी॥टेक॥
हरख प्रवाह नंद भवन बहत अति
यशोमति सुत भयो जनु सुरनाथ री।
सुनि गोपी गन उठि धायेउ पुलकि मन
चहुँ दिसि गान करि बहु जुथ जाथ री॥
गलिन सकल बीच जहँ तहँ दधि कीच
पद धँसि जात एक एक घिंचु हाथ री।
बजत बधाई नृत्त करि करि त्रिय गाइ
डगत न ताल चाल बोल एक साथ री॥

पुलकि पुलकि दधि छीर घृत एक करि
छीरफल इत उत धरि वर आथरी।
यशोमति सुत सुखप्रद सुर वर लखि
गोपी गन शिशु पद धर सब माथ री॥
बिनु हरि पद प्रेम कोइ न उपाइ छेम
जिमि पुगीफल चूना पान बिनु काथ री।
निरखि निरखि रामसेवक वदन हरि
गोपी गन बार बार कहु शिशु गाथ री॥५२॥
देखो सखि शिशु एह सुखप्रद रूप।
यशोमति सुत नहिं सुर वर भूप॥टेक॥
अचरज यहु जोइ अलख निरंजन
प्राकृत शिशु होय परु सोइ सूप।
चरत न तन सुधि तजत न मन छन
देखि देखि शिशु वदन अनूप॥
गाइ बजाइ के आरति करु सब
प्रेम विवस प्रथमहिं देइ धूप।
निरखि निरखि नहिं बोलत डोलत
गोपी गन सुख लहि भइ चूप॥
सिथिल अंग रस ध्यान मगन मन
जिमि जोगी निरखत उर गूप।
अस शिशु गति लखि ध्यान न करु जोइ
सोइ नर नारि परत भव कूप॥
कृष्ण जन्म उत्सव सुनि धरु उर
सोइ नर नारि जगत मजबूत।
ध्यान धरत जोइ, बाल रूप हरि
रामसेवक तेहि डर यमदूत॥५३॥

नंद के भवन वर बजत बधाई।
धुनि सुनि व्रजपुर सुख लहु आई ॥टेक॥
बालक अनूप देखि जन्म सुफल लेखि
रोकि पट नयन न पियत अघाई।
चरन मृदु वदन विलोकत
मधुकर सम मन सकल लोभाई ॥
गज रथ तुरग अपार अन्न धन
देत नंद बहु मन हरखाई।
धेनु वसन भुनि दान देत गृह
मणि गण रत्न सु विविध लुटाई ॥
जोइ लूटत सोइ थलहि लुटावत
हर्ष विवश तन सुधि विसराई।
दधि घृत छीर हरीद्रा घोरि घोरि
छीरकत अंग एक एक पुलकाई ॥
करत बिनोद सुरस लहि पुर नर नारी
गृह सुधि गत हरि रूप भुलाई।
सुत गान करि रामसेवक सुकृत सरि
व्रज नारि करं यशोमति की नडाई ॥५४॥

राग श्री

[सु]नि जन्म कृष्ण हरखाई।
[सब] गोप गृह आइ मुदित मन धन बहु भांति लुटाई ॥टेक॥
[सु]त सुत कहि कहि गोपी गन सभ्रम सुनि उठि आई।
[स]कल सुत नंद भाखि बहु नंद भवन आयो धाई ॥
[ग]ान बहु वाद्य बजावत निरखि बाल सुरताई।
[घृ]त छीर हरीद्रा मिश्रित इत उत अंग लगाई ॥

कचुक उष्णिक धौत वस्त्र वर उपरणा सुखदाई।
भूषन सकल अंग कुंडल जुत नंद गोपन पहिराई॥
भूषन वसन दीन्ह गोपिन कहँ चित्र विचित्र बनाई।
गोवत्सन रँग जुत भूषित करु लहु तिहुँ लोक भलाई॥
कृष्ण जन्म उत्साह वहत कवि सारद मति सकुचाई।
कलिमल लहि लघु रामसेवक मति किमि उत्सव वर गाई॥५५॥

सुनि जन्म कान अविनासी।
हरषित व्रज पुर वासी॥टेक॥
जो अज अगुण अखंड निरंजन सकल लोक परभासी।
पूरण ब्रह्म अनादि सनातन एक अलख सुख रासी॥
भक्त प्रेम रुचि ध्यान करन हित रूप धरत बहुधासी।
नंद भवन मोह जन्म कान सुनि पुलकित कृष्ण उपासी॥
धाइ धाइ सब आय नंद गृह अमित दास हरि दासी।
नंद महामन दान मान करु सुत हित हृदयँ हुलासी॥
पत्नी जोइ वसुदेव की रोहिणी प्रति जुग हरि पद आसी।
भूषन वसन विचित्र दीन्ह तेहि उर पुर कोइ न पियासो॥
नृत्त गान हिलि मिलि व्रजपुर करु निरखि बाल सुखरासी।
कृष्ण जन्म उत्सव कहि सुनि नर रामसेवक पुलकासी॥५६॥

सुनि कंस गिरा सुभ वानी।
बधिक तोर व्रज भुवि जन्मेउ शठ करु उर अब कछु कानी॥टेक॥
सत्य गिरा ध्रुव मानु सुता की असत पूर्व नभ वानी।
देवकी अरु बसुदेव निकट गयो करि उर अमित गलानी॥
शृंखल पग कर मंडित छोरि दियो लखि निज हित सुख मानी।
दोउ कर जोरि शीश दोउ पद धरि मृदुल वचन सु बखानी॥

स्वसा भाम अपराध छमहु मम तव बुद्धि परम सयानी ।
देव अनृत नभ वचन सत्य गहि अनृत न उर पहिचानी ॥
निज जीवन हित मोह परम गहि पट सुत तव करु हानी ।
पाप कीन्ह अति घोर थोर नहिं अस न करी कोइ प्रानी ॥
यमपुर का गति होइ स्वसा मम का एहि पुर नहिंजानी ।
दीन वचन सुनि रामसेवक ध्रुव दपति सम बिज्ञानी ॥५७॥

कहु कस शीश पद नाई ।
बहु भाम स्वसा समुझाई ॥टेक॥
तुम ज्ञानी हरि भक्त परम शुचि सम दुख सुख लखु भाई ।
हरि माया परपच सकल जग मोर तोर कहि गाई ॥
पुत्र पिता नहिं मातु बधु कोइ निज कृत कर्म सहाई ।
सुख दुख जनन मरन निज कृत लखु पाप पुन्य बल पाई ॥
प्रथम मोर बध कीन्ह रहे पट कीधौं अवहिं प्रथमाई ।
जन्मातर निज बैर लेत सब ताकहँ का पछताई ॥
छमा करहु अस जानी जगत गति सोच मोह बिसराई ।
देवकी अरु वसुदेव छमा करु क्रोध मोह सकुचाई ॥
कस भारि अस गवन भवन करु गयो सन ज्ञान भुलाई ।
देवकी अरु वसुदेव ज्ञान थिर रामसेवक अधिकाई ॥५८॥

नृप कस सभा थल जाई ।
निज मत्री बरग बोलाई ॥टेका॥
कन्या जोइ कहु गत अकास जस सोइ निजवर्ग सुनाई ।
शत्रु मोर ब्रज भुवि कोइ जन्मेउ अब का करिय उपाई ॥
कस वचन सुनि सदल मत्रिगन सग बोलु हरखाई ।
भय न कोइ तोहि रिपु कर राजन् हम सब करव सहाई ॥

वरुण कुबेर पवन रवि ससि गन अग्नि सदल जत भाई ।
दूत सदल यमराज वीर वर तव सन्मुख नहिं आई ॥
अल्प वीर्ज सुर पति तव आगे सो किमि करहिं लडाई ।
तव धन्वा के शब्द सुनत सुर जीव रोइ चलत पराइ ॥
हरि एकात रहि करत वनहि तप अज की का प्रभुताई ।
हरि इच्छा मोइ रामसेवक कहु कस वर्ग समुझाई ॥५९॥

कहु कस वर्ग सय कारी ।
हरि इच्छा उर धारी ॥टेक॥

जद्यपि तोहि रिपु भय नहिं राजन् तदपि नीति अनुसारी ।
रिपु ऋण नेह न जानी छोट अहित न रुज लघु न दुलारी ॥
चिकित्सा करि रुज तन जारत देइ ऋण रातु अहिमारी ।
निर्भय रहु दिन रयन सुखित मन रिपु लघु मूल उखारी ॥
पुष्ट रहत सुर जग्य धूम लेइ पितर श्राद्ध लेइ भारी ।
सत्र कर मूल धेनु द्विज सज्जन करु इन्हकी रखवारी ॥
पुन्य न कोइ मुनि होन पाइ अत्र एह रिपु परम विचारी ।
मास भीतर जोइ जन्म वाल ब्रज मारहु कोइ नर नारी ॥
वाल घात हित मातु कंस निज जेहि वधु शीघ्र मुरारी ।
कस दूत इत उत पठयेउ बहु रामसेवक हरि तारी ॥६०॥

राग सोरठी

दास्या तस्या किङ्करी अति प्राकृति भाषा कहँरवा

चलु देखि आऊँ नन्द के दुवरवाँ कवैया लहि वधैया बाजै री ।
सखि अस उत्सव वर होत जहाँ तिहुँ पुर गाजै री ॥टेक॥
दधि घृत छीर अबीर हरदि मेलि सुमन माजै री ।
इत उत घोरि घोरि छिरकत पुनि अग रग राजै री ॥

सखि भूषन वसन नद देत लेत जन सुख साजै री।
निरखि निरखि जन भूरि दूरि दुख सुख छाजै री॥
शिशु वर देखि देखि रूप काम शत लाजै री।
नद भवन उत्साह सकल उर पुर भ्राजै री॥
निरखि निरखि शुभ बाल सुमगल सब गावै री।
रामसेवक फल चारि देखत शिशु मन पावै री॥६१॥

सखि नद के भवन में अनद सुख इत उत सरि बहै री।
चलु देखि आवैं यशोमति सुत एह सखि वर साच कहै री॥टेक॥
इत उत बहु लोक भिभिट नँद गृह आवै री।
करि सब सकल सिंगार सुमगल गावे री॥
सखि भूषन वसन शुचि पान सकल जन सुरि पावैरी।
इत उत अग रग बोरि देत तन छवि छावै री॥
उमगि उमगि अनुराग प्रेम रस उपजावै री।
हिलि मिलि तोरि तोरि तान बाँह गहि उर लावै री॥
देखि देखि शिशु बदन नारि नर पुलकावै री।
रामसेवक, मन मुदित कृष्ण जस बरसावै री॥६२॥

नद के भवन सुत जन्म सकल सुनि जन धाइ री।
निरखि सुभग वर बाल सुमगल सब गाइ री॥टेक॥
चिट्ठकी बजाइ चमकाइ कर धुनि लाइ
नाचत मुदित मन जन, समुदाइ री।
दधि घृत चीर तेहि रजनी मिलाइ घोरि
इत उत सिर डारि अग लपटाइ री॥
मोदक खियाइ शुभ जल सु पियाइ
सखि भूषन बसन वर नद पहिराइ री।

सजन न नद सुत यशोमति गृह कोइ
शिशु गोद लाय रहु रयन सुताइ री।
प्रेम वस नर नारि इत उत रग डारि
नृत्य गान करु शिशु जनम सोहाइ री।
कर गहि गल सिर छन नहिं कोइ थिर
हिलि मिलि मुकि अग अग उर लाइ री॥
पुलकि पुलकि शिशु वदन विलोकि त्रिय
मृदुल चरन मन रहत लोभाइ री।
लखि घर प्रेम रामसेवक सकल जन
ज्ञान रस सुख हरि रूप दरसाइ री॥६३॥
नद के भवन शुभ बजत बधाइ री।
तिहुँ पुर नर नारि रहत लोभाइ री॥टेक॥
यशोमति सुत भयो तिहुँ पुर दुख गयो
भुवि भार नाश भय रिपु न जनाइ री।
निरखत श्याम गात मृदुल चरन ज्ञात
नख जाति चिन्ह मोवि रहु ललचाइ री॥
देखत वदन सुकपोल सुललित भाल
नाक कान केस कर रहत लोभाइ री।
दधि-कौंदव अस नहिं भई नहिं होय कोइ
अस उत्सव तिहुँ पुर न समाइ री॥
नृत्य करि नर नारि वजन वजाइ शुभ
चमकाइ इत उत मगल सुगाइ री।
दान सनमान करि पोष तोष लोग भरि
भूषन वसन मणि नद जु लुटाइ री॥
निरखि निरखि शिशु वदन कोमल गात
मन श्रम भाम राति दिव उर लाइ री।

देखि नन्द सुत रामसेवक अनन्द उर
अर्थ धर्म काम मोक्ष सब जन पाइ री ॥६४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या ठोमरी

सुलोने लोने नयन सुख दरसाई री।
मृदुल चरन सुकपोल छबि छाई री ॥टेक॥
श्यामता गात बरनि नहिं जाइ कोइ
मधि सचि स्मर रसु आई री॥
श्रवन नासिका चिबुक अधर शुचि
उन्नत भाल न बरनि सिराई री।
कंबु ग्रीव कच केस मधुप छबि
भुज स्कंध की परम लोनाई री॥
वक्षस्थल उन्नत छबि धानत
उदर रेख मन सकल लोभाई री।
जघन जानु कटि गुल्फ जोति नख
निरखत मनसिज मन सकुचाई री॥
अरुण पाणि नख कञ्ज मनोहर
अभय करत जन सब सुखदाई री।
बदन कंज भ्रकुटी अति सुन्दरि
चितवनि सुसन्द सुरस उपजाई री॥
अस बालक नहिं सुना न दिसा
चाहत मन निशि दिनै उर लाई री।
अस बालक मग नयन धारि उर
हलराइन अंग अंग लपटाई री॥
लाल चकरु शिशु रामसेवक सब
यशोमति भाग्य न सुख मदु गाई री ॥६५॥

सुलोने वर रूप धरेउ व्रज आई री।
देखि नारि नर सकल लोभाई री ॥टेक॥
हरि अवतार अमित श्रुति गावत
कृष्ण सरिस नहि शिशु गुन गाईं री।
अति अद्भुत शिशु रूप कृष्ण वर
जहँ सुरपति अज गयेउ भुलाई री ॥
जन्म काल वसुदेव देवकि लखु
कन्या गइ ढिवि रूप छपाई री।
सुर मुनि सुख कसादिक खल दुख
सोइ छन लहु भुवि भार गवाई री ॥
नद भवन सोइ रूप परम शिशु
यशोमति कहँ यहु देत बधाई री।
मोर ग्रीव सम छवि तन राजत
कृष्ण रूप शिशु यहु दरसाई री ॥
दधि-काँदव व्रज गोप गोपी कर
नाचि गाइ यहु वजन बजाई री।
निरखि निरखि शिशु रूप धरत उर
नद मुन्ति मन रतन लुटाई री ॥
नद जु अनद लहु यशोमति जु तनहु
रोहिणी सुत बलदेव सुखदाई री।
देखि देखि दोउ शिशु सुदर निज
रामसेवक उर पुर पुलकाई री ॥६६॥

रागिनी सोरठी

गोपी अनन्द भई देखि देखि शिशु को लोनैया।
तजि सुत चित गृह मातु पिता पति नन्द तनै पन मनचित लैया ॥टेक॥

नाचत भर घर ताल बजावत
हिलि मिलि राग सुमगल गैया।
विरा पान सकल बायन लडु
मृदुल चरन शिशु लखि हरसैया॥
नेवछावरि करि आरति करु निति
बार बार मुख चुमि बलि जैया।
नंद भवन आनन्द महोत्सव
तिहुँ पुर सुख यशोमति गृह छैया॥
इत उत धन नंद मुदित लुटावत
निशि दिन बाजत अनद बधैया।
नंद सफल सुख यशोमति रानी
ताहु गोपी गन सुख अधिकैया॥
नंद भवन सुख रामसेवक छवि
हरि हलधर गोपिन दरसैया॥६७॥
गोपी मगन भई देखि देखि नंद सुत बारी।
आइ आइ निति मगल गावत यशोमति ढिग शिशु नदन निहारी॥टेक॥
कोमल चरन सरन जन दायक
निरखत सुख दरसत नर नारी।
नाचि गाइ बहु बाजन बजावत
कर गहि एक एक सुख सारी॥
बजत बधाइ तिहुँ पुर मो सोहाइ
भल गोपी उर पुर सुख थिर थारी।
नद यशोमति उर सुख लहु बहु
प्रेम पात्र गोपी अधिकारी॥
श्यामल तन शिशु रूप सोहावन
झुकि झुकि निरखत तिहुँ पुर झारी।

पच छठी होइ निम माम निव
उत्सव अमित देखय शिशु धारी ॥
नंद मगर गन भूरि लुटाइ धन
सुत होइ गोर जन मगरा दुतारी।
गोद लय रचि सब उर पुर बसु
रामसेवक हरि कीन्ह सुरारी ॥६८॥

रागिनी असावरी मंगल

छठी दिवस सुख मूरा सुनत जन धावत ये ॥ल०॥
करि षोडस सिंगार सुमंगल गावत ये।
प्रविसत नंद दुवार भवन चलि आवत ये ॥ल०॥
करि नेवछावरि भूरि जन्म फल पावत ये।
यशोदा मन मुदित शिशुहिं अन्हवावत ये ॥ल०॥
निज कुल जत व्यवहार सो सरइ करावत ये।
नृत्त गान अधिकार बाजन बहु बाजत ये ॥ल०॥
भूषन बसन विचित्र नारि नर साजत ये।
गोरस तृण सहित भूषित अति राजत ये ॥ल०॥
लखि छठी वर दिवस जीव सब गाजत ये।
छठी दिवस वर जानि सु नंद मुदित मन ये ॥ल०॥
दान देइ बहु धेनु लुटावत मणि गन ये।
जागन करि भरि रात्रि सु छठी पुजावत ये ॥ल०॥
देव पितर कुल इष्ट देत जोइ भावत ये।
देखि देखि शिशु रूप सकल सिर नावत ये ॥ल०॥
रामसेवक तजि कपट चरन मन लावत ये ॥६९॥

हरखित रहु नर नारि नंद सुत जात ये ॥ल०॥
सुर मुनि सिध्य सुजान रूप हरि मानत ये ।
द्वादस दिवस बिचारि तिहुँ पुरजन सब ये ॥ल०॥
नंद भवन झट आइ शिशुहिं देखब कब ये ।
लालच अस सब करत सुमंगल गावत ये ॥ल०॥
देखि शीघ्र शिशु रूप सीस पद नावत ये ।
करि नेवछावरि भूरि सुकृत फल पावत ये ॥ल०॥
नृत्त गान शुभ शोर सु बजन बजावत ये ।
भूषन बसन बिचित्र नंद पहिरावत ये ॥ल०॥
गज रथ तुरग सु धेनु सु रत्न लुटावत ये ।
नंद भवन उत्साह लोक सुख छावत ये ॥ल०॥
जाचक सकल अजाच लहत मन भावत ये ।
एक प्रनिमत एक निरखत जनबहु धावत ये ॥ल०॥
दरसि बाल रवि पुन्य पाप सकुचावत ये ।
दिन द्वादस लरि प्रेम सु नंद बढ़ावत ये ॥ल०॥
रामसेवक हरि रूप सबाल देखावत ये ॥७०॥

राग श्री

हरि जन्म कंस सुनि पाई ।
पुतनहिं बेगि बोलाई ॥टेक॥
बाल घातिनी परम श्रेष्ट तुम मम रिपु अब वधु जाई ।
यज्ञ दान ब्रत नेम श्राद्ध विधि रोकेसि पुतना पठाई ॥
ब्रज बालक मारत रिपु हेरत नंद भवन जब आई ।
लेइ बालक पय पान करावत हरि कर गहि लपटाई ॥
मुच मुच कहि बेगि पूतना कंस भवन आइ धाई ।
तजि बिरोध हरि भक्ति धारि उर शिशु कहँ अरा जनाई ॥

उद्भव स्थिति जग नास हाथ शिशु न कोइ कर भाई।
चर अरु अचर वस्य एन्ह की कस दाम नाक पशु लाई॥
सुनत कस चिंता उर व्यापी कोइ न करत प्रभुताई।
प्रथम पूतना रामसेवक अस कम ते हरि गुण गाई॥७१॥
सुनि कस पूतना बानी।
श्रीधर द्विज गृह आनी॥टेक॥
नद भवन पठेउ रिपु वध हित चलु द्विज खल अज्ञानी।
आइ गयो द्विज नद भवन जब देखत यदु नदरानी॥
भागि आपनी सराहि धोइ पद बैठायेउ बहु मानी।
गृह जुत मम बालक रक्षा कर जात लेन सर पानी॥
दधि भोजन द्विज हेतु नीर वह यशोमति गई हित जानी।
श्रीधर चलु शिशु वधन हरखि उर कृष्ण कपट पहिचानी॥
दधि जुत भाड धीर द्विज मुख कर जिन्हा पर पलटानी॥
अस करि हरि शिशु होइ सयन कर हरि द्विज बुद्धि सयानी।
यशोमति शीघ्र नीर लेइ आइ द्विज कँह देखि रिसानी॥
धिक् धिक् द्विज तोहि चोरी कीन्ह विधि
निक्सहु नहिं अब हानी।
लरखर वचन कहत सब कर सन साक्षी नहिं कोइ प्रानी॥
कर गहि गृह ते निकारु यशोदा कृष्ण सखा द्विज जानी।
जिह्वा पर लहि भागु शीघ्र द्विज आये कस रजधानी॥
कस ते कहु तब वध प्रभु कर हरि
अस कहि सुजस बखानी।
कस सुनत काकासुर भेजेउ कृष्ण वधेउ करि कानी॥
कृष्ण देखत तन घात असुर भयो सुनि कर कस गलानी।
कस निकरा जिह्वा होइ बोलत बुद्धि इत उत हरि तानी॥
कृष्ण वधत रिपु रामसेवक प्रभु द्विज कुल रिपु जिय जानी॥७२॥

दोहा

कल्प भेद हरि चरित बहु कहि न सकत कोइ पार ।
जन्म कृष्ण भगवान कर रामसेवक सुखसार ॥ १ ॥
पुतनहि प्रथमहि फेरु प्रभु द्विज कहँ देइ जिवदान ।
द्विज रिपु अस नहिं मारु हरि करु श्रीधर कल्यान ॥ २ ॥
बाल चरित वर कीन्ह प्रभु बोलत नहिं मुख बात ।
काक असुर अति प्रबल खल निरखतहीं करु घात ॥ ३ ॥
बका शकट धेनुक असुर वत्स असुर बध कीन्ह ।
पुतना बध तब कीन्ह प्रभु मातु सरिस गति दीन्ह ॥ ४ ॥
पुतना बधि नाथेउ नाग कहँ कल्प एक असराय ।
अपर कल्प की कहत कछु कृष्ण चरन सिर नाय ॥ ५ ॥

राग श्री

सुनि कंस वचन उर धारी ।
चली पुतना खल अघकारी ॥टेक॥
नव सहस्रा सोइ समय भेंट लेइ मथुरा चलेउ सुखारी ।
पुत्र जन्म उत्सव करि बहु बिधि कंस मिलन हित सारी ॥
बाल घातिनी नव शिशु बध करि गोकुल करु पेठारी ।
नंद भवन पुनि गवन कीन्ह झट रूप अनूप सवारी ॥
यशोमति आदि सकल त्रिय मोहेउ लक्ष्मी रूप बिचारी ।
चकित सकल त्रिय सोइ मुख देखत पुतना शिशुहि निहारी ॥
अच्छादित जिमि अग्नि धूम रहु लखत तन पद धरु जारी ।
सोअत अहि लखि दाम धरत कर काटत तन छन छारी ॥
तिमि पुतना निज काल लखत नहि चाहत एहि शिशु मारी ।
लखि अस्नेह सुरामसेवक सोइ शुभ गति दीन्ह मुरारी ॥७३॥

हरि रूप अनूप निहारी ।
पुतना न लखु यह मारी ॥टेक॥
गोपी गन खल रूप परम लखि लक्ष्मी जानि दुलारी ।
शिशु कहँ पुतना लेइ शीघ्र कर निज उर हरषित धारी ॥
निज अस्थन महँ लेप कीन्ह रहु शुचि जल सो विधि डारी ।
गल ल्गाइ पय पान करावत मारन हेतु मुरारी ॥
कर मुख मन गहि कृष्ण मुदित मन पिवत सो प्राण निकारी ।
मुच मुच कहि गिरी पूतना उलटि स्तनथन उघारी ॥
निज तन भुजि कियो प्रगट पूतना कर पद केस सारी ।
तेहि उपर हरि शिशु होय सोवत देखत सब पुर नारी ॥
राक्षसि लखि त्रिय विकल गई ढिग रोवत हरि महँतारी ।
निर्भय शिशु गति देइ पूतनहिं रामसेवक सुख वारी ॥७४॥

हरि चरित सकल सुखकारी ।
शिशु वर रूप लखत न कोइ हरि वाल केलि रस भारी ॥टेक॥

पूतनहि मार सोवत तेहि ऊपर गति सोइ परम सवारी ।
शिशु लखि नारि सकल पुर धावत रोवत बहु महँतारी ॥
कर गहि लीन्ह उठाइ पुत्र कहँ हेरि वदन उर धारी ।
कहाँ वर रूप धारि आइ गृह लखि परु खल अधिकारी ॥
मृत्यु काल मुख बाल बच्चेउ मम कोइ ईश्वर एहि मारी ।
लीन्ह घसेटि अमित मिलि पूतनहि पुर बाहर दियो डारी ॥
षट् कोस पथ रोकु पूतना भुज पर अवनि पसारी ।
काष्ट लेइ पुरजन बहु हिलि मिलि अग्नि लाइ दियो जारी ॥
सौरभ धूम लखत अचरज लहु सुर मुनि नर ब्रज नारी ।
हरि महिमा वर रामसेवक सुख निज निज मनसि विचारी ॥७५॥

शिशु प्रेम करत नर नारी ।
भज जन रहुं सफल सुखारी ॥टेक॥
पुतना सन लियो छोरि जबहिं शिशु सनहु प्रान गत धारी ।
दान मान रक्षा सुत हित कर यशोमति बहुत दुलारी ॥
गोपी गन उर पुर पुलकित अति शिशु बर बदन निहारी ।
स्वस्ति पठत द्विज आसिष देइ देइ यशोमति सुख लहु भारी ॥
बार बार द्विज चरन माथ धरु कृष्ण की जोइ महँतारी ।
अस अरिष्ट कबहीं न होय गृह सोइ कछु जतन निचारी ॥
दान धेनु पुनि लेइ अपर धन द्विज बोलेउ सब भारी ।
अब न अरिष्ट आउ कोइ सुत ढिग द्विज आसिष सुख सारी ॥
देव पितर रक्षा निशि दिन करु छन छन हरि त्रिपुरारी ।
द्विज आसिष सुनि रामसेवक ध्रुव सब त्रिय सुख बर धारी॥७६॥

रागिनी रामकली

कहि जात न प्रीति की रीति मोहिं जोइ सग छुटत लहु दुख भारी ।
पशु पक्षी की प्रीति छुटत दुख काह कहौं बर नर नारी ॥टेक॥
प्रीति कबहिं न करौ कोइ सन पशु पक्षी गन नर भारी ।
तदपि साधु मन प्रीति करि नहिं छुटत संग दुख अधिकारी ॥
नंद कंस कहँ देइ भेंट नर मिलि बसुदेव ते अनुसारी ।
मोहिं तोहिं प्रीति दीन्ह बिधि बर अति बहुरि छोरि इत उत डारी ॥
कंस अधम तोहि दीन्ह अमित दुख सुनत कान सहि नहिं टारी ।
षट सुत देवकी कर अति सुंदर सुनेउ तात कर धरि मारी ॥
गर्भ एक स्रव गयेउ सुनेउं सोइ कन्या लघु गइ दिवि वारी ।
निज कृत कर्म सहत दुख सुख नर कहत सत बुध श्रुति चारी ॥
नंद कहत बिलखाय मित्र सन हिलि मिलि गल भुज कर धारी ।
कीन्ह बोध बसुदेव मित्र कर—रामसेवक गति मुरारी ॥७७॥

हरि प्रीति की रीति न जात कही
जोइ कहत सुनत दुख अघ नासी।
कुबत महा-अज्ञान सुरति गृह
ज्ञान भक्ति उर पुर भासी ॥टेक॥
नंद कहत बिलखाइ मित्र सन
सुत सुख दोउ उर पुलकासी।
कृपा मित्र तव एक पुत्र लहु
सोइ सुख महँ चित अरु कासी॥
सुनि बसुदेव सुरति निज सुत करि
उर पुर सुख लहु बहुधासी।
नंद ते कहु बसुदेव जानि सुत
एक ब्याज दोउ शिशु थासी॥
निज सुत सम मम सुत गहि ध्रुव पालेउ
रोहिणी गर्भ जोइ सुत जासी।
मातु-पिता तुम दोउ सुत कर
अस कहि सुनि हृदये हुलासी॥
त्रिकालज्ञ बसुदेव कहत पुनि
दोउ हरि चरन उपाय पासी।
ताहु भवन उतपात होत कछु
देखहु सुत दोउ सुख रासी॥
सुत देखेउ मोहिं मैं देखेउँ तोहि
रहु जनि प्रेम सरसि पियासी।
नंद भयो चलु रामसेवक सुनि
मित्र बचन ध्रुव पुर खासी॥७८॥

राग श्री

हरि प्रीति परसपर गाई।
निज निज तनय बनाई ॥टेक॥
नंद मित्र वसुदेव सत्य दृढ जानत जन समुदाई।
निज क्रीड़ा हित हरि कल्पित करु हेतु दोउ सन लाई॥
देवकी यशोमति प्रीति एक रस हरि इच्छा उपजाई।
सुनि गोकुल उतपात मित्र मुख नंद चलेउ गृह धाई॥
वचन सत्य वसुदेव को गावत नंद गोकुल नियराई।
पुतना देह मृतक पथ देखत अचरज यहु उर आई॥
फरुसन अंग कटाइ सुपथ करि भवन गये सुधि पाई।
बोलि पुत्र लियो गोद नंद अठ प्रेम नयन जल छाई॥
सुनि पुतना शिशु सहित हाल सब यज्ञ दान करवाई।
रक्षा हित शिशु रामसेवक यहु नंद जु रत्न लुटाई॥७९॥
शिशु नाम धरन द्विज आयो।
वसुदेव जु शीघ्र पठायो ॥टेका॥
गर्गाचार्य यदुवंश पुरोहित शास्त्र जोतिष भल भायो।
नंद देखि पद धोइ सीस धरि भाग्य अमित निज गायो॥
धरहु नाम शिशु लेइ गोद कहु सुनि द्विज उर हरखायो।
हौं उपरोहित यदुकुल कै पुन रोहिणी सुत प्रगटायो॥
सव सुत जन्म समय कोइ मथुरा देवकी गर्भ सुनु जायो।
नंद कहेउ अब धरहु नाम शिशु वचन तासु बिसरायो॥
सव सुत कर बहु नाम कहत श्रुति तिहुँ पुर जस सुरस छायो।
रक्षा करु ब्रज जन कर भय हरि कृष्ण कहत पुलकायो॥
संकर्षन बलदेव राम कहु हलधर नाम बतायो।
गवन कीन्ह गृह रामसेवक द्विजनेग विविध विधि पायो॥८०॥

रागिनी-सोरठी

कब जामी दतुलिया प्यारी ।
हिलि मिलि कहु ब्रज नारी ॥टेक॥
गोपी-गन हरि-मुख कर गहि गहि मुकि मुकि नयन निहारी ।
गोद लेइ हलरावत चूमत शिशु वर के सवारी ॥
डाइ पलना पवँढावत इत उत पुनि गहि गोद दुलारी ।
बार बार शिशु वदन निहारति चितवनि लहि सुख सारी ॥
निरखि निरखि तन श्याम काम छवि
छन छन लहु सुख भारी ।
घेरि घेरि शिशु नाचत गावत बजावत कर तारी ॥
यशोमति भाग्य न कहि सकु कोइ कवि
सोवत शिशु उर धारी ।
लहत परम सुख रामसेवक ब्रज जो सुख लहु अधिकारी ॥८१॥

मुख नहीं दतुलिया आई ।
हिलि मिलि ब्रज त्रिय गाई ॥टेक॥
कहु सखि कब जामी मुख दतुली शोभा भल दरसाई ।
श्याम गात मुख श्याम मेघ छवि दामिनि-सम झलकाई ॥
मरकत मणि रवि मणि के निकट बसि
शशि मणि जिमि छवि पाई ।
पद्मराग मणि मध्य वास करि मुक्ता मणि छवि छाई ॥
श्याम अरुण बिच सेत देत छवि तिमि दतुली भल भाई ।
मास उदय दतुली, न सुनी कोइ गोप' उर पछताई ॥
अस अल्हाद करत दतुली हित लखि शिशु वदन लानाई ।
हरि शिशु रूप देखि ब्रज जन सब रामसेवक हरखाई ॥८२॥

राग श्री,

सुत हित यशोमति हरखाई।
गोपिन भवन बोलाई ॥टेक॥
करु सतकार विविध विधि सुतहित सो विधि बरनि न जाई।
खान पान बीरा लडु वर पाति पाति बँटवाई॥
पुनि कुल देव पितर पूजन हित विविध भांति बैठाई।
इष्ट देव पूजत हिलि मिलि सब नखत अधीस जनाई॥
चहुँ दिसि होय त्रिय पूजत गावत कुल व्यवहार सोहाई।
मासि मासि शिशु जन्म नखत लहि उत्सव करु अधिकाई॥
भूषन बसन विचित्र ललित शुचि गोपिन कहँ पहिराई।
अन्न दान द्विज धेनु लहत बहु जचकन रत्न लुटाई॥
अस उत्सव लहि नखत रोहिणी करत यशोमति माई।
मंगल मूल विलोकि पुत्र तन रामसेवक सुख पाई॥८३॥
करु चरित अगम मुरारी।
शिशु बनि नर अनुहारी ॥टेक॥
यशोमति कोइ दिन मासि नखत लखि पूजन चलु सुर सारी।
शकट अमित गोरस घृत भरि भरि संग सकल ब्रज नारी॥
बाल वृंद देखन हित चलु संग निज सुत शकट सुधारी।
पुत्र सुलाइ शकट पर यशोमति पूजत इष्ट सवारी॥
रोवत पात्र सन शकट उलटु हरि लखत धाव त्रिय झारी।
एह अचरज लखि कर मीजत त्रिय शिशु गति नाहिं बिचारी॥
शकट उलटि शकटासुर बधि हरि सोवत नारि निकारी।
बाल सकल कहु एह शिशु रोवत शकट उलटि पद टारी॥
नहिं विश्वास बचन शिशु मानत शकट भार लखि भारी।
दीन्हेउ दान हरणाक्ष बध लखि रामसेवक द्विज वारी॥८४॥

रागिनी सोरठी

कब चलहिं पगन दोउ भैया।
निशि दिन कहु दोउ मैया ॥टेक॥
यशोमति मुख चुमि गोद लगावत रोहिणी लेत बलैया।
छन उछंग छन पलना झुलावत बार बार बलि जैया॥
मुख सरोज पर कमल बिलोकत चितवनि ललित पुलकैया।
श्यामल गात सरोरुह लोचन बदन कंज छवि छैया।
भाल विशाल निहारत झुँकि झुँकि केस श्याम सुखदैया॥
अधर अरुण सुख चूमत पुनि पुनि बहु उर एहि सोहैया।
देव बधू निरखत सुख चूमत चूम नहिं त ललचैया॥
अस सुख रामसवक न लहत कोइ रोहिणी यशोमति पैया॥८५॥
भुवि जानु पानि कब चलिहैं।
कर छिर कबहिं निगिनिहैं॥टेक॥
दोउ भाय अगनैया गृह गृह एक संग कब चरिहैं।
किलकि किलकि इत उत घुमि घुमि
फिरि हिलि मिलि कर कब धरिहैं॥
हँसि हँसि इत उत चपरि चलहिं
भुवि आपन पर बस करिहैं।
जब गुरु ज्ञान लहहिं इत उत
सुनि जननी बचन अनुसरिहैं॥
श्याम गौर दोउ भाइ संग मिलि
गृह आँगन जब डोलिहैं।
शोभा अमित प्रिय लागु अधिक उर
तोतरि बचन बर बोलिहैं॥
अस अल्हाद करत दोउ माता
हरि शिशु रूप दरसैहैं।

सुकृत सनेह सहत फल रस आस
रामसेवक भर पैहैं ॥८६॥

राग धनाश्री

हरि प्रीति रीति अधिकारी ।
करु जननी मोह शिशु भारी ॥टेक॥
शिशु लीला करि हरत भार भुवि अजहरि नर धनुधारी ।
मातु पिता उर-घड़इ छोह जेहि सोइ हरि करत बिचारी ॥
अति प्रचड करि पवन असुर कोइ कीन्ह अधिक अँध्यारी ।
गर्द वृष्टि करि नयन मूनु सन, सुझु न हाथ पसारी ।
गगन लेइ गयो कटित कृष्ण कहँ हरि सोइ गल कर धारी ॥
ऊपर आपु असुर नीचे करि भुवितल वेगि पछारी ।
पूतना कहँ जिमि माह उरसि सोइ तृणावर्त तिमि मारी ॥
पिता मातु करु छहो मोह जन हरि भुवि भार उतारी ।
देव विनय जुत पुष्प वृष्टि करु अचरज लहु अज नारी ॥
अस लीला करि रामसेवक हरि अज जन करत सुरारी ॥८७॥
हरि चरित पुनीत सोहाई ।
निगमागम बुध गाई ॥टेक॥
असुर ऊपर शिशु सयन देखि तिय धाइ धाइ दिग आई ।
गोद शीघ्र लेइ देखि असुर धर बार बार पछताई ॥
न्यास ध्यान करि आत्म अग शिशु गोरज सन अन्हवाई ।
रक्षा करु शिशु सीस परसि कर धेनु पाछि भर माई ॥
दान दीन्ह द्विज कहँ बहु विधि सन आसिष उर नेहि पाई ।
सकल अरिष्ट गवाइ दान देइ कुशल तनय उर लाई ॥
नन्द यशोमति अति पुलकित बहु बिधि रत्न लुटाई ।
देखि कृष्ण कहँ लहेउ महत-सुख गोपी गोप समुदाई ॥

अस लीला करि हरत भार भुवि पुरिजन प्रीति बँढ़ाई।
कृष्ण चरित सुख रामसेवक लहु पुरिजन नंद बड़ाई ॥८८॥

रागिनी असवारी

दतुली दर वर मुख दरसाई।
शोभा रहु तिहुँ पुर छबि छाई ॥टेक॥
जिमि तृण तरु कोइ अन्न बीज वर फलन्त भुवि लपटाई।
तिमि थल दसन की पंक्ति दंतुलि दुइ अंकुर ललकत राई॥
सीपी महँ मोती जिमि बिलसत उर्द्धन अंकुर आई।
दतरध्र तिमि दतुली चमकत शोभा बरनि न जाई॥
तृण तरु अन्न मोती अंकुर वर निरखत जन समुदाई।
नव अंकुर ऊपर ललकी मन फल हित सब ललचाई॥
ब्रज बासी नर नारि अधिक उर लालच दंतुली धाई।
दतुली दल लखि रामसेवक वर ब्रज बासी हरखाई॥८९॥

दतुली सरूप देखि मन भायो।
ब्रज नारी मिलि मंगल गायो ॥टेक॥
झुँकि झुँकि मुख कर गहि गहि निरखत दतुली थल छवि छायो।
सीपी मँह मोती दुइ झलकत जिमि परगट दरसायो॥
कमल मध्य मुक्ता मणि दुइ दल शोभा तिमि वर पायो।
मरकत मणि रनि मणि निच सोहत शशि दुइ मणि प्रगटायो॥
तिहिणीं यशोमति शिशु मुख निरखि दतुली लखि पुलकायो।
नंद मगन मन दतुली देखत गोपन अधिक सोहायो॥
दान धेनु मणि वसन दीन्ह बहु विप्र चरन सिर नायो।
वदन निलोकत रामसेवक हरि शिशु पद मन चित लायो॥९०॥

रागिनी सोरठी

देखो देखो दँतुलिया आई।
मोती सम झलकाई ॥टेक॥
गोपी गन सब गोप आय मिलि सुनत दँतुलिया धाई।
हिलि मिलि झुकि सब बदन निहारत साच मानि हरखाई॥
पटतर देत सकल मिलि हरखित दाड़िम कहि सकुचाई।
शशि मणि कहि मुक्ता मणि कहि कहि पटतर देत लजाई॥
सकल भयो उपमेय लोक त्रय दतुली उपमा गाई।
देइ देइ पटतर निरखत दतुली उपमा नहिं कोइ पाई॥
यशोमति सुत सम नहिं दतुली कोइ अस कहि देखि लोभाई।
देखि बदन रद रामसेवक शिशु टरत न रहु मन लाई॥९१॥
देखो चलत अँगन दोउ भैया।
जानु पानि अति धैया ॥टेक॥
खन घुसुकते खन चलत जानु कर फिरि फिरि चहुँ अँगनैया।
गोपी गन सुनि सुनि सब आई देखत शिशु सुख पैया॥
बाल विनोद करत अँगना हरि गोपिन प्रीति पढैया।
रहँसि निहँसि चितवत इतउत कोइ कोइ छन दोउ लपटैया॥
जननी प्रीति हित क्रीडत बहु बिधि बार बार किलकैया।
अति आनद हेतु जननी उर हिलि मिलि दोउ मचलैया॥
रोहिणी यशोमति मुदित गोद लेइ स्थन पान करैया।
निरखि निरखि सुख लहु उर पुर बर मुख चूमत बलिजैया॥
जानु पानि चलि दीन्ह महत सुख कछु दिन एहि सोहैया।
भक्त वश्य हरि रामसेवक ध्रुव पालव लोग लोगैया॥९२॥
हरि देवल धरि भयो ठाढे।
ब्रज आनद अति बाढ़े ॥टेक॥
धाइ धाइ ब्रज त्रिय सब आइ देखत शिशु हुइ ठाढे।

सरकि परत भुवि उठत बहुरि हरि हाथ देवल पर काढे ॥
इत उत कर फेरत देवल पर ठुड छुइ निज निज दाढ़े ।
बाल केलि हरि करत सघन अति जिमि तृण बंदु लहि डाढ़े ॥
चलत मधुर पद धरत धरणि तल त्रिभुवन गति नहिं नाढे ।
जननि हेतु अस चरित करत हरि होइ नद जु के लाढे ।
प्राकृत नर शिशु होइ केलि करु शिव अज ते जोस चाढे ।
अति क्रीडा कर रामसेवक हरि नटवत कला सो गाढ़े ॥९३॥

अति आनद लहु दोउ मैया ।
बाल चरित नित गैया ॥टेक॥
जानु पानि धरणी अव चलु शिशु शोभा बरनि न जैया ।
देवल धरि भुवि ठाढ भयो सुतछवि अति लहु दोउ मैया ॥
पलना मुलावत शिशु जस गावत इत उत कर पँवढैया ।
खन पलना खन गोदहिं लावत गृह कृत सब बिसरैया ॥
शिशु वर रूप केलि उर भावत चरित न अपर सोहैया ।
कोइ छन तेल फुलेल लगावत शिशु पद गहि सुख लैया ॥
चुमि चुमि मुख पय पान करावत कर ते कर पलटैया ।
कृष्ण चरित शिशु रात्रि दिवस कहि रामसेवक सुख पैया ॥९४॥

राग गौरी

यशोमति शिशु गहि गोद लगाई ।
रात्रि दिवस मन लाई ॥टेक॥
मुख चूमत हलरावत इत उत उदर बाल लपटाई ।
खन पलना हलरावत निज कर दृष्टि अनत नहिं जाई ॥
मुख निरखत पुलकित जस गावत स्थन पान कराई ।
सकल अग शिशु निज कर फेरत पुनि पलना पँवढाई ॥
पुनि ललना कहि लेइ पलना कर गोद लाइ सुख पाई ।

चलत सोवत बैठत उर गहि शिशु एह यशोमति निपुनाई ।
जिमि अहि मणि गहि रहत कुशल निति
तिमि यशोमति सुख छाई ।
देव सकल मुनि रामसेवक बुध करें
यशोमति केरि बड़ाई ॥९५॥

कहत सुर यशोमति सम नहिं नारी ।
जो त्रिभुवन पति मातु पिता जग तासु पिता महँतारी ॥टेक॥
नंद की भाग्य कहत सकुचत सुर सारद बुध श्रुति चारी ।
यशोमति भाग्य सराहत सब कवि नंद ते सुख अधिकारी ॥
प्रात उठाइ लाइ उर बिलसत मुख चूमत मधुबारी ।
पलना झुलाइ पियाइ पयोधर कहि कहि ललना दुलारी ॥
सोवत पुनि उर लाय मुदित मन शिशु अँग अँग कर धारी ।
दिवस चरित शिशु रयन गान कर रयन दिवस अनुसारी ॥
स्वप्न महँ शिशु रूप बिलोकत सुपुति गति न्यारी ।
ध्यान करत शिशु रामसेवक लखु जग सब एक मुरारी ॥९६॥

रागिनी सोरठी

भुवि चलन चाल सुसिरैया ।
पुलकि पुलकि दोउ भैया ॥टेक॥
कर अंगुली गहि इत उत फेरत मणि मय रुचि अँगनैया ।
जननी प्रीति लखि ठुमुकि ठुमुकि चलु श्याम गौर दोउ भैया ॥
रतन कर तजि जननी हँसि बोलत आउ आउ धरु धैया ।
कर बढ़ाय अंगुली देखरावत धरि लेउ धरि लेउ मैया ॥
गिरि गिरि भुवि पुनि पुनि चढ़ि चढ़ि
हँसि गहि अंगुली किलकैया ।
अस आनंद कंद बरसावत बाल केलि सुख छैया ॥

रुचि जननी उर करत बाल हरि प्रीति हेतु मचलैया।
गहि उर शिशु सुख रामसेवक लहु प्रमुदित चीर पियैया ॥९७॥
हरि धरि अगुली भुवि धाई।
सुनत गोपी गन आई ॥टेक॥
लेइ गोद हुलराइ चूमि मुख पलना बहुरि झुलाई।
पुनि करि गोद धारु भुवि शिशु पुनि कर अगुली धरवाई ॥
इत उत अँगनैया शिशु फेरत शोभा बरनि न जाई।
जनु बहु रती मध्य एक असमर खिलसत छवि रहु छाई ॥
अँगनैया स्फटिक मई शुभ नद भवन सुखदाई।
मरकत मणि घन तरु तमाल शिशु अतसी सुमन झलकाई ॥
पृथक पृथक गोपी गन प्रमुदित निज निज स्वच्छ दुवराई।
कर अँगुली गहि ठुमुकि ठुमुकि चलि
शिशु सुख हरि दरसाई ॥
निरखि वदन भुवि धरत पाव गति व्रज जन सकल लोभाई।
नंद यशोमति भाग्य सकल सुर रामसेवक श्रुति गाई ॥९८॥

राग श्री

हरि जननी जनक सुखकारी।
जेहि बहु प्रीति वढै शिशु ऊपर सोइ सोइ हरि अनुसारी ॥टेक॥
नयन मूदि मचलाइ चीर तजि वदन मलीन सवारी।
हाथ पाव इत उत बहु पटकत रोदत मनहु दुखारी ॥
यशोमति शिशु गति देखि विकल अति हाहाकार करु भारी।
कोइ की कुदृष्टि परी सुत ऊपर रक्षा करु त्रिपुरारी ॥
झारन हित बहु गुनीय बोलावत झरवावत सिर धारी।
ओंछि आँछि पूजन हित सुर कुल
मणि गन भरु शुभ थारी ॥

दान विप्र कहँ देत विविधि विधि देत जो शिशु सिर भारी ।
देखि बिकल जननी प्रेमाकुल शिशु हँसि नेत्र उघारी ।।
यशोदा सुत बिरुज गोद लेइ चुमि चुमि बदन दुलारी ।
सुनि सुख लहु उर रामसेवक बहु ब्रज बासी नर नारी ।।९९।।
हरि जन हित भुवि प्रगटाई ।
भुवि पालत लोग लुगाई ।।टेक।।
प्राकृत नर इव शिशु लीला करि जननिहिं सुख दरसाई ।
सुख दुख नर शिशु अग सग रहु कर्म सूत्र अरुझाई ।।
कृष्ण ब्रह्म चिन्मय अविनासी नर इव भाव देखाई ।
छन रोवत छन हँसै मगन मन ब्रज जन उर सुखदाई ।।
कोइ छन कोइ दिन रात्रि कोइ घरी कृष्ण बहुत मचलाई ।
यशोमति गुनीय बोलाइ लीन्ह शुचि सुत दुख ताहि सुनाई ।।
कर कुश लेइ द्विज झारु पुत्र मम दृष्टि परी कोइ धाई ।
छुअत कुश कर धारि सीस शिशु गइ जनु दृष्टि पराई ।।
हरि कहँ दृष्टि परै न कबहिं कोइ द्विज कहँ दीन्ह बड़ाई ।
यशोमति सुत लहि रामसेवक ध्रुव ब्रह्म सुखद रस पाई ।।१००।।
हरि बाल चरित सुखदाई ।
उर यशोमति अधिक सोहाई ।।टेक।।
यशोमति उर बहु प्रीति बढ़न हित छन छन हरि मचलाई ।
देखि यशोमति बिकल होत अति परी दृष्टि कोइ आई ।।
शिशुहिं छपाइ कहाँ अब राखउ निरखत बदन लोनाई ।
झटित दृष्टि कोइ परत दुष्ट की मुख शिशु गयो मुरझाई ।।
बोलि विप्र कहु यशोमति सुत हित करु द्विज शीघ्र उपाई ।
सदा रहै आरोग्य तनय मम दृष्टि परै नहिं धाई ।।
उटक नाटक चेटक चाटक टोटक अमित बताई ।
यन्त्र मन्त्र मयि सूत्र तान्त्र विधि करि शिशु गल पहिराई ।।

द्विज गवनेउ गृह लेइ दछिणा बहु शिशु बैठेउ किलकाई।
पालत निज जन रामसेवक हरि कहु जस श्रुति बुध गाई ॥१०१॥

गृह नंद सु बजत बधाई।
शिशु अन्न चटावनि आई ॥टेक॥

शुभ दिन शुभ तिथि मास पच्छ शुभ नछत्र लगन सुखदाई।
लेइ दछिणा बहु गनक शोधि दिन नद सो दीन्ह बताई॥
व्यँजन चारि प्रकार प्रगट जग षटरस श्रुति बुध गाई।
एक एक रस भांति अमित करि बहु पकवान बनाई॥
नृत्त गान शुभ मंगल सोहर बाजन बहु बजवाई।
दान देइ बिप्रन कहँ बहु विधि अन्न धन बहुत लुटाई॥
नंद मुदित मन बैठि पीठ पर बाल गोद बैठाई।
सूपोदन दधि घृत मिश्रित रस पच बार हरखाई॥
सुत सुख मेलि जाति अगिनित लेइ खायेउ सकल मिलाई।
जूठन लहु शुचि रामसेवक सब जेहि सुर मुनि ललचाई ॥१०२॥

राग टोडी

आये एक जोगी सिर जटा सु बनाय के।
बैल सुसंग सिर गंग अरधंग नारि
इत उत फिरु कर डमरू बजाय के ॥टेक॥
शशि शुचि सोहु भाल सिर वर फणि व्याल
गल मुंड माल अहि वर लपटाये के।
करण कुंडल अहि भुजन भुजंग वही
कंकन सुभग कर नाग दरसाय के॥
गौर सुअंग राज छाल मृग पट आज
नगल फिरत जोगी सुगति बढाय के।

चरन कमल शुचि नयन विसाल रुचि
कर पद नख जोति मोती ललचाय के ॥
देखत कुसाज साज लखि परु देव राज
दंत दुति तन छवि रासत छपाय के।
कर गहि तीरशूल दुख करु निरमूल
शिशु पर-अनकूल भारत ध्याय के ॥
देखि देखि सब चली सग संग फिरु गली
ब्रज नर नारी शिशु हित पुलकाय के।
कृष्ण को दरस बर फिरत मगन हर
झोरी काध धरि अंग बिभुती रमाय के ॥
सुनि सुनि यशोमति जोगी बर मति गति
सुतहित आनु गृह बेगि सों बोलाय के।
यन्त्र मन्त्र तन्त्र कार शिव करि शुभ चार
रहु बाल देखि रामसेवक लोभाय के ॥१०३॥
आयो एक जोगी बर गुदरी सवारि के।
नदरानी लेहु बोलि बेगि सो दुलारि के ॥टेक॥
खरिया सुगल धारि विमल बिभुति बारि
देह बाल प्राण हित तोषु नर नारि के।
यन्त्र मन्त्र तन्त्र लेइ गडा सुविभुति देइ
रक्षा शिशु करु भल हाथ सिर धारि के ॥
भूत प्रेत ग्रह जाल सकल अरिष्ट काल
चितवत जोगी दुख दुरि करु डारि के।
जोगी सम नहिं ज्ञानी देखु कोइ जीव दानी
रूप न विशाल अस सुनु त्रिपुरारि के ॥
यशोमति अस सुनि जोगी बोलि लीन्ह
गुनी शिव नदद्वार गयो शृगी नाद कारि के।

यशोमति जोरि हाथ सुत करु शिव साथ
सकल अरिष्ट हरु सगुन विचारि के ॥
शिव नख शिख हेरि ब्रह्म अज इष्ट पेखि
प्रेमवस मूक भयो बदन निहारि के।
धरि हर शिव ध्यान लहि निज बर ज्ञान
गुरु धरे सिर फेरु मातु भय टारि के ॥
ब्रह्म शिशु बर पाइ चलु पद सिर नाइ
हेतु महँतारी रस दीन्ह कछु गारि के।
कृष्ण रूप रामसेवक पुरन काम गोप
गोपी गन हित रहु सुख सारि के ॥१०४॥

रागिनी सोरठी

हरि लग्यो बोलन तुतुराई।
सुनि मातुहिँ पितहि सोहाई ॥टेक॥
सुनि गोपी गन बोल तोतरी तजि गृह कृत आई धाई।
बोलन हित शिशु इत उत फेरत गोपी बहु हरखाई ॥
तोतरि बचन बोलु प्राकृत इव भावन कोइ अलगाई।
सारवर बचन कहत इत उत चलु चितवत बहु मुसुकाई ॥
गोपी सुनि बर बोल तोतरी बिहँसब लरिस सुख पाई।
चितवनि चारु बिलोकि रीकि त्रिय स्सर रहु उर छाई ॥
कृष्ण रूप नहिँ त्याग बोल करु रहु गोपी ठकुठाई।
प्रेम केलि रस रामसेवक बर गोपिन हरि दरसाई ॥१०५॥
हरि तोतरि बचन सवारी।
बोलु मातु पिता सुखकारी ॥टेक॥
ठुमुकि ठुमुकि पद धरत धरणि पर जननी अँगुली धारी।
अँगुली तजि गिरु धरणि बहुरि उठि पुनि गह्नु भुजा पसारी ॥

तोतरि वचन बोलत प्रिय लागत पुलकित उर महँतारी।
तोतरि वचन बोलि सुवि डोलत जननी लागु सुख भारी॥
गोपी गन करताल बजावत बोलन हित मन मारी।
सुकृत सनेह प्रेम अभि अंतर हरि निज ओर बिचारी॥
बोलु मधुर रस खानि डोलु महि चितयेउ नयन उघारी।
बोल मधुर रस रामसेवक सुनि सुख लहु ब्रज नर नारी॥१०६॥

रागिनी असावरी मंगल कर्णबेध चूड़ा कर्म

नंद सुदिन हित मुदित बोलि लियो गनक नये॥ल०॥
गृह आँगन द्विज प्रथम पाटि दियो कनकन ये।
कर्णबेध जुत छौर जुगरोय लखावहु ये॥ल०॥
मन भावत धन धाम ग्राम बहु पावहु ये।
बिप्र सोधि वर लग्न दिवस एक बोध कहु ये॥ल०॥
सुनत नंद नंदरानी प्रेमरस सुख लहु ये।
एक दिवस सुनि सुदिन लहेउ मन व्यापित ये॥ल०॥
बोलेउ बेगि सोनार निपुन अति नापित ये।
सुनि गोपी गन गोप सुप्रेम बढावत ये॥ल॥
धाइ आइ नंद भवन सुमंगल गावत ये।
गायक नर्त्तक भूरि दूरि सन आवत ये॥ल०॥
गावत ,नाचत प्रविसत बजन बजावत ये।
अति उत्सव गृह द्वार परसपर भावत ये॥ल०॥
देइ बिरा पकवान सुरंग उडावत ये।
पाँवड चित्र विचित्र डासि बैठावत ये॥ल०॥
रामसेवक हरि रूप निरखि सुख पावत ये॥१०७॥

नद भवन उत्साह सकल सुख छावत ये ॥
स्वस्ति पठत द्विज भूरि लहत मन भावत ये ।
नापित सहित सोनार सुठन गन कर वहु ये ॥
देखन हित शिशु रूप नेग धन वहु कहु ये ।
नद दीन्ह धन भूरि नेग जत भाखत ये ॥
सोड लहि हर्ष लुटाउ एक नहिं राखत ये ।
पृथक पृथक नेवछावरि गोपी गोप करु ये ॥
नापित सहित सोनार पात्र निज निज धरु ये ।
शिशु कहँ मोदक दीन्ह हरख हित दोउ कर ये ॥
नापित मुद न कीन्ह वेध पश्य सोहर ये ।
कर्णवेध जब कीन्ह केस कियो मुडित ये ॥
छवि कहि लहु नहिं पार सेस श्रुति पडित ये ।
सूचिकार लेइ वस्त्र सूत्र सोन शिल्पित ये ॥
मोती लगी चहुँ ओर सुमणि गन कल्पित ये ।
स्नान करवाइ सुभाल तिलक करि ये ॥
माला पुष्प पहिराइ सुदरपन कर धरि ये ।
नेग लेइ वर वस्त्र भूपन पहिरावत ये ॥
धूप दीप नैवेद्य हुशस्त्र बजावत ये ।
शिशु कहँ मोदक खिआइ सकल बँटवावत ये ॥
दान देइ बहु धेनु सुरत्न लुटावत ये ।
निरखि निरखि शिशु रूप सुमगल गावत ये ॥
रामसेवक नर नारि चारि फल पावत ये ॥१०

राग कल्यान

निरखत शिशु रूप श्याम शोभा शत कोटि काम
मोहत नर नारि देखि बदन की लोनाई ।

मुंडित सिर ललित लाल शोभित अति तिलक भाल
नथुनी वर कान नाक बेसरि छवि छाई ॥टेक॥
कचुक गल पुष्प माल मोती चहुँ कोर जाल
शिल्पित वर कनक सूत्र निरखि जन लोभाई ।
कुलही सिर मीन भ्राज कनक सूत्र सग राज
शिल्पकारनि श्रम हीरा दरसाई ॥
नापित सग सोनकार करत अपर सुभग चार
सूचीकार पुष्पकार सहित निकट जाई ।
आरति चहुँ ओर करत ओंछि ओंछि श्रम धरत
निज निज सब नेग लेत करत शिशु बड़ाई ॥
स्वस्ति स्वस्ति द्विज पुकार करत सकल वेद चार
गोपी गन गोप देव देखत समुदाई ॥
मुडन आनद कद कर्णवेध कृष्ण चद
उत्सव अपार तिहुँ लोक न समाई ॥
बाजन बहु बजत द्वार निर्त्त गान अति अपार
आपन पर लखत नाहि लोगन लोगाई ।
दान धेनु अमित दीन्ह आसिख द्विज सुरन लीन्ह
नद अति अनद अपर हेतु धन लुटाई ॥
कुलाचार सकल कीन्ह भोजन पकवान दीन्ह
भूपन वर वसन गोप गोपिन पहिराई ।
देव पितर मुनि सुजान करत बाल कृष्ण ध्यान
रामसेवक भक्त राम राखु उर छपाई ॥१०९॥
राजित शिशु रूप श्याम शोभा वपु कोटि काम
नयन पुट करत पान लोक सकल भारी ।
मुडित सिर देखि देखि कर्णवेध पेखि पेखि
चितवनि चकोर वदन चद्र शिशु निहारी ॥टेक॥

कंचुक गत भुजा भ्राज कुलही सिर अति विराज
नथुनी जर कान नाक गही दिवस धारी।
धाराक अस भारि भारि रूप उरसि रारि रारि
विचरत चहुँ ओर देखि मगन भीरि भारी॥
देव मुनि समाज गान देखि चरन कमल भ्राज
निरखत नख जोति मोति सरिस लखि सुरारी।
गोपी गन कृष्ण देखि स्मर शिशु रूप लेखि
चाहत छन त्याग नाहिं उरसि गहि दुलारी॥
धरत अपर ध्यान जोग निरखत जन गोप लोग
रात्रि दिवस उरसि प्यास नयन शिशु निचारी।
रोहिणी बलदेव मातु सेवन सन कहत श्रात
शोभा सुख दहु शिशुन दुख अरिष्ट टारी॥
यशोमति कहु बार बार शिशुन हेतु सुभग चार
कुशल रहु अरोग्य बाल वैद्य दानवारी।
नंद अति अनन्द करत उरसि नाहिं नेक डरत
दान विविधि देत विप्र वाक्य न विसारी॥
निरखत शिशु कृष्ण रूप काम कोटि छवि अनूप
निज निज रुचि उरसि पाइ पुलकित नर नारी॥
दरसि परसि कृष्ण रूप भ्रम सुख सो लहु अनूप
रामसेवक नयन बागि सकल उरसि धारी॥११०॥

रागिनी सोरठो

नाचत बलदेव कृष्ण बाजत पेजनियाँ।
श्याम गौर अंग सग शोभा रमसनियाँ॥टेक॥
उठत गिरत चलत धाय बहुरि पलटि कर बढाय
निरखत प्रतिबिंब चारा उलटि गहत पनियाँ।

ठुमुकि ठुमुकि धरत पाँव छाँह गहत लहत दाव
    वरनत नर नारि मधुरि तोतरि किलकनियाँ ॥
किंकिनि कटि रजत ताल नूपुर धुनि गति रसाल
    मोहत नर नारि बहुरि चमकनि करधनियाँ।
छवि को साथ काम चरित मनहु मेघ संग तड़ित
    पलटत सुख लहत भूरि निरखत चपलनियाँ ॥
किलकि किलकि धरत हाथ नाचत हिलि मिलि सुसाथ
    गोपी गन गोप देखि हरखित पलटनियाँ।
चरन कमल नख सुरंग निरखत सुख छवि उमंग
    कुलही सिर तिलक भाल मानहु नग फनियाँ ॥
हँस अति विलास देव सकल लोक मोल लेत
    स्थिर तन करत कान नाक की नथुनियाँ।
गोद लीन्ह नन्दरानि चूमत मुख फेरि पानि
    रामसेवक मन सुधीर निरखत चितवनियाँ ॥१११॥
बजत बजत कृष्ण घुनुघुनियाँ।
खेल खेलत ठुनुमुनियाँ ॥टेक॥
ठुमुकि ठुमुकि पद धरत धरणि पर नाचत जनु धर गुनियाँ।
इत उत तान तोरत चट पट दोउ असन बाल कोइ दुनियाँ ॥
निज निज तन प्रतिबिंब देखि शिशु बोलत तोतरी बचनियाँ।
कर गहि चलत छाँह नहि पावत मानत अपर नचनियाँ ॥
नृत्तक छाँह सदृश शिशु डोलत सुनि न परत सोइ बनियाँ।
खिलखिलाइ सोइ छाँह धरन चलु गहि न जात निज पनियाँ ॥
हरि मचलाइ डारु घुनुघुनियाँ धाइ धरेउ नदरनियाँ।
अस अद्भुत शिशु चरित करत हरि रामसेवक सुख खनियाँ ॥११२॥

राग केदारा

यशोमति भाग्य किमि कहु गाय ।
मो मति नाहीं समाय ॥टेक॥
जनक जग जोइ अखिल जग कर तनय भयो सोइ आय ।
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य नहिं दरसाय ॥
देव मुनि नहिं ध्यान लहु कोइ तासु हित प्रगटाय ।
केलि करु हित हेतु यशोमति बाल इव मचलाय ॥
गोद लेइ हलराय चूमि मुख छीर पान कराय ।
लाल कहि पलना झुलावत केलि अधिक सोहाय ॥
सोवत कर मुख पृष्टि फेरत लाय उर पुलकाय ।
उठत पुनि शिशु वदन निरखत बार बार बलि जाय ॥
कमल पद तन श्याम देखत राखु मनहिं लोभाय ।
रात्रि दिव सुख रामसेवक नद लहु सुत पाय ॥११३॥
कहु कोइ नद-नंदन गाय ।
चारि फल दरसाय ॥टेक॥
तनय यशोमति कहत शुचि मन प्रेम उर पुलकाय ।
रूप कोइ धरि जानि कलिजुग कृष्ण प्रगटत आय ॥
नद यशोमति भाग्य किमि कहु जासु भक्ति बर पाय ।
ब्रह्म अज त्रय लोक्य पुरुष तनय होय प्रगटाय ॥
दान देत सुत भाषि आपन द्विजन पद सिर नाय ।
रहय सुत कल्यान निशि दिन होहु विप्र सहाय ॥
हाय शिशु करु केलि नर इव पितृ लखि निज माय ।
चूमत मुख कहि लाल लाड़त भाग्य परवस छाय ॥
नद यशोमति प्रीति बाढत जनहिं शिशु मचलाय ।
गोद गहि हरि रामसेवक ब्रह्म सुख ठहराय ॥११४॥

रागिनी सुहा

निरखु मुख पंकज नंद नदघरनी ।
भागि तासु कवि केहि विधि बरनी ॥टेक॥
लेइ लेइ शिशु गोद खेलावत नद यशोमति करि शुभ करनी ।
मुख चूमत गहि पलना झुलावत मन भावत सुत धरु तर धरनी ॥
जासु चरन रज शिव अज चाहत
भक्तन कहँ दायक सुख सरनी ।
दडक बन जोइ रज करु पावन
मुनि-घरनी की साप अघहरनी ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह छल मत्सर आदि चोर दस भरनी ।
पाप ताप तृण तुल राशि पर हरि पद रज पावक सम जरनी ॥
काल व्याल भक्षक त्रयपुर जन सुमिरत रज खरक सम भरनी ।
ज्ञान भक्ति दायक रज जस हरि
रामसेवक पावक जिमि अरनी ॥११५॥

छुअत पद पकज निति नदरवनी ।
भाग्य परम कवि कहु विधि कवनी ॥टेक॥
सुर नर मुनि करि ध्यान लहत कोइ
यशोमति कर गहि फिरु अवनी ।
जोइ हर हृदय कमल महँ रहु पद
सोइ यशोमति आँगन पलटवनी ॥
चरन कमल नख नीश्रित गगा हारि
सकल अघ शोक नसवनी ।
हरि पद रज त्रय पुर पावन करु
सुमिरत पाप पुज सकुचवनी ॥
रज पुनीत अति चाहत सुर मुनि
भक्त सुखन शिव अज मन भवनी ।

अहोभाग्य परमत अग सत्र शुचि
यशोमति कृष्ण चरन अघदवनी ॥
सकल लोक श्रुति सेस सारदा
महिमा कहि चाहत रज जवनी ।
सकल लोक सुख देइ शोक हरि
रामसेवक चाहत रज तरनी ॥११६॥

रागिनी सोरठी गति चचरीक

जय जय बलदेव कृष्ण सतन सुखदाई ।
श्याम गौर अति अनूप हेरि जन लोभाई ॥टेक॥
जाकर नहिं आदि मध्य पावत कोपि
नहिं अत बेद बहु पुरान सेस सत कहत गाई ।
लीला तन धारि बारि यशोमति हित उर सुधारि
नाचत प्रतिबिंब देखि रूप निज गनाई ॥
महिमा अपार सेस बेद नाहि लहत पार
कहत श्रुति पुरान भेद नेकु न जनाई ।
अचरज जन भूरि करत लीला गहि उरसि धरत
पाप पुज दूरि जात निरखत सुख छाई ॥
ठुमुकि ठुमुकि पाय धरत सकल भार धरणि हरत
स्ववश लोक करत रूप मोहनि दरसाई ।
भुलत सुर मुनि सुजान मानुष गन रहित ज्ञान
तोरत जब तान गान करत लरिकाई ॥
भूषन बर बसन अग छाया तन डोलु सग
धरन हेतु धावत प्रतिबिंब चलु पराई ।
मातु पिता प्रीति हेतु भव समुद्र करन सेतु
गहि न जात छाँह गिरत धरणि मचलाई ॥

चरित बाल सुख रसाल हरत सकल कलुष जाल
कहत सुनत उरसि धरत कृष्ण धाम जाई।
अद्भुत हरि चरित सार कहत सुनत जगत पार
रामसेवक ज्ञान भक्ति हरि सरूप पाई ।।११७।।
नाचत बलदेव कृष्ण छाँह तन निहारी ।
ब्रह्म अज अनादि अखिल रूप निज बिसारी ।।टेक।।
प्राकृत शिशु रूप धारि शोभा शत काम वारि
श्याम गौर तन अनूप मोहत नर नारी ।
देखत प्रतिबिंब लोल निज सरूप सदृश डोल
बोल न सुनात नाच देखत मन धारी ।।
धरत छाँह कर पसारि धरि न जात मृगा बारि
नृत्तत पुनि सघन धरन हेतु जनु दुखारी ।
किलकिलाय गिरत धरणि शोभा शत मेघ तरणि
शीघ्र अति उठाइ गोद लावत महँतारी ।।
क्षीर निज कराय पान बाल चरित करि सुगान
यशोमति सुख चूमि लाल भाखि बहु दुलारी ।
पलना झुलाय गाय बहुरि गोद लाय माय
ललना कहि कर सरोज सकल अंग झारी ।।
अद्भुत अस चरित करत जननी सुख रस स्त्रवत
सकल भार धरणि ठरत नर सरूप धारी।
महिमा अपार कार करत जगत रस विहार कहत
सुनत हँसत नाहिं परत जगत बारी ।।
कलिमल कलि घर्म व्याल कृष्ण चरित गरूड़ पाल
चलत नर कुचाल तूल अनल सुजस जारी।
देखत कलिकाल चाल रामसेवक जन बिहाल
त्राहि त्रसित देखि कृष्ण जानि मोरि पारी ।।११८।।

राग गौरी

यशोमति शिशु की करत बड़ाई ।
निशि दिन सुत जस गाई ॥टेक॥
आजु संग बलदेव निर्त्त कर हँसि हँसि घहु दोउ भाई ।
श्याम गौर मणिमय अँगनइया शोभा बरनि न जाई ॥
निज प्रतिबिंब देखि हेरि नाचत धरत स्वहाथ बढाई ।
गहि न जाय प्रतिबिंब कोइ कर वरन हेतु मचलाई ॥
पलना झुलत रहु गोद मुदित मन छीर पिवत हरखाई ।
कर धुनुधुनियाँ नजावत विहँसत कचुक लहि मुसुकाई ॥
छीर पान नहिं करत आजु शिशु दृष्टि परी कोइ आई ।
विकल होय द्विज गुनिय बोलावत गावत शिशु मुरझाई ॥
दान मान सुत हित कहि कहि करु प्रतिदिन सुजस सोहाई ।
बाल चरित निति रामसेवक हरि कहि जननी सुख पाई ॥११९॥

जननी को बाल बिनोद सोहाई ।
हिलि मिलि व्रज त्रिय गाई ॥टेक॥
निति नूतन कहु चरित यशोमति बार बार पुलकाई ।
आजु चरित अस कीन्ह मुदित मन
विधि सन सकल बताई ॥
साझ समय हरि चरित निरस कहु प्रात सुरयन सुनाई ।
आरति करि दोउ काल मुदित मन
शिशु जस कहि हरखाई ॥
अपर चरित नहिं अपर वार कर दरस अपर नहिं भाई ।
कृष्ण दरस प्रिय चरित सुपट हिय छीर पियाय रिझाई ॥
मुख चूमत हलराय गोद करि पलना घालि सुलाई ।
तेल फुलेल अंग सब लावत ललना कहि गोहराई ॥

यशोमति सम न अपर कोइ लहु सुख कहु बुध बेद बड़ाई।
कृष्ण ध्यान करि रामसेवक छन भक्त सकल सुख पाई ॥१२०॥

राग सोरठ

कहत कवि कृष्ण प्रीति रुचि भारी।
यशोमति सम न अपर कोइ सुख लहु तिहुँ पुर पुरुष न नारी ॥टेक॥
दिवस चरित हरि देखत गावत रयन न नेक बिसारी।
जागत सुमिरत हरि गुन गन दिव सोवत शिशु उर धारी॥
स्वप्न महँ शिशु केलि बिलोकत जागत सरिस दुलारी।
कैहात बहु कृष्ण कृष्ण कहि उठि पुनि बदन निहारी॥
मणि गण दीप पलँग ढिग गृह बहु यशोमति सुत हित बारी।
निहारत शिशु बदन सोय उठि बाति नहीं कर टारी॥
रात्रि दिवस मन सोवत जागत शिशु वर सुरति विचारी।
सुत पद प्रीति करत नहिं हरि लखु
यशोमति गति अधिकारी॥
मुनि जन ध्यान लहत कोइ छन हरि इन्द्री समेटि स्मारी।
यशोमति सम छन रामसेवक लखु अनवर भक्ति मुरारी ॥१२१॥
कहत बुध रीति प्रीति पहिचानी।
सेस महेस दिनेस कहत विधि नारद बेद बखानी ॥टेक॥
भक्त भयो बहु लोक लोक नर एक एक मुनि ज्ञानी।
जोग जज्ञ व्रत दान करत बहु सुमिरत नर वर ध्यानी॥
रात्रि दिवस अस सुख नहिं लहु काहू छन लहु मन नदरानी।
दिवस केरि निरखत जस गावत शिशु नहि अपर न जानी॥
रात्रि गोद लेइ मोद भरत उर नहिं कोउ अपर गनानी।
मणि गन दीप धारि गृह भीतर अवलोकति उर पुलकानी॥
लाइ गोद पय पान करावत मकर अग परि पानी

मुख चुमि चुमि शिशु बदन निहारत कहि जीवन धन प्रानी ।
छन निरखत नहिं शिशु तन परसत मानत निज तन हानी ॥
प्रमुदित रामसेवक निशिबासर लहि सुत हरि सुखदानी ॥१२२॥

राग बिहाग

यशोमति कृष्ण तनय वर पाई ।
रात्रि दिवस सुख छाई ॥टेक॥
श्याम गात वर कज विलोकत मृदुल चरन चित लाई ।
दंत पंक्ति शुभ चिबुक अधर शुचि कल कपोल सुखदाई ॥
श्रवण सुभग नासा सुखदायक कच विलोकि हरखाई ।
भुज प्रलय नख करज मनोहर पद नख निरखि अघाई ॥
भाल विशाल नयन चितवनि वर निरखत बदन लोनाई ।
किंचित हाँस मधुरि बोलनि रुचि मन तन लेत चोराई ॥
गोद लेइ पय पान करावत रुचि रासि अन्न खियाई ।
पलना झुलाइ लगाइ गोद पुनि मुख चूमत बलि जाई ॥
रात्रि दिवस अभ्यास करत सुत उर नहिं अपर सोहाई ।
ब्रह्म तनय लहि रामसेवक सुख रस बर रूप लोभाई ॥१२३॥
कहत सुर यशोमति भाग्य सवारी ।
तासु तनय अज ब्रह्म निरंजन
किमि कहु सुख सोइ भारी ॥टेक॥
रात्रि दिवस शिशु बदन विलोकत हरि न लखत महँतारी ।
देत परम सुख मानि जननि तेहि हरि निज रूप बिसारी ॥
सकल जगत पितु मातु जोइ हरि माता कहत दुलारी ।
हम देवता अधिकार सतोगुन भक्ति नहीं हरि धारी ॥
अस सुख नहीं सुर लहत स्वयं
कोइ जस सुख लहु नंद नारी ।

बाल केलि रस लहत ब्रह्म सुख भक्ति नात अधिकारी ॥
सुर दुर्लभ सुख लहत भक्ति करि कहत सेस श्रुति चारी ।
यशोमति भक्ति सराहत सुर मुनि जेहि बस तनय मुरारी ॥
करत परस्पर देव मुदित सुमन मन वृष्टि नभ भारी ।
सुख लहु रामसेवक सुर मुनि उर हरि शिशु बदन निहारी ॥१२४॥

राग भैरव

कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण रूप लहि प्रमुदित सब ब्रज बासी ।
खग मृग कृष्ण कृष्ण कहि बोलत डोलत हृदयें हुलासी ॥टेक॥
ब्रजबासी नर नारि अनन्ति कृष्ण नाम उर भासी ।
कृष्ण कृष्ण कहु जीह दिवस निशि रूप सुनयन पियासी ॥
कृष्ण कृष्ण कहु नंद यशोदा कहत दास सोइ दासी ।
कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण रूप लहि भयो सब हरि पद भासी ॥
लता विटप लघु जोंहति जीव जंत भयो जनु कृष्ण उपासी ।
पुत्र यशोमति भाव कृष्ण कहि भयेउ सकल सुख रासी ॥
होत प्रभात कृष्ण कहि उठत बैठि कृष्ण बहुधासी ।
कृष्ण नाम जपि प्रथम निरंतर सुल बर लहु अविनासी ।
यशोमति भाग्य अथाह थाह नहि गति दायक सम कासी ।
कृष्ण कृष्ण कहु रामसेवक नाम सकल भरतासी ॥१२५॥
कृष्ण कृष्ण कहि दरसि परसि कर सुख लहु बहु ब्रज नर नारी ।
महिमा नहिं कोइ सेस बेद कह यशोमति सुख गति भोरी ॥टेक॥
कृष्ण कृष्ण कहि छीर पिआवत कहि कहि कृष्ण दुलारी ।
उठत कृष्ण कहु बैठि कृष्ण कहु चलत कृष्ण अनुसारी ॥
सोवत कृष्ण कृष्ण कहि टोवत कृष्ण कृष्ण उर धारी ।
कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण जगावत प्रातहिं कृष्ण पुकारी ॥
कृष्ण कृष्ण कर गहि उर लावत उठनहि कृष्ण निहारी ।

कृष्ण कृष्ण कहि देत मिठाइ करि कर केस सवारी ॥
चकई देत घुनघुना कृष्ण कहि करेउ कृष्ण मतवारी ।
बोलावत सुन कृष्ण कृष्ण कहि कहि कृष्ण मुरारी ॥
भाग्य यशोमति कहँ केहि विधि करि जासु तनय मुरारी ।
कृष्ण कृष्ण कहि रामसेवक नर परत न कोइ भव वारी ॥२६॥

रागिनी भैरवी

होत प्रात यशोमति प्रतिदिन उठि कृष्णहि महत दुलारी ।
उठहु लाल पयपान करहु अब लाकहु नयन उघारी ॥टेक ॥
कृष्ण कृष्ण कहि कर अंग फेरत वस्त्र सुभग तन टारी ।
कृष्ण उठहु बलि जाऊँ तोरा अस कहि विधि बहुत पुकारी ॥
बहुरि वस्त्र कहि लाल कृष्ण कहि कर सिर केस सवारी ।
बार बार कहि कृष्ण कृष्ण सुत कर गहि बदन निहारी ॥
मुख चूमत झुकि झुकि मुख निरखत हँसि शिशु बदन पसारी ।
जागि कृष्ण मचलात जानि हित कर इव जस विस्तारी ॥
चकई लेइ घुनघुना दीन्ह कर कृष्ण लेइ मुनिटारी ।
पुनि मेवा पकवान विविधि विधि दीन्ह न लीन्ह मुरारी ॥
स्थन दीन्ह लागु सोइ पिवन यशोमति गोद सुधारी ।
यशोमति सुख लहु रामसेवक बहु कहत सेस श्रुति चारी ॥१२७॥
कृष्ण कृष्ण कहि प्रात जगावत यशोमति उर पुचकारी ।
उठहु लाल कहि कहि मुख चूमत बार बार बलि जाई ॥टेक॥
मेवा बहु पकवान मिठाई कंचन थार धराई ।
माखन मिश्री पृथक थार धरि हरि आगे दरसाई ॥
पृथक पृथक दधि खीर गुड घृत चवेण अमित बनाई ।
चकई अरु घुनघुना बेत बर अगिनित खेल मेराई ॥
कर गहि गोद लगाइ कृष्ण कहि जननी नेत्र खोलाई ।

निज कर शिशु मुख करि –
निज स्थन निज कर गारि पियाई ॥
भक्त-बस भगवान अहैं अस सुर नर मुनि सुखदाई ।
कीन्ह अधिक तप पूर्व यशोमति तब अस लहत बडाई ॥
कृष्ण नाम कलिकाल का मधुफ कहत सत बुध गाई ।
कृष्ण कृष्ण अब रामसेवक कह कृष्ण ध्यान जेहिपाई ॥१२८॥

रागिनी भैरवी तस्या दास्या नाम प्रभावती

कृष्ण कृष्ण कहि रटत लोग हो ।
अजवासी सुख करत भोग ॥टेक॥
कलि कल्मष नहिं रहु कुरोग ।
सजम एहि विधि बनइ जोग ॥
यशोमति कहु गृह तनय मोर ।
रात्रि दिवस नहिं परत भोर हो ॥
गोपी गन नहिं कहत थोर ।
कृष्ण मोर एह जगत सोर ॥
कृष्ण गनत नहिं अधम चोर ।
प्रीति गहत नहि करत रोर ॥
रामसेवक कलि देखि घोर ।
देहु मरन हरि करु निहोर ॥१२९॥
कृष्ण कृष्ण कहि रहु लोभाय ।
प्रात यशोमति गुन सो गाय ॥टेक॥
उठहु तात बलि जाय माय ।
पुनि सोवहु कछु लेउ खाय ॥
घोर पिबहु घुनघुना बजाय ।
मन भावै सोइ कहु बुझाय ॥

कृष्ण कृष्ण कहि उरसि लाय ।
यशोमति हित हरि हरख छाय ॥
पिवत चीर हरि कर धठाय ।
दरसावत सुख बाइ बाय ॥
रामसेवक सुख लहु अघाय ।
यशोमति हरि वर तनय पाय ॥१३०॥

रागिनी सोरठी

सोहै सोहै कृष्ण सिर चीरा ।
भाल तिलक धर हीरा ॥टेक॥
कटि किंकिनि धुनि मधुर सोहावनि पग पैजनियाँ न थीरा ।
कर चकई गेंदुवा अति राजित रव धुनुधुनियाँ गभीरा ॥
कनक छड़ी कोइ छन कर धरि
चलु लखि परू जनु वरवीरा ।
सिर चौतनि इत उत बहु डोलत जनु छदल हत समीरा ॥
कुडल श्रवन नाक नकबेसरि चलत मनहु सरि नीरा ।
कुंचित केस देश के हिडोलत जनु अहि इत उत फीरा ॥
अँगनैया स्फटिक काँच गच निर्त्तत जनु सरि तीरा ।
रूप परम लखि रामसेवक हरि मोहत मुनि मन धीरा ॥१३१॥
देखो देखो बाल सुख कारी ।
यशोमति रूप सवारी ॥
गोप बाल अरु हिलिमिलि नाचत
यशोमति सकल दुलारी ।
मम शिशु हित प्रतिदिन अव आवहु
खेलहु शिशु मिलि भारी ॥

सुनत यशोमति वचन बाल सब हर्ष लहेउ उर भारा।
कृष्ण सग नाचत अँगना गृह बजावत करतारी॥
बाल वृद बलदेव कृष्ण मिलि नाचत सुख ब्रज सारी।
उडगन महँ जनु चद्र महा छवि घन सग तडित तमारी॥
काम कलभ सग अमित मनहु छवि
नाचत कर कर धारी।
सुन्न कर अमित बजावत बाजन
सकल गुनिन अनुहारी॥
बाल चरित निरखत परिखत शिशु हरखित बहु नर नारी।
बाल चरित सुन रामसेवक लहु लखि बर रूप मुरारी॥१३२॥

राग श्री

हरि केलि निरखि नर नारी।
शिशु सग न तजत सुखारी॥टेक॥
कब शिशु मिलि गृह द्वार आउ हरि
एह खर पुरजन भारी।
पुरजन मन रुचि भाव जानि हरि
पेरेउ रुचि महँतारी॥
नद यशोमति बोलि जोतिषी
नेग धारु भरि थारी।
सुदिन कहहु द्विज द्वार चलन की
जेहि शिशु लहु सुख भारी॥
सुदिन सोधि मणिगन द्विज लहु बहु
स्वस्ति सुवचन उचारी।
शख नाद करि गान सुमगल
शिशु कहँ द्वार निकारी॥

भूषन वसन सवारि केस सिर
जननी बहुत दुलारी।
मुरली वेनु सुचग खेलवना
अमित पृथक कर धारी ॥
म ाक छड़ी चित्रित कर धरि वर
चरित अमित अनुसारी।
प्रमुदित रामसेवक गोपी गन
लखि वर रूप मुरारी ॥१३३॥

हरि द्वार निरखि जन धाई।
नंद द्वार चलि आई ॥टेक॥
भूषन वसन कृष्ण तन राजित निरखत लोग लोगाई।
बहु पकवान शिशु कर बाँटत नंद जु रत्न लुटाई ॥
पृथक पृथक बाजन बजवावत नाचत शिशु समुदाई।
अति आनंद नंद लहु पुरिजन यशुमति सुख अधिकाई ॥
प्रथम दिवस सुत द्वार निरखि निज
यशुमति उर हरखाई।
दान दीन्ह द्विज कर बहु निधि सन
बाजन अमित बजाई ॥
श्याम गात शिशु वदन सुन्दर
निरखत नयन लोनाई।
सकल गोप गोपी, गन प्रमुदित
एक टक रहेउ लोभाई।
शिशु लीला करि हरि नर इव बहु
जन उर प्रीति बढ़ाई ॥
व्रज पुर सुख लहु रामसेवक बहु
गोपि अधिक उर धाई ॥१३४॥

राग केदारा

खेलत कृष्ण डिंभन संग ।
देखि जन मन दंग ॥टेक॥
श्याम तन घन चमक दामिनि दाम लटक भुजंग ।
उदय गिरि पर मुकुट ललकत मनहु बाल पतंग ॥
चरन कंज नख जोति राजित जाहि निश्रित गंग ।
भूषन उडगन चंद्र मुख छबि वसन सोहु सुरंग ॥
गोप बालक संग खेलत करत नहिं मन भंग ।
क्रीडत हिलिमिलि नित्त करि बहु बढत प्रेम उमंग ॥
वदन हित मन प्रेम जन उर लपटि धरु शिशु अंग ।
किलकि मुरली शब्द करु पर बहुरि शब्द मुचंग ॥
अंग अंग छवि कोटि राजित वदन अमित अनंग ।
देखि सुख लहि रामसेवक लीन्ह मातु उछंग ॥१३५॥
खेलत संग शिशुघन धाय ।
नंद सुत मुद्दवाय ॥टेक॥
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य मुनि कोइ पाय ।
नंद यशोमति हेतु सोइ प्रभु चरित बाल देखाय ॥
गोप शिशु मिलि करत क्रीडा रंग बहु बरसाय ।
वेणु मुरली शब्द करु कोइ बाल मिलि समुदाय ॥
नित्त करु मुरुचंग मुख कर शब्द सुभग सुनाय ।
बोलि लेत ढिंग गोप गोपिन काम धुनि प्रगटाय ॥
प्रीति बाढत गोपि गन उर परस हित ललचाय ।
काम रस उर बान लागत जात शिशु नियराय ॥
देखि यशोमति बाल क्रीडा प्रीति पुत्र सोहाय ।
ध्यान करि मुनि रामसेवक उरसि गद्दु पुलकाय ॥१३६॥

दोहा

गृह आँगन करि चरित प्रभु यशुदहिं बहु सुख दीन्ह ।
नद द्वार जन सकल हित चरित अमित हरि कीन्ह ॥१॥
गोपी गन उर भाव लखि गृह गृह चरित जनाय ।
असुरन बध अब करब ध्रुव हरि एह उर ठहराय ॥२॥
निज अवतार विचारि करु हरन हेतु भुवि भार ।
सुगम अगम कहि चरित नर रामसनक भव पार ॥३॥

राग टोडी

कर हरि चरित गोपिन गृह जाय के ।
बाल, वृन्द संग लेइ इत उत धाय के ॥टेक॥

गोपी गन हरखानी देखि शिशु सुखदानी
गृह गृह निज लेइ चलु कर लाय के ।
भवन देखाइ बारी दधि घृत भाँड थारी
बैठी छीर थल सिक सहित देखाय के ॥
कृष्ण रूप देखि देखि जनम सफल लेखि
नयन पुटप पान करत अघाय के ।
सुकृत सनेह जाग मन चित अनुराग
ललित लवँग पाग उर पुलकाय के ॥
शिशु मिलि नित्त गान करि हरि मुसुकान
गोपी गन करि ध्यान उरसि बसाय के ।
ताल सुर शीप देत कर गहि गहि लेत
गोपी गन प्रमुदित शिशु न बताय के ॥
प्रथम दिवस चार गोपी करु सतकार
दधि छीर व्यवहार कर सुख पाय के ।

कृष्ण गृह चलु जब शिशु सग चलु तब
गोपी फिरि गृह आइ शिशु पहुँचाय के ॥
कृष्ण खेल सब कहु यशोमति सुख लहु
गोद लेइ मुख चूमि चीर स्व पिआय के ।
हरि गुन गान रामसेवक करत पान
लहु सुख भूरि दुख दूरि बिसराय के ॥१३७॥

हरि वर केलि सुखप्रद नर नारि के ।
गोपी गृह जात शिशु लेइ बहु यारि के ॥टेक॥

गोपिन के गृह जाइ मुरली बजाइ
रूप दरसाइ रसखानि सों पुकारि के ।
गोपी गन सुनि धाइ कृष्ण ढिग चलि आइ
प्रेम बस भई हरि बदन निहारि के ॥
निर्त्त गान देखि देखि गोपी निज निज पेखि
शिशु बोलि बोलि लेत गृह स्व दुलारि के ॥
सिखवत केलि करु मम वाक्य उर धरु
गृह आव निति एहि सुनिय बिचारि के ।
निज निज भाव गाइ गोपी गन पुलकाइ
हेतु प्रीति करु शिशु कर वर धारि के ॥
गवन स्व गृह कीन्ह कृष्ण गोपी चित दीन्ह
इत उत भाव वरु उर सुख सारि के ।
यशुमति पुलकानी शिशु लखि हरखानी
गोद राखि मुख मेलि छीर देति गारि के ॥
खेल शिशु सुनि लेत अपर बताइ देत
कृष्ण सब जानु वाक्य मानु महँतारि के ।
गोपी गन हितकार हरि केलि शुभचार
भुवि भार हरु हरि खल गन मारि के ॥

चरन सरन रामसेवक चहत मन
देहु हरि आस मम अघ औन टारि के ॥१३८॥

रागिनी सोरठो

रसखानि मुरलिया बाजी ।
सुनत गोपी गन गाजी ॥टेक॥
गोप बाल सग हिलिमिलि गावन वेणु मधुर सुर साजी ।
निर्त्तत बाल मध्य हरि सोहत तुरग मध्य जनु ताजी ॥
मुरली मुख मुरचग बजावत प्रेम रग रस माजी ।
काम कोटि शत रूप देखि हरि गोपी गन भइ राजी ॥
सिथिल भई गोपी गन धुनि सुनि काम सुरति रति जागी ।
मोहन मोहि लीन्ह गोपी गन कीन्ह चरन अनुरागी ॥
आयो कृष्ण बहुरि यशोमति ढिग करि गोपिन सुखभागी ।
कृष्ण दरस सुख रामसेवक लहु प्रीति परसपर पागी ॥१३९॥
बाजै रुनुन झुनुन पैजनियाँ ।
कटि किंकिनि रसखानियाँ ॥टेक॥
स्रन मुरली मुरुचग बजावत निर्त्तत कान नथुनियाँ ।
नकबेसरि दमकति चमकति अति सिर शोभित चौतनियाँ ॥
निर्त्तत हिलिमिलि तान तोरत शिशु सुखदायक पलटनियाँ ।
भाल विशाल तिलक अति राजित केस न जात बरनियाँ ॥
भूपन बसन निचित्र सोहावन मम हरि लेत मुसुकनियाँ ।
छवि किमि कहु शिशु मिलनि परसपर
नाचत गहि गहि पनियाँ ॥
शिशु लीला रत सकल गोपी गन प्रिय बोलत एक बनियाँ ।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु चाहत हरि चितवनियाँ ॥१४०॥

राग श्री

हरि चरित गोपिन सुखदाई ।
जेहि लीला बाल सोहाई ॥टेक॥
गोप बाल लेइ अमित संग प्रभु गोपिन गृह गृह जाईं ।
दधि घृत छीर भाँड इत उत करि रहु गृह मध्य छुपाई ॥
गोपी गन गृह चौर कर्म लखि खोजत इत उत धाईं ।
छुपि छुपि गृह गृह मर्कट इव हरि लखि लखि ओट लुकाई ॥
कोइ दिन दधि ढरकाइ देत भुवि भाँड फोरि हरखाई ।
माखन दधि कोइ दिन भोजन कर बालन देत खिआई ॥
गोपी गन कोइ छन कर धरु हरि छुअत बहुत मचलाई ।
तजि गोपी पुनि गहत जबहिं कर हरि अंग अंग लपटाई ॥
कल छल करि हरि करनि छुड़ावत चलु निज भवन पराई ।
चोर चोर कहि प्रमुदित गोपी रामसेवक सुख छाई ॥१४१॥

हरि गोपिन मन ललचाई ।
बार बार गृह जाई ॥टेक॥
जहँ गोपी निति लिपत बिसद करि चौका बिमल बनाई ।
मूत्र पुरीष करत तहँ तहँ हरि थुँकि थुँकि चलत पराई ॥
गोपी गन चलु धरन धाइ जंब कर अँगुरी चमकाई ।
इत उत चितइ बहुरि गृह प्रबिसत कर गहि भाँड उठाई ॥
दधि ढरकाइ खियाइ शिशुन कहँ माखन देत चहाई ।
उलूखल चढि सिकहर हेरत शुभ लकुट लगाई ॥
भाँड फोरि दधि भुवि बरसावत खात खव शिशुन खियाई ।
मर्कट इव इत प्रभु चितवत चौर कर्म अस भाई ॥
गोपी लखि धरु धाइ कृष्ण कर शिशु बनि भुवि मचलाई ।
निकुटाइ गयो रामसेवक गृह गोपिन सुख दरसाई ॥१४२॥

हरि बार बार पुलकाई।
आयो गोपिन गृह बहु धाई ॥टेक॥
गोपिन रूप देखाइ चपल अति इत उत गयेउ छपाई।
गोवत्सन बधन हित रजु इत उत धरेउ चोराई॥
बछरन छोरि छोरि एहि थल सन ओहि थल करु हरखाई।
गोप गोपी लखि बिस्मय करु फेर फार को लाई॥
कोउ जुगौ बन कर छोरत चौर आखि पछताई।
कोइ दिन बछरन छोरि छोरि हरि गौअन देत पिआई॥
शिशु कर तब लखि गोप गोपी गन सुख उर पुर न समाई।
बाल चरित गोपन उर भावत गोपिन अधिक सोहाई॥
कुपथ कुचाल चरित निति करु हरि
ब्रज भुवि सुख रहु छाई।
सुपथ अमृत रस चरित कृष्ण बर रामसेवक श्रुति गाई॥१४३॥
हरि गोपिन हित तन धारी।
करु चरित सकल सुख कारी ॥टेक॥
गोपिन गृह गृह जाइ बाल लेइ करत केलि सुख सारी।
दधि माखन सब शिशुन खिआवत भाँड फोर भुवि डारी॥
गोपिन कहँ सुख देत बिबिधि बिधि प्राकृत नर अनुहारी।
गोपी गन कर धरत चोर कहि मचलात कर टारी॥
भागि भवन निज गवन कीन्ह हरि यशुमति देखि दुलारी।
स्थन पान कराइ लाइ उर निरखत बदन सुखारी॥
गोपिन कर मन तन हरि पद रत चितवत नयन उघारी।
कब आवहिं हरि देर होत बहु एक टक रहु निज द्वारी॥
धाइ धाइ हरि जात गोपिन गृह पुनि पुनि मिलु महँतारी।
इत उत रुचि करु रामसेवक हरि भक्ति विनोद बिचारी॥१४४॥

राग टोडी

करुहरि लीला बहु गोपी गृह जाय के ।
यशुमति प्रीति लखि रूप दरसाय के ॥टेक॥
छन छन गोपी गृह यशुमति ढिग लहि
इत उत प्रीति रस भेद रस दाय के ।
दधि छीर भाँड फोरी सिकहर गहि तोरी
खात दधि आपु कछु शिशुन रिझाय के ॥
बछरन छोरि छोरि धेनु स्व पियाउ चोरी
रज्जु छोरि छोरी ओट धरत छपाय के ।
गोपी गन चोर कहि हँसि हँसि कर गहि
बाल इव हरि धरि अग लपटाय के ॥
केलि इत उत करि गोपी कर धरि धरि
भुवि मचलाइ गृह चलेउ पराय के ।
चलेउ हरि गृह भागी गोपी गन सग लागी
ओरहन व्याज पथ चलु अरुभाय के ॥
यशुमति ढिग जाय गोपी शिशु जस गाय
उर पुलकाय रिसि उपर जनाय के ।
दधि भाँड फोरि फोरी गारि देत जोरि जोरि
कर गहि भोरि भोरी भुवि मचलाय के ॥
सुनि ताहि क्रोध जागु बाल मोहि मद लागु
यशुमति निज गृह राखु ललचाय के ।
ओरहन देत मुख देखि रूप लेत सुख
कृष्ण पद रहु रामसेवक लोभाय के ॥१४५॥
हरि अवतार सुखकर नर नारि के ।
चरित विशेष ब्रज भुवि रुज टारि के ॥टेक॥

गोपी गन छन मन तजत न कृष्ण जन
प्रीति इत उत कनि कहत दुलारि के ।
गोपी गन प्रीति जानी हरि उर पहिचानी
गृह गृह जाइ रुचि करत सवारि के ॥
छपि छपि गृह जाइ चोरी चोरी दधि खाइ
ब्रह्म अज अखिलाइ सकल विसारि के ।
गोपी गन लखि धाइ चोर कहि कहि गाइ
हरि मुसुकाइ दधि भुवितल डारि के ॥
कर गहि लपटाइ बल्ली इव अरुझाइ
गोपी गन सुखदाइ हँसु कर धारि के ।
इत उत बिलगाइ भुवि गिरु मचलाइ
कर चमकाइ गृह चलेउ प्रचारि के ॥
गोपी सग चलु धाइ उर पुर पुलकाइ
चोर चोर बहु गाइ गलिन पुकारि के ।
यशुमति ढिग जाइ ओरहन देत गाइ
कृष्ण पद ध्यान लाइ रहु मन मारि के ॥
गोपी गन धुनि सुनि यशुमति उर गुनि
सुत अपराध नहिं कहु दुतिबारि के ।
नेत्र कर डोलि डोली गोपी नहिं मुख खोली
गृह चलु बोली रामसेवक निहारि के ॥१४६॥

राग केदारा

कहु कबि कृष्ण जस किमि गाय ।
अगम महिमा सुगम कर जग बुद्धि नहिं ठहराय ॥टेक॥
ब्रह्म अज अखिलेश पूरण एक त्रयपुर छाय ।
कहत सेस महेश बुध श्रुति ध्यान महँ कोइ पाय ॥

करत लीला भक्त भुवि हित रूप प्रगट देखाय।
प्राकृत नर इव चरित सोइ हरि कहत करि सकुचाय॥
गोपिन के गृह जाइ प्रविसत बाल अमित लेवाय।
चौर इव इत उत विलोकत खाइ दधिय रिझाय॥
गोपी गन कहि चौर धरु कर लपटि तन मचलाय।
छुट करि निकुटाय निज गृह आय शिशु लेइ धाय॥
गोपी गन मग व्याज ओरहन आइ उर पुलकाय।
हेरि रूप हरि रामसेवक राखु हृदयें बसाय॥१४७॥
ओरहन सुनत यशुमति माय।
कहत गोपिन गाय॥टेक॥
बाल अति मम तनय देखहु जात किमि यहु धाय।
खात दधि किमि भाँड फोरत धेनु देत पिआय॥
जुगा तुम मम देखु बालक अग कहि लपटाय।
देत गाली कवनि विधि तोहि बात नहि फरचाय॥
पुत्र नहिं मम करत तव कछु कहत बात बनाय।
भाँड बहु मम गृहे गोरस नेक नहिं शिशु खाय॥
जाउ निज निज भवन तुम सब झूठ नाहिं सोहाय।
नेक नहि अपराध मम शिशु नाहि तव गृह जाय॥
सुनत यशुमति बात गोपी रहत कृष्ण लोभाय।
राखि हरि उर रामसेवक जात भवन बोलाय॥१४८॥

रागिनी धनाश्री

शिशु ओरहन प्रिय निति लागै।
प्रीति परसपर जागै॥टेक॥
कृष्ण गोपिन की प्रीति अगम लखि प्रतिछन गृह गृह बागै।
सग मग निति गृह चलि आवत देइ ओरहन अनुरागै॥

यशुमति बरजहु अपन बाल एह दधि माखन नहिं मागै ।
भाँड फोरि दधि घृत ढरकावत गहन चलै तब भागै ॥
बाधि राखु गृह जात नहीं सहि बटि रेसम बर तागै ।
सकल शिशुन कहँ बँधन लावहु राखहु एकइ धागै ॥
एक सूत्र बछरा जिमि बाँधत गृह राखत तिमि छागै ।
गोपी गति किमि रामसेवक कहु जेहि उर प्रेम की दागै ॥१४९॥

सुनि ओरहन उर अकुलाई ।
यशुमति सुतहिं बुझाई ॥टेक॥
मम गृह बहु दधि चीर सुमाखन
बहु पकवान मिठाई ।
पर गृह किमि तुम ढुढत फेरु
शिशु ओरहन निति बहु पाई ॥
बाँधब तोहिं मारब एहि साटिन
ओरहन नहिं सहि जाई ।
निति कर ओरहन रोग बढत उर
सहत सहतहिं गरुवाई ॥
अब फोटि बहत कहत तोहि मारब
सुनि सुख लहत लोगाई ।
सुनत कृष्ण मुख सन नहिं बोलत गोपिन बहुत सोहाई ॥
सुसुकि सुसुकि कर नयन मिजत हरि
जननी बहुत रिसि आई ।
ग्रसित कृष्ण जननी निज मानत
जेहि हरि सकल डेराई ॥
ज्ञान ध्यान करि लहत कोइ उर
एह सुख भक्ति बडाई ।
बाल केलि रस रामसेवक सुखहरि ब्रज जन दरसाई ॥१५०॥

राग गौरी

जननी हम नाहि दधि खाई ।
भाँड नहीं कोइ फोरु लकुट सन नहिं कोइ दधि ढरकाई ॥टेक॥
बछरा नहिं रज्जु इत उत करु नहि कोइ धेनु पिआई ।
मूत्र पुरीप नहीं कोइ गृह नहि अग धरि लपटाई ॥
कह तरुणी एह सकल गोपी गन किमि एन्ह सन अरुझाई ।
हम शिशु तव ढिग रहत सदा पुनि तुम देखत रहु माई ॥
साचि केहि विधि केहि निहोरउँ तुम माता हौ सदाई ।
सकल गोपी गन हँसत देखु मोहिं मिथ्या दोस लगाई ॥
किमि पतिआत सदा तुम देखत कहु एह बात बनाई ।
यशुमति सुनि शिशु वचन मानि ध्रुव स्थन पान कराई ॥
मुख चूमत पछतात कारि रिसि बार बार उर लाई ।
ब्रह्मानद रस रामसेवक सुख हरि शिशु तन दरसाई ॥१५१॥

निरखत कृष्ण रूप ब्रज नारी ।
उर लहु सुख अति भारी ॥टेक॥
निज निज गृह करु केलि चोर कहि
दिलि मिलि तन कर धारी ।
प्रात काल करु ध्यान कृष्ण उर साँझ समय सुख सारी ॥
ओरहन न्याज सग हरि आवत गावत चरित सवारी ।
चोरी करु तव सुत यशुमति दधि धरत देत बहु गारी ॥
तव ढिग साधु रहत शिशु सम एह मानव तोहि महँतारी ।
तरुण प्रवल गोपिन मिलि गरजत गारी देत प्रचारी ॥
लपटि झपटि चनकाइ धरत कर झकझोरत त्रिय मारी ।
देखत छोट खोट तव बालक राखहु भवन दुलारी ॥
ओरहन देत यशुमति सन अस सान मो कृष्ण पुकारी ।
चलत भवन कहु रामसेवक सत्र आवहु बेगि मुरारी ॥१५२॥

रागिनी सोरठी गति टोमरी

छोटी छोटी छोटी अति छोटी घुनघुनियाँ।
बाजत सु छोटी राग रुनुझुनु सुनियाँ ॥टेक॥
कनक मई सुसाटी कर सोहै
छोटी लाठी लोटी छोटी शुचि चीर पान की करनियाँ।
चकई सु छोटी छोटी जड़ित सु मोती छोटी
गेन्दुवा सु छोटी छोटी स्वरण बरनियाँ ॥
छोटी छोटी अंगुली सु मुदरी सु छोटी अति
नख जोति मोती जनु पंकज दलनियाँ।
छोटी छोटी मुरली मृचँग वेणु अति छोटी
कनक जड़ित पोर पोर बहु मनियाँ ॥
छोटी छोटी धोती कटि पनहीं सु छोटी पद
ललित कनक चहैं सब सुरस खनियाँ।
छोटी छोटी पद अँगुली सु नख जोती मोती
छोटी छोटी राग छोटी पद पैजनियाँ ॥
छोटी छोटी अँग सँग भूषन सु छोटी छोटी
छोटी छोटी ग्रँथी वर कटि करधनियाँ।
कँचुकी सु छोटी छोटी सिर टोपी अति छोटी
कनक जड़ित सिर छोटी चौतनियाँ ॥
छोटी छोटी चीर बहु रँग को पलँग छोटी
नदरानी शिशु हित देव निज पनियाँ।
छोटे छोटे बाल रामसेवक सुसँग श्याम
प्रिय अति लागु हरि तोतरी बचनियाँ ॥१५३॥

छोटे छोटे बाल सँग करत मिलनियाँ।
सिखवत यशुमति बोलनी चलनियाँ ॥टेक॥

छोटी छोटी लाठी शुभ कनक रचित गाँठी
चकई भराइ कर लटु लटकनियाँ।
छोटी छोटी पनहीं पयेजनी सु छोटी छोटी
पहिरन हित चरु करधनियाँ॥
कंचुकी सु छोटी सिर कुल्ही ललित छोटी
देत सु बनाइ सिर छोटी धौतनियाँ।
यशुमति सुत हित गेल यहु निरखत
छोटी छोटी गुडिया सुरंगनि जु पनियाँ॥
छोटी छोटी मुरली मृचँग बेणु अति छोटी
कर गहि सिखवत सकल बजनियाँ।
छोटी छोटी अँगुली मो छोटी छोटी मुदरी
छोटी छोटी मणि छोटी कनक की कनियाँ॥
छोटी छोटी नथुनी सु कान नाक अति छोटी
छोटी छोटी मोती सु जडित छोटी मनियाँ।
छोटी छोटी येम लटकनि शुचि छोटी छोटी
करते सवारी मानो छोटी सेस फनियाँ॥
अँग अँग शत काम निरखत तन श्याम
शोभा नहिं जात कहि पद सुख खनियाँ।
वदन निरखि रामसेवक पुरित काम
मन हरि लेत हरि शिशु चितवनियाँ॥१५४॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित सग वाल कृष्ण शोभा छवि छाई।
जननी निज हाथ चीर भूपन पहिराई॥टेक॥
कँचुकी अमूल्य वारि कुलही शिर कर सुधारि,
स्वर्ण सूत्र रचित पचित मोती चहुँलाई॥

गल मो डारि भुजा वारि कुलही सिर वर सुधारि
यशुमति दुलारि हाथ फेरत हरखाई।
भूषन पहिराइ अँग दीन्हेउँ करि वाल सँग
निरखत नर नारि कृष्ण रूप की लोनाई॥
मुरली शुभ अधर लाइ कर सुचग वेणु पाइ
शृँगी हित नाद कर धराइ गति वताई।
कुँडल छवि करण लोल नथुनी नासा अमोल
कुँचित कच वेस श्याम; देखि मन लोभाई॥
पैजनी पद सुभ्र रेख मनसिज जनु अमित वेष
कटि को सूत्र अति अनूप शोभा जनु धाई।
कनक छडी सुभ्र हाथ वाल वृँद कृष्ण साथ
मनहु घन समूह तडित निरखत समुदाई॥
चलत मिलत वाल सँग निरखत अँग छवि अनँग
मोहत नर नारि देखि चचल चवसाई।
कल कपोल देखि लोग ध्यान रसिक करत
जोग नयन कमल चरन सीस भाल मन लगाई॥
गोपी गन गोप वाल रामसेवक सुख निहाल
अर्थ धर्म काम मोक्ष कृष्ण देखि पाई॥१५५॥
राजित श्रीकृष्ण राम शोभा शत कोटि काम
मेघ तडित सघन मनो इन्दु शत तमारी।
भूषन वर वसन वारि अग अति सुरग सारि
जननी निज हाथ सीस केस वहु सवारी॥टेक॥
कचुक मन मोल लेत बेष्टन सिर सकल देत
अर्थ धर्म काम मोक्ष लहत निरखि झारी।
पैजनी पद पनहिं देखि किंकणी कटि झलक फेरि
मनहु मीन केतु सहित वाहन तन धारी॥

कुंडल झप रूप लोल बेसरि नक मधुर डोल
झलकत जनु मीन बिमल पाय भरित बारी ।
चौतनी सिर ललित लाल केस मधुप लटक व्याल
निरखत नर नारि बदन लहत प्रेम भारी॥
मुरली शुचि अधर लाय कनक साटि कर लगाय
फेरत चित चोरि लेत करत जन सुरारी ।
देखत कल ग्रीव हार चलत अमित सरित धार
नारि नर समूह देह गेह सुधि बिसारी ॥
कमल नयन तिलक भाल मुक्ता मणि मनहु जाल
शोभा शत कोटि काम दायक फलचारी ।
देखत नर नारि भूरि कोइ सनिकट कोइ दूरि
पावत सुख अचल लोक शोक हरु सुरारी ॥
गोपी गन गोप साथ शोभित बहु सग साथ
यशुमति कर धारि गोद लीन्ह सुत दुलारी ।
भक्ति नात अति अपार बस्य जाहि जग अधार
रामसेवक रात्रि दिवस रूप हरि निहारी ॥१५६॥

रागिनी जैतिश्री

निति सिखवत शिशुहिं दुलारी ।
एह बछरा धेनु तुमारी ॥टेक॥
जाइ दुहाइ दुध गृह ल्यावहु सग सग घर फर भारी ।
थल थल बछरन बाँधु आनि निज रज्जु धरहु पियारी ॥
दधि बर सीर खाहु रुचि माखन जनि कोइ कहँ देउ गारी ।
धेनु अमित तव गृह बछरू बहु देखत रहहु सुखारी ॥
पर गृह प्रविसत होत हृदय दुख दूरि करहु ब्रज नारी ।
गृह आँगन बछरन थल डोलहु देखहु नयन उघारी ॥

शिशु विनोद बहु शिशु लेइ करु गृह बलि बलि जाय महँतारी।
हरखित रहु दिन रयन चयन लहि सुत तव वदन निहारी॥
यशुमति अस सिख देत मानि सुत त्रिभुवन नाथ विसारी।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु परसत चरन मुरारी॥१५७॥
सुनि मातु वचन अनुसारो।
हरि प्राकृत शिशु सम चारो॥टेक॥
बछरन संग संग जात दुहावन कनक छड़ी कर धारी।
बछरन की रज्जु गौवन जुत चिन्हि चिन्हि धरत सवारी॥
दुहनी दुध धरावत निज गृह गोप बाल अनुहारी।
देखि देखि आचरन कृष्ण कर हरखित बहु महँतारी॥
तेल फुलेल रंग बहु उपटन शिशु अंग लाइ दुलारी।
स्थन पान करावत प्रमुदित निज जानू बैठारी॥
वदन निरखि कर केस सवाँरत श्रम हरि करत सुखारी।
यशुमति सुख सम अपर नहीं लहु ब्रह्मादिक त्रिपुरारी॥
बाल विनोद परम सुख लहु निति ब्रजवासी नर नारी।
यशुमति सुख लहु रामसेवक वर जिमि सुवितल अधिकारी॥१५८॥

रागिनी सोरठी

कीन्ह्यों हरि गवना री लड़ीली के भवनवाँ।
वेगि नहिं होइ सखी कृष्ण को अवनवाँ॥टेक॥
राधा रानी महारानी चतुरी सयानी ज्ञानी
रूप को निधान वर जानत जहनवाँ।
करि को शृँगार वर हरि बैठाइ घर
दधिय खियाइ कर हरि लेइ मनवाँ॥
दुरि नहिं कोइ ग्राम देखि परु सोइ धाम
हिलि मिलि चिमि सखी करहु गवनवाँ।

कुलपति लाज तजि किमि चलु गृह भजि
झिन झिन वृष्टि होत मास री सवनवाँ ॥
कोइ भाव ग्राम चली रीति प्रीति करि अली
उर होत राधा कन्या वृषभनवाँ ।
नंद-वृषभान की मिताइ तिहुँ पुर छाइ
चलि पछताव सखी नहिं रही सुनवाँ ॥
गोपी गन उर श्याम हरि पद जल आस
पथ चितवत मन गगन पवनवाँ ।
करत विनोद रामसेवक के हरि गोद छन नहिं
त्याग चाह राधा जु रवनवाँ ॥१५९॥
सुराधा के भवनवाँ मो हरि चलि जाई री ।
मूरली बजाइ रूप दरसी लौभाई री ॥टेक॥
राधा गृह हरि पाइ कर गहि बैठाइ
रीति तौ पुरानी प्रीति नइ करवाई री ।
प्रथम मिलाय करि हँसि हँसि कर धरि
दधि दुध आगे आनी मिरा सुरा पाई री ॥
करि सतकार सार धूप दीप व्यवहार
करि थिर ध्यान रूप उर बैठाई री ।
करि उर केलि रस भोग वर जोग बस
नयन उघारि देखु हरि मुसुकाई री ॥
देखि देखि लपटाइ प्रगट सो अग लाइ
राधा चहुँ ओर हरि रूप वर पाई री ।
ज्ञान दृष्टि उर देखु नयन प्रगट पेखु
हरि रूप राधा कवि एक ठहराई री ॥
गोपी गन राधा गुन कहत बिरह मन
हरि प्रीति लखि इत उत रटु छाई री ।

रूप तव अगम रामसेवक सुगम लहु
भक्ति नात वर हरि फल दरसाई री ॥१६०॥

राग केदारा

बर हरि बाल केलि अघाय ।
जननि सुख दरसाय ॥टेक॥
भवन गोपिन गवन करु हरि प्रथम वेणु बजाय ।
मोहि गोपिन करत क्रीड़ा धारि कर लपटाय ॥
अंग अंग अनंग करि हरि गोपी नर तिय बनाय ।
क्रीडत हरि शिशु रूप धरि बर सकल गृह गृह धाय ॥
होत बीडा कहत कवि उर कहै केहि विधि गाय ।
प्राकृत नर नहिं करत अस कोइ करत उर सकुचाय ॥
ब्रह्म अज अखिलेश पूरण क्रीडत सकल गवाय ।
राधिका गृह गवन करु जब सुरति मन चित लाय ॥
अँग अँग प्रति सग क्रीडत देह सुधि बिसराय ।
ब्रह्म रस सुख रामसेवक राधिका बर पाय ॥१६१॥
हरि बर रूप लखि ब्रज नारि ।
उरसि राखु सवारि ॥टेक॥
क्रीडत बाल संग जब हरि कनक साटी धारि ।
फेरत लाठी काँध इत उत धेनु शिशुन दुलारि ॥
लेइ बछरन धेनु ढिग करु प्रेम करि चुचुकारि ।
लेइ दुध लिआइ बालन कीन्ह मातु सुखारि ॥
बहुरि बछरन छोरि निज कर देखि यमुना बारि ।
पियत हरि जस पिवत वछरू मगन होय आयो द्वारि ॥
नारि नर ब्रज कृष्ण लीला कहत सुनत निहारि ।
बाल लीला रामसेवक अमृत सदृश मुरारि ॥१६२॥

राग श्री

हरि बछरन संग संग धाई ।
करि गोप बाल अगुवाई ॥टेक॥
नंद यशुमति करि संवत वर गनक ते सुदिन धराई ।
चरावन हित बछरा प्रेम जुत कृष्णहिं बहुत सिखाई ॥
कुल व्यवहार सुनाइ बाल संग करि निति नेम बताई ।
जुत बेला गृह जान चवन की नंद जु मुदित बुझाई ॥
सिकहर काँध धराइ दीन्ह शुचि बिंजन सब जेहि ठाईं ।
रोटी धरि सिकहर पर काँधे संग सुसंग सोहाईं ॥
बछर चराइ लेइ गृह आये हरि नइ नेह बढ़ाई ।
यशुमति पद मर्दन बहु बिधि करु बार बार उर लाई ॥
गोपी गन गृह गृह सन धाइ जनु बहु दिवस पाई ।
पान करत हरि रूप नयन पुट रामसेवक न अघाई ॥१६३॥
हरि सिकहर काँध सवारी ।
भोजन हित रोटी बिंजन बहु सिकहर मध्य सुधारी ॥टेक॥
गोबत्सन संग चलेउ बाल मिलि कनक छड़ी कर धारी ।
चरावन हित धेनु बत्स हरि हरस लहत जनु भारी ॥
प्राकृत शिशु सम खेलत बोलत डोलत सम बनचारी ।
हरित घास चौंथि चौंथि निज कर हरि बछरन देत दुलारी ॥
सिकहर खोलि खात बालन मिलि एक एक रोटी निहारी ।
मोंकि हमारि तुमारी नहीं निकि हँसि हँसि कहत पुकारी ॥
चिखि चिखि बिंजन सकल चिरावत बाल बचन अनुसारी ।
बत्स लेइ शिशु संग गृह आवत धाइ धरत महँतारी ॥
मर्दन करि पद भोजन करावत आइ मिलत व्रज नारी ।
प्राण गये लहि रामसेवक सुख तिमि लहु मिलत मुरारी १६४॥

राग टोडो

आयें हरि गृह निज बछरा चराय के।
सग बहु गोपवाल सुख उपजाय के ॥टेक॥
नंद नंदरानी ज्ञानी सुन निज पहिचानी
उठि अकुलानी कर धरु हरखाय के।
गोद बैठाइ मुख चुमि चुमि बलि जाइ
भोजन कराइ उर बहु पुलकाय के॥
पद मर्दन करि पथ श्रम शिशु हरि
अँग अँग उपटन बहु निधि लाय के।
बदन निहारी सारी केस बेवराई वारी
ब्रह्म रस सुख उर पुर रहु छाय के॥
बछरा चराइ आइ गोपी गन सुनि धाइ
हरि रूप प्यास पान करत अघाय के।
छन जुग सम जात हरि जब बिलगात
गोपी गन पछतात मन को पठाय के॥
निरखि बदन हरि गोपी गन उर धरि
तन गृह राखु मन हरि मो समाय के।
मन तन लपटानी गोपी गन गुरु ज्ञानी
राधा रानी महारानी किमि कहु गाय के॥
बछरन सँग जात बन दधि भात खात
गोप बाल हिलि मिलि पुनि जाय आय के।
कृष्ण पद छोम रामसेवक उरसि लोभ
ब्रज नर नारी रूप रहत लोभाय के॥१६५॥
चलेउ हरि बछरन सँग सुख सारि के।
मुरली बजाइ गोप बालन पुकारि के ॥टेक॥

काँधे सिकहर करि रोटी छोटी मोटी धरि
दधि भात माखन सु बिंजन सवारि के।
बछरन आगे करि शिशु मिलि तीर सरि
बन तृण लरि वर बेंत कर धारि के ॥
चरन लगेउ बछा शिशु न तजेउ पछा
खेलन लगेउ खेल सिकु भुनि डारि के।
एक एक साथ करि कर सन कर धरि
हँसि हँसि भुवि गिरु आगे पीछे टारि के ॥
कर गहि घुमि घुमि थिर होहिं डुमि डुमि
हरख लहहिं भुवि गिरत पछारि के।
चलत जयहिं धाइ कोइ गहि लपटाइ
कोइ दुरि जात कोइ धरु परचारि के ॥
बाल सु विनोद करि भात खाइ तट सरि
गृह आउ हरि शिशु बछरा दुलारि के।
यशुमति सुत लही गोद खरि दीन्ह दही
कृष्ण सुत बनि सुख दीन्ह महँतारि के ॥
गोपी गन कृष्ण लहु बार बार अस कहु
तुम बिनु दीन जिमि मीन बिनु बारि के।
छन छन रीति रामसेवक बढ़त प्रीति
ब्रज नर नारी नेह चरन मुरारि के ॥१६६॥

रागिनी सोरठी

राधा के भवनवाँ मो कीन्ह्यो हरि गवना री।
कोइ बिधि वेगि नहीं होइ गृह अवना री ॥टेक॥
करिके शृंगार बर मणि दीप बारि घर,
रूप दरसाइ हरि लेत हरि मना री।

चरन कमल धुनि मन रस बस गुनि
भृंग जनु डोलु बहु बोलु मनभना री ॥
कनक मई बनाइ रेशम की डोरि लाइ
मणि गन रचि पचि करु पलना री।
हरि पवँढाइ धाइ अँग अँग कर लाइ
झुलत झुलाइ सँग सँग चलना री ॥
मारवन सु मिश्री लाइ गिरा रव कर रिझाइ
दधि ओट लाइ कहि कहि ललना री।
पलना झुलाइ गाइ हरि जस मन लाइ
प्रेम जुत उपटन अँग अँग मलना री ॥
प्रेम बस ब्रज नारी उर पुर हरि धारी
विरह बिवस अस मिलि भनना री।
ललिता लवँग रामसेवक करत सग
राधा आगे हम सब का गनना री ॥१६७॥

राधा गृह केलि हरि करु अँगना री।
विधि सन तप फल वर मँगना री ॥टेक॥
हरि प्रिय होंहि मोहिं अस वर माँगु तोहि
विधि हरि दीन्ह वर अचल न गवना री।
पूर्व बल तप राधा करत न कोइ बाधा
बार बार जात हरि राधा जु के भवना री ॥
तप बल अधिकार राधा करु शुभचार
हँसि हँसि कर गहि ढिग बैठवना री।
बहुरी हरी उठाइ अँग प्रति अँग लाइ
कर लेइ निज अँग धरना री ॥
मन भावै जोइ जोइ करवावै सोइ सोइ
राधा वस अस हरि सब करना री।

पलना झुलाइ गाइ मुसुकाइ उर लाइ राधा
हरि लीला मन चित के झुलवना री ॥
कहत सुनत रामसेवक लहत श्याम
भक्ति ज्ञान थित उर मन करु पवना री ॥१६८॥

राग केदारा

हरि जस करत सुर मुनि गान ।
रूप वर करि ध्यान ॥टेक॥
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य जोइ भगवान ।
बाल लीला करत सोइ हरि जगत हित कल्यान ॥
डिंभ लीला करत नर इव कहत सुनत सयान ।
होत पावन अधम नर भव परत नहिं लहि ज्ञान ॥
गोप गोपी भाग्य बरनत वेद सकल पुरान ।
निगि कहि हँसि सुनत गावत कृष्ण हरत मलान ॥
गोप बालन संग धावत करत बछरन आन ।
चौर कृत करि अनृत बोलत गोपिन अंग लपटान ॥
कृष्ण कह अस कहत सुनत हँसत लहु निरवान ।
कहै गुन किमि रामसेवक कृष्ण मम धन प्रान ॥१६९॥
यशुमति सुदिन द्विजन सोधाय ।
कहेउ कृष्ण ते गाय ॥टेक॥
जाहु बालन संग अब सुत आउ गौव चराय ।
लेहु रोटी धारि मिस्हर देत माखन लाय ॥
सुनत जननी वचन वर हरि प्रकृत इव हरखाय ।
गोप बालन बोलि लीन्हों चल्यो बन सचुपाय ॥
अग्र करि बहु धेनु शिशु मिलि वेणु शृंगि बजाय ।
हरित तृण महँ धेनु करि सब दीन्ह बहु पवँढाय ॥

धारि सिकहर शून्य थल सब खेल खेलु अघाय।
बाल लीला कारि हिलि मिलि खाय खाय पुलकाय॥
तृप्त लखि सब धेनु निज निज चलेउ गृह समुदाय।
धेनुशाला रामसेवक धेनु करि गृह आय॥१७०॥

राग श्री

हरि धेनु चरावन जाई।
बहु गोपबाल सग लाई॥टेक॥
आवत जात स्वमाम निकट हरि मुरली करि शब्द सुनाई।
गोपिन कर गत प्राण कृष्ण बिनु एहि विधि नाथ जिवाई॥
गोपी गन सुनि शब्द मुरलि बर मन हरि साथ पठाई।
तन गृह राखु छपाइ नयन रुचि सुनत बहुरि उठि धाई॥
जाइ निकट हरि रूप बिलोकत एक टक रहत लोभाई।
जाहि अबहि नहि दूरि कतहुँ हरि कर गहि उर लपटाई॥
तन मन सकल कृष्ण गोपिन कर श्रुति बहु एक समाई।
अपर चरित हित जात कृष्ण वन ब्याज सुधेनु चराई॥
असुर बधन हित केलि करत वन जोइ शिशु सकल सोहाई।
कृष्ण चरित कहि रामसेवक सुनि कलि जन बहु सुख पाई॥१७१॥
हरि गोपबाल अनुहारी।
करु चरित सकल सुखकारी॥टेका॥
गौव चरन जब लागु हरित तृन कृष्ण बाल मिलि झारी।
सिकहर अन्न सहित सब धरि शिशु लाठी सकल सुखि पारी॥
हिलि मिलि क्रीडा लागु करन सन गोला काष्ठ सवारी।
लेइ डाकुट भुवि तल शिशु मारत इत उत गोला टारी॥
हँसि हँसि गोला इत उत टारत गाडत बहुरि उगारी।
एही चरित करि अपर करन प्रभु सुनि नहु रेखा सारी॥

छिपि छिपि ओट चिन्ह मुनि करु बहु पुनि खोजत सुबिचारा।
अपर खेल खेलत विह्वल शिशु बका असुर हरि मारी॥
भोजन करि विस्मय लहि सब शिशु भवन आइ बिस्तारी।
बका असुर वध रामसेवक सुनि हरखित ब्रज नर नारी॥१७७॥

राग टोडो

हरि वर चरित्त कहत बुध गाई के।
धेनु लेइ बाल सग वन सु जाई के॥टेक॥
धनु सब धाम चर बाल मिलि केलि करु
भुवि भार हरु व्याज खेल मन लाई के।
दुइ फाट करि हरि इत उत कर धरि
म य एक चहुँ दिशि करेउ बुझाई के॥
मध्य महँ बाल जोइ धरत प्रचारि सोइ
वारि इव शिशु छुइ चलत पराई के।
इत सब धरि जात उत सब छुइ जात
जीति जोइ सोइ शिशु हँसत ठठाई के॥
एक एक भुजा धरि एक एक कर धरि
कोठा दुइ कारि तेहि शिशुन चढाई के।
इत उत लेइ चरु चमर सो शिर फेरु
हँसि हँसि हिलि मिलि चलु सग धाई के॥
क्रीडा कोइ अस करु नेत्र निज कर धरु
कोइ सिर छुइ ढिग रहत छपाई के।
बुझि पर जोइ जाइ काँध चढु शिशु सोइ
जहाँ की वदान तहाँ जाय थल आई के॥
अस क्रीडा हरि करि भुवि भार चर हरि
अमित असुर जभि जस भुवि छाई के।

गृह गृह आइ रामसेवक शिशुन गाइ
सुनि हरि जस जन रहु पुलकाइ के ॥१७३॥

हरि करै केलि शिशु सँग सुख सारि के।
मछुरन सग बन भुविम्ज टारि के ॥टेक॥

चिन्ह भुवि खाचि खाचि इत उत रग राचि
चहुँ फेर कोठा कारि गोटीं बहु धारि के।
बादी कछु राइ लाइ हार जिति गाइ गाइ
हँसि हँसि लेत शिशु शिशु बैठारि के ॥
एक चिन्ह लबा करि बगल सु दुइ धरि
कोठा बिच बिच गढ़ी लघु ईंटि यारि के।
एक पद उर्द्ध कारि एक पद सिल टारि
चिन्ह डाकि डाकि चलु पद सन मारि के ॥
अस केलि देखि देखि असुरन ईश पेखि
छपि छपि रूप आयो शिशुन निहारि के।
बछरन सुख करि शिशुन समेटि धरि
हरि अघा बका मार बदन बिदारि के ॥
कस दूत मजबूत कृष्ण खेल अद्भुत
देव मुनि देखि करै बिनय पुकारि के।
शिशु सुख सब लहु आइ गृह गृह कहु
सुनि नर नारी शिशु राखत दुलारि के ॥
सुख तिहुँ लोक लहु कस सुनि दुख सहु
सुख बहु देत हरि ब्रज नर नारि के।
भक्ति ज्ञान कहि रामसेवक सुनत लहि
बाल केलि सुख प्रद परम मुरारि के ॥१७४॥

रागिनी धनाश्री

हरि अघा बका रिपु मारी।
किये लोक समस्त सुखारी ॥टेक॥
सुर मुनि निकट आइ स्तुति करु जैति जैति धुनि धारी।
निज निज दुख कहि भवन चलेउ सुर रूप अनूप निहारी ॥
सुनि अचरज व्रज नारि लहत नर विस्मय लहु महँतारी।
जो शिशु बदन लोक त्रय देउ कोइ समय गरुव पुकारी ॥
नहि निश्वास ब्रह्म हरि आवत सुत भ्रुर मानि विसारी।
हरि क्रीडा हित ज्ञान देत सुत जेहि सुख लहु व्रज नारी ॥
मृतिका छाल बहुरि अब भाखत शिशु गरुवाइ बिचारी।
गोद लीन्ह यशुमति सुत लखि निज छोर पिआवत गारी ॥
गरुव भयो हरि शत परवत सम भार न सहु भुवि डारी।
असुर बधन हित रामसेवक जस कबहूँ न कहु सुत भारी ॥१७५॥
हरि रूप अगम सुविसारी।
सुन बुद्धि लहत महँतारी ॥टेका॥
मृतिका जब हरि खायो शिशुन मिलि प्राकृत शिशु अनुहारी।
सकल बाल मिलि कहु जननी सन जेहि मारै देइ गारी ॥
हँसन हेतु शिशु पुनि पुनि भाखत मृतिका मुख बहु धारी।
सुनत यशोमति छडिय लेइ कर त्रास देखावत भारी ॥
मारु मारु कहि लीन्ह गोद सुत करि गहि भुवि बैठारी।
भाखत तोहि रज्जु गहि बाँधव किमि मृतिका मुख डारी ॥
शिशुन कहनि पतियात कबहूँ नहिं हलधर कहु यहि पारी।
तव भ्राता बलदेव सत्य कहु तेहि ते तोहि अब मारी ॥
सुसुकि सुसुकि हरि कहत जननि सन मिथ्या सकल पुकारी।
मुख देखहु कहु रामसेवक मम देखु जगत ओंजियारी ॥१७६॥

राग टोडी

शिशु मुख यशुमति देखत निचारि के ।
कर निज लाइ नहिं मृतिका तनिक पाइ
विस्मय लह सुत बदन निहारि के ।।टेक।।'
तीहुँ लोक जीव हेरि देव मुनि पितृ पेखि
वरुण कुबेर यम भूत गन झारि के ।
अनल पवन लखु रूप रवि शशि देखु
दस दिगपाल पच लोकपाल धारि के ।।
सुर नारी आदि सति सकल विलोकि गति
सुरपाल अज रूप लखु त्रिपुरारि के ।
वन परवत देखु नदी नार सिंधु पेखु
भवलोक रूप देखि भुवि नर नारि के ।।
देखि ब्रह्मांड भांड सात दीप नव खंड
माया परचंड दड नयन उघारि के ।
देखि देखि उर त्रास जीवन की नहिं आस
कंपित सुगात सुत हित थिर धारि के ।।
हरि माया हरि लीन्ह सुत हित ज्ञान दीन्ह
दुख अति देखि सुखी करु महँतारि के ।
छीर नीधि तीर देवा जन्म हेतु कर सेवा
गर्भ काल विनय बहु करत दुलारि के ।।
बाल बछ अज हरु इन्द्र रिसि वृष्टि करु
पूर्व रीति प्रीति ब्रह्म सुरति बिसारि के ।
परम अगम रामसेवक सुगम लखु
माया ओट आपु हरि देत जब टारि के ।।१७७।।

हरि गति कोइ विधि नहिं कहि जाई री ।
बार बार मातु ढिग जाइ सचलाई री ।।टेक।।

जोग करि लहि ज्ञान मुनि कोइ लहु ध्यान
ब्रह्म अज अगुण न सगुन जनाई री।
अगम निगम सम कबहीं नहीं सुगम
सोइ बाल मिलि हरि करु लरिकाई री ॥
कोइ बाल बछा बनि कोइ छाग छूक बनि
कोइ चोर साहु होय बुझत बुझाई री।
घगुली न भात लेत खात स्व रिसयाइ देत
एक छुइ चलु एक कर धरु धाई री ॥
दधि घृत करु चोरी गृह गृह भाँड फोरी
अनृत कहत गोपी अग लपटाई री॥
तरु पद गहि गहि लटकि भटकि कहि
पटकि पटकि भुवि करत कुठाई री ॥
मरकट इव इत उत ताकत जीव
गृहपाल देखि चलु चिहुँकि पराई री।
अज इन्द्र जिमि यशुमति भूलु तिमि
जब हरि नर बनु अखिल गवाई री ॥
हरि बर करु लीला तिहुँ पुर दानशीला
भुवि भार हरु खल असुर नसाई री ॥
ब्रह्म अज केलि रामसेवक जगत खेल
कहि सुनि नर नारी हरि पद पाई री ॥१७८॥

राग केदारा

हरि कर चरित किमि कहु गाय।
जाकर नहिं कोइ आदि पावत अत नाहि जनाय ॥टेक॥
बाल लीला करत नर इव कहत कवि सकुचाय।
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य किमि दरसाय ॥

भक्त हित अवतार बहु हरि मोपि नहिं असराय ।
कृष्ण लीला देखि सुर मुनि पिवत नयन अघाय ॥
भूलि जात नहिं लखत हरि बन माया रहु उर छाय ।
देव जहँ भुलि लखत नाहीं मातु नहिं पछताय ॥
मातु निज सुत मानि ताडत पूर्ण दृष्टि भुलाय ।
देव भूलत नर न अस कर करत उरसि लजाय ॥
कृष्ण लीला अगम दुस्तर मोरि मति न समाय ।
त्राहि त्राहि कलि रामसेवक सरन तव हरि आय ॥१७९॥
हरि जस कहत चुव श्रुति गाय ।
कृष्ण पद सिर नाय ॥टेक॥
बाल लीला करत शिशु मिलि धाय गृह हरि आय ।
छुधा अति मोहिं लागु जननी देहु चीर पियाय ॥
मथन दधि नहिं देव तोहि अब धारि कर मचलाय ।
चीर दीन्ह सुत देर लखि बहु गोद निज बैठाय ॥
पिवत स्तन धारि कर हरि उदर नाहिं अघाय ।
तृप्त नहि सुत मातु हित कोइ गइ गृह मो धाय ॥
क्रोध करि हरि अपर गृह गत भाँड लखु बहुताय ।
फोरि लकुटन चीर दधि घृत दीन्ह धरणि बहाय ॥
देखि सिकहर चढि उलूखल भाँड फोरि गिराय ।
चीर दधि घृत रामसेवक खात शिशुन लुटाय ॥१८०॥
हरि को चरित किमि कहि जाय ।
कहत कछु सकुचाय ॥टेक॥
फोरि खपड खात दधि घृत भुम्य जोइ ढरकाय ।
बाल बहु मिलि दधि खात चितवत आइ जाइ न माय ॥
मनहु मरकट ताकि इत उत शीघ्र मुख धरि खाय ।
शीघ्र शीघ्र कर मेलु दधि मुख चाटु जीभि लगाय ॥

चौर इव उर डरत पीवत हुउल बहु सुख लाय।
बाल लीला करत अस हरि जुक्ति अमित बनाय॥
छुधा नहिं कोइ प्यास हरि उर त्रास नहि कोइ आय।
भोग जेहि त्रय लोक पूरण जाहि सकल डेराय॥
भक्ति नाता मानि हरि वर केलि नर दरसाय।
लहत सुख बहु रामसेवक कृष्ण दरसन पाय॥१८१॥
कहु कवि कृष्ण लीला गाय।
बेद बुध समुदाय॥टेक॥
छीर पीवत त्यागि जननी गइ कार्य कोइ पाय।
जानि पुत्र अतृम कृत करि धाइ सोइ थल आय॥
देखु नहि थल खोजु गृह बहु कृष्ण जहँ तहँ जाय।
भाँड दधि घृत छीर जुत सब फोरि भुवि ढरकाय॥
खात शिशु मिलि चपल चितवत देखु क्रोध बढाय।
देखि जननी त्रास उर गहि चलेउ कृष्ण पराय॥
कनक साटी लेइ जननी चली सग सग धाय।
जोगि जन कोइ ध्यान मो लहु धरति यशुमति माय॥
श्रमित लखि धरवाउ निज कर आपु हरि प्रगटाय।
भक्ति तरु फल रामसेवक प्रगट नज दरसाय॥१८२॥

राग श्री

हरिभक्ति परम सुखदाई।
कहु बेद सेस बुध गाई॥टेक॥
जोगी जन करु जतन विविधि विधि
ध्यान मो कोइ गहि पाई।
त्रास हेतु यशुमति सुत लखि निज
मारव कहि सग धाई॥

थकित मातु लखि भक्त जानि निज
हरि लियो आपु धराई।
सुसुकि सुसुकि रोदत नहिं बोलत
कर गहि त्रास देखाई॥
बाँधन हित रज्जु बहु जोरत
ओंटत नहि पछताई।
देखि श्रमित जननी बहु व्याकुल
आपुने दीन्ह अँटाई॥
रिसि बस करखि करसि कर रज्जु
जानु चरन उर लाई।
दाम उदर लखि हँसत सकल शिशु
कर वर ताल बजाई॥
कृष्ण गुनत जमलार्जुन की गति
भक्त विनोद सोहाई।
बँधन नहि कोइ रामसेवक हरि
यह हरि भक्त बडाई॥१८३॥

हरि दाम उदर निज धारी।
दामोदर निज नाम रूढ करु भक्त सुजस करु भारी॥टेर॥
धनेश्वर सुत नल कूबर वर सोइ गति उरसि निचारी।
नारद साप दीन्ह धन मद लखि औ मो नगन निहारी॥
सापानुग्रह कीन्ह महा मुनि मम अस परस सवारी।
जमलार्जुन सोइ भयेउ महा जड तरु अन देव उखारी॥
नल कूबर कहँ देव महाँ सुख मत वचन अनुसारी।
उलूखल मम उदर दाम वर माता सुभग सवारी॥
त्रिजग होय अस परस मध्य करु तरु सोइ वेगि उपारी।
शिशुन ये चरित देखाइ देव छन नल कूबर कहँ तारी॥

व्यग्र होय माता कोइ गृह कृत तव शिशु देव दुलारी।
कृष्ण सरस गहु रामसेवक अब लगि जुग जुग उपकारी ॥१८४॥

राग केदारा

हरि कहँ बाँधु बधन लाय।
छर्डाय त्रास देरसाय ॥टेक॥
करहुगे अस कर्म कबहा मारि तोहि अघाय।
पद उलूखल बाधि यशुमति कहत सुतहि बुझाय॥
त्रसित चितवन मनहु नर शिशु मारु नहि अब माय।
त्रसित जनु हरि बैठु निरभय नयन जल ढरकाय॥
सदन भुनि ओरमाय सुसुकत महा सुरनि गराय।
ओट जाय किमि मातु तजि मोहि जाब देव सहाय॥
कार्य हित कोइ शीघ्र यशुमति गई गृह मो धाय।
घुसुकि चलु हरि जन्त सुत हित थाल कर स्व बजाय॥
त्रिजग तन करि मध्य चलि हरि दीन्ह तरु बिलगाय।
रूप दुइ बर रामसेवक प्रगटि थल दरसाय ॥१८५॥
हरि जस कहत श्रुति बुध गाय।
दीन दुखिय सहाय ॥टेक॥
दाम उदर लगाइ पर हित पाव सहित बँधाय।
सँग चलु बहु गोप बालक हँसत कर स्व बजाय॥
व्यँग्य बोलत घेरि चहुँ दिसि खोदि चलत पराय।
लभ्रा कहँ भल बाघु जननि सुभग रज्जु लाय॥
सहत प्रमुदित वचन शिशु हरि बधन उर सुख छाय।
दीन बधु नहिं कृष्ण सम कोइ सहत तरु ढिग आय॥
त्रिजग करि तन बर उलूखल मध्य तरु प्रगटाय।
बृद्द इत स्व कारि भुनितल, दीन्ह साप छुडाय॥

रूप दुइ वर देखि सुदर सकुचि बालक ठाय।
रूप हरि लखि रामसेवक जक्षसुत सुख पाय॥१८६॥

राग कल्यान

नौमि इन्दिरापति सता गति जनार्दन।
सुखाकर सुसागर कृपाप शाप मार्दन॥टेक॥
नमामि त्वा जगतपति सनातन सुसद्गति
निरामय निरंजन निरीह पाप भजनं।
नृलेप शास्वत अज कृतं नृवेदन गज
अनत निग्रह धृत सुरारि वृद गजन॥
अनादि निर्गुण पर नमामि इन्दीरावर
गजेन्द्र मोचन कृत समस्त दोष नासन।
कृत सुसत रजन सुमाह दर्प भजन
पवित्र नाम ते वर हरि नृशंस शासन॥
उद्भव स्थिति लय धृत सुविग्रह चय
निर्गुण गुणा अगार देव सत रजन।
कार्य कारण पर अज हरि शिव वर
नृलेप एक विग्रहे सुगध रहित अजन॥
नमामि श्रादि कारण कृत सरूपधारण
मत्त कश तुरग क्रोड नरहरि सुवावन।
विप्र धस कज हस परशुराम देव श्रश
दुष्ट बर अरिष्ट कीन्ह दैत्य दावन॥
राम रूप त्वा धृत निचित्र समह कृत
रूप चरित नाम राम मुनिन भावन।
रावणादि दुष्ट मारि सकल धरणि भार हारि
संतन बिश्राम कीन्ह चरित पावन॥

नारद मुनि साप दीन्ह कृपानाथ परम कीन्ह
दरस परस गात कीन्ह कृष्ण वदन।
जच्छ तनय विनय करत रूप कृष्ण उरसि धरत
रामसेवक शांति कांति विसरै चदन ॥१८७॥
जैति जैति जय कृपाल जैति जगत नायक।
महिमा अपार वेद पार नहीं पायक ॥टेक॥
जयति कृष्ण अति उदार रण सकल धरणि भार
लीला अवतार दनुज मनुज लायक।
बाल चरित करत नाथ बाल वृंद चलत साथ
मात कृत हास्य सहत बचन सायक॥
जयति धृत उलूखल सुदाम उदर कोमल
आरत जन जानि मोहि निकट आयक।
पाप ताप साप हृ धृत सुनय निग्रह
कृत सु पावन बपु अडोल ध्यान धायक॥
जयति दाम उदर नाम रूढ कीन्ह जगत काम
जड सरूप तारि दीन्ह भाव भायक।
स्तुति धर जच्छ कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण दीन्ह
भवन गवन कीन्ह रूप राय गायक॥
जयति जयति गाइ गाइ चरन सीस नाइ नाइ
निदा कृष्ण कीन्ह रूप निज देखायक।
बाल चरित हरत पीर रामसेवक कहत धीर
अर्थ धर्म काम मोक्ष सकल दायक॥१८८॥

राग टोडी

हरि भुवि भार हरु नर दरसाय के।
ब्रह्म अनवद्य अज अखिल गनाय के॥टेक॥

मातु बर त्रास मानी उर सुर काज जानी
बाल बृद चलु सग दाम उर लाय के।
देव ऋषि साप जानी जच्छ सुत पहिचानी
तरु निच जाड उत पाटु बिलगाय के ॥
रूप स्व देखाइ नल कूबर को सुखदाइ
दाम स्व उदर गोप बालन देखाय के।
बिनय सु यच्छ कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण दीन्ह
गृह गत दोउ निज रूप बर पाय के ॥
शब्द परचड सुनि गोप गन मन गुनि
किमि उतपात ब्रज भयो अस आय के।
सुनु तरु बर गति हरि दीन्ह असमति
ब्रज जन गृह तजि आयो सब धाय के ॥
बृच्छ निलगान देखि कृष्ण तेहि मध्य पेखि
बाल चहुँ ओर ठाढ रहु मुरझाय के।
नंद सुत गोद लेइ दाम उर छोरि देइ
टारि को ऊखूखल स्व बैठु कठाय के ॥
बिप्र बोलि दान दीन्ह साधु सनमान कीन्ह
सुत भाग्य लहु जनु रतन लुटाय के।
बदन निहारि रामसेवक सुप्रेम बारि
चलत नयन उर पुर पुलकाय के ॥१८९॥
ब्रज जन ठाढ हरि बदन निहारि के।
जीवन धन हरि गोप गोपनारि के ॥टेक॥
तरु बर देखि देखि शिशु तन पेखि पेखि
सब पछतात जिमि मीन बिनु बारि के।
पवन प्रचड नहीं जल बृष्टि नहीं कहीं
कवन अरिष्ट बर गयो तरु फारि के।

कीन्ह तब सहाइ आइ पूजा लहि सेवकाइ
हरि रच्छा करु तरु मध्य तन धारि के ॥
देखि विकलाइ धाइ शिशु मिलि सबै गाइ
कृष्ण मध्य जाइ हरखाइ सरु टारि के ।
कोइ नहीं पतिआइ हरि जस शिशु गाइ
देव रूप दुइ गयेउ कृष्ण को दुलारि के ॥
गोप उतपात जानी कृष्ण के अरम मानी
कह सब नंद सन वचन बिचारि के ॥
बहु उतपात आइ एहि पुर रहु छाइ
बसत भलाइ नहीं कहत पुकारि के ।
सुनि सुनि गोप बानी सुत हित नंदरानी,
चलु बन आन सुत सकट सवारि के ॥
सुत बध हित लाइ अमित अरिष्ट आइ
हरि रच्छा कीन्ह पुतनादि रिपु मारि के ।
कृष्ण रुचि काम रामसेवक बसत ग्राम
रीति प्रीति बर हरि करु सुख सारि के ॥१९०॥

राग श्री

हरि रुचि पुर पुर अनुसारी ।
करु गोप गोपी गन भारी ॥टेक॥
जमलार्जुन सल कृष्ण बचेउ जब मिलि सब गोप बिचारी ।
चलहु जहाँ बन होइ सघन अति तृण तरु की अधिकारी ॥
गौ बछरा सुख लहँहि जहाँ मम शिशु सब रहँहि सुखारी ।
बृंदाबन सजत मिलि करु सन गोबर्द्धन लखि भारी ॥
सब ऋतु सब सुख लहँहि धेनु शिशु तट यमुना शुभ वारी ।
वैश्यन के धन धेनु जानु जग शिशु सुख लहु नर नारी ॥

तृण तरु सघन अद्रि वन सुंदर द्रुम सब कहँ सुख वारी।
हरषित सकल गोप गोपी गन शिशु मन बोलु दुलारी॥
शिशुन चढाय दीन्ह सकटन पर रस गोरस बहु धारी।
प्रमुदित जन बहु रामसेवक उर पाइव सरन मुरारी॥१९१॥
लखि वृन्दावन सुखदाई।
चलु गोप गोपी हरखाई॥टेक॥
अन्न छीर दधि घृत भाँडन करि सकटन अमित धराई।
गोप गोपी गन चढि गावत चलु गोरथ शिशुन चढाई॥
स्वस्ति पठत द्विज भूरि संग चल शुभ हित शंख बजाई।
नंद यशोदा संग रोहिणी दोउ सुत रथ बैठाई॥
राम कृष्ण हित कुशल यशोदा बहु निधि रत्न लुटाई।
निरखत चलु हरि रूप मुदित मन कृष्ण बिसद जस गाई॥
यमुना उतरि गयो वृंदावन प्रविसत सुख बर पाई।
नंद जथा विधि सकल गोप कहँ प्रमुदित तुरित बसाई॥
नंद भवन करि बसेउ वृंदावन तिहुँ पुर सुख रहु छाई।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु कृष्ण चरन मन लाई॥१९२॥

राग केदारा

प्रमुदित गोप गोपी आय।
देखि वन हरखाय॥टेक॥
निकट यमुना घाट सुंदर श्याम जल दरसाय।
सघन वन तृण हरित अति बहु लता जाल सोहाय॥
मोर कीर चकोर गुँजत कुँज बहु छबि छाय।
अद्रि शोभा कहत मति गति रहत कवि सकुचाय॥
मनहु करि शृंगार रतिपति सपन जुत प्रगटाय।
चारि खानि जत जीव त्रय पुर राखु बनहिं लोभाय॥

पाइ बृँदावन अनंदित गोप गन समुदाय।
धेनु बछरा बाल सुख लखि बसेउ इष्ट मनाय ॥
नंदसुत आनंद कर बर निरखि सुख उर पाय।
रहत प्रमुदित रामसेवक नेह हरिपद लाय ॥१९३॥

राग श्री

हरि बृँदावन जब आई।
शोभा बन दरसाई ॥टेक॥
बृँदावन रमणीय केलि थल चहुँ जुग हरि रहु छाई।
सकल विभव बृँदावन कर हरि सुंदरता सुखदाई ॥
गोप गोपिन कहँ प्रगट देखावत बसु बन एहि हरखाई।
धन बृँदावन सम न कोइ सुर शोभा बर अधिकाई ॥
बन अस ललित कीन्ह ब्रज भुवि हरि जेहि तिहुँ पुर ललचाई।
अस बन बृगसित करि हरि अपुना गोप गोपिन को लोभाई ॥
हरित घाम लखि गोप अनंदित चरु मम धेनु अघाई।
चालन कहँ सुख होइ इहाँ बहु अस कहु लोग लोगाई ॥
कृष्ण केलि भुवि जन उर भावत जेहि सुर मुनि सिर नाई।
सुचि महिमा किमि रामसेवक कहु निरखि अधम गति पाई ॥१९४॥

राग टोडी

कृष्ण रस केलि केरु बृँदावन आय के।
गोप बाल संग गोपी गृह गृह जाय के ॥टेक॥
गोकुल मों लीला कीन्ह ब्रज जन सुख दीन्ह
कलि जन हित बहु तिरथ बनाय के।
रवण सुरती करि गोपी कुप नाम धरि
केलि भुवि वारु कूप जल सब पियाय के ॥

कीन्ह ब्रह्माएड घाट चिंता की हरन बाट
। । यमुना के तट मातु सुख दरसाय के।
दरसि परसि हरि भजन करत सरि
। । हरि निज धाम देत कहु बुध गाय के॥
कलि कल्मष नास रात्रि एक करु वास
हरि रूप मिलु अघ अवगुण मेटाय के।
गोकुल को ग्राम धाम गृह बसि लेत नाम
पाप पुंज नास होत सुख रहु छाय के॥
कलि हित करि कार हरि हरु भुवि भार
॥ गोकुल ते बृँदाबन आये हरखाय के॥
बृँदाबन रसखानी करु हरि सुखदानी
। भक्त लहु ज्ञान रहु सुरुख भुलाय के॥
बृँदाबन सुख छाइ वृक्ष कल्प प्रगटाइ
। रूप दरसाइ जन रखत लोभाय के॥
बृँदाबन जीव रामसेवक लहेउ शिव
। गोपी गन गोप सुख लहु हरि पाय के॥१९५॥
लीला करु बृँदाबन हरि सुख वारि के।
॥ सुर नर मुनि हित भार भुवि टारि के॥टेक॥
बन वृगसित करि जल निरमल सरि
पुष्प बहु भांति धरि भ्रमर दुलारि के।
मृग पक्षी करु बहु राम कृष्ण कृष्ण कहु
मुनि मन हरि लेत नाद सु पुकारि के॥
कुंज करि लता जाल सुरती सिलान माल,
। सुखप्रद सब काल ब्रज नर नारि के।
अस बृँदावन् हरि सुख थल थरि थरि
॥ मोहु ब्रज नारी नर रूप वर धारि के॥

कुंज कुंज ओट करु रस सुखप्रद घरु
लहत अमृत ज्ञान नयन उघारि के ।
मुरली बजाइ गाइ कुंज कुंज आइ आइ
करत बिहार सुबिहारी सुख सारि के ॥
मोहन स्वनाम कारी मोह तिहुँ लोक डारी
जीव सब टेरि लेत खल गन मारि के ।
गोपी गन गोप आइ सुर मुनि ध्यान लाइ
सुख सब पाइ हरि बदन निहारि के ॥
नाम सुरँगीले कहि सुगम छबीले गहि
मुरली मनोहर कहत सुबिचारि के ।
अर्थ धर्म काम रामसेवक को देत श्याम
मोक्ष वर देत भव-सिंधु स्व उतारि के ॥१९६॥

राग केदारा

हरि वर रूप ब्रज दरसाय ।
करत देव सहाय ॥टेक॥
कीन्ह वृंदावन सोहावन सकल सुख प्रगदाय ।
नाम मोहन रूढ़ करु जग मोहि जन समुदाय ॥
सकल जीव की बोल समुझनि एक शब्द मो लाय ।
बोलि लेत तेहि मोहि निज ढिग अधर वेणु बजाय ॥
सिथिल चर सुनि होत जल जुत अचर उर पुलकाय ।
गोप गोपी सुनत रव वर आइ नेह जनाय ॥
देव मुनि सुनि ध्यान करु उर पाइ हरि हरसाय ।
असुर गन खल चोर सुनत सकुचि रहु डर पाय ॥
मोहन मुरली शब्द सुनि शिशु रहत हरि ढिग आय ।
वेणु रव अस रामसेवक कहत बुध श्रुति गाय ॥१९७॥

क्रीडत कृष्ण, नर अनुहारि।
भार वर भुवि टारि ॥टेक॥
जात वृंदावन चरावन धेनु शिशु सुखसारि।
खेलत खेल अडोल जग हित लोकि कलि वर डारि॥
खेल सिद्धि प्रसद्धि कलि भयो जानु सब नर नारि।
कृष्ण बादी लाइ खेलत हारि जीति प्रचारि॥
गाल पथर कारि सुंदर एक भुवि कोइ धारि।
कर अँगुष्ट भुवि परसि निरखत मध्य अँगुलि वारि॥
हँसत साधत दृष्टि करि बर गोलि एक एक मारि।
त्यागि अस खेलवार सोइ छन सकल शिशुन दुलारि॥
वृक्ष फल वहु तोरि शिशु मिलि पिवत रस सोइ गारि।
अमृत रस बर रामसेवक पिवत कृष्ण पुकारि ॥१९८॥

राग श्री

हरि वृंदावन सुखसारी।
करि केलि भार भुवि हारी ॥टेक॥
मुरली बजाइ सुनाइ गोपिन कहँ शिशु गन लीन्ह पुकार।
धेनु अग्र करि चलेउ वृंदावन बालन बहुत दुलारी॥
सिकहर काँध कारि रोटी दधि लकुट काँध कर धारी।
धेनु हरित तृण लागि चरन जब कृष्ण गोप शिशु भारी॥
सिकहर लकुट सहित कवल भुवि दीन्ह सकल शिशु डारी।
क्रीडा करन लगे शिशु हिलि मिलि कहि न जात सुख भारी॥
पुष्प अमित गुँजा वन लहि बहु निज निज आसन डारी।
पत्र लेइ सिर मुकुट बनावत गहि सिर छत्र सुरारी॥
गुँजा कर कान भूषण कर अँग अँग पुष्प सवारी।
व्यँजन चमर सु रामसेवक गहि फेरत सीस मुरारी ॥१९९॥

हरि बृंदावन छवि छाई।
करि बाल केलि सुखदाई ॥टेक॥
करि शृँगार पुष्प माला गल सीस मुकुट बनाई।
भूषन बसन पुष्प पत्रन करि कोइ बलकल अँग लाई॥
ब्यँजन चमर डोलावत इत उत छाता सीस धराई।
कोइ राजा कोइ साधु बनत शिशु कोइ मंत्री दरसाई॥
सैन्य अमित जूत्थप जुत नायक कोट स्व ओट लगाई।
विजय प्रदेश करत चहुँ फिरि बन मारि असुर थल आई॥
न्याव करत फिरियादि कोइ बहु राजा देत सजाई।
कोइ कहँ दंड न देत नृपति कछु तुरितहि देत छुड़ाई॥
एहि विधि शिशु लीला हरि कर बहु कंस को दूत गवाई।
कृष्ण चरित सुनि रामसेवक जन सकल लोक सुख पाई॥२००॥
हरि बृंदावन महँ जाई।
करु लीला अगम सोहाई॥टेक॥
लकुट बीच पद इत उत करि भुवि चढि चढि शिशु हरखाई।
अश्व निपुन निज कहत कुदावत हँसि हँसि बन दवराई॥
कोइ छन युध्य करत हिलि मिलि शिशु कर भुज ताल बजाई।
सीस सीस धरि कर कर करगहि इत उत बहु भरमाई॥
भुजा मरोरि झपटि कर पकडत लडत अँग लपटाई।
पद गहि पट भुवि इत उत टारत जानु सो जानु लगाई॥
गिरत कोइ भुवि लडत बहुरि उठि बैठि लडत कोइ धाई।
पढित कोइ शिशु युध्य सिखावत देखत अमित लडाई॥
एहि विधि कंस दूत हरि मारत खेलत ओट लुकाई।
कृष्ण चरित सुनि रामसेवक अस ब्रज जन बहु सुख पाई॥२०१॥
हरि सुर नर मुनि हितकारी।
करि केलि असुर गन मारी॥टेक॥

नर इव चरित कारि वृंदावन सकल भार भुवि हारी।
मुरली बजाइ सुनाइ शब्द वर त्रयपुर कीन्ह सुरारी॥
धेनु चरत तृण हरित मुदित मन क्रीडत शिशु मिलि भारी।
भुम्य कछुक उन्नत करि कर सन श्रम स्व खोदि सवारी॥
दूरि जाइ कछु पृथक पृथक शिशु धाइ धाइ करि पारी।
डाँकत कहत दूरि हम आये नापत हाथ पसारी॥
धाइ धाइ पुनि पुनि भुवि डाँकत एक सो एक प्रचारी।
डाँकत ऊर्द्ध उठाइ कोइ कर वत्स लकुट तृण धारी॥
अस क्रीडा विह्वल शिशु लखु नहिं मधु हरि असुर पछारी।
लहत महत सुख रामसेवक सुनि महिमा अगम मुरारी॥२०२॥

राग टोडी

हरि वर चरित अगम त्रिपुरारि के।
सुगम भयेउ सोइ ब्रज नर नारि के॥टेक॥
मुरली अधर लाइ रस प्रद स्वर गाइ
वन चलु शिशु लेइ ब्रज सुरत सारि के।
तृण वन धेनु चरु शिशु मिलि लीला कर
वन छपि छपि छन हँसि सुख वारि के॥
अपर ■ खेल लाइ शिशुन स्व कहि गाइ
भुवि थल बैठु मिलि तृण मृदु डारि के।
कोइ शिशु गृहपाल कोइ वृक छाग जाल
एक एक लेइ चलु वृक तन धारि के॥
अस खेल हरि देखि असुर सुर लेखि
वृक वनि सब शिशु हरेउ प्रचारि के।
एक दुइ शेष रहु कृष्ण वलदेव कहु
शिशु ओट काढि गति दीन्ह खल मारि के॥

शिशु सब खल देखि हरि गुण बर पेखि
गृह गृह आइ कहु सकल पुकारि के।
बिसमय लहि लहि हरि जस कहि कहि
शिशु गोद लेइ मुख चुमत दुलारि के॥
कृष्ण जस गाइ गाइ ब्रज जन सुख पाइ
ज्ञान भक्ति दृढ लहु बदन निहारि के।
कृष्ण बर ध्यान रामसेवक लहत ज्ञान
हरि नितु तोहि भव उदधि उतारि के॥२०३॥

हरि बर केलि शिशु करत लोभाय के।
सुर मुनि हेतु बृँदाबन छबि छाय के॥टेक॥
मुरली सुरस गाइ सुख ब्रज उपजाइ
बाल बृँद सग करि बृँदाबन जाय के।
लीला बहु भाति करि खल बध चित धरि
कोइ गृहपाल कोइ चौर बनाय के॥
कंस दूत बर आई शिशुन सो मिलु धाइ
चोरि चोरि शिशु ओट धरत छपाय के।
प्रबल चऊर बनु हरि कहँ शिशु गनु
हरि बध हित बन रहत लुकाय के॥
हरि तेहि पहिचानी कस दूत अभिमानी
मारि गति दीन्ह कृष्ण रूप दरसाय के।
देव मुनि बृंद वारी पुष्प बृष्टि बहु कारी
सुख लहु बर गृह गृह सुर आय के॥
शिशु सुख पाइ धाइ हरि सग गृह आइ
हरि कृत निज निज गृह कहु गाय के।
सुनि अचरज लहि हरि जस बर कहि
मातु पितु गोद गहु शिशुन बुझाय के॥

कृष्ण पद प्रीति करि श्याम रूप उर धरि
गोपी गन गोप उर सुख रहु छाय के।
पुलकि पुलकि रामसेवक गहत श्याम
यशुमति मुख चुमि हरि उर लाय के ॥२०४॥

राग धनाश्री

हरि भार सकल भुवि टारी।
करि ग्वाल केलि रस भारी ॥टेक॥
वृँदावन हरि धेनु चरावत करि क्रीडा रिपु मारी।
निरखत गोप बाल प्रमुदित वन सुर मुनि करत सुखारी॥
क्रीडा अपर करत रिपु लखि ढिग गोप बाल बोलि भारी।
करि जोडी शिशु प्रति खल बध हित मित्र अमित्र सवारी॥
श्रीदामा हरि मित्र जोडी सोइ दैत्य जोडी हलधारी।
अपर शिशुन की जोड कहौं किमि रिपु बध कृष्ण विचारी॥
क्रीडत हित सुर मुनि उर धरि हरि जेहि सुख लहु नर नारी।
नेत्र मुँदि कोइ शिशु निज निज कर कोइ बुझन सुख सारी॥
बुझन जोइ सोइ चढत काँध शिशु एक स्व एक पुकारी।
रिपु वध सुनि सुख रामसेवक लहु गहु जन सरन मुरारी ॥२०५॥
हरि क्रीडत शिशु मिलि भारी।
लखि कंस दूत रिपु भारी ॥टेक॥
वृँदावन अति सघन सोहावन वृक्ष लता अधिकारी।
धेनु हरित तृण चरन लागु जब सिसु सब देखि सुखारी॥
वृक्ष अवधि करि क्रीडत सब सिसु निज निज जोड़ी सुधारी।
श्रीदामा हरि को जोडी वर वृषभासेन दुलारी॥
प्रलवा रोहिणी सुत जोडी हरि एह खेल विचारी।
जथा जोग्य शिशु सकल जोडी करि क्रीडा परम सवारी॥

कौंध प्रलना असुर महा खल बलदेव सुरखारी।
चढ़ु परलना की कौंध जवहिं प्रभु हलधर लहि निज पारी ॥
अवधि हाकि जन चलेउ महा खल लखि हलधर तेहि मारी।
सुर मुनि सुख लहु रामसेवक उर लखि वर चरित मुरारी ॥२०६॥

राग केदारा

हरि करि बाल चरित उदार।
हरत मुनि वर भार ॥टेक॥
कौंध असुर चढाय हलधर मारि करु तन छार।
प्राण गत भुवि गिरत भट खल जथा मरकट डार ॥
कोइ असुर भ्रमाय मारत प्राण जात न बार।
बदन कोइ परवेश करि हरि कीन्ह तन दुइ फार ॥
कीन्ह स्थन पान कोइ कर प्राण कीन्ह अहार।
दीन्ह गति तन हीन करि प्रभु कारि जग उपकार ॥
कृष्ण अरु बलदेव जस वर वेद निधि महँ सार।
कृष्ण तन बलदेव राजित देखि लजित मार ॥
परम पावन कृष्ण जस धर करत जन उद्धार।
पतित अति कलि रामसेवक करहु हरि भव पार ॥२०७॥
हरि वध हेतु कंस पठाय।
अघासुर ढिग आय ॥टेक॥
सेस सम तन कारि निज शठ मेघ जनु छवि छाय।
उर्द्ध ओष्ट करि गगन राजित अधर भुवितल लाय ॥
अद्रि सम तन बहुरि सोभा शृंग असित बनाय।
नेत्र मुख करि पाछि अहि सम जीभि शुभ ललहाय ॥
रोकि पथ शठ रूप धरि अस खाय सकल अघाय ॥
कृष्ण लखि सोइ गाइ सोभा सत्य उर ठहराय ॥

सकल शिशु पशु कीन्ह सोइ पथ आपु सोइ मुख जाय।
करत सपुट ओष्ट द्वौ हरि दीन्ह तन विलगाय ॥
कीन्ह रक्षा सकल शिशु पशु असुर प्राण गवाय।
दीन्ह गति तेहि रामसेवक रूप हरि दरसाय ॥२०८॥

राग कल्यान गति चंचरीक

क्रीडत शिशु सग कृष्ण रूप नर सवारी।
चचल चित चपल नयन ब्रह्म अज निसारी ॥टेक॥
मुरली धुनि सुभग कारि राजित करि गोप नारि
बाल वृद गवारि मोहनि तन वारी।
सिकहर काँधे मो कारि रोटी विंजन सुधारि
धेनुन करि श्रम काँध लकुट शुभ सुधारी॥
वृंदावन सघन जाल वृक्ष अपर तरु तमाल
चरत घास धेनु शुभ्र पिवत वर वारी।
बाल चरित कृष्ण करत कस दूत सग चरत
वत्स रूप धारि कृष्ण घात उर विचारी॥
जानि असुर वत्स रूप कृष्ण चरित अति अनूप
हलधर सत धाइ असुर भाव उर मुरारी।
पुच्छ गहि भ्रमाय धाइ लपटि झपटि कर बढाइ
वत्सासुर मुम्य पटकि वेगि कृष्ण मारी॥
जयति जयति जय पुकारि देव सकल हरि निहारि
प्रमुदित आनद कद पुष्प वृष्टि कारी।
पुतना को दीन्ह तारि तृणावर्त काक मारि
वत्सा प्रलव मारि कीन्ह सुर सुखारी॥
बका अघा असुर काल ग्रासेसि वत्स सकल बाल
रक्षा करि बाल काल व्याल वन विदारी।

सुर नर मुनि पाल रामसेवक हरि जन दयाल
असुर वश काल सकल भार धरणि हारी ॥२०९॥
राजित तन कृष्ण श्याम सोभा शत कोटि काम
बाल चरित करत सकल कंस चर गवाई ।
वृंदावन सघन पात गोप बाल बैठु भ्रात
हलधर तन गौर संग निकट दोउ भाई ॥टेक॥
चहुँ दिसि होय गोप बाल बैठे जनु नखत जाल
सूर्य चन्द्र मध्य भेद नेक न जनाई ।
मेघ मध्य तड़ित भ्राज तारा चहुँ दिसि बिराज
मध्य तरु तमाल वृक्ष अपर चहुँ सोहाई ॥
मध्य कमल पीत श्याम चहुँ दिसि बहु रंग नाम
मध्य नील मणि सुमेरु धातु चहुँ लगाई ।
चहुँ दिसि अति बन बिराज मध्य गोप बाल भ्राज
मनहु ऋतु बसंत कारि रति पति छवि छाई ॥
सिकहर उतारि दीन्ह विंजन सब बिलग कीन्ह
भात दधि मिलाय बाल बैठेउ समुहाई ।
विंजन मिलाइ साथ कर मों धरत एक हाथ
हिलिमिलि संग खात कृष्ण बाँसुरी बजाई ॥
अँगुलिन मों लाय लाय विंजन सब गाय गाय
मुख लगाइ खात रस पिवत ललचाई ।
हँसि हँसि सब खात भात स्वाद स्वाद कहत बात
देत मुख चटाइ कोइ लेत मुख खियाई ॥
कोइ देखाइ फेरि लेत खाइ स्व खियाय देत
कौतुक अस पेखि कृष्ण मयो अज भुलाई ।
लीला हरि अति कराल रामसेवक सुख रसाल
सकल लोक सोक हरण रूप नर देखाई ॥२१०॥

राग श्री

अति गूढ चरित दनुजारी।
लखि परत न देव मुरारी ॥टेक॥

जो ब्रह्मा करु सृष्टि विविधि विधि सत रज तम गुण धारी।
सोइ भुलेउ हरि केलि निरखि सुधि बुधि बुधि सकल बिसारी॥
क्षीर सिंधु तट करु स्तुति विधि गर्भाऽस्तुति करु भारी।
जन्म महोत्सव लखि निश्चय करु कस दूत वहु मारी॥
वृंदावन हरि चरित विलोकत गोपवाल वैठारी।
कर पर भोजन धरि अँगुलिन करि खात खियावत वारी॥
हँसि हँसि भोजन करत चपल चित निज मुख शिशु मुख डारी।
ब्रह्मा लखि नर रूप न हरि खासु निज उर वहुत विचारी॥
हेतु परीक्षा भवन गयो विधि हरि वछरा शिशु भारी।
विधि गति उर लखि रामसेवक हरि निज माया विस्तारी॥२११॥

विधि वछरन शिशुन चोराई।
निज भवन लेइ जब आई ॥टेक॥

हरि विधि कर्म जानि वृंदावन उर पुर जनु सकुचाई।
विनु वछरा किमि धेनु लही सुख किमि ब्रज लोग लोगाई॥
ब्रह्मा लेत परीक्षा मम ध्रुव जोइ हर सोइ देखाई।
सदश वत्स शिशु करि एही छन विधि वर भर्म छुड़ाई॥
वछरन शिशु महँ आत्म अँश धरि ब्रज नित नेह वढाई।
अस मन गुनि वछरू जत शिशु रहु तस तस रूप वनाई॥
माया प्रवल न जानु कोइ ब्रज गृह गृह हरि दरसाई।
वछरा शिशु निज निज जननी ढिग प्रतिम्बि सम गयो धाई॥
हूँकरि धेनु जननी उठि धायेउ शिशु लेइ सुख उपजाई।
प्रीति नइ प्रतिदिन उर वाढत रामसेवक हरि पाई॥२१२॥

राग टोडी

हरि ब्रज जन सुख दीन्ह दुख टारि के ।
भुवि भार हरि कंस दूत बहु मारि के ॥टेक॥
विधि हरि लीन्ह जब शिशु बछरन तब
हरि सुख दीन्ह सतछन तन धारि के ॥
जस गोपबाल रंग तस करु शिशु संग
रीति प्रीति चाल बोल सदृश धारि के ॥
धेनु निज शिशु जानु गोपी निज सुत मानु
प्रीति नित नई करु शिशुन निहारि के ।
शिशु जब बढ़ि जात प्रीति तब घटि जात
नेह नित बढ़ मातु रासत दुलारि के ॥
जेहि विधि मचलात प्रतिदिन दधि खात
तिमि मचलाइ हरि माँगत पुकारि के ।
सिकहर जस जस हरि करु तस तस
लकुट सदृश रुचि भाव स्व बिचारि के ॥
सकल सुभाव करि जुन दाव लखि हरि
लखि न परत भेद कोइ नर नारि के ।
बछरन लेत छोरि जेहि विधि जेहि खोरि
सोइ विधि जात बन इत उत धारि के ॥
शृंगी बंसी नाद सोइ गृह ग्वाल नहिं गोइ
माया हरि ध्रुव प्रीति करत निहारि के ।
अस माया कीन्ह रामसेवक के सुख दीन्ह
ब्रज नर नारि नित लहत मुरारि के ॥२१३॥
हरि करु केलि निज माया प्रगटाई के
प्रीति वृद्धि करु यह रूप दरसाई के ॥टेक॥

एक ते अनंत हरि होत त्रय, लोक करि
माया छन एक रचु जीव निलगाई के।
अचरज नहिं लहु बुध वेद सेस कहु
इच्छा हरि चारि खानि रहु जग छाई के॥
विधि हरि लीन्ह जब माया हरि कीन्ह तब
क्रीड़ा ब्रज करु शिशु बछरा बनाई के।
बरष प्रमान मानि विधि हरि नर जानि
क्रीडा सोइ शिशु देखु वृंदावन आई के॥
बछरन सब देखि शिशुन को केलि पेखि
खात भात सोइ रीति हँसि पुलकाई के।
विसमय लहि विधि हरि वर देखि सिधि
पुनि शिशु देखु निज लोक महँ जाई के॥
इत उत आइ जाइ बछरन शिशु पाइ
विकल विधाता थल रेऊ कहाई के।
माया हरि जानि मानि विधि उर पहिचानि
करि को गलानि धिक धिक पछताई के॥
लखि हरि सकुचाइ बार बार सिर नाइ
भुवि माथ हाथ धरि श्रेष्ठता गवाई के।
विनय बिविधि कीन्ह हरि तेहि बोध दीन्ह
सुख रामसेवक लहेउ श्री हरि पाई के॥२१८॥

राग कल्यान

नौमि ब्रह्मरूप त्व निरतर निरामय।
अज अखंड निर्गुण सनातन सुचिन्मय॥टेक॥
प्रभु बिभु निरंजन समस्त दोष गजन
भजन सुरारि वृंद संत बश रजन।

निर्गुण गुणाकर सनातन धराधर
आदि मध्य अत हीन कलुष भजनं ॥
नौमि ईड्य ईड्य नाथ एक ब्रह्म सर्व हाथ
साथ नाहिं कोपि त्रिगुण एक विग्रह ।
जगद्गुरू त्व सास्वत अखंड खंड बर्जित
जगद्धिय ताप निर्मल कृत सरूप समह ॥
अभ्र सदृश वपु तड़ित सुअम्बर धर
गुँजावत समोर पक्ष धारन ।
भृग धन गल कृत सुनेतज कर धृत
सुकज भृंगि सुदर नमामि आदि कारन ॥
उद्भव स्थिति लय कृत सुविग्रह त्रय
शिव अज जनार्दन नमामि कंज लोचनं ।
धृत सुमत्स्य कच्छ त्व सरूप क्रोड नरहरि
वामन भृगु रघु सुवश शोच मोचनं ॥
गोप बाल सगज सरूप पालन अज सुखाकर
सुशातिद कृत चरित्र पावनं ।
नमामि भक्त वत्सल कृपाल गोप सकुल
पवित्र रामसेवक कृत मुनीन्द्र भावन ॥२१५॥
नौमि कृष्ण ते पद प्रफुल्ल कज लोचन ।
सुखाकर सता गति जनानि शोच मोचन ॥टेक॥
अनादि निर्गुण पर अज अखड स्ववर
कृत नृसग्रह वपु मुनीन्द्र ध्यान भावन ।
गोविंद गोपति प्रभु समस्त पालक विभु
अनेक विग्रह धृत कृतं सुचरित्त पावन ॥
चरित करत ज धन पवित्र पावन धन
हरति गर्व सर्व त्व नमामि बुद्धि चालनं ।

पाप साप तापह समस्त दुख नापह
नजानिमीश्वर निमु रिपु समस्त घालनं ॥
गोप बाल संग भात देखा हिलि मिलि सो खात
अघ भाव मानि जानि नर नरायन।
क्षमाशील क्षमा करो अघ जानि माहिं भरो
त्व अज अखंड एक सकल लोक आयन ॥
यश्वरा न शिशु हत सु नाथ हेलन कृत
समस्त त्व दयाकर विशुद्ध ज्ञान विग्रह।
जगत्पति जनार्दन अरिष्ट दुष्ट मर्दन
निरामय निरंजन कृत सरूप संग्रह ॥
उद्भव स्थिति लय त्वमेकमद्भुत चय
गुण अगार निर्गुण गुण सरूप वर्जित।
नमति रामसेवक, अज सरूप बालक
त्राहि त्राहि त्राहि देव सकल चर्चित ॥२१६॥
जयति जयति जय मुकुंद जयति जगत वंदन।
खंडन समस्त पाप भक्त हृदय नंदन ॥टेक॥
विशुद्ध ज्ञान विग्रह कृत सरूप संग्रह
समस्त दुख नापहं सुरारि वृंद खंडन।
जगद्गुरुं च सास्वत समस्त दोष वर्जितं
चर्चित पदाज अवनि खंड मंडन ॥
निरामयं निरंजन सुरारि वृंद भंजन
जगद्धिताय कृष्ण त्व धृत अनेक विग्रहं।
जनार्दनं जगद्गति सनातन जगत्पति
निरस्यइन्द्रियादिक कृत नृदेह संग्रह ॥
मनोज वैरि वंदित सुरेन्द्र आदि सेवित
अह विरंचि दाम त्व नमामि कंज लोचन।

रजोगुण जदा धृत समस्त सृष्टि त्व कृत
हृत शिव तमोगुण गृहित शोच मोचन ॥
सृष्टि कारण च य गुण घृत कृत अय
कार्य कारण पर भवान लेप वर्जित ।
शिव अज हरि प्रभु विभेद भेदन विभु
गुण सरूप धारण कृत समस्त चर्चित ॥
समस्त पावन कृत गोपाल रूपज धृत
मोहन पवित्र गात दुष्ट गजन ।
नमति रामसेवक समस्त गोप बालक
सरण सरण सरण पाहि सत रजन ॥२१७॥

नौमि गोपि वल्लभ गोपाल गोप नायक ।
अज अखंड निर्गुण गोविन्द गोपि गायक ॥टेक॥
गोपबाल समह कृत अनत विग्रह
वत्सरानन धृत जोगिन्द्र ध्यान लायक ।
गोपीश गोपि रजन मदादि दोष भजन
पूर्ण सर्व लोक गोपि भाव भायक ॥
बाल केलि जत कृत अनत विग्रह धृत
मोहन समस्त अक्ष जीव बायक ।
भवान हेलन कृत समस्त बालज धृत
नमति सन्मुख न लें रहति सकुचायक ॥
कृत शिशु निरीक्षन समस्त बछर वन
अक्ष भाग ब्रह्म लोक बहुरि देखु जायक ।
सदृश रूप वत्सक निरीक्ष सर्व बालक
भ्रमति में मन प्रभु विभु समीप आयक ॥
विस्मय नहीं नदेक ब्रह्म एकते अनेक
मायया प्रचड सर्व लोक छायक ।

भजंति ते पदाबुज नमंति त्व अह अजे ।
। बिभ जु अज्ञ तासु बोलि वचन सायकं ॥
कृत सुचरित पावन अरिष्ट दुष्ट दावन ।
हे मुनीन्द्र सत भावनं स्व ज्ञान दायकं ।
बिधि शुभ स्तव कृत सुरामसेवक भृत ।
नमति बार बार कृष्ण भक्ति पायकं ॥२१८॥

राग श्री

बिधि बछन शिशु हरि ल्याई ।
एक वर्ष स्व भवन बसाई ॥टेक॥
जत बछरा शिशु रूप कीन्ह छन हरि महिमा प्रगटाई ॥
क्रीड़त वृंदावन हलधर जुत बालन सदृश बनाई ॥
ब्रह्मा निज पुर छाडि वत्स शिशु परीक्षा हित आई ।
वृंदावन बछरन शिशु लखि बिधि पुनि देखेउ गृह जाई ॥
इत उत बाल सकल बछरन लखि बिधि उर बहु सकुचाई ।
होय लज्जित हरि पद वंदन करु महिमा आत्म गवाई ॥
बिनिधि भाति स्तुति करि करि निधि पद रज सीस चढाई ।
निज अपराध भर्म चित कहि कहि बिधि उर सकल छुड़ाई ॥
सुरभी सग गगा जल शुचि कर बिधि स्नान कराई ।
होय प्रसन्न हरि बोध विविधि विधि रामसेवक सुख पाई ॥२१९॥
बिधि हरि स्तुति अनुसारी ।
लहि ज्ञान भक्ति सुखकारी ॥टेक॥
करि अभिषेक तिलक त्रिभुवन धरि महिमा अगम बिचारी ।
वृंदावन ब्रज गोप गोपिन की भाग्य बहुत बिधि वारी ॥
पूरण ब्रह्म सनातन जोइ हरि मित्र भयो जीव भारी ।
नद यशोमति भाग्य न कछु कोइ ब्रज वासिन नर नारी ॥

हरि आज्ञा धरि सीस सुरभि जुत रूप अनूप निहारी।
परदच्छिण करि सीस नाय पद बिधि निज भवन सिधारी ॥
शिशु बछरा जोइ रहेउ पूर्व सोइ करि हरि वेगि दुलारी।
कुशल पूछि शिशु हरि गृह आयो महिमा जग बिस्तारी ॥
बालक कहु निज मातु पिता सन सुनि अचरज लहु भारी।
वर्ष अवधि पुर रामसेवक बिधि शिशु ब्रज बाल मुरारी ॥२२०॥

दोहा

सकल बाल निज मातु सन कहेउ पिता सन गाय।
वर्ष दिवस बिधि भवन रहु अद्य भवन निज आय ॥ १ ॥
सुनि अचरज लहु मातु पितु प्रतिदिन देखत तास।
हरि महिमा घर जानि सब हिलि मिलि बोलत बात ॥ २ ॥
कल्प भेद हरि चरित बहु गावत बेद पुरान।
निज बुधि सम कछु कहत पुनि जस सुनु हरि बर कान ॥ ३ ॥

राग केदारा

तिहुँ पुर कहत नारद गाय।
हरि भाव उर ठहराय ॥टेक॥
कंस ढिग कहु कृष्ण अस बहु शत्रु भाव लखाय।
सुनत लखि मुनि सत्य बानी दूत अमित पठाय ॥
कृष्ण बध करु जानि सुर रिपु कंस ध्रुव पतिआय।
पूतनादि बध जानि रिपु निज कृष्ण बध मन लाय ॥
ब्रह्म गति बछरा शिशुन लखि सुनत गयो मुरझाय।
जोहत कंस बिचारि दिव निशि नारद कब गृह पाय ॥
कृष्ण बध की रीति नारद वेगि देहिं बताय।
कृष्ण मन गति जानि नारद कहत कंस ते जाय ॥

कंस भेजत दूत घर लगि धीर धीर जनाय।
कृष्ण लीला रामसेवक अचल सुख दरसाय॥२२१॥
हरि गुन कहत शिशुन बुझाय।
गाइ दूहब आजु हम भल देखु तुम समुदाय॥टेक॥
कहत शिशु सन कृष्ण प्रमुदित मातु पितहि सुनाय।
जानु दुहनी धारि निज हरि कर स्व चिटुकी लाय॥
रीति दूहन जातु हम भल देत तोहिं बताय।
जानु नोंइ डारीति बछरा दुहब धेनु पेंधाय॥
दुहब क्यहीं धेनु सुख निज पिअब दूध अघाय।
दुहत अस कहि धेनु प्रतिदिन धेनु बहु सुख पाय॥
नंद यशुमति देखि सुत गुन हर्ष उर न समाय।
गोप गोपी देखि शिशु नव हर्ष रहू उर छाय॥
कृष्ण ब्रज जन देत सुख बहु रासु प्रेम बढाय।
कृष्ण जस यह रामसेवक कहत श्रुति बुध गाय॥२२२॥

राग श्री

हरि बचन सफल सुखदाई।
सुनि करु लोग लोगाई॥टेक॥
ताल नाम वन जोइ बृंदावन तेहि फल फूल सोहाई।
धेनुका नाम असुर हरि बध हित तेहि बन रहत छपाई॥
रासभ रूप धारि तरु तालहिं हिलावत हिहिनाई।
फल फुल दलनहिं गोप लहत कोइ डर बसा नहिं नियराई॥
सकल जानि हरि कहत अहः इव बालन बहुत बुझाई।
चलहु ताल बन धेनु चरावन सुनु तृण तर अधिकाई॥
मधु पियब फल खाव मुदित मन चर तृण धेनु अघाई।
सुनि शिशु सकल हर्ष उर बाढत हरि सब ठाव बचाई॥

श्रीदामा बलदेव मुदित मन हरि संवत मल भाई।
हरि श्रज्ञा करि रामसेवक सुख लहु विहुँ लोक बड़ाई ॥२२३॥
हरि व्रजपुर जन सुखकारी।
खल बध निज हृदये विचारी ॥टेक॥
करि सखन शिशु धेनु लेइ हरि आयेउ ताल मझारी।
हलधर ताल हिलाइ सोर करि जनु रिपु बोलु अगारी॥
धेनुका सुर गर्धव को रुप धरि क्रोधित सुनत दुखारी।
हिंकरि हिकरि कूदत छिति छाडत आइ नाद करु भारी॥
त्रसित मेघवत नाद सुनत शिशु गहु उर सरन मुरारी।
हलधर निकट जात हहकारत वीर धुरीन निहारी॥
हलधर पर पद धारि असुर कर वेगि ख अवनि पछारी।
पुनि भरमाइ तारा तरु ऊपर झटकि पटकि तेहि मारी॥
पुष्प वृष्टि करु देव मुदित मन जैति जैति धुनि धारी।
फल तृण लहि सुख रामसेवक लहु पशु व्रज खगनर नारी ॥२२४॥
हरि धेनु चरावन जाई।
प्रतिदिन शिशु संग लेवाई ॥टेक॥
यमुना तट काली दह के ढिग कोइ दिन शिशु चलि आई।
विष संयुक्त पवन चलु सोइ दिसि जहँ बालक समुदाई॥
मृतक होय बालक अननी पर विष ज्वाला अधिकाई।
बन बालक इत उत हरि खोजत अज्ञत इव पछताई॥
आइ मृतक बालक सब देखेउ अमृत दृष्टि ख जियाई॥
सुप्त सदृश बालक उठि बैठेउ कहु हरि प्राण बचाई॥
हरि व्रजपुर पालन हित धरणी नर तन धर श्रुति गाई॥
पुनि श्रुति कहत विशेष हेतु व्रज पालत छन छन [illegible]।
कोइ दुर्गम अरिष्ट परत व्रज हरि सोइ तुरत [illegible]।
करु रक्षा हरि रामसेवक जग व्रज जन अधिक [illegible]। २२

हरि ब्रज हित उरसि विचारी ।
जेहि होय शुद्ध सरि वारी ॥टेक॥
खगपति दीप नाग जब पठइव गरुड़ महा भय टारी ।
यमुना जल निर्मल होइ हित बहु सुरख लहु ब्रज नर नारी ॥
काली दह पर नाम अचल जग कलि कल्मष दुख हारी ।
करि स्नान लह्यो चारिउ फल अधम नारि नर भारी ॥
सौरभ तप थल पावन अति थल बृन्दावन अधिकारी ।
कालिंदी महिमा अति उत्तम बेंद पुरान सवारी ॥
मम पद परस सोइ थल करु सरि अघ हरि करइ सुखारी ।
लीला मम एह गाइ भवन करि सुख लहु जन उर भारी ॥
अस विचार हरि मन करु जबहीं नारद उर छन धारी ।
कस भवन नारद सोइ छन चलु रामसेवक सुखसारी ॥२२६॥
हरि निज मन जोइ विचारी ।
सोइ नारद उर धारी ॥टेक॥
कस द्वार करतल वर बीणा धारि आय सुख सारी ।
शत्रु जनाइ प्रेम हरि पद करि गावत प्रभु गुण भारी ॥
काली नाग जेहि जाइ भवन निज होय शुभ्र सरि बारी ।
कंस हृदय होय त्रास अधिक जेहि सुख लहु ब्रज नर नारी ॥
सोइ नारद करु गान कस सन हरि जस बहु बिस्तारी ।
तव रिपु नद सुवन नहिं देखत हित होय कहत दुलारी ॥
काक तृणाव्रत पुतना बधु जोइ बका अघा, सुर मारी ।
धेनुकासुर वध कीन्ह सुनत तुम हलधर अवनि पछारी ॥
काली दह ढिग जाहिं पुष्प हित नाग देइ छन जारी ।
शत्रु हीन सुख रामसेवक लहु महिमा अगम मुरारी ॥२२७॥
सुनि नारद वचन सोहाई ।
कस कछुक हरखाई ॥टेक॥

दूत बोलि मुनि बचन सत्य लखि हरि कहँ रिपु ठहराई॥
जाहु बेगि अब नंद भवन तुम कहु ब्रज जन समुदाई॥
काली नाग जहाँ रहै महा ह्रद सोइ विष तहाँ अधिकाई।
कमल प्रफुल्लित निकट नाग के रहु चहुँ दिसि बन छाई॥
पुष्प सोइ बलदेव कृष्ण मिलि लेइ आवहिं दोउ भाई।
विष ज्वाला अधिकार लगत तन जाहिं बेगि मुरुझाई॥
एहि विधि रिपु कर नास होय ध्रुव बेगि कहो अब धाई।
सुनत नंद यशुमति व्याकुल भई सिर धुनि धुनि पछताई॥
कृष्ण चरित सुनि रामसेवक ध्रुव सुर नर मुनि सुख पाई॥२२८॥
सुनि नंद सकल पुरवासी।
जोइ कंस दूत परगासी॥टेक॥
बार बार पछतात यशुमति सुत पद प्रीति हुलासी।
कोइ नहिं कहइ कृष्ण सन कमल हाल दुख रासी॥
बालन संग मम शिशु दोउ क्रीडत सुनत तहाँ चलि जासी॥
नाग छाडु फुफकार जबहिं मुख सोइ छन सुत मुरुझासी।
बिलपत नंद यशोमति बहु विधि संग दास मिलि दासी॥
सुत विषयक अस प्रीति करत बर लखतन हरि अबिनासी।
क्रीडत कोइ सन कंस हाल एह सुनत कृष्ण पुलकासी॥
जाइ कमल लेइ आइ देब तेहि अस मन गुनि हरखासी।
अद्भुत चरित करब फणि ऊपर सुख अहि चहुधा सी॥
कृष्ण सृष्टि सब रामसेवक जग कस न लखु महिमा सो॥२२९॥
हरि यमुना तट हरखाई।
गयो बालन संग लेवाई॥टेक॥
कंस मान मर्दन हित क्रीडत शिशु मिलि बहु मन लाई।
कमल लेइ ढिग धरब कंस जब तब ब्रज जन सुख पाई॥
नाग जाइ जबहिं गृह अपने तब रिपु त्रास जनाई।

गेंदुवा खेल खेलत शिशु हिरि मिलि एक एक प्रेम बढाई।।
श्रीदामा हरि मित्र परम शुचि लेइ सोइ गेंदुवा धाई।
यमुना तट दह निकट दाम तरु हरि तहि झट चढि जाई।।
श्रीदामा कर गेंदुवा सुंदर काली दह मों गिराई।
मैत्री तजि कहत श्रीदामा गेंदुवा लेन हम भाई।।
हम तुम सन नहिं घाटि कोइ विधि कहि कर गहि अरुझाई।
महिमा कृष्ण न रामसेवक लखु हरि कर मित्र बडाई।।२३०।।
कहि जात न चरित मुरारी।
करु प्राकृत नर अनुहारी।।टेक।।
अलौकिक करु कर्म सकल ब्रज लखत न कोइ नर नारी।
मित्र सकल न मित्र कोइ हरि भक्त पक्ष अनुसारी।।
श्रीदामा गेंदुवा निज कर गहि डारि दीन्ह सरि थारी।
कर गहि श्रीदामा झकझोरत गेंद गयो मम वारी।।
काली दह तुम जाहु वेगि अब नाहिं देत बहु गारी।
कूदेउ शीघ्र हरि वचन मित्र सुनि सोइ ह्रद मध्य निचारी।।
सकल बाल देखत सुखित भयो श्रीदामहिं दुख भारी।
नंद यशोमति सुनि विलपति अति हाहाकार पुकारी।।
हरि महिमा बहु विधि तेहि कहि कहि प्राण राखु हलधारी।
कृष्ण हरहिं दुख रामसेवक ध्रुव ब्रज जन अविरु दुलारी।।२३१।।
हरि काली दह मो जाई।
करु चरित अमित सुखदाई।।टेक।।
कृष्ण रूप नागिनि अति देखत सुंदर वदन लोनाई।
मोहि गई नहिं अनत बिलोकत श्याम सूरति मन लाई।।
कहत कृष्ण सन जाहु वेगि गृह सर्प उठत को बचाई।
सुंदर रूप जीव परिहेलत केहि कारण इहाँ आई।।
कृष्ण कह्यो तन नाह लेन हित सुनत स्व पतिहिं जगाई।

आगत नाग विषम विष छाडत कृष्ण चढ्यो सिर धाई ॥
नागिनि नाग विनय बहु करु हरि कमल लेइ सुख छाई ।
नाग सकल दरसाइ सरित तट पुष्प कृष्ण धरवाई ॥
रवणक दीप बसाइ नाग कहँ ब्रज जन सुख दरसाई ।
कृष्ण निरखि सुख रामसेवक जनु लहु धन तन गत पाई ॥२३७॥

राग केदारा

कहु हरि चरित बुध श्रुति गाय ।
प्रेम नेम बढाय ॥टेक॥
कल्प कल्प हरि चरित बहु विधि कहत भेद जनाय ।
कस हरि बध हेतु निज दल कीन्ह अमित उपाय ॥
कीन्ह अमित गलानि निज उर दूत अपर बोलाय ।
जाहु गोकुल नन्द गृह अस कहहु मम प्रभुताय ।
पारिजातक कज सरु बहु पुष्प मोहिं सोहाय ।
कृष्ण अरु बलदेव जुत अस नद पुष्प लियाय ॥
वेगि आवहिं नद मम पुर कहहु जाइ बुझाय ।
कस शठ हठ कारि बहु विधि दूत शीघ्र पठाय ॥
नद सन कहु जाइ नृप मत दूत बहु हरखाय ।
नद सुख बहु रामसेवक कृष्ण जब दरसाय ॥२३३॥
हरि पद प्रीति किमि कहु गाय ।
मातु रिपु कोइ मित्र शिशु लखु अत सम फल पाय ॥टेक॥
कमल पुष्प की हाल कहु जब दूत त्रास जनाय ।
नद कस भय प्रीति सुत पद सुनत गयो मुरुझाय ॥
सुनत यशुमति नद भाषित अवनि गिरु बिकलाय ।
कृष्ण सुनि शिशु लेइ क्रीडत गयो सरि तट धाय ॥
लेइ कदुक धारि निज कर तुरत हृद मो जाय ।

फारि जल पाताल गत हरि नाग तहँ दरसाये ॥
मित्र श्रीधर कृष्ण को वर वेगि गोकुल आव।
कृष्ण गति कहु सुनत जननी उठी भई अकुलाय ॥
आइ यमुना तीर धावत देव पितर मनाय।
दान मत वहु रामसेवक भानु हरि प्रगटाय ॥२३४॥

राग टोडी

हरि करु लीला तिहुँ पुर सुख छाय के।
भक्तन अभक्त सुख दुख दरसाय के ॥टेक॥
कंदुक स्व कर लाइ कज हित चलु धाइ
कदम हिलाइ कुदि जल महँ धाय के।
जल कहँ फारी टारी गयेउ पताल वारी
काली नाग ढिग हरि वैठ्यो हरखाय के ॥
नागिनि विलोकि हरि वचन सुखअनुसारि
रूप को निधान कहाँ आयो केहि लाय के।
जुवा खेलि हारे होउ त्रासि कोइ कहु सोउ
धन लेइ जाव वहु देउ तेहि जाय के॥
कंकण सुहार लेहु मन भावै तेहि देहु
जीव अनमोल काहे देत इहाँ आय के।
जब ते ने नाग जागी तव ते तु जाउ भगि
उठि खाइ अँग सव सफल पचाय के ॥
कृष्ण कहु नाग धारि कस द्वार एहि हारि
लेइ जाव वेगि फुल लादि दवराय के।
नागिनि सुबोध करि सुनि के वचन हरि
रिपु गृह आयो वहु नाह को जगाय के ॥

सुनि रिपु काली नाग सभ्रम सो उठि जाग
मेघनाद कीन्ह फुफुकारि हरि पाय के।
कृत सभारि रामसेवक हरि पुकारि
सुख हरि दीन्ह नाग पतिनी बुझाय के ।।२३५।।

करु क्रोध नाग हरि बदन निहारि के।
परम स्व शत्रु मानी रूप हरि नहिं जानी
रोस बस जागी अज अगुण बिसारि के ।।टेक।।
क्रोध करि विष धरु श्याम तन श्याम करु
मूर्छित विकल करु बहु फुफुकारि के।
गरुड़ को हरि टेरी लीन्ह सोइ नाग घेरी
पुष्प लादि कीन्ह ढेरी सेस सिर धारि के।।
गरुड़ को बिदा कीन्ह साप तन अभय दीन्ह
चलु गृह नाग लेइ पुष्प सु सवारि के।
नागिनि को तोष करि नाग सिर पुष्प धरि
गर्ज घोष घर करु सरि जल फारि के।।
हाहाकार नाग करि त्रयलोक कप भरि
कृष्ण बेगि कर उर्द्ध यमुना सु वारि के।
रूप स्व देखाइ धाइ भ्रज जन सुखदाइ
कस द्वार,जाइ पुष्प दीन्ह ढिग डारि के।।
नाग गृह जान कहु कस विस्मय लहु
हरि पुर आइ सुख दीन्ह नर नारि के।
नाग लीला गाइ रामसेवक सुगति पाइ
कल्प भेद बहु विधि चरित मुरारि के ।।२३६।।

राग विराग

सफल जन कृष्ण कृष्ण धुनि लाई ।
सुत वित नारि नाह गोकुल सुख सुधि बुधि तन निसराई ।।टेक।।
कदुक गहि चढि कदम वृच्छ हरि कूदि यमुन ह्रद जाई ।
श्रीधर घर हरि मित्र परम शुचि नंद भवन अस गाई ।।
नंद यशोमति सुनत विकल अति सभ्रम चलु उठि धाई ।
गोप गोपी गन सुनत वचन सर अति विह्वल चलि आई ।।
हाइ हाइ करि नीर निहारत कहाँ हरि देहु लखाई ।
धारा सकल काली वह थल वर अँगुलिन दर दरसाई ।।
कृष्ण कृष्ण कहि कहि उर ताडत निरखत बारि लोनाई ।
कृष्ण सरिस सरि वारि श्याम वर एक टक रहत कठाई ।।
देव पितर गन सकल मनावत देहु कृष्ण प्रगटाई ।
कृष्ण कृष्ण रटु रामसेवक जन कृष्ण सकल सुखदाई ।।२३७।।

निकल अति सरि तट ब्रज नर नारी ।
कृष्ण विरह व्याकुल अति पुरजन तन सुधि सकल बिसारी ।।टेक।।
हाइ हाइ कहि कृष्ण पुकारत यमुना बारि निहारी ।
रोदत वदत हरि गुण गन कहि कहि हरित सरित जल वारी ।।
सकट सब ब्रजभूमि हरण हित प्रभु बका अघासुर मारी ।
विष सन सकल जियायेउ बालक अब कहु कवन उबारी ।।
नंद यशोमति उर कर ताडत पुनि लोटत पट टारी ।
सिर पटकत महि डूबन चलु सरि हलधर धाइ कर धारी ।।
सहि न सकत जड जीव विकल बहु कृष्ण विरह अति भारी ।
विलिपत धेनु सहित बछरा तट शिशु सब कृष्ण पुकारी ।।
महिमा हरि बलदेव जानु सब बोधत पितु महतारी ।
कृष्ण कृष्ण कहि रामसेवक सुख लहु अस नाम मुरारी ।।२३८।।

सकल ब्रज कृष्ण विना अति दीन ।
नारि सकल नर वारि विलोकत एक टक पद गति हीन ।।टेक।।
नंद यशोमति भुवि पटकत सिर जीवन कृष्ण अधीन ।
तलफत नंद यशोमति किमि भुवि जिमि बिनु नीर पाठीन ।।
शून्य लगत त्रयलोक कृष्ण बिनु पीन अद्रि अति छीन ।
सकल सृष्टि निपति लगत उर पुष्ट छीन छीन पीन ।।
शिशु लगु वृद्ध वृद्ध शिशु लागत जुवा नारि नर खीन ।
निह्वल गोप गोपी किमि भुवि तल निघटत जिमि जल मीन ।।
इह जन्मनि नहिं पाप कीन्ह कोइ देखि परत प्राचीन ।
सुगति कुगति निज कृत सुख दुख लहु भोग करत नावीन ।।
दुख हर सुख कर कृष्ण सकल ब्रज अपराध नहिं कीन ।
होहु प्रगट अब रामसेवक हित चरन कृष्ण मन लीन ।।२३९।।

सकल ब्रज कृष्ण विरह रहु छाई ।
बछुरा छीर पिवत नहिं हुँकरत धेनु घास नहि खाई ।।टेक।।
पछी गन जत जीव वृंदावन तरु तृण सब मुरझाई ।
गोप बाल अति विकल कृष्ण बिनु कृष्ण कृष्ण धुनि लाई ।।
गोप सकल गोपी गन विह्वल जनु अहि मणि सब गवाई ।
नंद यशोमति लोटत भुवितल मन बुधि सुधि बिसराई ।।
काली दह कोइ छन निरखत जल बिनु हरि कछु न सोहाई ।
हरि महिमा कहि कहि रोहिणी सुत ब्रज जन प्राण बचाई ।।
आइ जात हरि देर नहीं कछु कहि अस शोच नसाई ।
नागिनि नाग जगाइ जगतपति रिपु कहि दीन्ह देखाई ।।
छाड़त मुख फुफुकार क्रोध करि हरि तेहि सिर चढ़ि जाई ।
नाग सहित अब रामसेवक प्रभु आवत जन सुखदाई ।।२४०।।

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित फणि सेस कृष्ण रूप धर सुधारी ।
गोकुल नर नारि विकल देव मुनि सुखारी ॥टेक॥
चरन कमल अति सुभ्राज ध्वकुश ध्वज जव बिराज
नख मणि गन जोति मोति कोटि शत तमारी ।
भूषण वर वसन अग देखत अनग दंग
कोटिन शशि बदन भास केस लहि मुरारी ॥
मुरली रव मधुर राज किंकिणि धुनि अति सुभ्राज
सुदर गति ताल लाल मोहत सुर नारी ।
ठुमुकि ठुमुकि धरत पाव पैजनी धुनि लहत दाव
शीघ्र अति अनूप सेस सीस पृथक कारी ॥
तोरत बहु बाम तान दक्षिण कर धारि कान
पलटत थद शीघ्र मनो अमि जरत हारी ।
निर्चत अहि सीस ईश कृष्ण सकल लोक धीश
देखत सुर बाद्य गान करत पुष्प भारी ॥
तत्था त्थेइ त्थेइ गाय त्थेइ त्थेइ कर उठाय
देव मुनि समाज तान तोरु सग धारी ।
जिमि जिमि पद धरत सीस नाचत तिमि शीघ्र ईश
सोइ भाव सदश देव लावत कर तारी ॥
प्रमुदित अहि सीस ईश ताल क्रिया चलत धीस
मिलि सराग तान गान देव हरि दुलारी ।
निर्त्त गान करि उदार हरत सकल धरणि भार
देवन आनद देत सेस अघ विदारी ॥
नाग नम्र कीन्ह सीस निरखत मुनि देव ईश
नागिनि अरु नाग कृष्ण रूप उर विचारी ।

महिमा अपार जानि जगत नाथ नाथ मानि
ओरि हाथ मोरि सीस स्तुति अनुसारी ॥
जयति जय प्रकृति पार हरण सकल धरणि भार
लीन्हेउ अवतार मनुज दनुज कुल निहारी ।
मारि मारि तारि दीन्ह सकल लोकसुजस लीन्ह
जड प्रकृति जानि मोरि सहेउ नाथ भारी ॥
चरन कमल सीस धारि दीन्हेउँ मम अघ विदारि
परसत नहिं परत कोपि भव समुद्र वारी ।
अमित अधम कीन्ह पार रामसेवक करु विचार
लीजय अपनाय कृष्ण जानि मोरि वारी ॥२४१॥
निर्त्तत अहि सीस ईश निरखत मुनि देव धीश
तोरत बहुत तान मान बाँसुरी बजाई ।
सग सग देव नारि गावत सुर मुनि सुकारि
तुमुल राग नाग नाक लोक रहछाई ॥टेक॥
नागिनि अरु नाग देखि कृष्ण रूप महा पेखि
स्तुति अनुसारि चरन कमल सीस नाई ।
द्विजय पति दान नाथ नाहँ सीस फेरि हाथ
अभय कीन्ह लोक तीनि चरन सीस लाई ॥
पुन्य पूर्व रह्यो जाल चरन कमल धरु कृपाल
सीस अहि पुनीत कीन्ह दोष अघ बिहाई ।
जोइ निज सकल जानु अगम निगम नहिं स्व मानु
धन्य नाग भाग्य अचल पायो अधिकाई ॥
सकल देव मुनि सुरेश ध्यान करत अज महेश
चाहत पद रेणु नाथ सुजस विविधि गाई ।
पावत नहिं चरन धूरि सेवा सुर करत भूरि
दीन्ह्यो अधिकार नाग नाथ इहाँ आई ॥

उद्धव स्थिति नाम हाय अपर नाहिं कोपि साथ
जीव सकल लोक मोह माया लपटाई।
वृषभ नाथ सूत्र धारि फेरत इत उत प्रचारि
तथा जीव गुण सु सूत्र राखत अरुझाई।
दीजय अहिजात दान राखहु सम नाह ग्रान
महिमा न जानु अज्ञ अज्ञता गयाई॥
नागिनि कर बोध कीन्ह कृष्ण ज्ञान भक्ति दीन्ह
अज्ञता निभंजि कीन्ह नाग की बडाई।
नाग लेइ जाय अबहिं छाड़ि देय पार तबहिं
रवणक वर दीप वास देय तेहि बसाई॥
चरन कमल चीन्ह सीस देखहिं जब थीय ईश
अभय दान देहिं तोहिं राखहिं कर भाई।
पुष्प सहित नाग लेइ ज्ञान भक्ति बास देइ
आये मरि तीर धीर नाग को बचाई॥
कृष्ण रूप अति ललाम देखत घन नाग श्याम
पुलकित नर नारि सकल रूस त्रास पाई।
रवणक वर दीप वास कीन्ह गरुड निगत त्रास
पायो सुख भूरि नाग नागिन सु धाई॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण रटत रामसेवकै सुरख चरत
बेद सेस कहत कृष्ण प्रभुता प्रभुताई॥२४२॥

राग श्री

हरि कीन्ह शुद्ध सरि बारी।
रवणक दीप वास कालिय करि हृदय सुनाते निकारी॥टेक॥
कसहिं त्रास दीन्ह उर अतर जस त्रिभुवन बिस्तारी।
कृष्ण कृष्ण तट रटत जानि सरि ब्रज वासी नर नारी॥

निकट जाइ तेहिं दीन्ह महा सुख शोक मोह भ्रम हारी ।
नद यशोमति लेहत प्राण सुत तुरतहिं आँखें उघारी ॥
बोलि विप्र दियो दान विविधि विधि सुत गहि गोद दुलारी ।
प्राण गये लहिं प्राण बहुरि जिमि तिमि सर्व भयेउ सुखारी ॥
हरि लीला बलदेव जानि सब मिलु हँसि भुजा पसारी ।
गोपी गोपगन सकल अनन्दित शिशु सब सुख लहु भारी ॥
श्रीधर शिशु हरि मित्र परम शुचि सुख बहु कहु श्रुति चारी ।
सुख लहु रामसेवक त्रिभुवन अति लखि वर चरित मुरारी ॥२४३॥
हरि सकल लोक सुखदाई ।
व्रज जन अधिक सहाई ॥टेक॥
कस महा खल दैत्य पठायो चहुँ दिसि अनल लगाई ।
किमि रक्षा करु कृष्ण सकल जन छन महँ देउँ जराई ॥
अति प्रचंड ज्वाला चहुँ दिसि चलु पवन वेगि अधिकाई ।
गर्जत अति तर्जत हहकारत धूम अनल रहु छाई ॥
विकल भयो व्रज नारि सकल नर ताप न उर सहि जाई ।
कृष्ण सरण गहि कृष्ण पुकारत हरि लखि जन बिकलाई ॥
आरत वचन सुनत निज गति लखि जोगानल प्रगटाई ।
अग्नि पान कियो मारि असुर खल व्रज जन सकल बँचाई ॥
जब जब भीर परत व्रज ऊपर कर रक्षा हरि धाई ।
हरि सरणागत रामसेवक जन सकल परम सुख पाई ॥२४४॥
हरि जस कहु व्रज नर नारी ।
महिमा अमित पुकारी ॥टेक॥
पुतना वध करि शकट उलटि पद काक तृणतब्रत भारी ।
वका अघा भसि लीन्ह शिशुन सब मारेउ सोई तन फारी ॥
धेनुकासुर बलदेव मारि खल व्रज जन कीन्ह सुखारी ।
यमुना जल कियो शुद्ध जनन हित कालि नाग कहँ टारी ॥

दावानल करि पान सकल जन हरि एहि बार उबारी।
विष ज्वाला सन मृतक सकल शिशु जियायेउ हरि वारी ॥
फल झुकाइ चढाइ पलटि शिशु प्रलवा को निहारी।
भाँडीर वन अवधि वृक्ष वट श्रम चला बल धारी ॥
असुर प्रबल बलदेव जानि ध्रुव अवनि पटकि तेहि मारी।
सकल सराहत रामसेवक जन सुखप्रद सुजस मुरारी ॥२४५॥

हरि चरित बिसद श्रुति गाई।
बहु गोप गोपिन सुखदाई ॥टेक॥

करत केलि ब्रज गोपग्वाल मिलि अज अनवद्य गनाई।
अलौकिक तजि लौकिक करु हरि अति प्राकृत जनि जाई ॥
गोपिन की रुचि करत सदा हरि नेह सुप्रेम बढाई।
भक्ति नात अधिकार मानु हरि एह चहुँ जुग चलि आई ॥
पनिघट घाट गोपिन कर मेला एक एक मन लाई।
मिलहिं अकेल कबहिं मोहिं हरि पथ कर गहि उर लपटाई ॥
उर गहि सकल भाव गोपिन कर हरि उर अधिक सोहाई।
लेइ शिशुन पनिघट हरि आयो तरु पर रहेउ छपाई ॥
गोपी जल लेइ चलिय जबहिं गृह हरि गहि जल ढरकाई।
गेंडुरी इत उत करि हरि अरुभत रामसेवक सुख छाई ॥२४६॥

राग सोरठो

घाट परो घाट निति रोकत कँधाई री।
इत उत देखि चलु नहीं दरसाई री ॥टेक॥

प्रातकाल जाइ काँध बसुडी बजाइ गाइ
कदम सु तरु पर बेगि चढि जाई री।
बोलत न कोइ रीति इत उत चितवत
तरु पात ओट ढुकि रहत छपाई री ॥

जल लेइ चलु जन कृष्ण पथ रोकु तन
नीर ढरकाइ लरि कर धरु धाई री।
अटपट बोलि बात अंग लपटाइ जात
कर झकझोरि उर रहु अरुझाई री॥
नंद ढोटा अति खोटा ठगन मो ठग मोटा
देखत को छोटा कर धरि मुसुकाई री।
कोइ भाव गृह आइ टोना सोइ सग धाइ
मन हरि लीन्ह ठगि बदन देखाई री॥
ठग खोट कहि रूप उर गहि गहि
सकल सखिन उर ललचाई री।
सकल सुअंग रामसेवक सुसंग लखु
कहि न सकत कवि बदन लोनाई री॥२४७॥

रोकि पानीघाट हरि रहत छपाई री।
कुल घर कानि लाज सकल गवाई री॥टेक॥
कदम सु तरु प्रात चढि जात धरि लात
बोलत न दुकि देखि रहत कठाई री।
यमुना सरित नीर भरि भरि धरु तीर
वृक्ष को हिलाइ डार तन दरसाई री॥
गेंडुरी पवारि लेत जल ढरकाइ देत
पथ रोकि कहि कटु कर चमकाई री।
गगरी सु फोरि देत बहियाँ पकडि लेत
गेंडुरी बहाइ नीर अंग लपटाई री॥
गृह नहिं जाने देत चीर छिनि छिनि लेत
फारि इत उत करि कर धरु धाई री।
गोपी गन सुनि सुनि मन पुलकित गुनि
पृथक पृथक सुख लहु तट आई री॥

उर पुर पुलकाइ सुरन सन गारी गाइ
सुख रस लहि लहि रहु अरुफाई री।
गोपी गन रीति रामसेवक न कहु प्रीति
भक्ति ज्ञान रस रग अग मो समाई री ॥२४८॥

राग टोडी

हरि किमि करु छेड पनिघट आय के।
लोक लाज कुल कानि सकल गवाय के ॥टेक॥
गोप सुत न मानि कन्या गोप मोहिं जानी
एक ग्राम धाम जाति पाति विसराय के।
तुम सन छोट नाहीं जाइ कहु केहि पाहीं
कुल गहि लाज उर रहु सकुचाय के॥
कुल गति तजि कानि हसि किमि गहु पानी
गाली अस देत किमि नाता उर लाय के।
सिर न कलक लेहु गृह अब जाने देहु
किमि अरुभात मम जल ढरकाय के॥
चूर्ण घट फोरि कीन्ह गेंडुरी पवारि दीन्ह
कर गहि लीन्ह अग अग लपटाय के।
छाडि देहु अब मोहि कहत पुकारि तोहि
नद नदरानी सन कहु नहि जाय के॥
कस सन कहु जाइ सुनत दोहाइ आइ
पकडि मगाइ तोहिं रारव बधाय के।
कृष्ण कहु मुसुकाइ कस की नहिं सिराइ
मातु पितु उर नहिं रहब बुफाय के॥
गोपी गन गृह आइ पृथक पृथक गाइ
निसुटइ जोइ भाव सोउ कहु गाय के।

कृष्ण जस गाइ रामसेवक सुकृत पाइ
पाप नसाइ हरि रूप मो लोमाय के ॥२४९॥

हरि पनिघट रहु हित ब्रज नारि के ।
चोर इव तरु चढि इत उत चितवत
ब्रह्म अज अगुण रु सगुण बिसारि के ॥टेक॥
ब्रज नारी आइ आइ पृथक पृथक धाइ
सिर धरि चलु गृह यमुना सु वारि के ।
कृष्ण हहकारि धाइ पथ रोकु ढिग जाइ
जल ढरकाइ लपटाइ कर धारि के ॥
गोपी निमुढाइ मुसुकाइ सुख पाइ पाइ
गृह जाइ जाइ कहु चरित मुरारि के ।
यशुमति ढिग जाइ ओरहन देत गाइ
मित्र डर पुर मुख शत्रु रु पुकारि के ॥
यशुमति बोध करि ओरहन डर धरि
निंदा करु गोपिन को बहुत दुलारि के ।
कृष्ण निज गृह आइ यशुमति धइ पाइ
गोद राखि सुत कहु बचन सवारि के ॥
पनिघट किमि जाइ धूम करि मचलाइ
गेंडुरी पवारि घट सिर ते उतारि के ।
कर गहि लपटाइ घट जल ढरकाइ
पुनि घट इत उत करु फोरि फारि के ॥
सुनि रिसि मारि रहु सिख अब तोहि कहु
कुल लाज गहि गृह रहु विचारि के ।
कृष्ण बोध करु रामसेवक रु सुख भरु
निरदोस लखि रहु वदन निहारि के ॥२५०॥

जल ढरकाइ लेत गेंडुरी पशारि देत
धूम अति करु नहिं एसो जगी री ॥
ठगन मो ठग घर धरि लेत झट कर
सिर पट टारि त्रिय करु नगी री ।
घर नहिं धरु दाया नेक नहीं करु माया
देत हीं दोहाइ नहिं कोइ सगी री ॥
छाड़ि देहु मम बाट जनि रोकु एहि घाट
सुनि बात दगा करु अस दंगी री ।
कर गहि लपटाइ तजि मुरली बजाइ
वेणु मुरुचग देहु परु मुरचगी री ॥
पृथक पृथक प्यास हरि करु पूर आस
कृष्ण को बिलास गाय रङ्ग रग रगी री ।
करत विनोद रामसेवक हृदय ओद
पनिघट ब्याज कृष्ण गोपी एक अगी री ॥२५२॥
घर जाने दे कँधाइ जनि रोकु डगरो ।
तुम रगरा मोहिं लखु रगरी ॥टेक॥
सहि नहिं जात निति घाट एह रोकु बाट
गारी देइ देइ किमि फोरो गगरी ।
गेंडुरी पशारि महि जल ढरकाइ गहि
कर झकझोरि निति निति झगरी ॥
सखी यहु कहु गाइ जब कस ढिग जाइ
चोरी करि गृह गृह खायो दगरी ।
अस नहिं चलु गारा देवु नृप द्वार हाल
झट-दड देइ सिर ,छोरु, पगरी ॥
नद सन कहु गाइ यशोमति को सुनाइ
नद सम को दयाल एह जग री ।

रागिनी सोरठी तस्या दस्या
ठोमरी अति प्राकृत भाषा कजली

देखो देखो नन्द ढोटा अति खोटा रगरी।
प्रतिदिन प्रात उठि छेंकु डगरी ॥टेक॥
वृक्ष पर छिपि जाइ गोपी हेरि ढिग आइ
पथ रोकि रोकि सिर फोरै गगरी।
कर गहि लपटाइ गेंडुरी बहाइ धाइ
जल ढरकाइ मचलाइ मगरी॥
कबहीं कुनहि यारि कर मो लकुठ धारि
कबहीं के सिर धरु टेढी पगरी।
भुवि अँठिलात चलु कर सन भुज मलु
नयन चलाइ इत उत बगरी॥
अति मगरूर नहीं भुवि सुर वीर कहीं
मानु राजधानी निज भुवि सगरी।
अतिशय अभिमानी करत न उर कानी
चोरी चोरी खात गृह गृह दगरी॥
नद की दोहाइ तोहि वधाइ देउ कँधाइ
मोहिं जाने देउ गृह जनि रोकु मग री।
चहुँ सुरा लहु रामसेवक सकल कहु
अब न बसब नद जू की नगरी॥२५१॥
देखो नद के ढोटाना जल रग रगुरी।
बहियाँ मरोरि देत झट पथ रोकि लेत
नयन तरेरि चमकावै अगुरी॥टेक॥
पनिघट छेंकि छेंकि गोपिन को देखि रोकि
अटपट बात कहु मानो भगी री।

जल ढरकाइ लेत गेंडुरी पवारि देत
धूम अति करु नहिं एसो जगी री ॥
ठगन मो ठग वर धरि लेत झट कर
सिर पट टारि जिय (करु) लगी री ।
डर नहिं धरु दाया नेक नहीं करु माया
देत हौं दोहाइ नहिं कोइ सगी री ॥
छाडि देहु मम बाट जनि रोकु एहि घाट
सुनि बात दृगा करु अस ढंगी री ।
कर गहि लपटाइ तजि मुरली बजाइ
वेणु मुरुचग देखु परे मुरचगी री ॥
पृथक पृथक प्यास हरि करु पूरि आस
कृष्ण को विलास गाय रस रग रगी री ।
करत विनोद रामसेवक हृदय ओद
पनिघट व्याज कृष्ण गोपी एक अगी री ॥२५२॥

घर जाने दे कँधाइ जनि रोकु डगरी ।
तुम रगरा मोहिं लखु रगरी ॥टेक॥
सहि नहिं जात निति घाट एह रोकु बाट
गारी देइ देइ किमि फोरो गगरी ।
गेंडुरी पवारि महि जल ढरकाइ गहि
कर झकझोरि निति निति झगरी ॥
सखी बहु कहु गाइ जब कस ढिग जाइ
चोरी करि गृह गृह खायो दगरी ।
अस नहिं चलु गाल देखु नृप द्वार हाल
झट-दड देइ सिर छोरु, पगरी ॥
नद सन कहु गाइ यशोमति को सुनाइ
नद सम को दयाल एह जग री ।

बरजहु कृष्ण धरि करत अचगरी
जाइ बसु ग्राम आन नहिं तव नगरी ॥
कंस वंश नास करि मातु पितु बोध धरि
जाने नहिं देव तोहि एह मगरी ।
कृष्ण पद पास रामसेवक करत आस
सकल निलास हरि मुवि सगरी ॥२५३॥

हरि बोलत कबहिं नहिं बात सुँदरी ।
देखत को छोट जनु बाल भुदरी ॥टेक॥
चुनि चुनि गारि देत मुख को सकोरि लेत
गेंडुरी पवारि बनु बड़ हुँदरी ।
कुदि कुदि करं गहु बात नहिं कोपि कहु
केस सीस चलु फुन फुन फुँदरी ॥
ताकत घुरेरि टेरी बहियाँ मरोरि घेरी
कर चमकाइ के देखावै मुँदरी ।
बाट रोकि टोकि देत गगरी खं छिनि लेत
डारी सिस भेंवत सुरग चुँदरी ॥
कटि को डोलाइ गाइ पैजनी बजाइ धाइ
बाजत खं आपु रुनझुन झुनरी ।
इत उत तान तोरु मुख सिर कर मोरु
अपुना ते गुती बनु एहि गुन री ॥
रोकि रोकि सरि घाट चलने न देत बाट
पनिघट सुख लहु गोपी गन री ।
कृष्ण की चरन रामसेवक सरन जन
गोपी गन गहु क्रम बच मन री ॥२५४॥

राग धनाश्री

गोपीगन की बुद्धि सयानी ।
हरि पद गहि उर लपटानी ॥टेक॥
कोइ भाव ढिग होय गहु हरि पद लाभ होय नहिं हानी ।
पुत्र भाव रिपु भाव भक्ति पथ दृढ़ अनुराग मों ज्ञानी ॥
नाह भाव महँ गोपी दृढ़ अति तजि पति सुत धन मानी ।
कृष्ण कृष्ण रटि नाह नेह करि हरि महँ अंत समानी ॥
कल्प कोइ पति हेतु कृष्ण कह पूजेउ हर हररानी ।
गोपेश्वर धरि नाम थापि शिव मंत्र जपेउ हलि पानी ॥
कोइ कल्प हित नाह मिलान हरि पूजेउ गोपि भवानी ।
पूजि सदा शिव पूजि भवानी कहु तुम घर घरदानी ॥
नंद कुमार को करहु मोर पति मन उर रुचि पहिचानी ।
कल्प भेद कछु रामसेवक कहु जस भव कल्यानी ॥२५५॥

किमि कहु तप गोपिन गाई ।
जेहि तप बल हरि पति पाई ॥टेक॥
हेमौंत ऋतु बरत करत तप बिधि शुभ सुरत ठहराई ।
करि सकल्प अवधि उर थिर धरि ऋतु अरु मास जनाई ॥
कात्याइनि देवी पद पूजत नेम म्य प्रेम बढ़ाई ।
सरित मध्य जल कठ मग्न तन जपत मंत्र हरखाई ॥
कात्याइनि महमाय अधीश्वरि फल तय जगत बड़ाई ।
नंद गोप सुत करहु मोर पति पद तय बंदन गाई ॥
मंत्र इहै निति जपत कठ जल कृष्ण चरन मन लाई ।
कात्याइनि को सच मत पूजा यंत्र मंत्र फलदाई ॥
मानै कलि जन जेहि देवी बहु हरि बिपारि भगताई ।
भक्ति रूद हित रामसेवक हरि गोपिन ढिग चलिआई ॥२५६॥

राग टोडी

गोपी गन मत्र जपु सरिवर जाय के ।
कठ भरि जल हरि पद मन राय के ।।टेक।।
देवी पद सिर धरि मत्र देवी जय करि
मागु वर दान देवी पद सिर नाय के ।
नद सुत-पति करु मम सिर कर धरु
गोपी गन कहु निति देवी गोहराय के ।।
देवी पद ध्यान लाइ बार बार कहु गाइ
हरि पति होहिं मम उर हर राय के ।
ऋतु एही मिलु कात तप्त उर होत सात
गोपीगन मन कहु उर पुलकाय के ।
देवी वरमान हित कृष्ण भाव धरि चित
भक्ति मम रही चहुँ जुग वर छाय के ।।
अयहीं हिमात रितु मास वर नाहीं वितु
गोपी ढिग जाइ अब फल दरसाय के ।
करि के विचार दाव गोपी उर लखि भाव
चीर हरि लीन्ह हरि सरि तट आय के।।
देवी जग वर माखु गोपिन को भाव राखु
दीन को दयाल दीन दानी कहवाय के ।
चीर हरि हरि लीन्ह गोपीन को वर दीन्ह
देवी जस देइ निज जस प्रगटाय के ।।
हरि कहँ पाइ रामसेवक हृदय लाइ
गोपी मन पूर श्रुति बुध कहु गाय के ।।२५७।।

गोपीन चीर हरि लीन्ह सुख सारि के ।
सकल वटोरी तरु गयो कर धारि के ।।टेक।।

गोपीगन अति धीर मंत्र जप कर थीर
हरि पद आस देवी चरन सम्हारि के।
जय करि चलु तीर गोपीगन धरि धीर
बस्त्रहि न देखि थल रहु दुति बारि के॥
इत उत ताकि भाखी हरि पद उर राखी
मागु चीर सब हरि बदन निहारि के।
कदम द्रु तरु ओट हरि बोलु बात मोट
एक एक आयो सब अगन उघारि के॥
एक एक ताकि भाखी निज रुचि उर राखी
चीर देउ श्याम निज उरसि बिचारि के।
नगन न देखी नारी कहु बुध श्रुति चारी
चीर देहु जोरि हाथ कहत पुकारि के॥
जल महँ कंप गात गृह मो रोदत तात
चीर देहु नाथ तोहि कहत दुलारि के।
कृष्ण तव पद आसी चरन उपासी दासी
चीर अब देहु बेगि तरु ते उतारि के॥
हरि नग्न कहु पुनि जोनि ढोंकि चलु सुनि
हरि कहु अग्र आउ कर जोनी टारि के।
हरि पद प्यासी रामसेवक सुखद रास
चीर गोपी लीन्ह लोक लाज श्रुति डारि के॥२५८॥

रागिनी सोरठी

हरि हरि लीन्ह चीर सकल बटोरी।
कदम द्रु तरु चढि लखु बिबुधोरी॥टेक॥
गापी गन धीर नीर कंपित न गात थीर
चीर हित हरिसन बहुत निहोरी।

गृह मँह बाल दीन रोदत न कोइ पीन
अब गृह जाव हरि चीर देउ मोरी ॥
पृथक पृथक धाइ न गन मन आइ
मम ढिग कहु गाइ चीर देव तोरी।
चछु न पलक लाइ कर जोइ नील गाइ
,चीर लेन चलु गोपी मति करि भोरी ॥
कर अग टारि देहु नयन पसारि लेहु
चीर निज लेउ आइ मम नहि खोरी।
रवि को प्रनाम करि निज कर शिर धरि
सन मुख आयो मम दोउ कर जोरी ॥
गोपी आइ चीर लीन्ह कृष्ण रस भक्ति दीन्ह
ज्ञान सुविराग मो अमृत रस घोरी।
लहि वरदान रामसेवक स्व मन ,मान
गोपी गन गृह जाइ वसु सुरत सोरी ॥२५९॥

चीर हरि किमि हरि करत ठठोरी।
पुनि कदु तरु चढि हँसि को थपोरी ॥टेक॥
हम अबला गृह बाराक रोवत
कंपित रहु जल हाथ मरोरी।
देहु चीर अपजस जनि लहु प्रभु
रारि बढै एहि बात न थोरी ॥
हरि कहु पृथक पृथक सब आओ
चीर लेहु रुचि करु सब तोरी।
अग ढाँकि चलु प्रमुदित पट हित
हरि कहु आयो चीर लेऊ कर छोरी ॥
अग सन कर छोरे भक्ति,भाव उर जोरी
सन मुख आयो मम दोउ कर जोरी।

गोपी गन आइ आइ चीर लीन्ह कर लाइ
गृह गइ बर लहि सब सुख सोरी ॥
करि के विनोद गोद प्रेम रस सुख ओढ
गोपी गन पति मानि उर धरि खोरी ।
सब लहु रुचि रामसेवक भयेउ शुचि
अब हरि देहु भक्ति रुचि राखु मोरी ॥२६०॥

राग सोरठो तस्या दास्या
तस्या किंकरी गति झूमरि अति प्राकृत फगुवा

दीजै चीर हमारा मुरारी ।
हम अबला गृह बालक रोवत काँपत नीर मझारी ॥टेक॥
गहि गहि चीर कदम चढ़ि बैठेउ मुरली अधर सुधारी ।
कर जोरे रहि सनमुख चितवत मम ढिग आवो उघारी ॥
निज कर जोइनि ढाकि चलु सनमुख निरखत पैना वारी ।
अग सग कर टारि देहु अजौं वहीं सुख उर भारी ॥
सुनि हरि बचन सकल पुलकित उर अँग कर दीन्हेउ टारी ।
हरि सन लाज न कोइ त्रिय राखत आपुहिं आपु निहारी ॥
चीर लीन्ह हरि मानि बचन फुर भक्ति भाव अनुसारी ।
प्रेम सकल लखि रामसेवक हरि गोपिन बहुत दुलारी ॥२६१॥
दीन्हेउ चीर उतारी मुरारी ।
कदम वृक्ष सन उतरि आव भुवि गोपिन की रुचिकारी ॥टेक॥
पृथक पृथक लियो चीर सकल त्रिय केल करत मिलि भारी ।
अग सकल असपरस कीन्ह हरि काम अग्नि दियो जारी ॥
तप्त रही गोपी उर अतर सीतल कर सिर धारी ।
सकल अग हिलिमिलि हरि परमसुख लहु बहु ब्रजनारी ॥

हरि मुरली मुरचग नजावत गावत हाथ पसारी।
गोपीगन हरि सँग मिलि गावत और बजावत तारी॥
नाचत तोरत तान मान करि गोपिन बहुत दुलारी।
सकल मनोरथ रामसेवक लहु कृष्ण सदा उपकारी॥२६३॥

राग गौरी

प्रति दिन आवत धेनु चराई।
श्याम गौर दोउ भाई॥टेक॥
गोपीगन निरखत मारग रहु कब हरि तन दरसाई।
चात्रिक इव घनश्याम कृष्ण तन चितवत प्रेम बढाई॥
छन एक तजत प्राण जनु निकसत जिमि मणि सेस गवाई।
साँझ समय पुरवा हरि चितवत पद भुवि सीस उठाई॥
देखत दूरि धूरि नभ उडत अगुलिन सकल बताई।
फर करि ओट नयन निज निरखत आये देखु कधाई॥
बशि बजावत गावत शिशु मिलि गोपि निकट हरि आई।
प्राण गये तन लहे प्राण जिमि तिमि गोपिन सुख पाई॥
आरति करि करि रूप हृदय धरि गृह आवत गुन गाई।
गोशाला हरि रामसेवक चलु सँग सँग जन समुदाई॥२६४॥
बन ते आवत धेनु चराई।
निरखत जन समुदाई।टेक॥
आगे आगे धेनु पीछे सब बालक मध्य राजु दोउ भाई।
श्याम गौर जनु मेघ तडित छवि धेनु धूरि नभ छाई॥
धेनु बाल बहु रग मेघद्युति सेत पीत मेचकाई।
चमकत अति सिर मुकुट लकुट कर त्रिशद नयन अरुनाई॥
धूशलि धूरि सकल अँग राजित उपमा कहि न समाई।
साँझ समय हिलि मिलि शिशु गावत मुरली अधर बजाई॥

गोपिन निरखत सुख पावत अति प्रेम विवश सँग धाई ।
गोशाला अति धूम करत निति हरखित लोग लोगाई ॥
गृह आवत सुत निरखि यशोमति गोद लेत हरखाई ।
माखन मिश्रि खियाइ चुमि मुख रामसेवक सुख पाई ॥२६४॥

बन ते आवत नद को लाला ।
बजत मुरली करताला ॥टेक॥
आगे आगे धेनु पिछे मन बालक मध्य बिराजु गोपाला ।
शीश मुकुट झलकत ललकत मन देखहु मुरली वाला ॥
साँझ समय बर रूप धरत हरि जेहि सुख लहु ब्रज बाला ।
निरखत बदन कामशत सुंदर गोपी सकल निहाला ॥
हिलि मिलि सग चलेउ नन सन गृह गावत गीति रसाला ।
हुकरत धेनु चलत बछरन हित सग गोप शिशु जाला ॥
गोशाला तकि धूम हर्ष अति जनु सुखमा घनमाला ।
एह सुख मनन करत उर अतर रह धन अघ कलि काला ॥
साँझ समय सुख देत अधिक ब्रज अस हरि दीन दयाला ।
निज कृत अघ कलि रामसेवक करु गति एक कृष्ण कृपाला ॥२६३॥

हरि कहँ देखि सुखी नर नारी ।
बनते धेनु चराइ आउ जन हरखि उठत जन झारी ॥टेक॥
जिमि सरदातप निशि शशि हरु सब रयन करत ओजियारी ।
सयन करत सुख लहि प्रमुदित मन दिवस की ताप निसारी ।
हरि बिनु तप्त दिवस पुर जन रहु देखत होत सुखारी ॥
साँझ समय बनते पुर आवत रयन चयन लहु भारी ।
गोशाला करि धेनु देइ सुख गृह चलु जबहि मुरारी ॥
गृह प्रविसत धशो रव करु शुभ आरति यशुमति वारी ।
गोद लेइ मुख चूमि खियावत सुख लहु बदन निहारी ॥
पद मर्दन करि हरत मनहु श्रम मोरत गो॰ दुलारी ।

प्रति दिन अस आनद सकल व्रज हरि हरि नाम पुकारी ॥
कृष्ण नाम रटु रामसेवक अन तोहि भव सिंधु उतारी ॥२६६॥

रागिनी भैरवी गति प्रभावती

होत प्रात सुति उठि निति यशुमति कृष्ण कृष्ण पुकारी।
कर परसत पट टारि कोमल तन वदन निहारि दुलारी॥टेक॥
उठहु लाल भयो भोर सोर अति करत नगर नर नारी।
खग मृग केल करत सुति उठि सब कुक्कुट धुनि अनुसारी॥
क्रय विक्रय करू धनिक मनिक पुर चलत पथिक पथ भारी।
गोप बाल तव हेतु ठाढ सब बजावत कर तारी॥
मेवा बहु पकवान मिठाई माखन मीश्रि सनारी।
पृथक पृथक दधि भात दुध वर भरि भरि कचन थारी॥
उठहु खेल हित लेहु खेलवना करहु बियारि निहारी।
बलदेव तव हेतु ठाढ एह चितवहु नयन उघारी॥
धेनु चरावन जाहु सग बन बलि बलि जाउँ मुरारी।
एहि विधि मातु जगाउ कृष्ण निति रामसेवक कर धारी॥२६५॥

कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण हाथ गहि जननी कृष्ण उठाई।
उठहु लाल भयो भोर सोर अति करु पत्ती मसुदाई॥टेक॥
भक्त सकल, अस्नान ध्यान करु पूजत सुर मन लाई।
घटा धुनि शुभ राग पाठ शुचि करू बहु शख बजाई॥
धनिक वनिक क्रय विक्रय करु गृह पथ चलु जन हरखाई।
गोपी गन दधि मथन करत अरु हरि वर गुन गन गाई॥
गोप बाल सब द्वार ठाढ अब सँग हित प्रेम बढाई।
तव ढिग ठाढ सग हित प्रमुदित बलदाऊ तव भाई॥
तव हित रोटी एक छोटि मोटि करि माखन बहु लपटाई।
माखन मीश्री बहु मेवा भक्ष दधि वर भात बनाई॥

बियारी करि जाहु संग बन आवहु धेनु चराई ।
जननी भक्ति लखि रामसेवक हरि नयन खोलि मुसुकाई ॥२६८॥

राग श्री

नित यशुमति कृष्ण जगाई ।
बन धेनु चरावन लाई ॥टेक॥
उठहु तात करि लेहु बियारी आवहु धेनु चराई ।
गोपबाल जूरि मग पथ जोहत सँग हित तव बर भाई ॥
एक बार बहु विधि सो जगाइ पठयेउ सुतहिं खियाई ।
लकुट हाथ काँधे सिकहर धरि चलु हरि वेणु बजाई ॥
गोपबाल गयो दूरि धेनु लेइ पृथक पृथक समुदाई ।
कृष्ण पुकारत धाइ धाइ चलु ठाढ़ रहो भाई आई ॥
कृष्ण गयो ढिग कहेउ शिशुन सन तुम मोहि तजि आयो धाई ।
तोहि तजि अन्न लेइ जात निज शिशु उर नाहि सोहाई ॥
सरणागत सन शिशु जानि त्यागहु सुनि हरि बहुरि बुझाई ।
आजु चरावन चलहु कुमुद बन रामसेवक सुख पाई ॥२६९॥
गौवन को ही ही बोलत मुरारी ।
आइ कुमुद बन धेनु दूरि गत शिशुन ते कृष्ण बचन अनुसारी ॥टेक॥
निज निज धेनु टेरि निज ढिग लेउ बोलेउ हिलिमिलि शिशु सँग कारी ।
धवरी पीअरी लोही फारी फुलही कबरी चमरी सवारी ॥
कपिली कौशीली लोमुँही घोंची लाखि महोरी दुलारी ।
राती सेती धूमरि सवरि रोरी धूसरी नाम पुकारी ॥
धूरी गोरी सहरी कजरी गइनी मैनी भवरी निचारी ।
रौंची चौरी टिकई सुभगि याम करो भरारी पुकारी सुखारी ॥
सुनरणी निकही रतन नीकही जतनी धेनु नामसोइ पारी ।
सकल धेनु हरि टेरि बोलायो कीन्ह दुलार सीस कर धारी ॥

कहु वलदेव कुमुद बन चलु जनि नंद रिसाहिं बहुत महँतारी।
बृँदावन अब रामसेवक चलु जहँ सुख लहु त्रिभुवन नरनारी ॥२७॥

राग बसंत

देखो आजु बृँदावन ललित लाल।
जब ते अघासुर घात कीन्ह हँस तब ते भयो बन सुखद काल॥टेक॥
ऋतु बसंत सदैव रहत भुवि
देखु सघन तरु लता जाल।
फूलत फलत नित विटप अनंदित
भुवि परसत तरुवर रसाल॥
ललित पत्र चहुँ दिसि छबि छावत।
मध्य सकल शोभित तमाल।
चरत हरित तृण धेनु अनंदित
मृग सुख लहु गुंजत मराल॥
बकुल कदंब पलास पीपल बट
उर्द्ध अधिक लखु वृक्ष ताल।
शीतल मंद सुगंध पवन गति
बृंदावन सम को दयाल॥
बृँदावन महिमा हरि कहु बहु
सुनत लहत सुख गोपबाल।
मधुर मधुर फल खात खियावत
रामसेवक हरि अस कृपाल॥२७१॥

देखो बृँदाबन अति सघन भ्राज।
जनु काम अनी चहुँ दिसा राज॥टेक॥
ऋतु बसंत उपजाइ क्रीड़त
बन शोभित सकल समाज साज।

त्रिबिध समीर बहत सुखदायक
लहत मनो भव सुरज समाज ॥
पत्र ललित फल फूल अधिक तरु
भुवि सिर शोभित मनहु ताज ।
खग मृग रव अति करत सोहावन
नाचत मोर चकोर गाज ॥
खात मधुर फल पिवत वारि सरि
नीक लागु नहिं अपर नाज ।
दाग परत रस रंग परसपर
कहनी कृष्ण मन गह निमाज ॥
कृष्ण बचन सुनि गोपबाल सब
लहु उर सुख गत लोक लाज ।
वृंदावन सुमिरन मन करु अब
रामसेवक होय सिद्धि काज ॥२७२॥

राग श्री

हरि निज मुख करत बड़ाई ।
बृँदावन धेनु चराई ॥टेक॥
हरित हरित तृण चरेउ पुलिन तट देखेउ धेनु अघाई ।
गोपबाल सन कहत मुदित हरि बन जस बन बहुताई ॥
देखहु बन शोभा चहुँ दिसि अति सघन बिसद समुदाई ।
जनु शृंगार तिलक करि निज सिर मोहत लोग लोगाई ॥
बृँदावन सम नहिं सुंदर कोइ नहिं ठानी अधिकाई ।
अर्थ धर्म लहु काम मोच्छ सुख चहुँ जुग परसि सो पाई ॥
मोहि लेत जीव सकल देखु तुम निभव आत्म दरसाई ।
तृण चरि धेनु अघाइ दीन्ह बन फल तोहि मधुर खियाई ॥

देखहु अस दानी न अपर कोइ बिनु स्वारथ सुख छाई।
सुनि सुत रामसेवक सब लहु शिशु कृष्ण चरन सिर नाई॥२७३॥

हरि कहत सत तरु भारी।
बिनु स्वारथ पर उपकारी॥टेक॥
वृक्ष समान न अपर साधु कोइ देखहु हृदयें बिचारी।
जाति पाति नहिं जीव पुत्रत कोइ सम पालत दुख टारी॥
आवतहीं हरु ताप छाँह निज वरषा पवन तमारी।
हिमकी त्रास हरत निज यत्न पुनि डार पात बिस्तारी॥
सोवन हित देइ पात बिछवना पात्र हेतु छद भारी।
तापन हित शुचि पाक करन लगि देत इन्धन भुवि डारी॥
पुष्प सु देइ सुगध बसावत तृप्त होत नर नारी।
फल सु खियाइ अघाइ देत छन सुधा सकल तरु हारी॥
काटी जात तहूँ गृह छावत सूखत कोइ तरु जारी।
डारत छार अन्न बहु उपजत खेत प्रबल करि बारी॥
मृतक भये उपकार करत तरु जीवत भल अनुसारी।
परहित फलत फुलत तरु प्रतिदिन परहित सरि बहु धारी॥
सत बिटप सरिता गिर धरणी करु एह सकल सुखारी।
पूजहु मानहु सेवहु इन्ह कह सहत मारि जन गारी॥
इन्ह सम साधु अपर न कोइ जग सुख करु जनु धरु धारी।
गोपवाल सन रामसेवक कहु निज मुख साधु मुरारी॥२७४॥

राग बसत गति होरी

होरी खेलत बन बनवारी।
सग गोपवाल हलधारी॥टेक॥
धेनु चराइ पियाइ मधुर जल ,केलि करत शिशु भारी।
यमुना तट बसीबट के निकट अति शुचि हरि निसद बिचारी॥

वृंदावन अति सघन वृक्ष छद पुष्प सुगध निहारी।
रग मृग मधुर मधुर स्वर गावत नाचत पाँखि पसारी ॥
मुरली हरि मुरचग बजावत शृगि नाद करु भारी।
नाचत गावत तान तोरत अति तुमल नाद सुखकारी ॥
इत उत चलत अमित पिचुकारी भरि भरि यमुना बारी।
पुष्प रग मिलि धूरि उड़ावत अविर मनहु अरु नारी ॥
एहि बिधि फाग वृंदावन खेलत सुर नर मुनि भय टारी।
भार सकल भुवि रामसेवक हरु सुरव सरि परम मुरारी ॥२७५॥
हरि खेलत वृंदाबन होरी।
बहु गोपबाल सग जोरी ॥टेक॥
ललित पात कर लेइ सकल शिशु पुष्प ललित तरु तोरी।
चुनि चुनि पुष्प सकल शिशु हँसि हँसि धरत पात की झोरी॥
गारि रग तरु पात पात्र करि रेंणु पुष्प रस घोरी।
एक एक पर पुष्प पनारत बाल विनोद न थोरी ॥
इत उत लपटि झपटि सिर डारत रग लेइ बहु बोरी।
चलत अमित पिचुकारि वदन पर चहुँ दिसि रग बटोरी ॥
नाचत गावत ताल बजावत देखत सुरव विबुधोरी।
वमीवट यमुना के निकट सन गृह आयो सब छोरी ॥
गोपी गन देखत सुख लहु बहु आरति जननि करो री।
उपटन उत्तम रामसेवक लेइ हरि अग सकल मलो री ॥२७६॥

राग टोडी

हरि लीला कर निज भक्तन लोभाय के।
इत उत सुख धरु उर ललचाय के ॥टेका॥
एक दिन वन जाइ धेनु शिशु सग लाइ
धरि गयो ग्राम सन मनहु भुलाय के।

निज निज भात खाइ उदर न पुर पाइ
हरि माया करु बहु क्षुधा उपधाय के ॥
हित द्विज द्विजनारी क्षुधा हरि करु प्यारी
शिशु सब हरि ढिग रहु मुरझाय के।
क्षुधा त्राण करु नाथ कहु बहु जोरि हाथ
सहि नहि जात पुनि कहु सिर नाय के॥
द्विज अग्निहोत्र करु दया उर पुर धरु
भात मांगि ल्यावो खाव सकल अघाय के।
गाइ लेहु दूरि आइ क्षुधा पिउ सब पाइ
जाँचु बलदेव नाम मम जुत गाय के॥
बाल यज्ञशाला जाइ जाँच्यो हरि नाम गाइ
द्विज पद माथ नाइ क्षुधा स्व बताय के।
द्विज सब मुसुकाइ हरि कहँ निच गाइ
भोग नाहीं इष्ट लाइ देवन गवाय के॥
बाल द्विज मुरत सुनि जँचा भँग उर गुनि
कृष्ण सन कहु पुनि शिशु सब धाय के।
कृष्ण तोस कीन्ह रामसेवक को बोध दीन्ह
पुनि द्विज नारी ढिग शिशु पलटाय के ॥२७७॥
हरि द्विज नारिन को भक्त स्व निचारि के।
भात हित पुनि शिशु पठयेउ दुलारि के ॥टेक॥
द्विज अभिमानी ज्ञानी मोंहि नहिं पहिचानी
नारी सु सयानी भात देहिं तोहि वारि के।
बाल सब जाइ गाइ नारी पद माथ लाइ
सुनि हरि हाल उठु नारी सुख सारि के॥
व्यँजन सुथार धरि भाग्य निज अनुसारी
कृष्ण ढिग आइ प्रेम उर बर धारि के।

प्रथम चरित सुनि रही मन उर गुनी
भई सब मग्न श्याम रूप सुनि हारि के ॥
हरि ज्ञान भक्ति दीन्ह त्रियन को बोध कीन्ह
शिशु मिलि भात खाइ विदा करि नारि के ।
नारिन की हाल सुनि विप्र मन गुनि गुनि
करत गलानि ज्ञान मान भुवि डारि के ॥
धिक धिक पूजा दान धिक मम ज्ञान ध्यान
यज्ञ व्रत धिक हरि अज्ञा बर टारि के ।
नारी मम गुरू ज्ञानी हरि पद पहिचानी
बुद्धि स्व सयानी सुर सरि सम बारि के ॥
पाक करु मोहि नारी हरि भक्ति उर धारी
मोंहि सम धन्य नहिं रहु अघ जारि के ।
कृष्ण जस आइ रामसेवक शिशुन गाइ
द्विज द्विजनारि लहु सरन मुरारि के ॥२७८॥

राग श्री

करु संवत पुरजन भारी ।
जेहि सुरिय रहँहिं नर नारी ॥टेक॥
नंद गोप जहा बैठु सभासद तहाँ चलि गयो मुरारी ।
हनुमत कर बरदान सुमिरि उर इन्द्र गर्व जेहि हारी ॥
नंद प्रश्न कीन्ह अज्ञत इव किमि मिलि मत्र विचारी ।
कहहु पुत्र सन लौकिक वैदिक सुनि पितु सुरत उर धारी ॥
कहव सुनव पुनि करव बात सोइ मानव वचन दुलारी ।
नंद कहेउ सुत इन्द्र जाग कर बुध श्रुति कहत पुकारी ॥
इन्द्र तृप्त होय करत वृष्टि जल जेहि जन सकल सुखारी ।
तृण भुवि बढ़त अन्न उपजत बहु अस पावस ऋतु चारी ॥

इन्द्र अनद करत वसुधा तल विनु मख भुवि तृण जारी।
प्रति सवत मख लेइ इन्द्र निज रामसेवक सुख धारी ॥२७९॥
सुनि पितु मुख की वर बानी।
हरि लखि इन्द्रहिं अभिमानी ॥टेक॥
कहेउ नद सन सुनहु तात अब तव बर बुद्धि सयानी।
इन्द्र रक का पालु प्रजा भुवि निज हित करत गलानी॥
ईश्वर सकल जीव रक्षा करु जगईश्वर सुखदानी।
ईश्वर हेतु करहु मख पावन हित आपन पहिचानी॥
रज सत तम गुण धारि सृष्टि करु उद्भव थिति करि हानी।
रेत सहरि जल बेद कहत ध्रुव रवि रश्मि गति पानी॥
गोबरधन पूजन मख ढिग गो गो ब्राह्मण परधानी।
भोजन पायस देहु सुदक्षिणा मेवा बहु हित जानी॥
वैश्य के धेनु लहै सुख करु सोइ बन परबत सुख खानी।
गिर परदक्षिण करहु गोप मिलि रामसेवक बन जानी ॥२८०॥
सुनि कृष्ण वचन सुख पाई।
नद गोप समुदाई ॥टेक॥
महिमा कृष्ण की जानि सकल जन गोवर्द्धन ढिग आई।
नाचत गावत बाद्य बजावत उत्सव करु अधिकाई॥
इन्द्र जाग हित रही सम्पदा सोइ सकटन धरि ल्याई।
यज्ञ कीन्ह बहु विधि गोरस रस बहु पकवान धराई॥
अमित विप्र भोजन करि दक्षिणा लीन्हे आसिख गाई।
धेनु पूजि बन पूजि गोवर्द्धन पर दक्षिण करु धाई॥
गिरिवर कहँ नैवेद्य अमित धर हरि तन धरि सोइ खाई।
देखावत हरि सकल गोप कहँ निज तन गिर प्रगटाई॥
गोवर्द्धन परसन्य जानि सब हरि पद प्रेम बढाई।
लेइ प्रसाद सकल गृह गो निज रामसेवक सिर नाई ॥२८१॥

सुनि इन्द्र क्रोध करु भारी ।
हरु मम मरत ब्रज जन भारी ॥टेक॥
कृष्ण कहे मम भाग हरेउ सव, सुत कहँ प्रबल विचारी ।
नंद को गर्व अधिक सुत लहि भुवि दीन्हेहुँ मोहिं बिसारी ॥
मानुष वचन मानि सुर तजु सब गोप अज्ञ अधकारी ।
मम अपमान कीन्ह सोइ फल अब देत बेगि,ब्रज डारी ॥
रक्षा किमि तव करहिं कृष्ण अब देखहु तुम नर नारी ।
वृष्टि प्रलय सम करत चपल जुत देखव कृष्ण गोहारी ॥
प्रभुता कृष्ण की देखब अब हम जाकी वचन अनुसारी ।
अधम कृष्ण नर रूप करहिं किमि एहि विधि दियो बहु गारी॥
हरि माया बस इन्द्र कहत अस को हरि चिंतित टारी ।
इन्द्र त्रास नहिं रामसेवक लहु जो गहु सरन मुरारी ॥२८२॥

राग मल्लार

ब्रज भुवि बरषत इन्द्र रिसाई ।
हरि माया बल पाई ॥टेक॥
महा प्रलय जोइ करत मेघ वर सवर्त्तक श्रुति गाई ।
गनन सहित करि कोप इन्द्र तेहि निज ढिग लीन्ह बोलाई ॥
जाहु सपदि गन लेइ गोकुल महँ छन महँ आउ बहाई ।
सवर्त्तक जूथप कोपित करि ब्रज भुवि इन्द्र पठाई ॥
अपुना ऐरावत सवत करु चढ़ लाइब जन आई ।
छप्पन कोटि मेघ अति आतुर ब्रज उपर आयो धाई ॥
गर्जत तर्जत वृष्टि करत अति ब्रज उपर नियराई ।
झुकि झुकि इत उत पवन झँकोरत जल चहुँ चलत अघाई ॥
हस्ती सुड सम धार गिरत भुवि,दुख लहु जन समुदाई ।
कृष्ण सरन गहु रामसेवक जन,हरि भुवि नीर सुखाई ॥२८३॥

बरषत मेघ प्रलय सम बारी।
ब्रज जन सकल दुखारी ॥टेक॥
ऐरावत पर इन्द्र निराजत बार बार ललकारी।
देहु बहाय गोकुल एक छन महँ बजु सरिस जल पारी ॥
इन्द्र वचन सुनि अधिक कोप करि हउल हउल जल डारी।
छप्पन कोटि मेघ अति गरजत बरषा कीन्ह अधियारी॥
शिशु ब्रज जीव धेनु अति कंपित बिकल अधिक नर नारी।
त्राहि त्राहि एक सरन कृष्ण तव इन्द्र कोप करु भारी॥
आरत सरनागत हरि लखि जन निज अपराध बिचारी।
फटित लीन्ह उरपाटि छत्र इव कर नख गिरवर धारी॥
गोकुल जन कियो छाँह ताहि हरि जल परबत पर जारी।
इन्द्र गर्व हरु रामसेवक हरि जल भय ब्रज जन टारी ॥२८४॥

राग धनाश्री

हरि चरित निगम बिस्तारी।
कियो ब्रज जन सकल सुखारी ॥टेक॥
छप्पन कोटि मेघ बरषत जल इन्द्र त्रास गहि भारी।
सरनागत लखि नारि सकल नर निज अपराध निचारी॥
जोजन साठि हजार गोबरधन बिनु प्रयास उपारी।
छत्र समान राखु निज सिर हरि कनगुरिया नख धारी॥
सप्त रात्रि दिन धारि सीस हरि छाँह राखु नर नारी।
बुद ठोप नहिं परत एक ब्रज इन्द्र कोप अधिकारी॥
बड़वानल सम कीन्ह अद्रि हरि परत बुद सोइ जारी।
छींट नहिं ब्रज ऊपर परु कोइ इन्द्र गर्व हरि हारी॥
छपन पहर वृष्टि अति करि करि शिथिल भयो घन भारी।
प्रभुता किमि यर रामसेवक बहु पालत सरन मुरारी ॥२८५॥

हरि महिमा किमि कहु गाई।
कवि मानस उर न समाई ॥टेक॥
अति उन्नत परवत सिर धरु हरि जन हित अस मृदुलाई।
छप्पन कोटि मेघ जल बरषत बुंद न भुवि नियराई॥
अद्रि उपर जल जारि जोग बल ब्रज जन सकल बचाई।
मेघ सकल तन शिथिल सुरति गति जनु सब प्राण गवाई॥
इन्द्र डरित हरि रूप बिलोकत देखत बर प्रभुताई।
जानि कृष्ण अवतार विनय निज उर बहु इन्द्र लजाई॥
सुख सन्मुख नहिं होत ओट होय निरखत रूप अघाई।
सरनागत वत्सल हरि पद लखि इन्द्र धाइ सिर नाई॥
त्राहि त्राहि सरनागत लखि प्रभु मो पर होहु सहाई।
जथा तथा गिरवर भुवि करि हरि रामसेवक सुख छाई ॥२८६॥

राग कल्यान गति ध्रुपद

नमामि ते पद विभु प्रभु समस्त लायक।
अखंड गंड खंजित स्व भक्ति ज्ञान दायक ॥टेक॥
निरामय निरंजन समस्त दोष गंजन
निरीह निर्विकल्पक स्व धाम जायक।
अज अखंड निर्गुण धृत सरूप सगुण
कृत सुकर्म पावन अमाय मायक॥
जगन्मय जनार्दन जगत्सरूप धारन
कारण समस्त लोक भार भायक।
जगद्धिताप निर्मल समस्त विश्व सकुल
प्रभु विभु अनामय सुनाथ नायक॥
अनंत विग्रह धृत त्रिलोक संग्रह कृत
नृलेप ब्रह्म शास्वत सुचारु चायक।

जगत्पति जगज्जति सनातन जद्गर्ति
जगत्सु कार्य कारण जगत्सु ध्यायक ॥
आदि मध्य अंत हीन ब्रह्म एक पूर्ण पीन
स्व पक्ष पालन कृत नृलोक आयक ।
उद्भव स्थिति लय कृत सुभूत सचय
जोगीश जोगि वल्लभ त्रिलोक नायक ॥
त्व अज शिव विभु सुरेश त्व रवि प्रभु
निशीश वरुण यत्त टह घाव घायक ।
नमति रामसेवक हरि हर सुदेवक
सुरेश ईश कृष्ण पालि शालि पायक ॥२८७॥

नौमि ब्रह्म एक कृष्ण जगत आयन ।
अनेक निग्रह धृत कृत समुद्र सायन ॥टेक॥
नमति ते पदाबुज-भवादि देवज अज
सेवति शक्ति सर्व त्व निशोच शोच मोचन ।
क्षम क्षमेपराध त्व अभाव भावना कृत
सुरेश मानज धृत विलोकि कज लोचन ॥
अह देव सफल राज गर्व कीन्ह साज साहु
वृष्टि करु कठोर सोर यक्ष भावन ।
सुरेन्द्र भावन हृत पवित्र पावन कृत
अक्षता बिभजि कीन्ह गर्व दावन ॥
गर्व नम्र कीन्ह नाथ वचन कहत जोरि हाथ
शीष दीन्ह कीन्ह विसद उचित पावन ।
ज्ञान भक्ति दान देहु दास बोलि सुजस लेहु
वार वार नमत चरन मन वसावन ॥
इन्द्र तोष कृष्ण कीन्ह ज्ञान भक्ति अभय दीन्ह
वर्ष यज्ञ भाग दीन्ह कारि शासन ।

स्तुति पर नाम कारि कृष्ण रूप उरसि धारि
इन्द्र भवन जाय बैठु पर आसनं ॥
अद्रि कृष्ण सीस लीन्ह गोप गोकुल त्रान कीन्ह
पाक अरिहिं शीप दीन्ह शत्रु घालन।
चरित विसद अति उदार रामसेवक सुख अगार
हनुमत वर बचन कृष्ण कीन्ह पालन ॥२८८॥

राग केदारा

भज जन त्रान कर हरि धाय ।
अद्रि वर सिर लाय ॥टेक॥
गोप गोपी धेनु शिशु भ्रज जीव सकल बचाय ।
जारि कीर्यौ पान करि जल इन्द्र गर्व गँवाय ॥
सप्त रात्रि दिन वृष्टि कर घन बुद नहिं भुवि आय ।
मानुष शिशु नहिं करत कोइ अस जुवा वृद्ध नहिं भाय ॥
होत विस्मय देखि सब शिशु नद कहु कंस पाय ।
पूतनादि वध कान्ह सुर रिपु नाग त्याव पुर जाय ॥
जोजन पट्टी सहस्र परवत लीन्ह बेगि उठाय।
राखि कर नख पहर छप्पन छत्र इव दरसाय ॥
धारु सोइ थल त्राण करि जन सुगम उर हरखाय ।
कर्म नहिं शिशु रामसेवक देव मोहिं जनाय ॥२८९॥
हरि जस गोप कहु समुदाय ।
नद उर हरखाय ॥टेक॥
कहेउ तुम सब कर्म मम सुत सुनहु जन्म अघाय ।
गर्गाचार्य यदुवश कुलै कर पूज्य मम गृह आय ॥
लेइ सुत पद मेलि द्विज वर नाम धरु दोउ भाय ।
नाम हलधर कहु सँकर खन रामबल सुर गाय ॥

कृष्ण नाम अनत कहु द्विज अपर, हेतु बुझाय।
पालिहिं एह त्रयलोक्य तव सुत करिहिं देव सहाय॥
टारि देइहि दुर्ग एह सब आइ व्रज जो जाय।
राज करु बिनु तिलक भुवि एह गोपन कहँ सुरा छाय॥
जन्म लीन्ह वसुदेव गृह एह कबहिं सुनु नद राय।
गयो गृह द्विज रामसेवक कृष्ण भाव बताय॥१९०॥

राग धनाश्री

हरि लीन्ह गोवरधन धारी॥
सुख लहु वर पुर नर नारी॥टेक॥
सकल अलौकिक कर्म कृष्ण लखि गोप कहेउ सुविचारी।
कहहु नद सुत जन्म कर्म अस को सुर नर अनुहारी॥
गर्गाचार्य की कहकी नद कहु सुनि सुख लहु जन भारी।
कृष्ण को ब्रह्म जानि ध्रुव जन सब स्तुति वर अनुसारी॥
नद चरन सब प्रभु धारि सिर भाग्य विभूति सवाँरी।
कार्तिक शुक्ल एकादशी व्रत करि द्वादशी लघु व्रत भारी॥
फल हित सरि स्नाने करन चलु रात्रि लखेउ नहिं कारी।
वरुण दूत हरि लीन्ह नद कहँ शब्द सुनत सरि वारी॥
कृष्ण हाल सुनि गयेउ वरुण पुर पितु हित वरुण दुलारी।
नद आइ गृह रामसेवक कहु विधि सन चरित मुरारी॥१९१॥
देखि वरुण पुरी गृह आई।
हरि सुजस नद बहु गाई॥टेक॥
नूतन जन्म पाइ पति यशुमति बहु विधि रत्न लुटाई।
गोप गोपी गन सुनि सब आयो कुशल पुछु हरषाई॥
एकाकी हम गयेउ सरित तट शौचादिक करि भाई।
धोती भारि धरि यमुना तट तिथि द्वादशी नियराई॥

रात्रि रही यमुना जल मँज्जत बरुण दूत अरु धाई।
बरुण लोक मोहिं लेइ गयो जब सुनहु कृष्ण प्रभुताई॥
मोहिं खोजन हित गयेउ बरुण पुर देखि करुणा पुलकाई।
अहो भाग्य निज मानि धारि कर सिंहासन बैठाई॥
पाव धोइ जल गृह सिर सींचेउ विधि भोजन करवाई।
क्षमा कराइ कसूर दूत कहि बेगि सो मोहिं छुड़ाई॥
अश्वादिक सन विभव देखायेउ कृष्ण परसि सुख छाई।
नद वचन सुनि सकल गोप गन नद चरन सिर नाई॥
धन्य नद तव सुत त्रिभुवन पति बैकुंठ सुखदाई।
बैकुंठ पति दरस परस करु हम सब नयन अघाई॥
बैकुंठ दरसन हित पुर जन उर पुर बहु ललचाई।
दिव्य चक्षु देइ हरि गोपन कँह रामसेवक दरसाई॥२९२॥

राग टोडी

हरि करु चरित गोपिन सुख छाय के।
सुनि भव तरु कलि जन सोइ गाय के॥टेक॥
गोपबाल सन कही खान हित बन दही
दान लेन चलु दधि शिशुन लिवाय के।
गोपिन को वाट रोकि शिशुन सो करु टोकि
जान नहिं पावे दधि लेन सब रिझाय के॥
शिशुन को लेइ लेइ सिख अस देइ देइ
हरि घाट वाट छेकु सोइ पथ आय के।
गोपी गन चलि आइ दधिय बेचन गाइ
शिशु गन घेरि लीन्ह चोर इव धाय के॥
गोपीगन डर पाइ ठग घेरु मोहिं आइ
शिशु हरि नाम गाइ रहु हरखाय के।

हरि रूव निकट आइ गोपी देरिव मुसुकाइ
हरि दधि दान मागु मुरली बजाय के ॥
कवहीं न दधि दान दीन्ह नहिं सुनु कान
नैरिति किमि करु हरि मुसुकाय के ।
बेचने रूव जात दही अस नहीं कोइ कही
तुम ठग इव बाट रोकु मचलाय के ॥
देव नहिं दधि दान कोटि करु तान मान
तजु लरिकाइ मनुसाइ के गवाय के ।
बचन कठोर रामसेवक कहत घोर
गोपीगन लहु सुरव हरि ढिग पाय के ॥९३॥
हरि दधि दान मागु गोपी कर धारि के ।
गोपीगन करु वाद हरि परचारि के ॥टेक॥
कर झकझोरि झोरी वस्त्र सब छोरि छोरी
हरि दधि दान मागु गहि पर नारि के ।
बिनु दान दीये मोहिं जाने नहि देव तोहिं
कृष्ण कहु जनु निज सुरति बिसारि के ॥
गोपीगन पुलकाइ जनु उर रिसि आइ
कृष्ण किमि कहु कुल लाज भुवि डारि के ।
कोइ भाव लिमुटाइ यशुमति ढिग जाइ
हरि कृत गाइ उर प्रेम रस गारि के ॥
यशुमति सुनि पाइ उर पुर रिसि धाइ
झूठ मिलि बहु सब बात सु सवारि के ।
बरप सु दस बाल तुम सब जुवा माल
किमि दधि दान मागु सकल उघारि के ॥
तु मो सुत ओर कहु दोप नहिं लेश लहु
धाम धाम तजि कहि वसु रिसि मारि के ।

ओरहन लेत नहि शीप सुत देत नहि
प्रजा पालु भाव केहि कहब पुकारि के ॥
कृष्ण गृह धाइ आइ यशुमति सुख पाइ
भोजन कराउ निज उरसि दुलारि के।
गोपी सुख रामसेवक निगम गाइ
गृह गईं सब हरि बदन निहारि के ॥२९४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या तस्या किंकरी ठोमरो टपा लचारी अति प्राकृत कहरवा

दैहों न काँधा दही कर दान।
इत उत किमि बहु तोरत तान ॥टेक॥
बसत भयो बहु काल नद पुर,
अचगरी अस सुनो न कान।
बाँह पकडि इत उत झकझोरत
टारि बसन अग अग लपटान ॥
चमकावत ललचावत धावत
नद सुवन तुम कवन सयान।
अटपट बचन कहहि जनि मोहन
जनि मारहु चितवनि रस बान ॥
छोरि लेब मुरली सुख मलित
बरहीन कोइ उर बर गति मान।
किमि घेरत दधि हित बन बसि निय
नयनन फुँकि फुँकि मारत सान ॥
गोपीगन रस बस बहु बोलत
हरि कर गहि गहि रहु मचलान।

प्रेम विवस सुरत रामसेवक लहु
एहि विधि हरि गुन करत बखान ॥२९५॥

कबहीं न दधि तोहिं देहौं देराय।
मचलैहौ तौ जानै बलाय॥टेक॥
माँगत दधि कर दान आइ बन
अब कहाँ गई तव वर ठकुराय।
माँगहु घर घर गल भोरी धरि बन
किमि रहु दधि हित ललचाय॥
खोट कर्म अति खोट करत निति
कहि देहौं तव जैहौं लजाय।
दधि चोरी गृह गृह फिरि फिरि करु
जन देखत रहु कोने छपाय॥
गृह कोने खोजत कोइ पावत
देखतहिं गृह चलु बहु धाय।
धाइ धरत कोइ चोर चोर कहि
लपटि झपटि पुनि चलु निकुटाय॥
ओरहन यशुमति सन कोइ बिधि कहु
तुम अस ढंग कहु झूठ बनाय।
अटपट रामसेवक गोपी कहु
रूप निरखि हरि उर पुलकाय॥२९६॥

राग सोरठी

कैसे चलो बाट हरि मागै दधि दाना री।
कबहीं न दान दीन्ह नहिं कोइ दान लीन्ह
कबहीं दधि दान सुनु निज काना री॥टेक॥

गोपबाल संग ल्याइ पथ भंग कर धाइ
ठग इव घेरि लेत देत नहिं जाना री।
कर गहि लपटाइ दधि दान माँगु धाइ
गारी देत लाज तजि लगु उर बाना री॥
कर धरि झकझोरै भौंह मरोरि घेरै
बसन उतारि अंग रहु लपटाना री।
बार बार मुसुकाइ दधि कर दान गाइ
फुँकि फुँकि तान तोरु करु रस गाना री॥
हँसि हँसि कर धरु दान हित सोर करु
गोपी बहु रूप हरि एक अरुझाना री।
रूप घर घनश्याम शोभा शत कोटि काम
चितवनि बोल लगु विशिख समाना री॥
सुनि सुनि हररानी प्रेम बस पुलकानी
हरि को मिलन हित करु उर ध्याना री।
दधि दान गाइ रामसेवक प्रेम पाइ
गोपी गन भक्ति दृढ़ लहु गुरु ज्ञाना री॥२९७॥
रोकत कँधैया री सुनै पानहीं कोई।
हरि फिर खोटो काम नहीं सखी गोई॥टेक॥
दधि दान मागि मागि गाली देत बन बागी
कुल कानि लोक लाज दीन्ह सब खोई।
कर गहि अरुझात बार बार मुसुकात
प्रेम निध निज हित देत जनु बोई॥
अंग कर परसत जनु सुख बरसत
सरि निर लेइ जिमि गज पशु धोई।
ओरहन बहु देत यशुमति नहिं लेत
सुत को ओर कहत होय सोई॥

अस नहिं सुनु कोइ व्याज राखै वीर सोइ
मातु पिता नृप प्रजा वल एतनोई।
नृप नहिं देत आस मातु पितु सुत आस
अस दुख सखी केहि सन कहु रोई॥
करत विनोद मोद हरि प्रिय लागु गोद
वचन कठोर जनु रिपु घर जाई।
गोपी गन कृष्ण रामसेवक सो एक धिष्ण
प्रेम छवि राग रस रंग सग मोई॥१९८॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या गति कजरी

नहिं देहिं दधि दान काँध छोड़ु डगरी।
किमि रगरा निति करु झगरी॥टेक॥
माँगत दही को दान करि उर अभिमान
देव नहिं दधि नहि मिलत दगरी।
जौं रगरा निति मग रोकि करु हरि
फिरि जाउ घर मोहि लगि रगरी॥
कस गृह जाइ धरवाइ दड देव अब तजि
निज गृह नट जू की नगरी।
घाट परु घाट वन रोकि दधि दान माँगु
देखि परु ठग पथ छोरै पगरी॥
कर गहि लपटाना हरि सुनि मुसुकाना
नयन तरेरि नहिं तजु मग री।
हरि अस लीला कीन्ह दधि ढरकाइ दीन्ह
मटुकि पटकि इत उत बगरी॥
दधि दान व्याज हरि करु गोपी गन काज
सुख दुल वन व्रज नारी सजरी।

दधि कर कीच रामसेवक सुअग लाइ।
झुमि झुमि हरि मिलि खेलु कजरी ॥२९९॥

दधि दान बिनु जान नहिं देहों पथ री।
हरि पथ रोकि कर गहि अधरी ॥टेक॥
जाने न देब नहि जान कबहिं गृह
सैन करब बन कुस सथरी।
बन फल खाइ जो सोहाइ उर मन भाइ
ओढि सुखदाइ बन की कथरी ॥
गोपीगन मुसुकाइ उरपुर हरखाइ
ठग बट पार कहि कहु शठ री।
पथिक बोलाइ को लोभाइ दरसाइ तन
कपट निधान बन छोरु गठरी॥
दधि दान देब नहीं बन नहिं रसु कहीं
तजि परिवार सुर बर मठ री।
नहिं दधि दान देब कद मूल नहिं लेब
बार बार कहु हरि छाडु हठ री॥
हरि मुसुकाइ दधि मुरन अग लाइ प्रिय
कजरी खेलत बन बन बगरी।
प्रेम अधिकार रामसेवक सुखद सार
केलि हरि बाल करि बसु नगरी॥३००॥

राग केदारा

किमि कहु प्रेम की गति गाय।
कृष्ण पद करु प्रेम गोपी आँगन गृह न सोहाय ॥टेक॥
फिरत बहु उन्मत्त इव भुवि लोक लाज गवाय।
कृष्ण कृष्ण कहि रटत चितवत व्याकुरा, होय बहु धाय ॥

एक एकन चितइ रहु थकि लोचन पलक न लाय।
प्रेम रस बस पूर गोपी आय म पर न जनाय॥
होय बौरी फिरत इत उत सत रोदत अघाय।
मनहु फणि बिनु सेस व्याकुल भक्ति रस अधिकाय॥
कृष्ण अस धर प्रेम लखि उर तुरित ढिग प्रगटाय।
गुप्त करु हरि नारि गोकुल रूप घर दरसाय॥
भाग्य गोपिन की कहत कवि बुद्धि रहु सकुचाय।
ध्यान करु उर रामसेवक भक्ति रहु मन छाय॥३०१॥
श्रुति बुध कहत प्रेम प्रधान।
लहत जेहि गुरु ज्ञान॥टेक॥
प्रेम करि हरि रूप धरि उर करत सरि स्नान।
गोपीगन जल करत क्रीड़ा आये तट भगवान॥
दरस करि अस परस गोपी दीन्ह तन मन दान।
भक्ति लहि वैराग्य तिच्छण ज्ञान लहु पहिचान॥
मार्ग मिलन की प्रीति किमि कहु जोति नहिं बिलगान।
मिलन घर सकेत कवि कहु भई ब्रह्म समान॥
गर्भ व्याज हरि विरह बरनत एक तन मन प्रान।
मिलि परसपर कीन्ह जस अनुराग कहत सुजान॥
नारि नर सुनि होय पुलकित उरसि रहु न मलान।
असित निज अघ रामसेवक कृष्ण करु अब त्रान॥३०२॥

राग टोडी

राधा को शृँगार कवि कहु किमि गाय के।
कहत सुनत जोइ अघ भागु धाय के॥टेक॥
भूषन बसन साजि नयन कजल माजि
अरुण पराग भाल केस सवराय के।

सिर वदी टारि टारि सम करु सुख वारी
मुकुर स्व कर धारी जगत भुलाय के ॥
निज प्रतिबिंब देखि अपर सु नारी लेखि
अचरज लहि उर रहत लोभाय के।
मोहिं सम कोइ नारि लोक त्रय हरि प्यारी
रही केहि ग्राम अस रूप वर पाय के॥
बोलत नहिं बोलाये नयन सु झलकाये
प्रतिबिंब किमि बोलु ताकत कठाय के।
दरस परस करु हरि एह कर धरु
ताते मानि भइ नहीं बोलु ढिग आय के॥
सवति विचारि राधा खेद करु लखि बाधा
हरि रूप उर धारी रहु पुलकाय के।
हरि प्रेम पहिचानी भक्ति रस ज्ञान दानी
राधा सिर कर धारी वेगि ढिग जाय के॥
राधा भुलि गई दूरि उर सुख लहु भूरि
कृष्ण सग करु केलि हृदयँ बसाय के।
रूप मो समाइ रामसेवक कविन गाइ
राधा कृष्ण एक नाम दुइ प्रगटाय के॥२०३॥
नयनाऽनुराग कवि कहु सुख धारि के।
प्रेम अधिकार श्रुति कहु ब्रज नारि के॥टेक॥
ब्रज नारी सुख सारी हरि रूप उर धारी
एक टक रहु हरि वदन निहारि के।
पलक नयन टारि उर पहु को वधारि
लहि ओंजियारी इत उत सुख सारि के॥
चात्रिक निरखि घन मुदित मयुर मन
तिमि गोपीगन रूप लखत मुरारि के।

एक टक ध्यान करु हरि रूप उर धरु ।
नयन अघात नहिं पिवत उघारि के ॥
जग रस रग त्यागी हरि रस रग रागी ।
एक टक इत उत देखु भव टारि के ।
जत नारी रूप धारी एक टक चक्षु धारी
तत कृष्ण आगे ठाढ रूप वर धारि के ॥
नयन अनन्द देइ गोपीगन सग लेइ
क्रीडा कर सरि तट सकल दुलारि के ।
सुख कर वशीवट सरि रमणीय तट
केलि करु हरि गोपी प्रेम सु विचारि के ॥
सम नयनाऽनुराग नहिं कोइ जप जाग
कृष्ण गोपी दीन्ह गति फल अधिकारि के ।
अगम सुगम कीन्ह कृष्ण भक्ति ज्ञान दीन्ह
निठुर भयेउ रामसेवक की पारि के ॥२०४॥

राग धनाश्री

ब्रज नारी सकल हरखाई ।
करु मुरली की अधिक बडाई ॥टेक॥
धनि वन धनि भुवि धनि तरुवर धनि सरि निकट सोहाई ।
वेणु जाति कहं धन्य कहत बुध निकट किचक बहुताई ॥
एक बीज महँ निश्रित जोइ बहु कीचक की अधिकाई ।
सोउ कीचक सन एक धन्य वर जेहि मुरली दरसाई ॥
ताहू सन अति धन्य पर्व जत हरि कर मो जोइ आई ।
वेध धन्य शत कोटि ताहु सन जोइ हरि निज मुख लाई ॥
पिवत अधर रस भाग्य कहौं किमि रात्रि दिवस सुख छाई ।
धनि ब्रह्मा जेन्ह दीन्ह अधिक सुख वेणु धर्म उपजाई ॥

जोइ बसी धुनि सुनत लोक त्रय मोहत लोग लोगाई।
बसी की भाग्य कहत अति गोपी रामसेवक सुख पाई ॥२०५॥

सुनि बसी शब्द सुखकारी।
तिहुँ लोक शोक भ्रम हारी ॥टेक॥
ज्ञान भक्ति रस पूर चहुँ चलु मुनि गन सुनत सुखारी।
देव पितर लहि भाग अनन्दित असुरन उर डर भारी॥
खग मृग लहु सुरव विनु व्याधा जग स्थावर सुख सारी।
रवि शशि नखत महा सुख लहि उर शिथिल भयो जिव भारी॥
सरित सिंधु महँ धाइ चलत जल सोपि बहत नहिं वारी।
छीर पिवत नहिं वत्स धेनु गति गल तृण रहु सब धारी॥
अमित शब्द बसी महँ निकसत सुखप्रद सब नर नारी।
जड़ कहँ करत सचेत चेतन कह जड़ करि शिथिल सवारी॥
काम सुखद मद शब्द लागु उर गोपिन कह अति प्यारी।
रामसेवक अस सुनत शब्द बर गहु झट चरन मुरारी ॥२०६॥

राजित तन मेघ श्याम लजित लखि कोटि काम
अकुस शत इन्दु कोटि तेज बर तमारी।
भूषन वर वसन बारि तड़ित नखत गन दुलारि
मोर शत चकोर कंज नहिं जनु सवारी ॥टेक॥
सप्त सूर तीनि ग्राम मुरछल एक ईश ललाम
गावत मुरली सुधारि मोहत जिव भारी।
मुरली रस रव गभीर सुनत ध्यान तजत धीर
पीवत रस रग राग जगत सुरति टारी॥
मुरली रव सुनत कान लहत सकल भक्ति ज्ञान
देव पितर दनुज नाग मोहेउ नर नारी।
खग मृग जल चर अपार कीट भृंग बन पहार
मुरली रवसुनत शिथिल अचर चर सुरारी॥

रवि शशि धुनि सुनत कान उडगन जुत शिथिल ज्ञान
रथ समूह चलत नाहिं बाहन सुख भारी।
धाइ सिंधु चलत नीर सरिगन जल छन न थीर
मुरली रव सुनत शिथिल बहत नाहिं बारी॥
यक्षन तजु चीर पान शब्द सुनत मुरलि कान
निगलत नहिं घास धेनु देह सुधि बिसारी।
नटवत हरि रूप धारि बंशी धुनि रस सुढारि
मोहेउ ब्रज नारि अधिक लीन्ह ढिग पुकारी॥
जड़ चेतन्य कृष्ण कीन्ह चेतन जड़ ज्ञान दीन्ह
मोहेउ त्रयलोक जीव मुरलि अधर धारी।
मुरली धुनि सुभग कारि दीन्ह भक्तिरस विचारि
रामसेवक ज्ञान भक्ति मागु तोहि मुरारी॥३०७॥
राजित श्रीकृष्ण श्याम शोभा शत-कोटि काम,
मोहत नर नारि सकल बेणु बर बजाई।
नटवत वपु वर सुधारि भूषन शुचि बसन धारि,
भाल तिलक केस चिकुर सुर मुनि सुखदाई॥टेक॥
मुरली धर शब्द धाय रही सकल लोक छाय
देव दनुज मनुज नाग पितर गन लोभाई।
सिध्य गन मुनींद्र ध्यान करत सुनत देइ कान
पावत विश्राम जगत सुरति को गवाई॥
देव पितर भाग पाय मानहुँ सुख अमर छाय
भक्ति रस अडोल भक्ति पिवत हरखाई।
मुरली धुनि सुनत अचर प्रेम विवश होत सचर
कृष्ण रूप निरखि मनहु चलत सरन धाई॥
सचर सुनत पुलक गात पची मृग कीट ब्रात
अचर गनि सुपाय शब्द ध्यान मन लगाई।

बछरा तजु चीर पान शब्द सुनत लहु सु ज्ञान
निगलत नहिं धेनु घास प्रेम उरसि छाई ॥
रवि शशि धर नसत थीर चलत नाहिं सरित नीर
पवन गवन रहित अग्नि भूतल सकुचाई ।
थकित सकल शब्द सुनत चकित निज मनसि गुनत
वशी धुनि जानि मानि कृष्ण सरन आई ॥
गोपीगन धाइ धाइ कृष्ण निकट आइ आइ
जीवन फल पाइ कज चरन लहि अघाई ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण रटत जन्म कोटि पाप कटत
रामसेवक ताप घटत कृष्ण सरन पाई ॥३०८॥

राग बसंत

वृंदावन ललति लवग लाल ।
कुसुमित तरु सघन सुलता जाल ॥टेक॥
बकुल कदंब पनस केदली शुचि
अति राजित वर तरु तमाल ।
वट पीपल दल विल्व ललित अति
लहि वसत राजित रसाल ॥
कनक वृक्ष पाट लजक बहु शोभित
जेहि तरु सेत ताल ।
जाही जुही बहु बेइली सोहावन
पुष्प अधिक तरु सर्व ताल ॥
वैर विहाय मृगा अति राजित
व्याघ्र वृकादिक लघु शृगाल ।
बिपधर विष तजि रहत वृंदावन
लहि ऋतु राज उमग व्याल ॥

मोर चकोर कीर परावत
राजित किमि गनु बहु मराल।
बृगसित बहु रंग कमल सरल सर
भृंग रसिक शोभित सु नाल॥
कृष्ण ललित बहु रंग उडावत
हिलि मिलि गोप बाल।
बाद्य सुनत त्रयलोक अनंदित
रामसेवक गति रति गोपाल॥३०९॥
वृंदावन भुवि ऋतुराज राज।
श्रीकृष्ण क्रीडत बहु शिशु समाज॥टेक॥
लता विटप बन सघन सोहावन
देत मनो फल फूल नाज।
ललित पत्र चहुँ दिसि अति राजित
मध्य मदन ऋतु राज गाज॥
बहु बिधि ताल मृदंग बजावत
गोपबाल करि बिबिधि साज।
कृष्ण ललित भूषन पटधारी
सुरस मुरली सुरचंग बाज॥
रंग सुरंग उड़ावत इत उत
किंसुक तरु तन अधिक भ्राज।
हिलि मिलि गावत सुख उपजावत
सुनत गुनत गत लोक लाज॥
ऋतु बसंत हरि रूप विलोकत
मदन सहित करु चरन राग।
कृष्ण फाग रस रंग अनूप
रामसेवक उर प्रेम दाग॥३१०॥

होरी

संग राधा प्यारी ।
होरी खेलत कुंज बिहारी ॥टेक॥
कुंज लता द्रुम अधिक सोहावन भूषन बसन सवारी ।
त्रयपुर मोहन हेतु रूप बर मुरली अधर कर धारी ॥
गोपबाल हरि संग रंग लेइ राधा संग ब्रज नारी ।
वाद्य बजावत गोपबाल बहु नारि सकल कर तारी ॥
गाइ फाग सुख रस उपजावत रंग सु इत उत डारी ।
पुष्प विनोद कोइ छन फेंक हरि अबिर बदन सिर झारी ॥
कृष्ण बदन राधा रंग लावत राधा रंग मुरारी ।
इत उत प्रीति परसपर लखि उर सुधि बुधि देह बिसारी ॥
अखिल निरंजन केलि करत भुवि लखि सुख लहु अधिकारी ।
ज्ञान ध्यान रस भक्ति देत हरि रामसेवक अघ टारी ॥३११॥

सखि कुंज लता मो खेलत कृष्ण बर होरी ।
कृष्ण मेघ तन श्याम ललित अति तड़ित राधिका गोरी ॥टेक॥
गोपबाल हरि संग मुदित मन राधा नारि बटोरी ।
होत परसपर फाग दुहुँ दिसि लखि निज निज जोरी ॥
अबिर गुलाल केसरि रंग मिश्रित अपर रंग बहु घोरी ।
दुहुँ दिसि चलत अमित पिचुकारी रस प्रद फाग घनोरी ॥
गोमुख ढोल मृदंग झाल डफ दुंदुभि धुनि चहुँ ओरी ।
बजत मुरुचंग सु भगन फीरी मुरली धुनि शुभ सोरी ॥
इत उत रंग लगावत हिलि मिलि अबिर धारि भरि झोरी ।
राधा बदन निज हरि रंग लावत हरि राधा सलोरी ॥
अस बर फाग देखि सुर हरषित सुमन सुवृष्टि करो रा ।
ब्रज बासी सुख रामसेवक लहु मुनि गन बहु बिबु धोरी

बृषभान की दुलारी ।
विचरत संग मुरारी ॥टेक॥
जूथ जूथ गोपी संग गावत बजावत कर तारी ।
केस रचित चूडामणि राजित बेणी भाल सुख कारी ॥
केसरि कस्तुरी अंग चरचित भूषन बसन सवाँरी ।
घेरि लीन्ह हरि कहँ प्रमुदित सब फागुन की देइ गारी ॥
रंग अंग हरि को सब लावत हरखि हरखि ब्रज नारी ।
बदन रंग हरि लावत राधा हँसि हँसि कर धारी ॥
हरि निकुटाइ थाल संग राजित सखि सिर रंग बहु डारी ।
राधा मुख मलि रंग बिबिधि विधि भिजि सकल तन सारी ॥
कृष्ण राधिका फाग परसपर खेलत रंग भरि थारी ।
पुष्प बृष्टि सुर रामसेवक करु गावत बुध श्रुति चारी ॥३१३॥
रंग भरि भरि मारी ।
कृष्ण धारि पिचुकारी ॥टेक॥
उमँगि उमँगि अनुराग प्रेम रस जग मग सुरति बिसारी ।
गावत फाग सुरस उपजावत मुरली अधर कर धारी ॥
गोपबाल गोपीगन हिलि मिलि इत उत रँग बहु डारी ।
काहु की भींजत सुरंग चुन्री काहु की सिर पट भारी ॥
राधा बदन रंग कृष्ण लगावत राधा बदन मुरारी ।
ब्रज भुवि धूम मचावत यहि बिधि कृष्ण सुजस बिस्तारी ॥
ब्रह्म निरंजन सगुन केलि तन सुर मुनि रूप निहारी ।
सगुन ब्रह्म कहि जैति पुकारत सुर तरु सुमन सु भारी ॥
कृष्ण राधिका फाग निरखि बर सुर मुनि सकल सुखारी ।
निरखत रामसेवक क्रीडत हरि हरषित ब्रज नर नारी ॥३१४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या तस्या किंकरी रागिनी झुमरि अति भाषा फगुवा चरक

यशोदा घरजहु कुँवर कँधाई ।
होत प्रात निति बालक लेइ बहु गृह गृह धूम मचाई ॥टेक॥
गृह कृत एकउ करन नहिं पावत देइ गाली चमकाई ।
छुवत अधिक मचलात केलि हित अग प्रति अग लपटाई ॥
गृह गृह जाइ लुकाइ बाल मिलि मूषक चीर चोराई ।
गोवछरन की बधन छिनि छिनि इत उत धरत छपाई ॥
दधि मिलि ग्वाल मुकुटि गहि फोरत देत सो छिर बहाई ।
हँसि हँसि कोइ छन बछरन छोरत धेनुन देत पियाई ॥
मूत्र पुरीष थूँकत इत उत बहु गृह प्रति गृह करत नाई ।
तव सुत सम नहिं अपर बाल करु तेहि ते तोहि कहु गाई ॥
ओरहन ब्याज ते जात नंद गृह पुनि पुनि लेत बोलाई ।
कृष्ण रूप गहि रामसेवक उर गोपी रहत लोभाई ॥१२५॥

गोपिन की भाग्य चहुँ श्रुति गाई ।
सुर मुनि गन जाको ध्यान न पावत अग अग हरि लपटाई ॥टेक॥
छन भरि तजत न रूप कोइ हरि मन तन रटु अरुझाई ।
श्याम बरन तन मेघ महा छवि चातिक नयन बनाई ॥
चरन कमल अनुराग करत निति मधुकर सरिस लाभाई ।
जौ कोइ छन नहिं मिलत कृष्ण तहि ओरहन लइ गृह जाई ॥
दधि माखन घृत क्षीर नीर लेइ इन त्त गृह दरपाई ।
गाली देइ चमकाइ बहुरि एह तन ढिग आयउ धाई ॥
यशुमति सुनि उर लाइ लीन्ह सुत नाति सुधर्म सिखाई ।
बोध कीन्ह गोपिन कर यशुमति रामसेवक सुख पाई ॥१२६॥

गोपिन सग नाचत बेणु बजाई ।
अमित कृष्ण तन धारि वारि त्रिय रूप परम दरसाई ॥टेक॥
मुरली अधर बजाइ लोक त्रय मोहेउ लोग लोगाई ।
जड चेतन जत जीव तीहुँ पुर सुधि बुधि सब निसराई ॥
छवो राग रागिणि मिलि गावत सुत सोइ सग बनाई ।
सप्त सुर गति ग्राम तीनि वर मूर्छल एक ईश लाई ॥
गान तान वर ताल एक गति निर्त्तत इत उत धाई ।
गहि बहियाँ कर कनियाँ चढि चढि हिलि मिलि सब लपटाई ॥
सकल गोपिन को मान रारु हरि कर गहि काँध चढाई ।
राधा ललिता आदि सुकृत करि रामसेवक सुख पाई ॥३१७॥
गोकुल महँ बसी बजाइ मुरारी ।
बसी की धुनि सुनि त्रयपुर मोहेउ सुर नर मुनि गन भारी ॥टेक॥
खग मृग जीव पतग भग गति भृंग सेस सुरा भारी ।
बछरन नीर खीर तजि दीन्ह्यो तृण मुख धेनु न धारी ॥
शिथिल पवन गति गगन मंद रवि बहत न यमुना वारी ।
ब्रज बिशेष सुख जीव सकल लहु प्रमुदित बहु नर नारी ॥
हिलि मिलि गावत आय सकल त्रिय रजनी करु ओंजियारी ।
रास बिलास करत हरि लागेउ रजनी बहु बिस्तारी ॥
कर गहि निर्त्त करत बहु बिधि हरि कोटिन रूप सवारी ।
ब्रज सुख रामसेवक किमि बरण ... थक्यो श्रुति चारी ॥३१८॥
गोकुल महँ ब्रह्म सगुण तन ...

अनुशासन जोइ करत तिहुँ पुर जड चेतन नर नारी।
सोइ हरि ब्रजबासिन बस भयो घट सकल बचन अनुसारी॥
कर गहि इत उत हरि नाचत देत पिन्नन हित वारी।
लहत परम सुख रामसेवक जन महिमा कहत मुरारी॥३१९॥
गोकुल मह अद्भुत रूप मुरारी।
निर्गुण ब्रह्म अलख अविनाशी सगुन सोइ तन धारी॥टेक॥
जन्म लीन्ह बसुदेव देवकि गृह सुर नर मुनि हित कारी।
नंद यशोदा के गृह गो पुनि ब्रज जन लहु सुख भारी॥
पुतना को बध कीन्ह दीन्ह गति अघा बकासुर मारी।
तृणावर्त लबासुर बध करि ऐसी बधि हरि तारी॥
मुष्टिक बधि चाणूर मारु पुनि कंसहि मारु प्रचारी।
देवकि अरु बसुदेव लह्यो सुख कुबरिहि करु बर नारी॥
उद्धव को पठयो गोकुल हरि भक्ति ज्ञान अनुसारी।
चरित परम शुचि रामसेवक कहि भक्ति लहत बनवारी॥३२०॥
सकल लोक भयटारि मुरारी।
चहुँ जुग नाम उदार कृष्ण कर बुध जन कहु श्रुति चारी॥टेक॥
सुर नर मुनि सुख अगणित लहु हरि जम भार भुवि हारी।
करु विशेष रक्षा गोकुल जन शोक भर्म भय टारी॥
बूडत ब्रज जल इन्द्र कोप ते गोबर्द्धन नख धारी।
अमित असुर सन त्रास कीन्ह सरि खोजि खोजि खल मारी॥
दावानल करि पान त्रान करु गोप जीव गन मारी।
कालिय नाग निकारि नीर ते निर्मल करु सरि बारी॥
अमित पतित कह दीन्ह कृष्ण गति अव निरखहु मम पारी।
फागु परम एह रामसेवक कहु भक्ति हेतु बनवारी॥३२१॥
गोपिन सग नाचत कृष्ण कन्हैया।
जत गोपी तत कृष्ण रूप धरि कर गहि गोप लोगैया॥टेक॥

खन मुरली मुरुचंग बजावत गोमुख वेणु बजैया।
हिलि मिलि गावत रस उपजावत सुर समूह गति छैया॥
तोरत तान मान त्रिय रासत नाचत ताता थैया।
लपटि झपटि इत उत रंग लावत गोपिन उरसि सोहैया॥
रास विलास देखि मन मोहन त्रय पुर रूप लोभैया।
गोपी गन लखि ब्रह्म सहज सुख अंग अंग लपटैया॥
देखि विनोद मोद उर पुर बहु देवनारि ललचैया।
कोटि काम रति संग एक लखि रामसेवक सुख पैया॥३२२॥
देखो कृष्ण संग बहु धनिया।
धन चपला इव इत उत चमकत कर गहु हरि निज पनिया॥टेक॥
गल बैजंती हार सोहावन सीस मुकुट चौतनिया।
तारा गन मह चंद्र विराजत उपमा नहिं कोइ आनिया॥
सुरति ताग रस रंग गहि पोहित एक एक वर मनिया।
रास मंडल करि हिलि मिलि नाचत कर इत उत तनिया॥
गोपी गन अंग अंग अंग मेलत कर गहि पुनि चढ़ु चनिया।
पुनि निर्त्तत कर गहि इत उत त्रिय किमि बरणौं पलटनिया॥
खन मुरली मुरुचंग बजावत गावत मिलि रस खनिया।
रामसेवक धनि भाग्य गोपिन की राधा सब की रनिया॥३२३॥
यशुमति खालहु बाल बुझाई।
सब ढिग आइ मौन होय बैठ्यो मम गृह करु प्रभुताई॥टेक॥
अति खोटा ढाटा तोहि सुंदर मोकहँ नहीं सोहाई।
तुम कहँ प्रिय हम कहँ प्रिय नाहीं केहि बन जाउँ पराई॥
बालक बनि तब ढिग एहँ बोलत सुनहु तासु मनुसाई।
गोप बाल लेइ गृह गृह धावत पुनि गृह रहत छपाई॥
दधि माखन गहि खात खियावत देत सो बहुरि लुटाई।
भाँड फोरि मर्कट इव चितवत बछरन छोरि पिआई॥

जों कोइ देखि धरन हित धावत इत उत भवन लुकाई।
कर अंगुली चमकावत बहु विधि हँसि हँसि सीस झुलाई॥
अति मचलात छुवत कर बालक अब एह आवत धाई।
सान बुझाइ बोलाइ आउ गृह रामसेवक हरखाई॥३२४॥
गोपी सब हरि धर रूप लोभाई।
नित उठि ओरहन देत यशोदहिं कर गृह शयन बोलाइ॥टेक॥
हिलि मिलि गावत वाद्य बजावत लौकिक लाज गवाई।
अबिर गुलाल उडावत इत उत सुख लावत मुसुकाई॥
इत उत चलत अमित पिचुकारी नाचत पुनि समुदाई॥
जो सुख सुर दुर्लभ श्रुति गावत सो रहु ब्रज भुवि छाई॥
धूम मचावत चौहट फिरि फिरि मुरली अधर बजाई।
श्याम गात शत काम कोटि छवि निरखत लोग लोभाई॥
सत चकोर देखि तन धर हरि पीवत नयन अघाई।
गोप गोपी मन अति प्रमुदित ब्रज रामसेवक सुख पाई॥३२५॥
गोपिन संग नाचत कुंज निहारी।
कर गहि इत उत हिलि मिलि गावत सोरत तान मुरारी॥टेक॥
हरि मुरली मुरुचंग बजावत भेरी न फेरी सुधारी।
गोमुख शख मृदंग झाल डफ गोपीगन करतारी॥
रास विलास हुलास अधिक उर इत उत रंग सिर डारी।
चलत अमित पिचुकारि दुहुँ दिसि एक सो एक प्रचारी॥
गोपग्वाल गोपीगन हिलि मिलि जयपुर कृष्ण पुकारी।
जयपुर सुख लहु रामसेवक उर अधिक गोप अनवारी॥३२६॥
एह अचरज भइ भारी मुरारी।
निर्गुण ब्रह्म सगुण होय आयेउ सुधि बुधि काहें बिसारी॥टेक॥
जाकर आदि न अंत लखै कोइ गोप गोदन सन पारी।
परिपूरण त्रयलोक एक रस गृह वन चरु अनवारी॥

अमित असुर वध कीन्ह जोइ हरि कमहिं मार प्रचारी।
सोइ कहँ घेरि गोपीगन कर गहिपटकेउ भूमि पछारी॥
गोवर्द्धन कर नख हरि राखत गोपी उर हरि धारी।
सकल अंग रंग लावत हिलि मिलि गावत हरि जस भारी॥
नाचत इत उत कृष्ण कृष्ण कहि बाजत बहु करतारी।
गोपीगन कहु लाय कृष्ण उर हम जीती तुम हारी।
कर गहि पुनि कहु रामसेवक त्रिय पूरण भाग्य हमारी॥३२७॥
अब को पारी हमारी मुरारी।
अब जनि तजु प्रबल बनि अबलन हम जीती तुम हारी॥टेक॥
अति अँधियारि भयावन कर जनि तेमे नारि बिसारी।
बन छिपि गयो इत उत तोहि खोजत नारिन लहु दुख भारी॥
सुरति डोरि तोहि लीन्ह कररिव उर प्रेम खंगहेउ प्रचारी।
दीजय दान दिखावत ललिता राधा कहत पुकारी॥
कर गहि गावो बजावो हिलि मिलि नाचहु कनियाँ धारी।
रास बिलास कीन्ह रजनी रुचि गोपीगन भय टारी॥
करु विस्तार रात्रि सुखदायक देखत सुर मुनि भारी।
अति बिनोद करि रामसेवक हरि गोपिन कीन्ह सुखारी॥३२८॥
मुरारी अब जनि तजु ब्रज नारी।
हम अबला खोजत बन लहु दुख रात्रि भयकर कारी॥टेक॥
मुरली धुनि करि मोहेउ मृगी सम गृह कृत तजि आये भारी।
मातु पिता परिवार त्यागि सब सुत पति धाम अँटारी॥
धरण सरन गहु स्वारथ हित हरि मन तन तोहि प्रभु हारी।
सरन त्याग नहिं करत कोइ हरि का अबला रिपु भारी॥
घाम ताप लखि बेना डोलाइब शीत हरब अँगरारी।
छाया करु कर कनियाँ चढि तव बरपा ऋतु मेह भारी॥
पानी पियाइब प्यास लगे हरि सोआइब कर धारी।

भूख लगे खियाइन निज कर उठाइन सुख भारी ॥
हिलिमिलि गावत अँग लपटावत कृष्ण भाव निचारी ।
जस सुख रामसेवक गोपी लहु तस नहिं अज त्रिपुरारी ॥३२९॥
देखो रास विलास मुरारी ।
नाचत गोपी उघारी ॥टेक॥
जो अज अलख निरंजन निर्गुण निगत भेद अविकारी ।
सोइ सच्चिदानंद एव घन व्यापत सगुण सरूप स्व धारी ॥
क्रीडत गोपीगन हिलिमिलि हरि रूप अनूप सवारी ।
गहि बहियाँ गोपी कनियाँ चढि नाचत बाँह पसारी ॥
जत गोपी तत कृष्ण रूप नर कर गहि विधि विस्तारी ।
बीच बीच जनु रचित नील मणि शशि मणि कोर स्व पारी ॥
निर्त्तत गावत सुख उपजावत मेघ तड़ित दुति भारी ।
रति शत कोटि काम जनु निर्त्तत छवि शृंगार बलिहारी ॥
देव मुदित निरखत हरि लीला सुमन अधिक तरु कारी ।
रास विलास कहत सुख लहु बहु रामसेवक की पारी ॥३३०॥

दोहा

कुमरि राग मो चरित हरि रामसेवक कह गाय ।
कहत सुनत हँसि बोलि शुचि ज्ञान भक्ति नर पाय ॥१॥
फाग परम हरि अनघ जस गावहिं सुनहिं सुजान ।
लहहिं चारि फल अधम नर रामसेवक कल्यान ॥२॥
कृष्ण चरित शत कोटि महँ रास विलास उदार ।
कहत सुनत हरि बाल गुण अधम होय भव पार ॥३॥
कलि निज अघ अवगुण समुझि सूर्य तनय की त्रास ।
रामसेवक अति त्रसित उर कृष्ण सरन करु आस ॥४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या किंकरी ठोमरी टपारेक्का वा न्यावा घोध्यं

त तनन तनन तोरु ताना ।
ग गनन गनन करु गाना ॥टेक॥
घ घनन घनन घाना ।
भ भनन भनन मर माना ॥
प पनन पनन पन पाना ।
झ झनन झनन झनझाना ॥
ठ ठनन ठनन रचि ठाना ।
ट टनन टनन लपटाना ॥
न ननन नारि रस जाना ।
म मनन घनत मरगना ॥
कोइ नद ग्राम धरिसाना ।
एक कृष्ण राधिका स्याना ॥
करि रामसेवक उर ध्याना ।
लहु भक्ति निरति बिज्ञाना ॥३२१॥
सा थे थे थे थे थाई ।
हरि नाचत बाँह उठाई ॥टेक॥
कर गोपी गन कर लाई ।
निज रूप अमित दरसाई ॥
रस रग राग बहु गाई ।
जग मोहन मुरली बजाई ॥
बर भूपण बसन बनाई ।
शत कोटि काम छबि छाई ॥
हरि गोपि अग लपटाई ।

सुर नारि सकल ललचाई ॥
एह भक्ति नात अधिकाई ।
सुख रामसेवक जन पाई ॥३३२॥

राग सोरठो

भेष रातिनी रूप हरि धाई ।
रस नयन सुनयन मिलाई ॥टेक॥
भूषन बसन नारि सम धरि बर केस सुबिथिनी बनाई ।
अंजन नयन सोहावन पावन भाल बेणी झलकाई ॥
इत उत खेंचत बोलत चूडी गोवना गति समुझाई ।
राधा भवन कियो गवन जबहिं हरि प्रीति अलौकि छाई ॥
पेटारिन खाला झट खोलि खोलि बस्तु अमिन दरसाई ।
देश देश को भाव रत कहि चूडी आदि बताई ॥
सोनहुली रूपहुली कहि कहि रत्न जडित बहु गाई ।
राधा कर गहि हरि पहिरावत रामसेवक सुख पाई ॥३३३॥
भेष रातिनी रूप हरि धारी ।
राधा भवन सुख बारी ॥टेक॥
देश देश की वस्तु बतावत मोल अधिक अनुसारी ।
अमूल्य कहि कहि पहिरावत हँसि हँसि बदन निहारी ॥
कर गहि भाल बिंदु हरि लावत लौकिक बचत दुलारी ।
सिर बदी खोलत सिर मोरत फुँकि फुँकि केस बिथारी ॥
वेणी झलक भाल दरसावत जूट केश सु बिचारी ।
भूषन श्रवन भाल अति राजित अनु शत इन्दु तमारी ॥
राधारमण वेद बुध गावत तेहि सुख हित हरि नारी ।
सुखप्रद रामसेवक त्रिभुवन हरि राधा मन सुखकारी ॥३३४॥

राग टोडी

राधा कोइ न्याज गृह रासत मुरारी के ।
लोक लाज तजि रहु सरन सुधारी के ।।टेक।।
सिर पीर कहु कोई ज्वर दाह वहु रोई
मातु पितु सुनि बोलु वैद्य सु निहारि के ।
वैद्य नारी धरि जाइ दुख राधा नहिं पाइ
शास्त्र गति भुल नहि कहत निचारि के ।।
वैद्य नहिं नारी जानु एहि को अनारी मातु
नद सुत बोलु पितु कहत पुकारि के ।
वृषभान सुनि कान लहि उर गुरु ज्ञान
नद सुत बोलि लीन्ह बहुत दुलारि के ।।
कृष्ण कर गहि लीन्ह छन दुख दुरि कीन्ह
परस परस करि प्रेम रस डारि के ।
उठि प्रीति पहिचानी राधा रूप गुन खानी
कर गहि मुसुकानी पर दुख टारि के ।।
राधा रानी महारानी भक्ति ज्ञान सुखदानी
पर अर्घ रज हरु जस बिस्तारि के ।
कृष्ण राधा रामसेवक को भक्ति दानी
चरित बिसद सुखप्रद नर नारि के ।।३२४

राधा गृह हरि रहु रात्रि दिवस छाय के ।
रूप तौ अनेक एक रूप प्रगटाय के ।।टेक।।
प्रेम रस पहिचानी उर बसु सुखदानी
रहत लोमाइ दुइ रूप दरसाय के ।
प्रगट सु केलि करि राधा गल कर धरि
अग अग प्रति हरि रहु अरुझाय के ।।

घरि घरि पलछन कहि हरि गुन गने ।
राधा रात्रि दिन रहु उर पुलकाय के ।
श्यामल गवर गात बोलत सुगम बात
खात हिलि मिलि एक तन मन लाय के ॥
तरुए तमाल माल सघन बेइलि जाल
तड़ित सुघन लखि रहु ललचाय के ।
छबि सु शृंगार धारी रवि शत काम भारी
रूप को निधान तेज रहत सिहाय के ॥
उपमान कोइ पाइ कवि रहु सकुचाइ
राधा हरि रूप मन राखत लोभाय के ।
अतिशय अनूप रूप राधा कृष्ण जग भूप
महाराज महारानी सुखदानी धाय के ॥
राधा कृष्ण केलि गाइ कवि नहिं थाह पाइ
ध्यान करि उर कछु जस कहु गाय के ।
कलि काल त्रास रामसेवक को एक आस
राधा कृष्ण सरन पुकारु सिर नाय के ॥२३६॥

राग हिंडोल

पलना झूलत एकै साथ ।
झुँकि झुँकि जोरि जोरि माथ ॥टेक॥
कृष्ण राधिका श्याम गवर तन मेघ तड़ित तथि साथ ।
रस मद प्रेम पुलक छबि छावत बरषत शुचि चखु पाथ ॥
सुंदर बदन नयन झलकावत धरि राधा कर हाथ ।
रसिक शिरोमणि रस उपजावत हरि त्रिभुवन एक नाथ ॥
राग हिंडोल गाय सुख पावत अधर ललित लहि काथ ।
दरशन पक्ति निरखत पावत सुख सुर नर मुनि जुथ आथ ॥

अर्द्ध उर्द्ध पवदत छवि छावत रति मनसिज जनु आय।
रामसेवक अघ दूरि वहावत सुनि गुनि कहि हरि गाथ ॥३३७॥

हिंडोला झूलना सुख सारी।
संग राधा प्रिय नारी ॥टेक॥
छवि शृंगार जनु श्याम गवर तन रस मोहनि रंग डारी।
रस बस हँसि हँसि कर कर मेलत इत उत वदन निहारी॥
रेसम डोरी कनक राजित चहुँ अति चित्रित रंग वारी॥
चंदन की लकड़ी सिल्पित अति शुचि सुगंध सु अटारी।
अर्द्ध उर्द्ध पर्वेढावत गावत मुरली अधर सुधारी॥
गावत रागहिं ढोल बजावत राधहिं उरसि दुलारी।
रूप अनूप विलोकत सुर मुनि सुख लहु हिँ पुर भारी॥
ब्रज जन सुख बहु रामसेवक लहु निरखत वदन मुरारी॥३३८॥

अथ धुरिया मल्लार

॥२॥ घेरि आइ बदरिया कारी री।
श्याम विना जीव तरसत तरसत
लखि तन पेरत ओजिआरी री ॥टेक॥
श्याम गवर किमि होय भवन सम
सूझत हाथ पसारी री।
अति अँधियारी कारी लगत भवन भारी।
हरि ढिग किमि चलु प्यारी री॥
केहि विधि मिलन होय हरि सजनी
रात्रि भयानक भारी री॥
मास सकल रजनी दुखप्रद
निप्र भादव अति अँध्यारी री॥

राधा भवन रहत हरि निति निशि
आजु हमारी पारी री।
ललिता प्रतिदिन शोच करत अस
हरि बिनु सब ब्रज नारी री॥
रिमि झिमि बरसत जीव अति तरसत
कब आवहिं बनवारी री।
सकल भाव हरि रामसेवक करु
अस वर सरन मुरारी री॥२३९॥

चहुँ दिसि ते होय आवत बदरवा
हरि बिनु मोहि डेरवावत री।
धवलो धूसर धूमल कारी
पीत हरित बहु धावत री॥टेक॥
गरजत बरसत चपला चमकत
बिरहिनि भय उपजावत री।
सननन चहुँ पवन चलत अति
झननन झींगुर गावत री॥
मोर सोर दादुर धुनि करु बहु
पिपिहा पतिहि बोलावत री।
बिनु पति रयन सयन न चयन लहु
कोकी शब्द सुनावत री॥
नारि रयन पति पाइ लहत सुख
मोहिं सकल ललचावत री।
बरषा ऋतु सुख लहत महत त्रिय
जोइ पति सवन बसावत री॥
बिरह अनल लहि गान गोपी करु
हरि लहि उरसि जुड़ावत री।

अर्द्ध उर्द्ध पवढत छवि छावत रति मनसिज जनु आथ।
रामसेवक अघ दूरि बहावत सुनि गुनि कहि हरि गाथ ॥३३७॥
हिंडोला झूलना सुख सारी ।
संग राधा प्रिय प्यारी ॥टेक॥
छवि शृंगार जनु श्याम गवर तन रस मोहनि रंग ढारी ।
रस बस हँसि हँसि कर कर मेलत इत उत वदन निहारी ॥
रेसम डोरी कनक राजित चहुँ अति चित्रित रंग वारी ॥
चंदन की लकड़ी सिल्हित अति शुचि सुगंध सु अटारी ।
अर्द्ध उर्द्ध पवँढावत गावत मुरली अधर सुधारी ॥
गावत रागहिं ढोल बजावत राधहिं उरसि दुलारी ।
रूप अनूप विलोकत सुर मुनि सुरत लहु तिहुँ पुर भारी ॥
ब्रज जन सुखद बहु रामसेवक लहु निरखत वदन मुरारी ॥३३८॥

अथ धुरयिा मल्लार

घेरि आइ बदरिया कारी री।
श्याम बिना जीव तरसत तरसत
लखि न परत अँधिआरी री ॥टेक॥
श्याम गवर किमि होय भवन सम
सूझत हाथ पसारी री ।
अति अँधियारी कारी लागत भवन भारी
हरि ढिग किमि चलु प्यारी री ॥
केहि विधि मिलन होय हरि सजनी
रात्रि भयानक भारी री ।
मास सकल रजनी दुखप्रद
निज भादव अति अँध्यारी री ॥

राधा भवन रहत हरि निति निशि
आजु हमारी पारी री।
ललिता प्रतिदिन शोच करत अस
हरि बिनु सब ब्रज नारी री॥
रिमि झिमि बरसत जीव अति तरसत
कब आवहिं घनवारी री।
सकल भाव हरि रामसेवक करु
अस वर सरन मुरारी री॥३३९॥
चहुँ दिसि ते होय आवत बदरवा
हरि बिनु मोहि डेरवावत री।
धवलो धूसर धूमल कारी
पीत हरित बहु धावत री॥टेक॥
गरजत बरसत चपला चमकत
बिरहिनि भय उपजावत री।
सननन चहुँ पवन चलत अति
झननन झींगुर गावत री॥
मोर सोर दादुर धुनि करु बहु
पिपिहा पतिहिं बोलावत री।
बिनु पति रयन सयन न चयन लहु
कोकी शब्द सुनावत री॥
नारि रयन पति पाइ लहत सुख
मोहिं सकल ललचावत री।
बरषा ऋतु सुख लहत महत त्रिय
जोइ पति भवन बसावत री॥
विरह अनल लहि गान गोपी करु
हरि लहि उरसि जुड़ावत री।

दरसि परसि करि केलि कृष्ण तन
रामसेवक सुख पावत री ॥३४०॥
घमडि घुमड़ि चहुँ चलत बदरवा
रूप अमित दरसावत री।
रिमि झिमि झिमि झिनि बुंद परत भुवि
विरहिनि सुख उपजावत री ॥टेक॥
करि कलोल बोलत चहुँ मोरवा
दादुर धुनि अति लावत री।
पिय पिय पिय पिय करत पपिहरा
झींगुर शब्द सुनावत री ॥
छत्र दंड मतुला भुवि भ्राजत
चदन मनहुँ चढ़ावत री।
जीव अमित सकुल भुवि डोलत
बरषा ऋतु भल भावत री ॥
सस्य सम्पन्न धरणि लहि राजत
तृण तरु लहि छवि छावत री।
अष्ट मास लहि ताप धरणि बहु बरषा ताप बुझावत री ॥
पति बिनु नारि लहत दुख बहु विधि
लहि पति ताप बुझावत री।
गोपीगन लहि रामसेवक हरि
बहु विधि उर सुख पावत री ॥३४१॥
देखो री बहु रूप बदरवा गरजत बरसत धावत री।
हरि बिनु मोहिं डेरवावत बहु विधि
चहुँ दिसि घेरि ढिग आवत री ॥टेक॥
चम चम चम चम चपला चमकत
घन घन घन घन गावत री।

सननननन अति पवन चलत चहुँ
बुन्द बान झलकावत री ॥
इत उत थिर नहिं चलत रनी घर
इन्द्र धनुष दरसावत री ।
कृष्ण हीन अबला दुरव पावत
इन्द्र स्व बीर कहावत री ॥
निरखि इन्द्र जब कृष्ण रूप घर
सैन्य सहित भय भावत री ।
भवन गवन करु तुरित त्रास बस
जोड़ जुवतिन डेरवावत री ॥
गोपी मन लहि कृष्ण चयन करु
काम की अग्नि बुझावत री ।
बरणा गुन गन रामसेवक कहि
कृष्ण चरन सिर नावत री ॥३४२॥

राग मल्लार

भींजत सुजन ते दोउ आवत ।
मुरली अधर बजावत ॥टेक॥
आगे आगे धेनु पीछे सब बालक मध्य शोभा भल पावत ।
श्याम गवर घन तड़ित लजावत काम कलभ सकुचावत ॥
सीस मुकुट कवल भल राजत काक पच्छ छवि छावत ।
कनक साटि कर परम सोहावनि गलसिकहर छवि धावत॥
करण लोल भूषन दूषन अघ सुरन बर पुष्प लखावत ।
भाल बिशाल बिंदु घन राजित सुरत शोभा भल भावत ॥
निलाम्बर बलदेव धारु शुचि पीत कृष्ण झलकावत ।
ठुमुकि ठुमुकि धरु पाव धरणि हरि राग मलार सु गावत ॥

गोपीगन ताहि कृष्ण मुदित मन कर गहि उरसि बसावत ।
यशुमति लहि हरि रामसेवक जब वदन चूमि उर लावत ॥३४३॥
भींजत कँजा बन दोउ भाई ।
गोपबाल समुदाई ॥टेक॥
सघन ओट तरु कमत धरि सिर पत्र छत्र धर छाई ।
करि कलोल बैठेउ बालन मिलि तृण तरु पात डसाई ॥
सेत पीत कहीं हरित सोहावन श्याम घटा अधिकाई ।
इत उत चितवत हँसि हँसि शिशु मिलि हेरत बदर लोनाई ॥
सनननन अति पवन चलत चहुँ मेघ मधुर धुनि लाई ।
बरसत बुद सोहावन पावन तरु तृण पिवत अघाई ॥
सब ऋतु ते बरषा ऋतु उत्तम करु हरि अधिक बड़ाई ।
जेहि जल ते तृण अन्न होत भुवि पशु नर तेहि सुख पाई ॥
अस कहि हरि सिरम्हर खोलि दधि लेइ शिशु मिलि अन्न सु खाई ।
धेनु चरावत रामसेवक हरि प्रतिदिन गृह बन आई ॥३४४॥
धेनु चरावत नहीं मुरारी ।
बरषा ऋतु सुख भारी ॥टेक॥
हरित हरित तृण धेनु चरत भुवि पिवत चहुँ शुचि बारी ।
दुग्ध देत पिवत बालक सब हरि सग रहत सुखारी ॥
गरजत बरसत चमकत चहुँ दिसि मेघ घटा अति कारी ।
तरु तर कोइ छन कोइ गिर कंदर इत उत धेनु निहारी ॥
इत उत बन कुसुमित निरखत पुनि ऋतु महिमा कहु सारी ।
वापी कूप तड़ाग अधिक जल नीर सरित विस्तारी ॥
बन परबत चहुँ दिसि जल झलकत निर्मल अति भुवि धारी ।
करि मज्जन हरि पान करत सोइ शिशु मिलि शुद्ध विचारी ॥
अन्न अधिक जग लहि मुनि हुलसित सकल लोक दुख टारी ।
बरषा ऋतु गुन रामसेवक कहि हरि पालत नर नारी ॥३४५॥

हरि कहँ निरखत बन समुदाई ।
बरषा ऋतु बर पाई ॥टेक॥
द्वादश बन उपबन द्वाश बर कृष्ण केलि श्रुति गाई ।
बरषा ऋतु चौबीस बन भीतर क्रीड़त शिशु लेइ जाई ॥
ऋतु अनऋतु तजि सकल वृच्छ घन फूल फल हरसाई ।
सुफल काठ पल्लहि शाखा चलु ऊर्द्ध पत्र दरसाई ॥
अपर वृच्छ हरि घरत बिलोकत परसत भुवि नियराई ।
सकल शिशुन फल कृष्ण खियावत करि तरु अमित बड़ाई ॥
गल पहिरावत पुष्प हार बर बैठत पत्र बिछाई ।
करि घन प्रेम मेह तरु वारत निरखि रूप पुलकाई ॥
अस सतकार करत तरु हरि कर बन उपवन जहँ आई ।
बरषा ऋतु सुख रामसेवक लहु श्याम सुरति मन लाई ॥३॥
बदरा बरसत नहीं ललचावत ।
बिरहिनि सब दुख पावत ॥टेक॥
इन्द्र धनुष चपला चहुँ चमकत श्याम घटा बहु धावत ।
उड़त बक नभ इत उत पावत ऋतु सम शोभा भावत ॥
दादुर मोर मीन होय निरखत, जलचर जलना गिरावत ।
सूखत धान पानी बिनु तृण तरु नर पशु खग तरसावत ॥
हरि लहि ताप भवन न गावत करो अनलन बहु सतावत ।
बरसहु किमि त्रिय प्राण लेत घन किमि उर भय उपजावत ॥
झिमिझिमि झिमिझिमि बुंद बर सुघन सुनि त्रिय ताप जुड़ावत ।
खग मृग तृण तरु लहेउ धरणि सुख आक वृक्ष सकुचावत ॥
गोपी गन लहि कृष्ण चयन करु काम अग्नि जुड़वावत ।
बरषा ऋतु सुख रामसेवक लहु गृह गोपनि हरि आवत ॥३४
देखहु बदन केरि लोनाई ।
जनु चहुँ शोभा छाई ॥टेक॥

सेत पीत कहीं हरित सोहावन ललित श्याम अधिकाई।
इन्द्र धनुष की शोभा किमि कहु चपला चमकि सोहाई॥
चक्र चडत शोभा नभ पावत सेत श्याम छवि पाई।
नाचत मोर चकोर हर्ष उर पिपिहा पिय पिय गाई॥
दादुर शब्द करत अति आतुर झींगुर झन झन लाई।
तृण तरु सुख लहि धान्य अधिक भुवि नर पशु खग हरखाई॥
बरषा मिसु हरि तन बरनन करु श्याम गवर दरसाई।
अंग अंग प्रति अंग बिलोकत रहु मन चरन लोभाई॥
गोपी गन की भाग्य कहत कवि मन बुधि रहु सकुचाई।
बरषा ऋतु गुन रामसेवक कहि हरि पद सब सिर नाई॥३४८॥
निरखत हरि तन वर घन श्याम।
सकल भक्त सब जाम॥टेक॥
मेघ श्याम सम अंग सोहावन पीत बसन दुति दाम।
इन्द्र धनुष कचन साटी कर मुरली अधर ललाम॥
उपमा पुनि कवि कहत हृदय गुनि जेहि मन लहु विश्राम।
कृष्ण श्याम घन तड़ित सोहावन चमकत राधा बाम॥
भक्त ध्यान करि नाम रटत जिह सुमिरि सुमिरि गुन ग्राम।
प्रेम नयन जल बहु विधि बरसत रोम रूर तरु चाम॥
मेघ श्याम तन तड़ित ध्यान करि भक्त लहत मन काम।
बरषा ऋतु लखु कृष्ण राधिका रामसेवक जपु नाम॥३४९॥
हरि तन बरषा ऋतु रुचि राई।
सकल विभव रहु छाई॥टेक॥
मेघ श्याम तन कृष्ण पीत पट भूषन तड़ित सोहाई।
बाम भाग राधा कर फेरत चचलता अधिकाई॥
भक्त सनेह नेह जल बाढत बरषत नयन लोनाई।
सकल भक्तशाली बृगसित अति द्वन्द्व बिकार गवाई॥

आक जवास बासना पाती- फरु हरि सुजस बड़ाई।
काम क्रोध कृमिशाली चालत वेगि ख नीर नसाई॥
बरषा ऋतु अस भरुन को हरि कहत वेद बुध गाई।
राधारमन भवन उर करि भजु रामसेवक मन लाई॥३५०॥

धुरिया मल्लार

रिमिझिमि रिमिझिमि देव बरसत री।
हरि बिनु निसि जीव तरसत री॥टेक॥
उमडि घुमडि चहुँ चलत बदरवा गन गन गन घन गरजत री।
सननननन सन चलत- पवनवा तन तन तन तन तरजत री॥
इन्द्र धनुष सर बूंद अधिक चलु झम झम झम झम झमकत री।
चपला इत उत चहुँ दिसि धावत चम चम चम चम चमकत री॥
अग अग गंध सुगंध पुष्प बहु गम गम गम गम गमकत री।
आइ गये निशि केलि कीन्ह हरि गोपिन के भय बरजत री॥
सुरतप्रद रामसेवक चहुँ जुग हरि अग अग कर सिर परसत री॥३५१॥
गरजत बरसत तरजत बहु बिधि मेघन महँ जोड़ घोर बारी।
करि कलोल बोलन लागे जीव अमित चहुँ ओर बारी॥टेक॥
इत उत बक उडत नभ धावत घुमरि घुमरि जिमि चोर बारी।
पिय पिय पिय पिय रटत पपिहरा दादुर करु बहु शोर बारी॥
डेंक महोख आदि खग देखत गावत नाचत मोर बारी।
सननननन पवन चलत चहुँ शब्द करत घनघोर बारी॥
प्यारा संग न लहत प्यारी भय जो त्रिय करु बल जोरनारी।
राधा संग निति हँसत बोलत हरि मोहि बुधि बल अति थोर बारी॥
गोपी गुन करि ध्यान सदा हरि राखत निज निज कोर बारी।
श्याम गात उर रामसेवक धरि पर तन हरि पद भोर बारी॥३५०॥

रागिनी गुंज्जरी

हरि रसखान निरस मुरली बजाई री।
मोहि तिहुँ पुर जीव रव बस बसाई री ॥टेक॥
कुजन लता ललित बन परबत जित
तृण तरु नीर निज जड़ता गवाई री।
अग्नि पवन रवि खग मृग पशु गवि
जलचर जीव निज देह बिसराई री॥
जदुन चेतन गति चेतन न जड मति
मुरली धुनि अस तिहुँ पुर छाई री।
सुर नर गन मुनि सुनत हृदय गुनि
तजि उर ध्यान रस शब्द मन लाई री॥
प्रेम ते पुलक गात मुख नहिं आई बात
सिथिल सनेह अग रहत कठाई री।
धेनु पशु जाइ जाइ हरि पद सिर नाइ
किमि कहु गति व्रज लोगन लोगाई री॥
शब्द रस बान लागु गोपी उर काम जागु
घायल सकल त्रिय घरु पद धाई री।
हरि पद पाइ रामसेवक सु लपटाइ अग
परसाइ गोपी गन सुख पाई री॥३५३॥

मुरली की धुनि तिहुँ पुर रहु छाई री।
सुख बरदानी रसखानी अघहानी कर
अस रस जानि जीव पीवत अघाई री॥टेक॥
सुनि सुनि शब्द कान सिथिल चेत ज्ञान
जड़ जीव हीन हाल कहुँ कछु गाई री।

तरु जोइ हीन पात सुनु सखी सोइ बात
ललित सुपात लेइ जग दरसाई री ॥
सुखल सुखल काठ सुनु अचरज पाठ
पलुही पलुही बृगसत पुलकाई री ।
मुरली करि शब्द सुनि काष्ट उर गुनि पुनि
शाखा चलु उर्द्ध ललकारि बहु धाई री ॥
जडुन की हाल अस सुनत सचेत कस
जनु इन्द्री प्राण जीव सकल गवाई री ।
सुर मुनि सुनि सुनि ध्यान तजि पर गुनि
शब्द रस पान करि रहत लोभाई री ॥
गोपी गन सुनि कान गृह कुल तजि मान
हरि पद गहि झट रहु लपटाई री ।
प्रेम रस पाइ रामसेवक अनद छाइ
गोपीगन सुरत अति हरि वर लाई री ॥३५४॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित श्री कृष्ण सघन विपिनि घन सोहाई ।
भूषन बर बसन तडित वेष वर बनाई ॥टेक॥
गुंजत बहु पुष्प स्याम राजित सत कोटि काम
अगन प्रति अग रहत कोटिन छवि छाई ।
सुखमा परम अपार रहत सग छवि श्रृंगार
कोटिन बुध वेद पार पावत नहिं गाई ॥
मोहनि रसखानि जानि त्रिभुवन सुख प्रद सुहानि
मुरली कर अधर लाय कृष्ण हँसि बजाई ॥
हास्य मोह करु कृपाल मुरली मोहन रसाल
त्रिभुवन नर नारि सुनत देह निज गवाई ।

विकल अति सिथिल गात नीश्रित नहिं वदन वात
चितवत टक लाय सुनत शब्द सुरति लाई ॥
मनहु सकल प्राणहीन शब्द सुनत ज्ञान पीन
मुरली रव धर रसाल पीवत पुलकाई।
मुरली रव रस गभीर पीवत मन मुदित धीर
काम क्रोध लोभ व्याधि सकल ज्वर नसाई ॥
गोपीगन रव रसाल पीवत मिलि गोपवाल
काम अग्नि ज्वलित कृष्ण रूप मो लोभाई।
जाकह जस भाव मनसि मुरली रव धरत उरसि
पावत सुख भूरि करत कृष्ण की बडाई ॥
मुरली धुनि अमृत सार पीवत भव जीव पार
रामसेवक कृष्ण पाइ गोपी सुख पाई ॥३५५॥
मोहत जन सकल मोह बरसि रस मुरारी ।
मोहनि रस डारि बोरि मुरली अधर धारी ॥टेक॥
मुरली रव रस गभीर पीवत सकल रहत थीर
रवि शशि रथ रोकि नखत रटत नाहिं टारी।
बछन अनुराग जाग छीर पान कीन्ह त्याग
धेनु घास त्याग करत शब्द लगत प्यारी ॥
खग मृग रव सुनत कान सिथिल भयो स्वजन ज्ञान
जलचर थलचर सुजीव देह गति बिसारी।
वृच्छ अद्रि पुलक गात डोलत जनु बोलत बात
सरित सकल उलटि धार बहत नाहिं वारी ॥
सुर नर मुनि गन सुज्ञान उरसि धरत सुनत कान
निज निज रुचि भाव बैठि सिथिल होय निचारी।
गोपीगन गोपबाल सुनत शब्द रस रसाल
पीवत पुट कान उरसि धरत रस मथारी ॥

गोपिन करि सकल हारा कहत छुटत जगत जाल
मन बिचारि सुनत भक्ति पावत नर नारी ।
शब्द धर्म की सुनत उरसि काम बान लगत
फटित कृष्ण सरन जाय रूप बर निहारी ॥
काम अग्नि दूरि कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण लीन्ह
अंग अंग परसि रूप दरसि करु मुरारी ।
गोपीगन 'भक्ति पाय रामसेवक कहत' गाय
कृष्ण सरन देहु अनहिं जानि मोरि पारी ॥३५६॥

राग धनाश्री

हरि मुरली की धुनि सुनि आई ।
सकल गोपी हरखाई ॥टेक॥
जनु यदुवंशी भरि टेरत काम बान रस लाई ।
घायल होय गोपी इत उत धुमरत देह गेह बिसराई ॥
शब्द मनहु रजु होय करखत डोलत नह सगाई ।
आइ कृष्ण पद कमल विलोकत काम विवस सिर नाई ॥
कर सिर परसि सुमंगल बानी हरि तिय ताप बुझाई ।
नारि धर्म इतिहास अमित कहि प्रेम प्रतीति बढाई ॥
हरि करि बचन सत्य बुध श्रुति कहु गोपिन उर न सोहाई ।
हरि पद प्रीति सरिस न धर्म कोइ एह गोपिन मत भाई ॥
जाकर पति परिवार रोकु गृह सोइ तिय हरि सों समाई ।
तजि पति सुत उर ध्यान कृष्ण कर रामसेवक सुर पाई ॥३५७॥
गोपिन फेरत भवन दुलारी ।
धर्म गाइ बहु नारी ॥टेक॥
दुखित खोजत परिवार सकल बन भ्रात पिता महतारी ।
जाहु अनहिं फिरि भवन सकल तिय राति देखहु अँधियारी ॥

अंध बधिर कुष्टी धनहीन रोगी महा अघकारी ।
ऐसेहु पति कर त्याग करत त्रिय यमपुर लहु दुख भारी ॥
अष्टादश पौराण कहत एह बुधजन श्रुति कहु चारी ।
पति सेवत त्रिय लहत स्वर्ग सुख भुवितल रहत सुखारी ॥
अस बिचारि फिरि जाहु भवन निज सेवहु पति सुख सारी ।
रानि भवन नहिं नारि जात कोइ कुल कलक लहु भारी ॥
हरि करि बचन सुनत गोपीगन एक टक बदन निहारी ।
बोलत नहिं उर रामसेवक रुचि निशि दिन सरन मुरारी ॥३५८॥

राग बिहाग

सरन हरि त्यागहु जनि बन नारी ।
प्रणतपाल तव नाम बेद बद निज प्रण राखु मुरारी ॥टेक॥
काम बान रस बोलि लीन्ह त्रिय घायल करि जनि मारी ।
बिकल होय तव सरन पुकारत काम बान दुख भारी ॥
ज्वाला अधिक उर जात सहा नहि हरहु ताप बनवारी ।
शीतल कर तव ताप बुझावत सकल अंग सिर धारी ॥
मुरलि बजाइ स्व बस अपुर करु अवलन दुरुर अधिकारी ।
टेरि लीन्ह ढिग रयन चयन हित अब काहे निशि डारी ॥
रोदत बदत कर जोरि मोरि सिर हरि पद गहु त्रिय भारी ।
गोपी गन हरि बिरह बिकल अति नयन झरत बहु बारी ॥
धीरज धरि पुनि सरन पुकारत हरि करु सकल सुखारी ।
सुख लहु रामसेवक गोपीगन हरि बर बदन निहारी ॥३५९॥
त्यागहु जनि बनवारी बिकल नारी ।
बसी करि शब्द सुनत व्याकुल अति आये सरन मुरारी ॥टेक॥
मन तव पद रत तन किमि चलु गृह पद न परत भुवि डारी ।
जाइ भवन कृत कवन करब हरि कर नहिं चलु तप सारी ॥

नारि धर्म पतिव्रत वर कहु हरि विषय भवन उतारी।
तुम त्रिभुवनपति वेद कहत बुध परसत अग अघहारी।
मातु पिता गुरु बंधु सकल तुम दायक फल वर भारी॥
स्वारथ रत परिवार बंधु पति विषय भोग अधिकारी।
हरि तजि पति मानत ध्रुव बिपयी परत नारि भव बारी॥
बिपयी पति तजि हरि पति मानत सुख लहु तिहुँ पुर भारी।
कामातुर तिय सरन बिलोकहु वचन वान जनि मारी।
सरन दीन्ह हरि रामसेवक ध्रुव कर सरोज सिर धारी॥३६०॥

राग टोडी

हरि टेरि लीन्ह मुरली बजाय के।
सुखप्रद शब्द रस रंग बरसाय के॥टेक॥
पति एक नारी टोकि गृह राखु पथ रोकि
हाय हाय करु हरि सुरति लगाय के।
हरि पद ध्यान धरि रूप उर पुर थरि
तद्गत मन करि हरि मों समाय के॥
अपर गोपी सुधाइ मुरली करि शब्द पाइ
काम बस हरि पद गहु सिर नाय के।
विनय अमित करि हरि पद सिर धरि
कर जोरि सरन पुकारु पुलकाय के॥
हरि सिर हाथ दीन्ह काम पीर हरि लीन्ह
गोपीगन हरि ढिग रहु हरखाय के।
रास सुबिलास गाइ सुखप्रद उर भाइ
गोपीगन कृष्ण ध्रुव मत ठहराय के॥
रात्रि षष्ठ मास करि ऋतुराज सुख सरि
चंद्र को प्रकास थीर करु सुख छाय के।

गोपीगन तन जत कृष्ण धरु रूप तत
बिच बिच नारी एक एक कर लाय के ॥
चंद्र पद्मराग मनी जनु मोती लालकनी
नील मनी तगर चिप चिप लपटाय के ।
रास सु बिलास देखि हरि रूप नर पेखि,
सुर मुनि रहु रामसेवक लोभाय के ॥३६१॥
हरि रास करु निज रूप बहु धारि के ।
मालाकार सार भार मथो जनु वारि के ॥टेक॥
कर सन कर धारि गल सन गल वारि
अंग प्रति अंग करि सुख सारि के ।
गोपीगन केलि करि हरि रस रंग धरि
बाँह धरि काँध चढ़ि रहु कर टारि के ॥
पुनि कर गहि गहि रास रंग कहि कहि
नाचि नाचि गान करु प्रेम रस गारि के ।
सीतल सु हरि कर अंग प्रति अंग पर
गोपीगन लहु सुख काम रुज जारि के ॥
मुख मकरंद रंग गोपी मन भृंग संग
सुख रस पान करु नयन निहारि के ।
मृदुल वचन बोल अंग प्रति अंग डोल
थेइ थेइ थेइ ताथेइ थिर थारि के ॥
इत उत तान तोरि कर गहि सिर मोरि
ताधिलंग ताधिलंग ताधिलंग कारि के ।
सप्त सुर तीनि ग्राम गान करि बिसराम
झननन्न झन झन झन झारि के ॥
इत उत लपटाइ छंद मुरली बजाइ
मन सन मन सन सन संचारि के ।

गोपी पुलकाइ रामसेवक सरन पाइ-
मन मन मन पद गहत मुरारि के ॥३६२॥

राग कल्यान गति ध्रुपद घा चंचरीकं बोध्यं

रास मंडल कारि गोपिन मध्य रहु मुरारी ।
निर्त्तत दिन रयन कोटि वपुप धारी ॥टेक॥
ग्रथित जनु तरु तमाल कनक बेइलि तता जाल
रति पति शत कोटि रति कोटिन वलिहारी।
कर ते कर लाय श्याम शोभा शत कोटि काम
तडित घन समूह वृहत मनहु सुरज सवारी ॥
मुक्ता मणि अमित राज पद्मराग मध्य भ्राज
चद्रमणि मो नील जडित पीत मणि सुखारी ।
तारा गन मध्य ग्रथित चद्र चलत नहि अमित
मनहु रास करत संग कोटि शत तमारी ॥
भूषन वर वसन भूमि निर्त्त करत जात दूरि
सवन जनु फर फरात पवन कर पसारी ।
मुरली धुनि गति रसाल निर्त्तत जनु बहु मराल
गावत मिलि सरस राग गोपीगन भारी॥
सप्त सूर तीनि ग्राम एकइस मुरछल ललाम
राग रागिनी समूह गान करु निचारी ।
शोभा शृंगार चलित छवि अनूप मध्य जडित
चचल टुतिकार मेघ गरन भवन भारी ॥
सुर गन मुनि धरत ध्यान लहत परम भक्ति ज्ञान
रास वर विलास कृष्ण निरखत नरनारी।
पुष्प वृष्टि करत देव कृष्ण चरन सकल सेव
रामसेवक कृष्ण रूप देखत अधिकारी ॥३६३॥

राजित रुन श्याम काम दाम शत लोनाई ।
रासमंडल कारि मधुर बाँसुडी बजाई ॥टेक॥
पैजनी वर बजत ताल क्षुद्र घंटिका रसाल
मोहत नर नारि कृष्ण किंचित मुसुकाई ।
भूषन वर वसन वारि मुरली वर कर सुधारि
नासिका बुलाक झलक झलकत सुखदाई ॥
कुंडल श्रुति वर अमोल चंचल गति नहिं अडोल
भाल विंदु रचित रचित मनसिज मन भाई ।
सोभित बनमाल लाल पदिक हार मणि सुजाल
श्रीवदर अनूप अमित शोभा दरसाई ॥
चिबुक अधर कल कपोल दसन चमक मृदुल बोल
मोहत त्रय लोक शुभग नासिका सोहाई ।
सीस मुकुट अति ललाम शोभा शत कोटि काम
कुंचित कच केस मधुप लटक की बढाई ॥
चरन कमल कंज हाथ गोपीगन जुत्थ साथ
भुज बिसाल नयन मयन शोभा रहु छाई ।
निर्त्त गान करत चरत अगन प्रति धरत हरत
गोपीगन मध्य कृष्ण क्रीडत कर लाई ॥
तोरत बहु विधि सुताय रासत गोपिन मनाय
ततधिलग ततधिलग श्रीरोरी राग गाई ।
थेइ थेइ थेइ गान नाचत छन धारि कान
रामसेवक सुर समूह शोभा सुख पाई ॥३६४॥
कांति गोपिन मध्य श्याम राजत बनवारी ।
रासमंडल कारि एक एकन कर धारी ॥टेक॥
कर ते कर जोरि श्याम दक्षिण छन फिरत वाम
पलटत इव घन सभारि देखत सुर झारी ।

मेघ तड़ित मनहु भूरि झटित लटकि चलत दूरि
मिश्रित अतुला अकार फिरत कर पसारी ॥
कनक रत्न मणि सो अमित मनहु नील मणि सुपचित
ग्रथित इंदु जनु तमारि लहत रूप भारी।
बाजत मुरचंग संग बीणा मुरली मृदंग
चंग ढोल सोर रस सारंगी सुखारी ॥
तुमुल नाद भुवि अकास प्रमुदित सुर देखि रास
बधुन सहित करत गान पुष्प सीस डारी।
तता थेइ थेइ थाय थोरीरीरी रिक्त गाय
नाचत भर लाय मुदित बदन सुर निहारी ॥
धृत धृत धृत धृतान राग रागिनी सुजान
सप्त सुर तीनि ग्राम गावत रस गारी।
रिक्त रिक्त रिक्त तान निर्त्तत कर गहि म्यकान
कुंचित कच केस सीस फइलि रही कारी ॥
सुनत पैजनी रसाल किंकणी कटि बजत ताल
मोहत त्रय लोक्य देव दनुज मनुज नारी।
बाजत करताल ततधिताग गति रसाल
रामसेवक सकल लोक एक गति मुरारी ॥२६५॥
रासमंडल कारि जोति मोतिन बरसाई।
निर्त्त गान करत गोपिन संग कर लगाई ॥टेक॥
फइलि रही सीस केस सुधि बुधि नहिं देह
श्याम गोर शोभा अंग अंगन रहु छाई।
केरि को तिलक भाल रचित राचित बिंदु जाल
शोभा शत कोटि चंद्र भाल की लोनाई ॥
भूषन वर बसन भ्राज तड़ित जनु तरंग राज
रवि शशि शत कोटि मेघ पटल लखि लोभाई।

छवि शृंगार एक ठवर मनहु मथित श्याम गवर
ठवर सेस वहत पवन गवन अधिकाई ॥
खजरी मृदग झाल वाजत मुरली रसाल
सारगी मुरचग ढोल वेणु छन वजाई ।
किकणी विचित्र जाल वाजत पैजनी रसाल
गोपिन गन सग कृष्ण करतल धुनि लाई ॥
तुमुल नाद होत शुभ्र भुवि अकास पटल अभ्र
मनहु शत तमारि इदु घटा घन सोहाई ।
तता तता तता तान गगा गगा गगा गान
थेइ थेइ थेइ तातैइ थाप थाई ॥
श्रीरीरीरी राग गाय ततधिलग कर उठाय
धीरीरीरी धीरता लगाइ नाचि नाचि धाई ।
कुशल राग गान तान गोपिन को रासु मान
रामसेवक रासमडल देखत सुखदाई ॥३६६॥

राग टोडी

ताद्धिलग ताद्धिलग ताद्धिलंग लाय के ।
श्रीरीरीरीरीरीरी श्री राग गाय के ॥टेक॥
रास सु विलास करि रूप स्वअनत धरि
गोपीगन मध्य थिरी थिरी थिर थाय के ।
नृत्त गान करि करि सुख रस भरि भरि
धीरीरीरीरी घुकि धारि धुरि धुरि धाय के ॥
पैजनी पएल वाजी किंकिणी सुकटि राजी
ता ता थेइ थेइ ताल सकल वजाय के ।
सप्त सुर तीनि ग्राम राग रागिनी ललाम
मुरछल गति धुनि तिहूँ पुर छाय के ॥

सरस मृदंग ढोल सारंगी मृदुल बोल
रजरी मुरुचंग भाल ताल ललचाय के।
तनन तनन तोरु तान सिस कर मोरु
गनन गनन गुन गति दरसाय के॥
झननन झनझोरि मनन मन मोरि
नयन नयन जोरि जोरि उर पुलकाय के।
सननन सन चलि बहु कृष्ण संग अलि
कर सन कर गहि इत उत आय के॥
गोपी गन पुलकाइ हरि मन रूप पाइ
बाँह धरि चढ़ि काँध रहु लपटाय के।
करि विश्राम राससेवक बहुरि श्याम
कर गहि नृत्त करु गोपी सुखपाय के॥२६७॥
हरि क्रीडा करु रास मंडल सवारि के।
गोपी गन मध्य निज रूप बहु धारि के॥टेक॥
कर सन कर धरि रात्रि षष्ट मास करि
चंद्र को प्रकाश ऋतुराज सुख सारि के।
काम रस राग गाइ मुरली अधर लाइ
थेइ थेइ थेइ थिर थेइ थिर थारि के॥
नटवत नृत्त करि त्रयपुर मन हरि
थ्रीरीरीरीरीरी ताद्धिलंग कारि के।
अगम सुगम करि सुगम अगम धरि
निगम करि हाल ख्याल जनु सुवि डारि के॥
आदि मध्य अंत हीन एक रस ब्रह्म पीन
विगत विकार करवैया श्रुति चारि के।
बिगत विनोद बोध रूप श्रुति पथ सोध
सोइ ब्रज क्रीडा कर संग बहु नारि के॥

अथ काल एक वीर पूर्ण नभ सम थीर
चक्र इव रास करु गोपी कर धारि के।
एक ते अनंत होइ निज रूप मणि गोइ
नर इव लीला करु मुनि रज टारि के ॥
लखत न रूप कोइ अथ नर नारि सोइ
अलख निरंजन असुर भुवि मारि के।
सुखप्रद कारि रामसेवक सरूप धारि
कृष्ण तन श्याम सुर मुदित निहारि के ॥३६८॥

राग केदारा

हरि निज रूप भुवि प्रगटाय।
अमित रुचि बनाय ॥टेक॥
मास षष्ट को रात्रि करि नर जोति शशि दरसाय।
राजऋतु करि प्रगट भुवितल केलि करत अघाय ॥
रासमंडल कारि निर्त्तत वेणु अधर बजाय।
मध्य गोपिन कृष्ण राजित श्याम गवर सोहाय ॥
गावत हरि रस खानि निर्त्तत एकन एक कर लाय।
रूप वर दरसाय निज हरि काम प्रद रस गाय ॥
अमित कोइ छन होत गोपी बाँह धरि मुसुकाय।
भाव लखि उर कृष्ण गोपिन लीन्ह कांध चढाय ॥
भाग्य गोपिन की कहत कवि रहत भुवि सकुचाय।
कहत बुध श्रुति रामसेवक गोपीगन सुख पाय ॥३६९॥
हरि रस रंग राग सुधारि।
मोहेउ व्रजपुर भारि ॥टेक॥
वाद्य सकल बजाय कोइ छुम भूषन बसन सवारि।
एक एक कर धारि निर्त्तत राममंडल कारि ॥

गोपिन मध्य हरि श्याम मुरलि नाचत हाथ पसारि ।
राग रागिनि ग्राम मुरछल धरपत स्वर रस गारि ॥
रूप निज मोहनि मनोहर धारि सरस डारि ।
पीवत अमृत श्रवन पुट मुनि नयन वदन निहारि ॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य लहु उर कामादिक रिपु मारि ।
ध्यान करि दुइ भुज विलोकत कोइ मुनि कर चारि ॥
गर्व सुनि नहिं कीन्ह कबहिं गर्व करु ब्रजनारि ।
गर्व हित सोइ रामसेवक कीन्ह कृष्ण मुरारि ॥३७०॥

राग श्री

गोपी करु उर घर अभिमाना ।
मोहिं सम त्रय पुर नहिं आना ॥टेक॥
रास विलास हुलास करत सग कर गहि गल लपटाना ।
याहूँ पकड़ि हरि काँध विराजत तृण सम त्रय पुर जाना ॥
गर्व दूरि जेहि भक्ति अचल लहु उपजै जेहि उर ज्ञाना ।
उपजै मम पद कमल प्रीति दिठ सोइ विचारि भगवाना ।
माया करि मति भोरि कीन्ह हरि होय गये अतर ध्याना ॥
अति विह्वल गोपीगन भइ तन अनु तन गत भयो प्राना ।
पूछत पात पात वृन्दावन कुंज लता मो विताना ॥
खोजत गिर कंदर नरु पूछत सरि सर खग मृग नाना ।
श्याम गात सिर मुकुट विराजित झलकत कुंडल काना ॥
देखे वताइ देउ अजहीं मोहिं रामसेवक कहु दाना ॥३७१॥
गोपी व्याकुल खोजत वन भारी ।
धन बिछुरि गये बनवारी ॥टेक॥
जिमि जलहीन मीन गति धरनी मणि बिनु सेस दुखारी ।
तिमि व्याकुल विह्वल गोपीगन खोजत वनहिं मुरारी ॥

रोदत वदत खग मृग सन पूछत सरि सर लता निहारी।
अति विह्वल गिर तरु सन बूझत झुकि झुकि सरि सर वारी॥
चिन्ह सकल हरि अंग बतावत श्याम सुरति सुखकारी।
भूषन वसन विचित्र हार गल तिलक भाल दुति भारी॥
पद पैंजनी किंकिनि कटि बाजत मुरली अधर सुधारी।
करन लोल कुंडल अति राजित सीस मुकुट श्रोजिआरी॥
नयन वदन सोभा निरखत हरि मोहत त्रिभुवन नारी।
चरन कमल गहि रामसेवक जन भक्तिभाव अनुसारी॥२७२॥

राग विहाग

प्रगट हरि होहु विकल लखि नारी।।
विकल होइ तन सरन विलोकत रयन भयकर भारी॥टेक॥
रास विलास कराइ चूमि मुख विरह वान जनि मारी।
चरित तुमार उदार अमृत रस पिवत श्रवन अघहारी॥
तप्त जीवन कर ताप बुझावत कविगन कहु श्रुति चारी।
तुम अयलोस्यनाथ श्रुति बुध कहु चहुँ जुग जीव उपकारी॥
सब दासी विनु मोल जतन करु सीतल कर सिर धारी।
तप्त हृदय तव दरस परस विनु कामाग्नि जनि जारी॥
अति दयाल चहुँ जुग श्रुति गावत बुधजन कविगन भारी।
गोपीगन तव विरह विकल अति करुना काहेँ विसारी॥
गोपीगन विह्वल वन खोजत गिर कंदर सरि वारी।
गोपिन कह सुख रामसेवक एक केवल सरन मुरारी॥२७३॥
खोजत नारि होहु प्रगट बनवारी।
तुम त्रिभुवन पति वेद कहत बुध अवलन काहे विसारी॥टेक॥
रास विलास परम सुख देइ हरि किमि तजु निशि घन नारी।
मुरलि बजाइ बोलाइ लीन्ह ढिग कीन्ह जगत अधिकारी॥

अमृत पियाइ सुनाइ सुजस निज अन किमि विष मुख डारी ।
काम अग्नि तन तप्त ज्वलत अति धरि कर सिर रुज टारी ॥
होहु प्रगट सरनागत लखि त्रिय जनि तजु सरन मुरारी ।
अधरामृत शुचि पान करावहु अंग प्रति अंग कर धारी ॥
कर धरि हरि निज काँध चढावहु नाचहु हाथ पसारी ।
रास बिलास बहुरि जब करु हरि तब त्रिय होहि सुखारी ॥
त्रिय अभिमान नेक जनि धरु उर नारि सुभाव बिचारी ।
हरि हित रामसेवक गोपीगन इत उत सकल निहारी ॥३७४॥

राग टोडी

हरि गोपीगन तज रास निसराय के ।
गर्व उर लखि वर प्रेम स्व जमाय के ॥टेक॥
एक नारि अति प्यारी संग लीन्ह कर धारी
    बन इत उत फिरु तन स्व छपाय के ।
भइ परिशात नारी अगम सुगम कारी
    कर धरि चलु हरि काधे स्व चढाय के ॥
हरि काँध चढि गोपी निज कर सिर तोपी
    मोहिं सम कोइ नहि त्रयपुर जाय के ।
गोपीगन त्यागि हरि मोहिं संग लीन्ह धरि
    मोहिं सम आन नहि गर्व रहु छाय के ॥
गोपी गर्व जानि हरि त्याग कीन्ह सोइ घरि
    इत उत बन छिपि छिपि रहु धाय के ।
बिकल अकेलि जानि कृष्ण उर भाव मानि
    प्रगट भयेउ गोपी गहु हरखाय के ॥
कृष्ण सिर कर धरि शोक ताप लीन्ह हरि
    केलि सुखप्रद रस करु उर लाय के ।

गोपी हरि पद गहि निज उर रुचि कहि
लहि सुख भोग मन रहु पुलकाय के ॥
कृष्ण गर्व करि दूरि देत सुख जन भूरि
सेस वेद बुध कहु हरि जस गाय के ।
गोपीगन भूख रामसेवक लहेउ सुख
कृष्ण उर जामी दीन्ह स्वप्रगटाय के ॥२७५॥
गोपी गन खोजु वन वनहिं मुरारि के । -
सुजस विमल कहि बचन दुलारि के ॥टेक॥
जुग्म गीत गान करि हरि रूप उर धरि
सरि तट ठाढि करु रोदन पुकारि के ।
उच्च स्वर करि करि चक्षु नीर भरि भरि
वृष्टि करु अंग अंग नेह जल झारि के ॥
उर सिर धुनि धुनि गर्व निज गुनि गुनि
पुनि गोपी कहु हरि सुजस बिचारि के ।
तुम त्रिभुवन मीत गोपी ब्रज जन हीत
अघा बका आदि खल गन रिपु मारि के ॥
दावानल पान करि नाग को निकारि सरि
ब्रज जन त्रान करु गिर नख धारि के ।
रास सुविलास करि गोपी उर सुख थरि
अब जनि मारो हरि काम सर नारि के ॥
रूप दरसाइ नाथ गोपिन को धरि हाथ
नाहीं तौ मिलु तोहि निज तन जारि के ।
रोदन करत गोपी कर जोरि प्रण रोपी
गूढ भाव लखि हरि नेह स्व निहारि के ॥
यसुदी वजाइ पद चिन्ह दरसाइ
प्रगट भयेउ हरि गोपी रुज टारि के ।

गोपी पुलकाइ रामसेवक सरन पाइ
हरि करु रास पुनि कर स पसारि के ॥३७६॥

राग ध्रुपद थातिला नाचा संगीत शान्या बोध्यं
ताद्विलग ताद्विलग ताद्विलग लाई री ।
सुरप्रद रस सुरज बाँसुरी बजाई री ॥टेक॥
धा धा धी धीर धु धुर धारी धीरीरीरी गति चारी
झननन झन जनन रिझाई री ।
दा दा दी दीर दु दुर दारी नृत्तत गावत कुंज विहारी
मननलन सन कर गहि धाई री ॥
था था थी थीर थु थुर थारी अंग अंग प्रति अंग पर वारी
थननन थन थन थन थाई री ।
ता ता ती तीर तु तुर तारी झम झम झम झम झम झमकारी
तननन तान तोरु तननाई री ॥
नादिर नादिर नादिर वारि रुमुन सुमुन सुमुनु धारि
थेइ थेइ थेइ तान तोरि पलटाई री ।
रा रा री रीर रु रुर रारी सीरीरी रीर सीरी सारी
धननन घन सम घहराई री ॥
चाकृत चकृत चाकी वागृत वगृत वाकी
शत वर कोटि काम रूप दरसाई री ।
रूप को निधान रामसेवक ललित गान
करि गोपी गन सग देरिर सुख पाई री ॥३७७॥

वं बगृत वगृत रचि वारी ।
चं चकृत चकृत चक्षु चारी ॥टेक॥
ल ललित लवग ललचाइ क ककृत ककृत कर धारी ।
र रगृत रूप दरसाइ स्वरचित रास सुख भारी ॥

ज जगृत जगृत जस छाइ ज त्रिभुवन जयति पुकारी।
त तगृत तगृत धुनि लाइ च चटक बजत करतारी॥
भ भगृत स्वभाव बताइ त तोरत तान मुरारी।
स सकृत सकृत पलटाइ न निरतत हिलि मिलि नारी॥
ध धकृत धुकृत धुकि धाइ ग गगृत गान रस गारी।
घ घननन्न घहराइ हरि रामसेवक अघहारी॥३७८॥

ज जनन जनन जजीत।
कर सनन सनन्न संगीत॥टेक॥

कर सन कर लाइ इत उत चलु धाइ
मुरली बजाइ जन हरु भव भीत।
दा दीर दी दीर दु दुर दाना नाचत गावत राजत माना
थीरीरीरीरी, रस रीत॥
ताद्धिलग ताद्धिलग ताद्धिलग लावय गावय
सप्त सुरति निमाम सुरछल धीत।
नादिर नादिर नादिर ताना गीरीरी गीरीक गान
श्रीरीरीरी सर सी सर शीत॥
थेइ थेइ थेइ थाय ता ता थेइ थेइ लाय
थीरीरीरीगी थीर प्रथि थीर थीत।
तननन ताना तोरि गननन गल मोरि
सुखप्रद रस जग आपु सों अतीत॥
सरगी मृदंग ढोल मधुर सुरूचग बोल
खँजरी सुताल झाल रसप्रद सीत।
अनुपम रूप वारी रामसेवक दुलारी
धुनि श्रुति रूप चहु तीहूँ पुर पीत॥३७९॥

त तकृत तकृत घर बानी।
थ थगृत बजत रस सानी॥टेक॥

तननन तोरि तान विमल करत गान
नृत्त्त गहि गहि पानी।
सननन मन साना चखु जोरि मुसुकाना
मम सुरति निप्राम रस वर सानी॥
झाल ताल बाजत मृदंग ढोल गाजत
मुरली मुरचंग रंग रस पहिचानी।
किंकिनी विचित्र जाल पैंजनी सुभग माल
सारंगी मधुर राग जन सुखदानी॥
नृत्त गान ताल तान स्वर गति पहिचान
लगि परु उर जाको बुद्धि है सयानी।
ललिता लवंग लाची लक्ष्मी आदि मध्य राची
गोपीगन संग राधा प्रिय महारानी॥
झनन झनन झन मनन करत मन
उर बसु राग रास सोइ वर प्रानी।
रास सुविलास रामसेवक करत आस
भक्ति वैराग्य लहि होय नर ज्ञानी॥३८०॥

रागिनी रामकली

कहि जात न रास बिलास मोहि
जहँ ज्ञान भक्ति रस बहुधासी।
ज्ञानहीन मतिमंद द्वद्व रत
विषय भोग कलिमल भासी॥टेक॥
ब्रह्म अखिल अनवद्य निरंजन भाव गम्य अज अविनासी।
निर्गुण रहित निकारपूर्ण जग एक अनेक कला भासी॥
सोइ अज अगुण सगुण तन धरि वर क्रीडत बोलि दास दासी।
भक्ति नात अधिकार करत जग त्रिभुवनपति सब उर बासी॥

असुरन बधि भुवि भार हारि प्रभु गोपिनगन कर सुखरासी।
जत गोपी तत रूप धारि हरि क्रीडत अंग अंग अरुभासी ॥
कर गहि मध्य गोपिन निरतत अति गावत राग रागिनि आसी।
मुरली बजाइ चढाइ काँध निज बार बार हरि पुलकासी ॥
सविलास हुलास कहत हरि रहत न कोइ जन उर प्यासी।
सुनत लहत सुख रामसेवक उर कहि न सकत अज महिमा सी॥३८१॥

कहि जात न रास उदार हरि
जोइ कहत सुनत भव भ्रम हारी।
गावत राग रागिनि हिलि मिलि
अय मास षष्ट निसि निस्तारी॥टेक॥

राग षट्र बुध श्रुति बरनत बर बसत सप्तम भारी।
अठठ पुत्र सकल रागन कहँ पच पच बर सब कहँ नारी ॥
अठठ पुत्र सकल पुत्रन कहँ नारि अपार सुतन सारी।
दासी दास सखी अगिनित तेहि बृद्धि परिवार की अधिकारी॥
राग रागिनि परिवार सहित हरि गावत दास दासिनी बारी।
ज्ञात न ताल विधान नाद स्वर नाचत गोपिन कर धारी ॥
तुमुल नाद त्रयलोक शोक हर निरखत सुर नर मुनि भारी।
निज निज रुचि धुनि पान करत सुचि ज्ञान भक्ति रस रंग ढारी॥
रास विलास हुलास करत व्रज कृष्ण सकल कलिमल जारी।
अमित पतित पावन कलि करु हरि रामसेवक की आग्र पारी॥३८२॥

दोहा

कृष्ण चरित शत उदधि सह रास विलास उदार।
कहत सुनत नर नारि कोइ वेगि होय भव पार ॥१॥
सेस महेस दिनेस विधि आगम निगम पुरान।
बुध जन सारद सकल करि पार न लहु करि गान ॥२॥

नेति नेति कहि गान करु लहु सुख मुख नहिं थाह ।
रामसेवक किमि रास कहु बुधि लघु जस अवगाह ॥३॥

राग श्री

गोपीगन करु भाग्य बड़ाई ।
घर पुर सब पुलकाई ॥टेक॥
गोवर्द्धन नग पर जब धरु हरि कहु बुध बेद भलाई ।
गिरधारी तब नाम पुकारत तिहुँ पुर लोग लोगाई ॥
पूर्ब जन्म कृत कर्म नाम एह गावत कवि समुनाई ।
त्रिभुवनपति भयलोक उदर तब धन परबत रहु छाई ॥
नदीय नार सब उदधि जीव गन अणु सम उदर समाई ।
सकल भार मम उर पर लेइ रहु सोवत कछु न जनाई ॥
पुष्प सरिस तब तन मोहि लागत प्रतिदिन धरु हरखाई ।
हरिधर कोइ नहिं नाम कहत मम का कहु निज प्रभुताई ॥
गोवर्द्धन धर नाम अचल तब एह जस पुन्य सहाई ।
गोपीगन अस रामसेवक कहु गहि उर हरि सुख पाई ॥१८३॥

गोपीगन भाग्य सवारी ।
करु गान सेस श्रुति चारी ॥टेक॥
रात्रि दिवस हरि पद चिंतन करु मन बच क्रम, त्रिय भारी ।
सुत, बित पति तजि धाम स्याम तन जीवत सयन निहारी ॥
सयन करत निसि याद लाय हरि, कर गहि परसि दुलारी ।
दिवस बदन हरि रूप बिलोकत पल छिन नाम पुकारी ॥
रास बिलास कीन्ह हँसि गल चढ़ि नाचत हरि कर धारी ।
गावत संग संग ताल बजावत मथि मथि बाँह पसारी ॥
अस सुख विधि नहिं कोइ सुर लहु जस लहु व्रज भुवि, नारी ।
रास कारि पुनि दीन्ह त्रिविध सुख ज्ञान भक्ति रस गारी ॥

पुनि भुवि ब्रज हरि केलि करत बहु रुज हरि ग्वल गन भारी।
देव सकल अस रामसेवक कहि चाहत सरन मुरारी ॥३८४॥

रागिनी सोरठी तस्य दास्या किंकरी गति कजरी

हरि बेनियाँ डोलावैं राधा खेलैं कजरी।
इत उत चाल भुवि चलु गजरी ॥टेक॥
कर सन कर गहि भुवि झुकि झुकि चलु
भूपन बसन अग अग सज री।
गोपीगन सग वृन्द पुष्प माल निरदुद
कृष्ण तन श्याम राधा शुद्द मज री॥
चिटुकी बजाइ गाइ भुवि इत उत धाइ
कृष्ण पिछे पिछे चलु ब्रज मग री।
मुरली बजाइ गोपीगन सग हरि गाइ
राधा सिर हाथ फेरु सन डगरी॥
नृत्त गान करि करि कर कर धरि धरि
हिलि मिलि प्रेम रस सन झगरी।
मुख सन मुख चूमि गल सन गल घुमि
अग अग परसि फिरत नगरी॥
करि करि रस केलि मग रोकि करु खेलि
मुकुट धरत सिर छन पगरी।
भाग्य गोपीगन रामसेवक को हरि धन
राधा सम प्रिय नहिं कोइ जग री ॥३८५॥
राधा खेलत गोपिनि मिलि ढुनुमुनियाँ।
चिटुकी बजाइ सिर भुवि निहुराइ
चलु फिरि फिरि नाचु सन देखु दुनियाँ ॥टेक॥

चक्र इव घुमि घुमि कर सिर ढुमि ढुमि
चटपट हाथ करु धुनि धुनियाँ।
इत उत फिरि फिर झटपट किरि किरि
कजरी की राग गाइ गाइ क्रुनुकुनियाँ॥
मुरली बजाइ गाइ कृष्ण चलु सग धाइ
बहुरि बजाइ पीछे पीछे टुनुटुनियाँ।
हास बुनिलास करु गोपीगन कर धरु
बजत करताल पुनि रुनुझुनियाँ॥
सारगी बजाइ ललचाइ त्रिय पलटाइ
बहुरि मृदग ढोल घुनुघुनियाँ।
बाजत मुरचग चंग गोपीगन हरि सग
खजरी सुझाल ताल बाजु पुनुपुनियाँ॥
धरि धरि निज कान निहुरि करत गान
झुमि झुमि कर खबजत चुनुचुनियाँ।
कजरी की राग रामसेवक सुकृत जाग
हरि को बिलास गोपीगन गुनुगुनियाँ॥२८६॥
तोहि कवनि जतन सों रिझावौं रे हरी।
कबहीं न जस देव गावों रे सरी॥टेक॥
दान नहिं ज्ञान भक्ति नहिं कोइ पुन्य शक्ति
जोग नहिं यज्ञ व्रत तप न चरी॥
पूजा नहिं देवी देवा नहिं द्विज सत सेवा
धर्म गति हीन तीर्थ एको न करी।
दाया गति हीन मति पाप करु अति
सत गुरु वाक्य वर उर न धरी॥
नहीं सतसग करु हरि जस सुनि धरु
अति सतगुरु वाक्य वर उर न धरी।

नहीं सतसग करु हरि जस सुनि धरु
राति नहिं दिन पल एकउ घरी ॥
फजरी की राग गाइ कृष्ण रूप ललचाइ
नद सुत वेगि उर लावों झगरी ।
कृष्ण जस गान करि श्याम रूप उर धरि
प्रेम मन थीर करि पावों पगरी ॥
गोपीगन पाइ हरि उर मो वसाउ धरि
नृत्ते गान सग सग करु डगरी ।
गोपी गन नेम रामसेवक ललित प्रेम
कृष्ण राधा केलि नद जू की नगरी ॥३८७॥
केलि करु राधा कृष्ण नद जु की नगरी ।
गोपीगन सग राधा गुन अगरी ॥टेक॥
नद ग्राम वरिसाना हरि रूप पहिचाना
फजरी की रीति प्रीति करि झगरी ।
मृत्तिका लगाइ धाइ सुख उपजाइ गाइ
अग अग डारु दधि मथि दगरी ॥
हरदी फुलेल घृत दधि मेलि कर घृत
छिरकत अग वहि चलु मगरी ।
वधि कर कचि थरि रग बहु सरि करि
केलि करु हरि मिलि नारि गुन सगरी ॥
बाजुवद हरि दीन्ह मुरली मुकुट लीन्ह
राधा चूडामणि देइ लीन्ह पगरी ।
भूषन वसन देइ हरि कर सब लेइ
नारी सन नर रूप धरि धगरी ॥
राधा कृष्ण बीच नाहीं केलि करु ब्रज माहीं
भाव गृह ग्राम बन एक डगरी ।

नृत्त गान करि रामसेवक को सुख भरि
पोप तोप करु हरि सब जगरी ॥३८८॥

राग टोडो

करत विहार वृंदावन सुख सारि के।
ब्रज अनवद्य वर तन वर धारि के ॥टेक॥
बाल केलि यहु कीन्ह दासन को सुख दीन्ह
भुवि भार हरु सुर मुनि भय टारि के।
कंस दूत मजबूत केलि करि मारु भूत
ब्रज जन पालु गिर नरम परवारि के॥
राधा संग करु रीति सकल भुवन जीति
रास सुविलास आपु हारु सुख कारि के।
हरि कहँ जीतु नारि प्रबल अनल कारि
काँध चढि जल पिउ वदन निहारि के॥
स्ववश सो करि हरि गृह राखु कर धरि
नाच सुनचावत उठाइ बैठारि के।
सेज पर्यँढाइ देत बहुरि उठाइ लेत
सुख गिरा कर मेलि बोलत दुलारि के॥
राधा रानी गुरुज्ञानी हरि प्रीति जग जानी
संग संग नृत्त गान करत विचारि के।
त्रिभुवन नाथ जोइ राधा हाथ धरु सोइ
प्रेम रस भाव दाव पीउ सुख गारि के॥
राधा सो निवाह करि रीति गंधर्व वरि
विधि आदि सुर प्रीति कर थिर थारि के।
राधा रानी महारानी देव मुनि कहु ज्ञानी
सरन सकल रामसेवक मुरारि के ॥३८९॥

हरि हरु भार भुवि वृंदावन आय के।
ब्रह्म अखिलेश नर तन प्रगटाय के ॥टेक॥

राम रंग करि करि सुख रस भरि भरि
अमृत मधुर गान जनन पियाय के।
गोपी गन उर लाइ सुख वर उपजाइ
रीति परतीति प्रेम अधिक बढाय के॥
नेम छेम पुर करि सुजस सुकृत भरि
रूप रंग अनूप ब्रजजन दरसाय के।
नंद नंदरानी ज्ञानी हरि तप फल दानी
पुत्र कहवाइ लौकि बेद ठहराय के॥
नंदसुत नाम गूढ लोक वेद परु रूढ
राधा को रमन चहुँ जुग बहु गाय के।
गोकुल विहार वृंदावन को चरित सार
थापि जग पाप हर उर पुलकाय के॥
ब्रजनाथ जगनाथ गोपीनाथ गोपी साथ
नाम एह रूढ हरि जुग जुग छाय के।
बसुदेव देवकी की सुधि करु सेवकी की
कुबुजा प्रधान हित कंस बध लाय के॥
नारद को, हरि मन जानत जगत जन
बुद्धि अस करु कंस ढिग कहु जाय के।
लेइ आवो कृष्ण राम गवर सरूप श्याम
हरि रामसेवक को उर मो छपाय के॥३९०॥

राग केदारा

नारद चलेउ हरि रुचि पाय।
हरि सुजस उरसि बसाय ॥टेक॥

कृष्ण कर ब्रज चरित गावत वीणा मधुर बजाय।
कस दिग गयो कस हरखित नारद पद सिर नाय॥
पूजि पकरि विनय बहु विधि आसन पर बैठाय।
प्रश्न करु निज भाग्य कहि बहु नारद कहु हरखाय॥
कृष्ण अरु बलदेव रिपु तव करत देव सहाय।
मारु भट परचारि तव बहु बीर बर दोउ भाय॥
काल तव वसुदेवसुत ओह वधहि फुर तोहि धाय।
बोलि निज गृह मारु दोउ कहँ कटक जाइ मेटाय॥
नारद हरि रुचि सत्य कहु भुव कस रिपु पतिआय।
नारद चलु पुनि रामसेवक कृष्ण दिग पुलकाय॥३९१॥
नारद आउ वीना धारि।
कहत चरित मुरारि॥टेक॥
कृष्ण रूप विलोकि श्यामल कीन्ह विनय दुलारि।
कस बध हित मनुज तन धरु सुनहु कहव पुकारि॥
शख चूड बध करहु अबहिं केशी बधहु प्रचारि।
कस बध परसो करो हरि केस धारि पछारि॥
भावी जस हरि सकल कहि मुनि विनय पुनि अनुसारि।
गवत करु विधि भवन नारद देव मुनि भय टारि॥
शख चूड बध तुरित करु हरि केशी बर रिपु मारि।
नारद वचन ओनाय चितवत पालु ब्रज नर नारि॥
देवकी वसुदेव की सुधि करत भुवि रुज हारि।
कस बध सुरत रामसेवक लहि त्रयपुर झारि॥३९२॥

राग घनाश्री

हरि रुचि नारद मुनि गाई।
सुनि कस सत्य ठहराई॥टेक॥

सभा कराइ सुनाइ वचन मुनि मंच बिविधि रचवाई।
कुवलया हस्ती हस्तिप जुत बिनिधि सिखाइ लड़ाई॥
धनुष प्रबल रखा हित चहुँ दिसि बीर अमित बैठाई।
मल्ल जुधि हित बीर प्रबल अति मुष्टिकादि दुखदाई॥
कृष्ण राम बध हेतु जतन करि लीन्ह अक्रूर बोलाई।
तोहि सम नहिं कोइ हित मम एकहि पुर कर अब बेगि सहाई॥
गोकुल जाइ नंद जुत गोपन सहित कृष्ण दोउ भाई।
लेइ आवहु रंग भूम्य देखन हित तब रिपु सोच मेटाई॥
राम कृष्ण बर रिपु बरनन करु नारद कहनी सुनाई।
मूक भयो सुनि रामसेवक ध्रुव कृष्ण सरन सुख पाई॥२९३॥
सुनि कंस वचन दुख भारी।
नहिं रिपु उत्तर अनुसारी॥टेक॥
अक्रूर पछताइ आइ गृह रयन गो सयन निचारी।
नंद भवन नहिं जाउ मारु खल कंस अधम अपकारी॥
होत प्रात रथ चढ़ि चलु गोकुल सरन पुकारि मुरारी।
प्रेमाकुल रथ पर अति राजित जनु तन तेज तमारी॥
अति बिह्वल होइ जात चलत रथ कंस दूत सुधि धारी।
तन मलीन होइ जात सोइ छन जिमि मारे महतारी॥
तन समुझत ध्रुव जात गोकुल हम देखब पद बनवारी।
तब रथ चलत धाइ हरि सन्मुख जनु मिलु कुंज निहारी॥
बिकल अधिक रथ पथ नहिं डोलत झरत नयन सधि धारी।
प्रेम भक्ति किमि रामसेवक कहु हरि जन करत सुखारी॥२९४॥

राग बिहाग

चलत पथ अक्रूर पछताई।
शोक हृदय अधिकाई॥टेक॥

धनिक बनिक धन वृद्धि हेतु धन लेइ चलु जिमि हरखाई ।
क्रय विक्रय करि होत हीन धन गृह चलु मूल गवाई ॥
तिमि अक्रूर निकल होय डोलत हर्ष शोक मन लाई ।
हरि गुन समुझि चलत रथ धावत हर्ष न हृदय समाई ॥
कंस दूत मन गुनत निकल अति रथ पीछें चलु धाई ।
जिमि मतवार विकल होय घूमत तिमि गृह तन निसराई ॥
जिमि जल भ्रमर फिरत इत उत बहु भ्रम पीछे चलि आई ।
तिमि अक्रूर चलत हरि सन्मुख दूत बनत फिरि जाई ॥
हरि की भक्ति सुरति करि चलु बहु बनत दूत सकुचाई ।
अक्रूर सुख रामसेवक लहु कृष्ण चरन सिर नाई ॥३९५॥

कहत चलु कृष्ण कृष्ण बनवारी ।
अक्रूर निह्वल होय बोलत त्राहि त्राहि धुनि धारी ॥टेक॥
कंस दूत होइ चलत दरस हित मोहि जनि नाथ निसारी ।
मन बच क्रम तव पद रति चाहत दीजै सरन मुरारी ॥
त्रिभुवन पति त्रय काल एक गति सब उर पुर थिर थारी ।
साखि सफल घट घट की जानत मम रुचि हृदयें बिचारी ॥
कंस दूत मजबूत की तब हरि दास चरन रुचि भारी ।
मम अपराध बिसारि दूत गति दरस देइ भय हारी ॥
जौं फिरि जाव अबहि मथुरा गृह कंस अधम मोहिं मारी ।
रथ पीछे छन चलत भ्रम बहु फिरत भँवर जिमि वारी ॥
सरन पाल जब लखत कृष्ण ध्रुव तब चलु रथ हहकारी ।
कृष्ण सरन सुख रामसेवक लहु अघ कृत नर बहु नारी ॥३९६॥

राग टोडी

हरि चरित कहु पुनि पुनि गाय के ।
रथ चढि चलु अक्रूर जन धाय के ॥टेक॥

श्यामल मुरति आजु दरस परस साजु
पुन्य कोइ काल की उन्य भइ आय के।
यहु काल दुख दीन्ह कस सुख हरि लीन्ह
ताप नास होइ मुख नयन जुड़ाय के॥
भूषन बसन जुत देखि पाप होइ धुत
अमृत सरूप हरि पीअब अघाय के।
मोहिं पितृ भ्रातृ जानी आदर करहि मानी
देखि हरखाइ धाइ मिलु अंक लाय के॥
भोजन सुभग यास देहिं मोहि लखि दास
पितृ भाय मानी पद मर्दु हरखाय के।
अस अह्लाद करु हरि रूप उर धरु
रथ अति चलु बेगि पवन छपाय के॥
जब होस कस आइ दूत निज मुख गाइ
रथ पीछे चलु मन रहु सकुचाय के।
कस दूत जानु जब कृष्ण दूरि जाहिं तब
दरसन होय मोहिं किमि करु जाय के॥
तरक अमित करि हरि रूप उर धरि
भक्ति बल बर धोरि चलु पुलकाय के।
कृष्ण राम पाइ रामसेवक सुखद छाइ
दुख निसराइ हरि पद सिर नाय के॥१९७॥

चलु अक्रूर रथ चढ़ि सुख वारि के।
तरक अमित करि भक्ति रस गारि के॥टेक॥
कस दूत गुनि गुनि कर सिर धुनि धुनि
उर पछतात मुख कृष्ण को पुकारि के।
मुरली बजाइ माइ सहित चराइ गाइ
मिलु मोहिं स भ काल भय रुज टारि के॥

धुसरी सुधूरि अंग गोपग्वाल बहु संग
रूप को निधान कर लकुट सुधारि के।
किधौं कंस दूत मानि भागि जाहिं रिपु जानि
किधौं पितृ भाइ मानि राखहि दुलारि के॥
पथ पद्मतात जाइ गोकुल निकट आइ
कृष्ण उर जामी स्वामी लखु सुरन सारि के।
त्याग रथ करि धाइ कृष्ण लखि उर लाइ
भाग्य निज गाइ हरि भव भय हारि के॥
हिलि मिलि गृह आइ रूप बर दरसाइ
नृप्त अक्रूर करु प्रेमजल ढारि के।
पथ को विचार सार हरि करु भुव पार
पितृ भ्रातृ बोलि पूँछु कुशल महँतारि के॥
नंद ढिग जाइ धाइ रंग भुवि हाल गाइ
हिलि मिलि बैठि कहु कुशल विचारि के।
गोपगन गोपनारि अवलोक जन भारि
चाहत सरन रामसेवक मुरारि के॥३९८॥

राग सोरठ

हरि को बास गोकुल चहत।
कहत कवि सुख लहत॥टेक॥
गोपीगन संग केलि करु हरि गोपी सब उर गहत।
चरित कहत उदार लहु सुख भाग्य बहु नहि नहत॥
त्याग गोकुल गवन मथुरा गोपीगन किमि सहत।
रात्रि दिन नहि तजत हरि छन सुजस कहु दधिमहत॥
प्राण धन जीवन सु गोपी निरखि हरि रुज दहत।
समुझि कवि मन सकुच पावत निठुर उरजोइ कहत॥

चहत मथुरा गवन हरि कोक विन चछु जल बहत।
त्याग सग मह नहिं न कोइ हरि सुलच्छण जहत॥
पूर्ण त्रयपुर प्राम घट सव जल सुथल हरि अहत।
त्याग किमि सहु रामसेवक सग जोइ हरि रहत॥३९९॥
कोइ कहँ रुचत नहिं हरि गवन।
छोडि गोकुल जात मथुरा त्यागि राधा भवन॥टेक॥
कहत जोइ उर वान लागत सुनत मन दुख तवन।
कहत किमि सहि जात उर पुर निठुर अस कवि कवन॥
रासि हास विलास सुनि जन हँसत लहु मुनि जवन।
गोपीगन रुचि प्रीति कहि सुनि होत अघ सव दवन॥
नंद यशुमति प्रीति पावन स्वाद जीवन लवन।
गोपीगन सुनि गवन पर पुर होत तन विनु पवन॥
कहै कवि किमि गवन हरि अस ज्ञान वर सकुचवन।
कृष्ण रुचि सुनि गवन कहु कवि वहुरि नहिं भुवि श्रवन॥
नद गृह अक्रूर राजित सकल पुर दुख सवन।
चाहु सुख उर रामसेवक सरन राधारमन॥४००॥

राग केदारा

हरि व्रज जस अनुपम छाय।
अक्रूर आवन सोहाय॥टेक॥
प्रथम मिलु वलदेव हरि तेहि दीन्ह भरम छुडाय।
रग भुवि करि हाल कहु सव कस बचन छिपाय॥
गोपन जुत सुत लेइ चलु अब तोहि नृपति वोलाय।
नद प्रमुदित वोलि गोपन कहेउ सव हरखाय॥
मकट साजहु रचित वाहन भेट अमित धराय।
चलहिं बालक सकल हरि जुत देखन कहँ समुदाय॥

प्रात होत चलु उदय रबि लखि शीघ्र साजहु जाय ।
नद करि बर बचन सुनि मन गोप गृह गृह आय ॥
साजु रथ मद रामसेवक कृष्ण पद सिर नाय ॥४०१॥
हरि दिग चलेउ पुनि हरखाय ।
प्रेम नेह एकान्त लहि हरि कहब रात्रि अघाय ॥टेक॥
नद सन आनद कहि सब कुशल कस सुनाय ।
आवत लखि अक्रूर कह हरि मिलेउ उठि पथ धाय ॥
धोइ पद बैठाइ आसन पूजि भोजन कराय ।
सेज बर बिछाइ निज कर दीन्ह ताहि सोआय ॥
मर्दन कर पद कृष्ण पितु कहि प्रेम नेह बढाय ॥
कुशल कहु मम मातु पितु कर हेतु मम दुख पाय ।
चलव तव सग कस मारव पालव तोहि समुदाय ॥
अक्रूर सुनि हरि बचन ध्रुव बर उरसि बहु पुलकाय ।
कस करिसब हाल बिधिवत कहेउ हरि मन गाय ॥
भाव उर पथ रामसेवक पाइ सुख रहु छाय ॥४०२॥

राग बिहाग

चलत रथ निरखत सब ब्रज नारी ।
पलक निवारि चहूँ निमि चितवत एक टक नयन उघारी ॥टेक॥
चकृत होइ रथ अमित बिलोकत निरखत रथ बनवारी ।
बाल बृद्ध रथ चढि चलु प्रमुदित नन्द गोपिन भारी ।
श्यामकृष्ण अक्रूर एक रथ जनु घन इदु तमारी ॥
प्रश्न करत कह जात सकल मिलि हरखित सब रथ चारी ।
सकल हाल अक्रूर मुखहिं सुनि हाय हाय धुनि धारी ॥
होइ बिकल अक्रूर को सब त्रिय देत बिबिध बिधि गारी ।
पद अति अक्रूर को नाम कहत किमि अक्रूर सुखारी ॥

कपटी कुटिल अक्र एह ठग वरगेन्ह गोपिन दुखभारी।
गोपिन कर धन प्राण जीवन हरि हरि लेइ जात मुरारी।
कृष्ण कृष्ण कहि रामसेवक वहु गोपी सरन पुकारी ॥४०३॥

विकल अति ठाढि गोपी पछताती।
हाइ हाइ कहि कृष्ण पुकारत सिर पीटत कर छाती ॥टेक॥
एह अक्रूर कीन्ह छल वहु विधि बसि गोकुल एक राती।
धन मन प्राण जीवन मम सरबस किमि हरु ठग पर थाती॥
नद भवन रहु मम अचित मन किमि लेइ जात बिनु पाती।
नद नात नहिं नात मोर कछु न जानो कवन जाती॥
हरि बिनु काम कोटि छबि देखत नेक न उर ललचाती।
हरि अरपन बिनु जल नहिं पीवत अन्न न कोइ रुचि खाती॥
अति विह्वल नहिं ज्ञान कोइ तन कुररी इव बिललाती॥
हरि बिन काम धेनु चिंतामणि सुर तरु लहि न अघाती।
जिमि चात्रीक घन नीर निदरु सब तृप होत जल स्वाती॥
तिमि हरि लहि सुख रामसेवक उर गोपीगन पुलकाती ॥४०४॥

गोपीगन निरखत रथ बनवारी।
श्याम मूरति शुचि चरन त्रिलोकत विह्वल अति दुख भारी ॥टेक॥
रोदत बन्त हरि सन गोपीगन सुदर बदन निहारी।
पुनि न गवन गोकुल तब हरि सुनु जानत त्रिय गन झारी॥
सग लेइ चलु जाउ जहाँ हरि, दोष होइ तजि नारी।
रात्रि दिवस सुख समुझि शोक उर किमि सोइ नाथ बिसारी॥
बोलनि मिलनि हँसनि तव चितवनि सहि न सकब जनि मारी।
हाइ हाइ कहि सिर उर ताडत मगन मरन सु पुकारी॥
कृष्ण पत्त मह कहु हम आइब गोपिन बचन दुलारी।
रथ चढि चलु निज निज उर गोपी हरि वर बचन बिचारी॥

हरि नहि आवहिं वचन न कहु पुर चितवत नयन उघारी।
कृष्ण कृष्ण धुनि रामसेवक करि चाहत सरन मुरारी॥
निरखु रथ गोकुल ते गइ दूरी।
एक टक नयन उघारि विलोकत लहु गोपी दुख भूरी॥टेक॥
रथ अगिनित पथ चलत पवन गति धूरी ही नभ पूरी।
घन मम रव रथ करत मधुर स्वर दृष्टि श्याम नभ धूरी॥
लालच करु गोपीगन प्रमुदित इत आवत रथ मूरी।
चितवत रथ नहिं आवत देखत धूरि पूरि नभ रूरी॥
सफलक सुत रथ लेइ जात हरि हम सब कहँ करि कूरी।
हम सब कहँ लखि हरि हर शठ अक्रूर नहि फूरी॥
हरि तजि दीन्ह नहिं दोस लेश कोइ सुख लहु मथुरा मथूरी।
निरखत रथ नहिं लखि परत लखि मग बुधि सन त्रियधूरी॥
एक टक चितवत नहिं सूझत पथ मनहु भइ सब सूरी।
कृष्ण कृष्ण मुख रामसेवक कहु ग्राम निकट सब जूरी॥४०६॥

श्री राग

सकल त्रिय मन बुद्धि चित सकुचाई।
अहंकार नहि तजत कृष्ण पद वार बार जस गाई॥टेक॥
ग्राम निकट गोपीगन हिलि मिलि निरखत रथ टक लाई।
अक्रूरहि कहि क्रूर अधम खल जो हरि हरि लेइ जाई॥
गोपीगन हित चरित अमित वर रूप अनूप देखाई।
रक्षा हित नग पर गिरवर धर प्रभुता प्रभु दरसाई॥
असुर अमित वधि निर्भय करु ब्रज गोपिन सुख प्रगटाई।
दावानल करि पान सरित जल निर्मल करु सुखदाई॥
रास बिलास कराइ परम सुख अधरामृत रस पियाई।
अस सुख देइ किमि जात अपर पुर अबला हरि बिसराई॥

तुम बिनु नाथ जीवन किमि गोपी कहि मिर धुनि पछताई।
कृष्ण विरह बम सोच करत उर रामसेवक सुख पाई ॥४०७॥
रटत नारि कृष्ण विरह दुख भारी।
ग्राम निकट एक टक चितवत रथ देइ अक्रूरहिं गारी ॥टेक॥
सकल गोप हरि सग मुदित चलु रथ चढि शिशु पुर भारी।
किमि विरचि जग नारि प्रगट करु पर पुर नहिं अधिकारी॥
पर पुर जात लाज उर लागत सग न लीन्ह मुरारी।
लाज भई मम रिपु सजनी अति दोस न कोइ नर नारी॥
लाज गवाइ येंचि हरि सग चलु सुख नहिं लहु बनवारी।
सन्मुख हरि नहिं लाज कहत बुध नहिं पुरान श्रुति चारी॥
पर पुर की बहु लाज होत उर निज अघ केहि मिर डारी।
भोग करब हरि नाम तजब नहिं निज उर कृष्ण निहारी॥
शाति भई गोपी निज बुझि उर कृष्ण भक्ति अनुसारी।
गोपीगन लहु रामसेवक सुख कृष्ण रूप उर धारी ॥४०८॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित रथ कृष्ण राम शोभित शत कोटि काम
छवि ममूह तडित मेघ इदु जनु तमारी।
भूपन वर वसन भ्राज श्यामल तन गवर राज
निरखत जन पथिक सकल मोहत नर नारी ॥टेक॥
देखत अक्रूर रूप श्याम गवर वर अनूप
शोभा शत कोटि काम छवि ममूह टारी।
अति विनीत बोलत बात मधुर मृदुल शुभग गात
अरुन चरन कमल अमल ध्वज कुलिशधारी॥
गुल्फ जानु कटि अमोल कुँडल श्रुति झलक लोल
नाभी गलमाल हार देखि बहु सुखारी।

पदज करज नखकी जोति मानहु रवि झलक मोति
निरखत शिर मुकुट केश देह सुधि बिसारि॥
चिबुक अधर दंत लाल नासिका शुभ तिलक भाल
कल कपोल नयन आस्य भुजा वर निहारी।
सकुचत अक्रूर भूरि भागि जात मन स्व दूरि
कृष्ण रूप अति अनूप सुर मुनि हित कारी॥
दूत होइ लेइ जात करहि कंस तुरित घात
मोहि समान पातकी दनुज मनुज धारी।
मुष्टिक चाडूर बीर तोशलादि रणिप धीर
हलधर मृदुगात शुभ्र कोमल बनवारी॥
करत उरमि बहु गलानि हलधर हरि बाल मानि
त्रिभुवनपति काल ब्याल नेक न निचारी।
जानत अक्रूर भाव रामसेवक पाइ दाव
शोक मोह लोक भर्म सकल हरु मुरारी॥४०९॥

आत्म धर सरूप कृष्ण सरित जल देखाई।
दाम त्रास शोक मोह भरम सब गवाई॥टेक॥
मज्जन सरि करत लाग हर्षित जनु पर्व जोग
दान विप्र मान करत करत सरि बडाई।
मज्जत अक्रूर जबहिं कृष्ण रूप देखु तबहिं
अद्भुत अपार सकल भुवन उर समाई॥
नदी नार बन पहार त्रिभुवन जत जीव सार
देव पितर दनुज मनुज अगिनित समुन्दाई।
अमित रवि शशि सरूप अग्नि पवन बहु अनूप
इन्द्र वरुण यमकुबेर अगिनित दरसाई॥
अज महेश वेद सेस शास्त्र बहु पुरान बेस
अस्तुति मुनि करत भूरि चरन शीश नाई।

पार्षद वर अष्ट सग भूपन बर वसन अग
कृष्ण रूप अति अनूप शोभा छवि छाई ॥
चकित अक्रूर देखि कृष्ण रूप तटहिं पेखि
मानि को अनत जाम भर्म उर मेटाई।
अस्तुति अक्रूर कीन्ह कृष्ण प्रश्न उतर दीन्ह
जानि को अनन कृष्ण चरन प्रेम लाई ॥
करि करि अस्नान ध्यान चलेउ सकल देइ दान
मथुरा वर पुरी नग्र फटक नियराई।
दरसि कृष्ण चलत सग रामसेवक परसि अग
अचल ज्ञान भक्ति सरन अक्रूर सुखद पाई ॥४१०॥

राग टोडी

चरित करत हरि सुख दरसाय के।
लखत न कोइ जन रुचि उपजाय के ॥टेक॥
सरि अस्नान करि ग्राम को निकट हरि
आइ नद डेरा लीन्ह रयन गवाय के।
बिदा अक्रूर कीन्ह ज्ञान भक्ति बर दीन्ह
पग सब करि सुख देख गृह आय के ॥
हरि अज्ञा बर पाइ चलु पथ बिलखाइ
तजत न धनु हरि आन सकुचाय के।
नद आदि चलु पूरी मथुरा नगर रूरी
जात धौतकार कस—हित हरखाय के ॥
इच्छा बलदेव कीन्ह रजकन वस्त्र दीन्ह
गाली दीन्ह हरि सुनि मारु तेहि धाय के।
पट सब कोउ लीन्ह हरि रुचि लखि दीन्ह
कचुकादि वस्त्र सब धारु पुलकाय के ॥

सुचीकार गृह जाइ वस्त्र को शृंगार पाइ,
ज्ञान भक्ति दीन्ह ताहि निज ठहराय के।
कसहित माला जोइ माला करि दीन्ह सोइ
गल पहिराउ गृह पाइ दोउ भाय के।
ताहि वरदान देइ बलदेव संग लेइ
कुबरी भवन वर वदन लगाय के।
गुल्फ निज पद धरी कुबर सो सोफ करी
भक्ति रामसेवक सु लहु सुख पाय के ॥४११॥
चलु रंग भुवि हरि कुबरी सुधारी के।
कुबर सो सोफ करि बर नारी कारी के ॥टेक॥
नगर देखत हरी शिशु संग बहु करी नंद
गोप लेइ मंच बैठु सुख सारी के।
नंद कंस भेंट देइ गोपगन संग लेइ
माल युद्धि देखु वीर लहु ददकारी के ॥
धनुष निकट आइ हरि देखि वीर धाइ
ललकारु वीर मानी बदन निहारी के।
तोरि धनु वर हरी खंड करि भुवि धरी
चलु रंग भुवि धनु पाल खल मारी के ॥
हस्तिप खलहाथी लेइ हरि पथ रोकि देइ
लड़ि के कुबल प्राते जाहु कर धारी के।
हरि शुंड गहि लीन्ह हस्तिप को मारी दीन्ह
इत उत जुद्धि करु हस्ती वर टारी के ॥
हस्ती दंत भुवि रोपि युद्धि करु कोपि कोपि
हरि युद्धि करु दंत भुवि सु उपारी के।
पोंछि धरि भरमाइ अवनी पटकि लाइ
पुनि उठि हस्ती लहु हरि परचारी के ॥

हस्तिप सीखाउ जोइ हस्ती लखु भाव सोइ
हस्तीप को मारु हस्ती दंत को उखारी के।
दंत कर लीन्ह रामसेवक को गति दीन्ह
हस्ती वध कीन्ह हरि अवनी पछारी के ॥४

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित तन गौर राम शोभित अति कृष्ण श्याम
कोटिन अनंग अंग छबि समूह डारी।
निर्भय चलु रंग अवनि चाल चलत गजकी ठवनि
दंत गजराज शुभ्र एकक कर धारी ॥१
शोभित गज शुभ्र भ्राज बुंद अंग अंग बिराज
मंचो परि बैठि रूप देखत जन भारी।
भूपन वर वसन अंग बालवृंद शुभ्र संग
तारागन मध्य मनहु इंदु घन तमारी॥
जाके उर भाव जोइ मूरति हरि देखु सोइ
काम कोटिशत अनूप रूप लखत नारी।
जोगिन उर तत्व भास ईष्ट सकल देखु दास
देखत जगमय विराट पंडित अधिकारी॥
देखत नर वर सरूप जुरे मंच साधु भूप
मल्लवीर परम लखत असुर काल भारी।
कंस काल मृत्यु लखत कंपित तन उरसि डरत
स्वजन वसुदेव गोत्र मानत सुख सारी॥
देवकी वसुदेव जानु आत्मज दोउ पुत्र मानु
प्रेम नेहनीर चलत देखु चछु उघारी।
गोकुल को चरित रास सुलत पुरजन विलास
कहत हरे असुर मारु नाम धर मुरारी॥

निज निज रूचि करत गान श्याम गवर धरत ध्यान,
सेस अरु महेश रूप बरनत बनवारी।
श्याम गवर अति अनूप निज निज रूचि देखु रूप
रामसेवक कृष्ण बदन सकल जन निहारी ॥४१३॥
राजित श्रीकृष्ण राम शोभा शत कोटि काम
गजको दत कर सुधारि रग अवनि आई।
मच रचित चहुँ विशाल बैठे विधिवत नृपाल
नारि नर समूह देखु रूप की लोनाई ॥टेक॥
मुष्टिक चाणडूर बीर तोशलादि रणिय धीर
माल युद्धि करत केल देखत समुगाई।
चटपट बहु बजत ताल गर्जत जनु मेघ काल
शोभा बहु बीर करत बिनिधि सो लड़ाई॥
कृष्ण देखि सकल डरित माल युद्धि करत चरित
उपाध्याय ठाढ जोड़ सकल को सिखाई।
इत उत बहु लडत धाय दाव पेच सकल गाय
गोप निसरत बताइ देत जोइ सब पढाई॥
चरित धीर सकल कीन्ह कृष्ण को देखाय दीन्ह
बोलेउ चाणडूर कृष्ण देखि मुसुकाई।
करहु माल जुद्धि आय हिलि मिलि बीरन सो धाय
चरित माल केलि बहुत नृपति को सोहाई॥
सुनत बीर धर प्रधान राजा निज निज स्व कान
देखन हित माल युद्धि कस तोहि बोलाई।
राजा प्रसन्न मोहि देहि निनिधि दान तोहि
करहिं जे अजाच ग्राम अभय करि बसाई॥
कृष्ण कहत चलत तोरि भाग्य परस खुलिय मोरि
कस सो दिवाइ, को, बसाइ देव माई।

पालकते माल लवत बीरन ते बीर भिड़त
अनुचित नहिं होत रामसेवक सुख छाई ॥४१४॥

राग टोडो

कृष्ण बलदेव रूप देखु हरखाय के।
चहुँ दिशि मच चढ़ी नर नरी आय के ॥टेक॥
मूष्टिक चाणूर बीर प्रबल प्रचंड धीर
हँसि हँसि कृष्ण राम सन कहु गाय के।
युद्धि करु मोहि सन मैं करु तोहि सन
नृप धन देइ तोहि बहु सुख पाय के ॥
अचल अडोल भाम सुख लहु बन धाम
हिलि मिलि जुद्धि करु नृप को रिझाय के।
बालन कीशोर कहु बचन सुमोरि गहु
बीर जस तब तिहुँ पुर रहु छाय के ॥
अघा बका आदि मारी गिरवर नख धारी
धनु भग करि बीर बधु गज धाय के।
हँसि हँसि अस कही झट हरि कर गही
बाहु जुद्धि कर बहु बिधि पुलकाय के ॥
शीर पर शीर करी कर सन कर धरी
इत उत फिरु पद पदन चलाय के।
मूष्टिक चाणूर बीर हलधर हरि धीर
गिरत न कोइ भुवि रहु सकुचाय के ॥
चाहुँ मिलि ताल मारी मेघ सम घोष कारी
उपाध्याय जुत रहु उरसि लजाय के।
कल छल बल रामसेवक अमित करी
मूष्टिक चाणूर रहु भुवि शिरनाय के ॥४१५॥

मूष्टिक चाणड्डर लहु बहु ललकारी के।
कृष्ण बलदेव काल सुरती बिसारी के ॥टेक॥
देखि देखि नर नारी खल कहँ देत गारी
बाल सन जुद्धि करु बहु परचारी के।
दुष्ट है अरिष्ट खल किमि करु अति बल
सुख नहिं लहु हरि बदन निहारी के॥
सभा बुद्धि हीन भई साधु की महत्तु गई
बरजत नहीं कोइ अनुचित टारी के।
जोरी सन जोरी बीर बालसन बाल बीर
सोहत लड़ाइ एह दुख नर नारी के॥
बचन सुनत नारी कृष्ण उर पुर धारी
युद्धि घन घोर करु गज दत धारी के।
मल्ल युद्धि कीन्ह घोर तीहूँ पुर भई सोर
तड़ तड़ ताल बाजु लड़त दुलारी के॥
हहकारी ललकारी अवनी पटकी डारी
सोहु अति रूप हरि मूष्टिक को मारी के।
चाणड्डर जो तोशलादी बलदेव लरि मादी
मारू सब बीर धरि धरणी पछारी के॥
जैति देव मुनि करी श्रुति भार हरू हरी
प्रमुदित सुर हरि शीर फुल डारी के।
पुर नर नारी रामसेवक हरख भारी
निर्भय रहु गहि सरन मुरारी के॥४१६॥

राग कल्यान गति चंचरीक।

राजित तन गौर श्याम दायक जन सकल काम
राम कृष्ण अज अनूप नर सरूप भारी।

मुष्टिक चाणूर मारि तोशलादि मल प्रचारि
शोभा शत कोटि अंग अंग परवारी ॥टेक॥
चहुँ दिसि घर मच राज सोभित अति घन समाज,
कृष्ण राम रूप देखि बृगसित ,नर नारी।
कंस भइ विगत श्वास कंपित उर अधिक त्रास
मुष्टिक चाणूर, मारु महबन मह भारी॥
देखत भुवि रंग भूरि भागि गयो धीर दूरि'
काल मृत्यु ध्रुव मोर बेगि- मोहिं मारी।
मारु मारु धरो,धरो रंग अवनी ,बाहर करो
यायु तन घटी ,कंस जलपत हहकारी॥
मचोपरि गजि गजि खङ्ग लेइ ,वर्जि तर्जि,
कृष्ण ओर कर उठाय काल न विचारी।
कूदि कृष्ण केश धारि खड्ग छोरि वदन मारि
खीचेहिं हरि लीन्ह प्राण अवनि गहि पछारी॥
ऊपर श्रीकृष्ण हंस नीचे खल ,दुष्ट कंस
मृत्यु वस जानि ,सकल देव मुनि सुखारी।
गयो सकल भुवि को भार लहेउ सर्व मुनि अचार
पुष्प वृष्टि कारि देव अस्तुति, अनुसारी॥
जयति जयति,जै मुरारि मुष्टिक चाणूर मारि
देवन सुख दीन्ह परम धरणि भार हारी।
कंस घात नाय कीन्ह अभय दान सुरन दीन्ह
रामसेवक सकल लोक सरन गहु मुरारी॥४१७॥
शोभित श्री कृष्ण राम धवल गवर घनसुश्याम
निरखत नर नारि करत रूप की बडाई।
गज को, दंत शुभ्र हाथ गोप बाल वृंद साथ
तारा गन मध्य जनु रवि शशि छवि छाई॥टेक॥

कल्प कल्प चरित भेद कहत सकल सत बेद
महिमा अपार पार सारद न पाई।
मुष्टिक चाणूर मारि तोशल शल उर विदारि
केशी बर धीर मारु मल्ल युद्धि लाई॥
कंस भ्रातृन देखि देखि निधन अवनि पेखिपेखि
कोप करि बोलाय लीन्ह फौद घेरु आई।
असुर युद्ध घोर कीन्ह कृष्ण गरुड टेरि लीन्ह
चक्र कर सुधारि गरुड ऊपर हरि धाई॥
काटत भुज मुड फोइ जानु गुल्फ नाक खोइ,
चक्र अति कराल धीर अवनि मो गिराई।
मुशल कर गहि प्रचारि अमित असुर राम मारि
राजित दोउ भाय वृष्ण सरिस खल ढहाई॥
तिष्ट तिष्ट कंस करत कृष्ण झटित केश धरत
अवनि मो भवाय बेगि प्राण शठ गवाई।
सप्तमी सित माघ मास कंस आदि दुष्ट नास
सूर्य्य उदय काल कल्प वेद भेद गाई॥
अस्तुति बहु सुरन कीन्ह अभय दान कृष्ण दीन्ह
पुष्प वृष्टि कारि देव मुदित भवन जाई।
करत कृष्ण चरन ध्यान देवे मुदित सुजस गान
रामसेवक सकल लोक कृष्ण छलो छाई॥४१८॥

राग टोडी

कृष्ण बलदेव राजी सुर रिपु मारी के।
त्रय पुर शोक हरु भुवि रज टारी के॥टेक॥
मूष्टिक चाणूर तारी तोशलहि शल मारी
कंस आदि अघकारी मारु भुवि डारी के।

दुष्टन को मुक्ति देइ भुवि भार हरि लेइ
रूप स्व देखाइ सुख दीन्ह नर नारी के ॥
गोकुल चरित करी मथुरा ,मो आइ हरी
रुचि गृह ग्राम त्रास पितु महँतारी के ।
वदी छोरि पितु मातु सरून स्व गोकुल पातु
निज अपराध कहु मातु पितु वारी के ॥
मम हेतु वदी लहु दुख बहु बिधि सहु
पुत्र जन्म सुख नहिं लहु दुख वारी के ।
षट सुत कस मारी मम हेतु दुख भारी
सहु मातु पितु तुम सुकृत विचारी के ॥
छमा शील छमा करो मातु पितु मोहिं भरो
सुनि मातु राखु गोद सुत को दुलारी के ।
वसुदेव सुत रीती करु हरि पद प्रीती
श्रवत नयन जल सुत ,धुचुकारी के ॥
अस्थन श्रवत चीर प्रेम नेह चक्षु नीर,
दपती हुलास सुत बदन निहारी के ।
कोइ भाव रीती रामसेवक करत प्रीती
मोच्छ लहु बर गहि सरन मुरारी के ॥४१९॥
हरि वदी छोरु पितु मातु ढिग जाय के ।
कस आदि दुष्ट सवारिष्ट को गँवाय के ॥टेक॥
कस त्रास अन्य ग्राम बसु जोइ तजि धाम
स्व बस बसाउ हरि सकल बोलाय के ।
कस वर राज जीती हरि राखु राज नीती
राज—हित उग्रसेन गृह पुनि आय के ॥
राज लेहु निज तात सुनि मम यर बात
निरभय पालु जन स्वबस बसाय के ।

हम न करब राज सकल सजव काज
सुरन असुर उर कछ हरसाय के ।।
कोप जो जजाती कीन्ह यदु कहँ शाप दीन्ह
राज हीन बसत बरहु कछु गाय के ।
पुर कहँ राज दीन्ह यदु कर हरि लीन्ह
पुरुष की शाप यदु वंस रही छाय के ।।
जन्म मम यदुवंस पूर यस जन्म कंस
तव राज छोरि शठ राज करु धाय के ।
राज तन देत सोइ कंस घात नाहिं गोइ
निज पाप नाश भयो मत्ता हरि भाय के ।।
सीर आज्ञा धरि कीन्ह उग्रसेन राज लीन्ह
हरि हाथ तिलक लहु अचल सुख पाय के ।
जयति चहुँ ओर रामसेवक त्रिलोक सोर
राज उग्रसेनि जीति कृष्ण ठहराय के ।।४२०।।

राग केदारा

हरि निज चरित तिहुँ पुर छाय के ।
नगर स्ववस बसाय ।।टेक।।
कंस आदि खल मारि तारेउ भार धरणि गँवाय ।
मातु पितु पद रूढ करि हरि बंदि दीन्ह छुड़ाय ।।
राज देइ उग्रसेन कहं निज नंद गोप बोलाय ।
जाहु तात निज भवन अब तुम लेइ सकल सहाय ।।
उनिन नहिं तोहि सन कबहिं हम पालु मोहिं दोउ भाय ।
मात्रि पितु समान पालेउ तात यशोमति माय ।।
भूषन बसन बिचित्र निज कर कृष्ण तेहि पहिराय ।
बिदा कीन्ह सब गोप शिशु जुत नन्द पद सिर नाय ।।

मूप होय लेइ कठ कचतु पुनि नद निज गृह आय।
प्रीति लहि। हरि रामसेवक नंद वर सुख पाय ॥४२१॥
कहु नर निरद नद मुरारि।
समुफि हरि गुन मिलनि बोलनि नयन जल बहु ढारि ॥टेक॥
श्याम रूप वर नयन शोभा वदन शुभ उर धारि।
सुमिरि किंचित हँसन रोवत कहत बहु चहु वारि॥
कहेउ मोहिं सन जाहु निज गृह सुनत पुरिजन भारि।
थाण सम महि वचन हरि आयो सुकृत सवारि॥
गर्गाचार्य की कहनि अब कहु सुनहु कहत पुकारि।
जन्म गृह वसुदेव गृह कुर पालु ब्रज नर नारि॥
पुन तव बहु नाम एन्हकर कहत बुध श्रुति चारि।
रामकृष्ण वर नाम कहि मुनि गयो बहुत दुलारि॥
रक्षा करु भुवि भार हरु सब असुर खलगन मारि।
धरनि धरि गहि रामसेवक कृष्ण रूप निहारि ॥४२२॥

राग टोडी

कृष्ण को सुभाव तिहुँ पुर रहु छाय के।
कोमल कठोर अति चित कहु गाय के ॥टेक॥
करु गोपीगन त्याग जहाँ अस केल राग
कुबुजा को नारी वर करु लपटाय के।
नद कहँ त्याग करी पद परी कर धरी
पिता सम कहि तेहि भवन पठाय के॥
सुनि अस त्याग सित कुलिस द्रवत चित
कवि किमि कहु उर रहु सकुचाय के।
नद कहँ विदा करी चित मो कठोर धरी
पितु मातु चेत कर चित मृदु लाय के॥

निज दोष कहि कहि पितु पद गहि गहि
कोमल वचन कहि बैठु ढिग जाय कै।
जन्म काल धेनु जोइ मन महँ दीन्ह गोइ
श्रयुत बोलाइ द्विज दान दीन्ह धाय कै॥
उत्सव करि करि सुख उर भरि भरि
दान बहु विधि देत उर पुलकाय कै।
बजत बधाइ गाइ नृत्त करु बहुताइ
कृष्ण बलदेव सुख चूमि हरखाय कै॥
धन गत धन पाइ प्राण गत तन आइ
तिमि वसुदेव सुख लहु सुत पाय कै॥
कृष्ण बलदेव रामसेवक करत सेव
वसुदेव देवकी सु सुत मो लोभाय,कै॥४२३॥
कृष्ण बलदेव रूप सकल निहारि कै।
करु नेवछावरि सु द्विजन पुकारी कै॥टेक॥
गर्गाचार्य बेद निधि करु सब कार्य सिद्धि
मेलि केतने नगल लहु सुख भारी कै।
दीन्ह सु गायत्री दान रामकृष्ण लगि कान
श्यामल गवर रूप देखु सुख सारी कै।
भूषन सकल अंग गल छिव हार रंग
शोभा लहु रामकृष्ण पित पट धारी कै॥
ब्रत बध कार्य करी द्विजन को हाथ धरी
वसुदेव देत दान सग लेइ नारी कै।
पुत्र जन्म सुख लहु दोउ पुत्र उर गहु
बजन बजाउ गाउ रिपु दुख टारी कै॥
मौंजी मेखलासु धारी दंड शुचि कर धारी
भिक्षा मागु पात्र गहि कर महँतारी कै॥

बेद विधि करि कार लोक निधि समचार
पुलकित अति सुत माला गल डारी के ॥
कस रिपु गई त्रास पुत्र पद भई आस
जनु जन्म सुखी दुख रिपुगन मारी के ।
पुर नर नारी भारी भूपन वसन धारी
करु नेवछावरि सुमंगल निचारी के ॥
गयो दुख दूरी रामसेवक को सुख मूरी
पुर नर नारी गहि सरन मुरारी के ॥४२४॥

राग श्री

चलु वेद पठन दोउ भाई ।
कुल रीती प्रीति उर छाई ॥टेक॥
लहि जनेव चत्री वनि प्रमुदित अज अछोईत गवाई ।
यदुवसी जहाँ पढत बाल सब कुल अचार्य ठहराई ॥
काशी पुर गुरु यसु सदीपन नाम परम सुनि पाई ।
हलधर जुत शिशु अपर कोइ सग पठशाला हरि आई ।
रामकृष्ण बनि छात्र गुरु पद बार बार सिर नाई ॥
सुदामा द्विज आदि अमित शिशु पठत वेद समुदाई ।
कृष्ण सुदामा पठत एक सग भइ अति परम मिताई ॥
सु सुरुपा गुरु करत कृष्ण अति गुरु करी प्रीति पढाई ॥
पाव पलोटत प्रेम नेम करि पूजा निधि सु जुटाई ।
सकल शास्त्र उर रामसेवक हरि गुरु कहँ देत बडाई ॥४२५॥
गुरु बालन पर जुत नारी ।
करु छोह मोह अधिकारी ॥टेक॥
समिध लेन गयो पुष्प सकल शिशु सुदामा वनवारी ।
घन लकड़ी गुरु हेतु निनत सत्र फलदल पुष्प बिचारी ॥

प्रमुदित बन इत उत सब धावत भूली गयो शिशु भारी।
क्षुधा लगी अति जोर सोर करि लावत सुरव सारी ॥
भाग अन्न हरि संग सुदामा सहि न जात क्षुध भारी।
भक्षन कर दोउ भाग सुदामा हरि हँसि लियो कर धारी॥
अस्त भयो रवि वृष्टि पवन अति रात्री भई अंधियारी।
सूझय नहिं तरु मूल सकल रहु हिलि मिलि तृण दल डारी॥
गुरु पत्नी जुत पथ विलोकन खोजत डरसि दुखारी।
आये शिशु सुख रामसेवक लहु महिमा सकल मुरारी॥४२६॥
हरि पठत वेद मन लाई।
गुरु पद रुचि प्रेम बढाई ॥टेक॥
जाकी स्वास ते सकल साम्ब श्रुति उपजत बहुरी समाई।
सोइ पठत होत सुनि अचरज एह द्विज सब बडाई॥
चौंसठि विद्या चौंसठि दिन महँ हरि पढ रूप छपाई।
हाथ जोरि विनती गुरु सन करु पद द्विज शीश नवाई॥
दक्षिणा कछु गुरु मागु मोहि सन पढेउ शास्त्र समुदाई।
बिनु दक्षिणा नहीं फलित शास्त्र कोइ वेद निबुध गाई॥
लेइ दक्षिणा आशीष गुरु दीजै जाउँ भवन हरखाई।
अमानुष मन कर्म लख्यो गुरु धर्म नीति निपुनाई॥
अल्प काल चौंसठी विद्या को नर पढु अस भाई।
ब्रह्म निरंजन रामसेवक एह करु गुरु कुल अधिकाई॥४२७॥
गुरु लखि हरि कहँ वर दानी।
अज निरज ब्रह्म पहिचानी ॥टेक॥
गुरु दक्षिणा हित निज पत्नी सन कहु लखि वुद्धि सयानी।
मृतक तनै गुरु दक्षिणा मागहु ब्रह्म अखिल पति जानी॥
कृष्ण ते कहु दक्षिणा देइ गवनहु मृतक जीवत निज पानी।
गुरु पत्नी मुख सुनत हर्षजुत चलु हलधर हरि ज्ञानी॥

समन पुरी चित्रित अति देखत आयेउ यम रजधानी।
यम हर्षित पूजा बहु विधि करु निज बहु भाग्य बखानी॥
हरि अज्ञा गुरु सुत जीवत यम दीन्ह बोलि मृदु बानी।
यम कर सोप कारि हलधर हरि गुरु कह सुत दियो आनी॥
गुरु पत्नी लहि मृतक तनय वर आशिष देइ पुलकानी।
करि प्रणाम हरि भवन आउ निज रामसेवक सुख मानी॥४२८॥

राग केदारा

हरि सब शास्त्र पढि गृह आय।
मातु पितु कहँ दीन्ह सुख बहु रूप परम देखाय॥टेक॥
आयो हरि अक्रूर गृह पुनि गोकुल उधव पठाय।
आवत लखि अक्रूर हरि कहँ हर्षित मिलु उठि धाय॥
अहो भाग्य निज मानि प्रमुदित सकल दुख सुख गाय।
बैठाइ आसन धोइ पद हरि भोजन सुभग कराय॥
कस कर थेवहार सब कहि बिपति कुल की सुनाय।
कृष्ण तुम सुख दीन्ह बहु विधि रूप वर दरसाय॥
बोध हरि पितृव्य कर करु पिता पुत्र गति लाय।
प्रबल माया कृष्ण की मर रही तिहुँ पुर छाय॥
पुत्र लखु अक्रूर सुंदर ब्रह्म बुद्धि गँवाय।
भवन गत हरि रामसेवक बहुरि कुबरीहिं पाय॥४२९॥
कुबरी देखु अवत मुरारि।
निहँसि उठि कर धारि॥टेक॥
शुभग पलग बिछाय प्रति दिन जोहत रहु गृह द्वारि।
पाइ शुभ बैठाय आसन धोइ पीउ पद वारि॥
चदन अगर लगाय विधिवत पुष्प हार गल डारि।
धूप दीप नैवेद्य बहु विधि दीन्ह कुबरी वारि॥

प्रथम हरि हाथ निज धरि गुल्फ सोइ पद कारि ।
कुबर पर कर धारु निज हरि दीन्ह शोभा ढारि ॥
सोज करि कूबर प्रथम हरि बहुरि खल गन मारि ।
करत भोग विलास निशि दिन कूबरीहि सुख सारि ॥
सुंदरी त्रयलोक्य नहिं कोइ कीन्ह अस बर नारि ।
भाग्य किमि कहु रामसेवक दीन्ह भव सरि तारि ॥४३०॥

राग श्री

उद्धव गोकुल रथ चढि आई ।
हरि अज्ञा वर पाई ॥टेक॥
पीत वसन मकराकृत कुंडल केश मधुप छवि छाई ।
सकल अंग हरिसम राजित अति भाग्य की सदृश लोनाई॥
अस्त भये रवि गोकुल मो गत रथ बर द्वार लगाई ।
नंद भवन कहु गवन मृदु पद नंद देखि उठि धाई ॥
प्रेमाकुल दोउ नयन सजल करि गहि कर गोद मो लाई ।
हिलि मिलि नंद धारि उद्धव कर शुभ आसन बैठाई ॥
पाव पखारि दुलारि श्रेष्ठ कहि भोजन विविधि कराई ।
पलँग बिछाइ सोआइ गिरा देइ कुशल पूँछु हरखाई ।
देवकी अरु बसुदेव कुशल कहु कंस दुष्ट दुखदाई ॥
नष्ट शत्रु सुख रामसेवक लहु पुरि जन नृपति सहाई ॥४३१॥
ऊधो कहु कुशल बनवारी ।
पुरि जन कहँ सुख दीन्ह विविधि विधि कंस दुष्ट बर मारी ॥टेक॥
नंद यशोमति प्रश्न करत श्वास स्रवत नयन बहु बारी ।
ग्राम धाम शुधि धेनु करत नहिं किमि मोहि तात बिसारी॥
माखन मिश्री दधिय क्षीर लेइ अत्र केहि प्रात दुलारी ।
हाय हाय करि रोदत वदत गुन यशोमति कृष्ण पुकारी ॥

उद्धव करु बहु बोध पत्र देइ हरि बर बचन उचारी।
रात्रि दिवस तव जस हरि गावत मानि पिता महँतारी॥
हरि सरवत्र समान रहत जग उर बसु सब नर नारी।
अब तुम जनक सकल त्रिभुवन पति जानि स्वहृदय निहारी॥
मग्न रहो दिन रयन चयन लहि भव रुज दुख उर टारो।
धन्य सुकुल वर रामसेवक मति दंपति सरन मुरारी॥४३२॥

राग टोडी

नद नद रानी उधो हरि गुन गाय के।
रात्रि सुनितीत कीन्ह उर पुलकाय के॥टेक॥
उद्धो चलु होत प्रात नद सन बोलि बात
क्रिया प्रात हेतु जल पात्र कर लाय के।
प्रति दिन अस क्रिया रात्रि गोपी बारी दिया
जाग्रन करु हरि हित मिलन मनाय के॥
मथन सुदधि करु रज्जु कर गहि धरु
झुकि झुकि हरि जस गावत बुझाय के।
कर कंकन धुनि सुनि उधो गान कान सुनि
चकित बिलोकु इत उत सकुचाय के॥
गोपीगन रथ सुनि उर धुर गुनि गुनि
आइ रथ देखु द्वार कृत तजि धाय के।
गोपीगन तर्क करु हरि रथ उर धरु
किमि अक्रूर करु पुनि इहाँ आय के॥
कंस कहँ पिंडा देइ गोपिन को मारा लेइ
तब तम होइ रथ रावत छपाय के।
तन मन कृष्ण साथ मृत्यु मम क्रूर हाथ
ठग नहीं पाइ कछु रही पछताय के॥

कहत सुनत गोपी प्रण करि जीव रोपी
हरि सम रूप मेटि हृदय कठोर के ।
ऊधो घन श्याम रामसेवक प्रगत नाम
गोपी गुरु राखु मन हृदयें बसाय के ॥४३३॥

ऊधो रथ ढिग देखु सब ब्रज नारी के ।
प्रभु भक्ति बल धरि खोजत मुरारी के ॥टेक॥
भक्ति पर नात मानी हरि प्रिया उर जानी
मनमो प्रनाम करु सुचि शिर धारी के ।
ऊधो उर पुलकाइ भक्ति मग रहु छाइ
हरि दत्त ज्ञान मुनि भरेउ सम्भारी के ॥
गोपी मन देखि देखि हरि सम लेखि लेखि
करत करक मह रूप बनवारी के ।
ऊधो रथ ढिग आइ गोपी मन लखि पाइ
कृष्ण दूत फूर गोपी बोलत दुलारी के ॥
करि करि परनाम सब लहि ब्रज ग्राम
निज निज धाम कहु सकल पुकारी के ।
कुशल खबर श्याम सुमस बसत धाम
सुख हरि दीन्ह रिपु कंस धर मारी के ॥
देवकी अनन्द लहु बसुदेव सुख गहु
सुरि जस दुख हरि दीन्ह दूरि टारी के ।
सुनिके अनन्द लहु हरि जस उर गहु
किमि वहाँ रहु हरि गोपिन बिसारी के ॥
ऐसा विधि गोपी जानु कृष्ण पर भाव मानु
सुख सोइ कृष्ण किमि दीन्ह सुधि टारी के ।
गोपिन की बात रामसेवक न कहि जात
ऊधो मुक भयो नहिं कहत बिचारी के ॥४३४॥

राग केदारा

गोपी कहत बहु बिलखाय।
नयन जल ढरकाय ॥टेक॥
सुनत उद्धव बोलु नहिं कछु देखत भक्ति की राय।
बोलत अटपट बिरह बस त्रिय प्रेम नेह जनाय॥
चारु दिन बदि गयो हरि पुर बहुरि नहिं पुनि आय।
मूढ़ किमि कहि गयो मथुरा लालच उर उपजाय॥
कवनि अस वर नारि सुंदरि राखु हरिहिं लोभाय।
सुनत लहु आचर्य एक बहु सुनहु सोइ कहु गाय॥
कुबरी के गृह जात प्रति दिन कुवर पर मन लाय।
गोपी कूबर पाव कहँ वाहरीहि कुवर सोहाय॥
काष्ट कुबर बनाइ त्रय विधि खरखर पृष्टि चढाय।
रिझहि हरि तब रामसेवक गोपी कहत रिसाय॥४३५॥
उधो सुनहु कहत पुकारि।
कहेउ तुम एकाँत मह सब गोपी वचन दुलारि॥टेक॥
शीघ्र आवन गयो कहि तुम हृदयँ विचारि।
प्राण गोपी अवधि निरखत सत्य धारा धारि॥
अवधि गत भई असत बानी प्राण तजु त्रिय भारि।
कोटि हत्या धरहु शिर हरि तजत तन ब्रज नारि॥
सवति नवकी भई कुबरी देइहि गोपिन गारि।
होत रिसि धरि केश कुबरी देत देश निसारि॥
तोरि कुबर धारि मूशल लातन बहु मारि।
कोध करि जनु कहत गोपी बोध चरन मुरारि॥
सुनत उद्धव भक्ति बाढत बहत चछु बहु वारि।
गोपिगन सुखु रामसेवक लहत दूत निहारि॥४३६॥

राग श्री

हरि यहुँ जुग छल उर धारी ।
भारत नारी प्रचारी ॥टेक॥
हरि विश्वास करै उर जौं कोइ लहु पिछे दुख भारी ।
कुनरीं पुनि पाछे पछताइ जिमि गोपीगन म्हारी ॥
बैरोचन कन्यावध करु हरि इन्द्र वज्र ललकारी ।
भृगु पत्नी वध कीन्ह सुरन हित रेणुकहिं वधु महँतारी ॥
जग्य सुता वध कीन्ह ताड़ुका नहिं उर नीति विचारी ।
सूर्पनखा कर नाक कान हरु प्रथमहिं बहुत दुलारी ॥
छीर पान करि गोद पुत्र बनि नारि पूतना मारी ।
जलधर पत्नी वृंदावर छल करि व्रत सोइ टारी ॥
बलिराजा वर भक्त परम हरि तासन छल अनुसारी ।
गोपीगन कहु रामसेवक यहु सुनु उधो चरित मुरारी ॥४२७॥

उधो जाइ कहो अस गाई ।
सुनत दया कछु आई ॥टेक॥
नंद यशोदा रोदत रानि दिन बार बार पछताई ।
माखन मिश्री अमित खेलवना देइहौं केहि गोहराई ॥
छीर नहीं बछरा कोइ पीवत धेनु घास नहीं खाई ।
वृंदाबन तृण तरु सब सूखत कुंज लता कुम्हिलाई ॥
ग्वाल सकल हरि बिनु व्याकुल अति खोजत कहँ दौर माई ।
गोपिन कहँ बिसराइ दीन्ह किमि सुख बर उर दरसाई ॥
तुम हरि विकल होत नहिं तजि प्रिय सुख प्रद नारि गवाई ।
तुम बिनु प्राण तजहिं गोपीगन दुख टर पुर न समाई ॥
विष भक्षन जल पतन घात तन करन न एक सहि जाई ।
भक्ति विरह सुनि पुलकित उद्धव रामसेवक सुख पाई ॥४२८॥

उद्धव गोपिन की सुनि बानी।
ज्ञान भक्ति रस मानी ॥टेक॥
विरह निकल अट पट अति बोलत लखि हरि कहँ जग प्रानी।
प्राकृत नारि नहीं गोपी कोइ लखि जगदंब भवानी॥
धन्य धन्य उद्धव गोपिनकहिं लखि धर बुद्धि सयानी।
पत्री हरि कर दीन्ह गोपिन कर लहि उर सकल जुड़ानी॥
पत्री खोलि उद्धव बाँचन लगु हरि मुख निर्मल कहानी।
विषय विराग भक्ति उर गहु दृढ़ करि बिचार होहु ज्ञानी॥
श्रवण मनन निदिध्यास करहु यहु होहु प्रिया अब ध्यानी।
सर्व सर्वगत सर्व चरालेय अखिल ब्रह्म पहिचानी॥
अच्युत अगम गगन सम पूरन मोहि काल त्रय जानी।
भजन करौ अब रामसेवक ध्रुव लखि मोहिं सब जग प्रानी॥४३९॥
उधो हरि वर पत्री सुनाई।
जोगैं करो लखि भोग जगत सुख चहुँ दिसि कृष्ण देखाई॥टेक॥
अचल भक्ति गोपिन की गूढ लखि नहि गुरु ज्ञान सोहाई।
कृष्ण चरित गोपिन सुख प्रद हित उद्धव पुनि पुनि गाई॥
धन्य जन्म जगती तल गोपी जो हरि हृदय बसाई।
सुत नित पति गृह कार सकल तजि मनचित हरि पद लाई॥
दरस परस करि तृप्त होत नहिं नहिं मन नयन अघाई।
रात्रि दिवस छुन श्याम रूप चित सगुन ब्रह्म उर भाई॥
धन्य जन्म मम कहत उद्धव तेहि भवति दरस जब पाई।
धीरज धरि उर निकट लखो हरि देर नहीं अब आई॥
कहत सुनत हरि रूप भ्रमर धरि शब्द कीन्ह सुखदाई।
सुनत शब्द रस रामसेवक वर गोपिन उर सुख छाई॥४४०॥
सुनि भ्रम की धुनि अति प्यारी।
लहुँ गोपी सुख भारी॥टेक॥

अट पट वचन अंगय बहु बोलत उद्धव के देइ हुँकारी।
जाहु भ्रमर अबही फिरि मथुरा जहाँ हरि के बहु नारी॥
हरि संदेश सुनावहु तेहि बहु जोइ उर लाइ सुखारी।
मम पायन किमि परत निलज होइ वचन बाण उर मारी॥
जाइ सुनावहु कुबरी के अब नाहीं देत बहु गारी।
श्याम रूप जनि मोहि देखावहु हरि सम बर तन धारी॥
मथुरा की नारि पिछे पछतइहें जैसे गोपिन न्यारी।
कृष्ण छली नहिं मित्र कोई कर कहुँ जुग कहु श्रुति चारी॥
इत उत भ्रमर शब्द बर बोलत गोपीन सुख अनुसारी।
उद्धव रामसेवक गोपीगन लखु बर चरित मुरारी॥४४१॥
उद्धव हरि वर हाल सुनाई।
गोपिन उर सुधि पाई॥टेक॥
कछुक काल गोकुल बसि सुख लहु हिलि मिलि हरि गुन गाई।
बिदा मागु गोपीगन सन बहु प्रेम विवश रहि जाई॥
गोपीगन कहु ताहि तोहि उद्धव रहु उर दुख बिसराई।
हरि वर चरित कहत निशि दिन तुम सुनि उर ताप बुझाई॥
तुम बिनु ताप लहब एहि पुर बहु गृह आँगन न सोहाई।
उद्धव कह बहु बोध निविधि विधि गोपिन सुख दरसाई॥
पाव पुजाइ बुझाइ गोपिन कहँ मथुरा उद्धव आई।
भेंट दीन्ह गोपिन कर पूजा करि बहु भक्ति बड़ाई॥
गोपिन सम नहिं भक्ति देव कोइ दनुज मनुज समुदाई।
भक्ति सुख दरस रामसेवक सुनि हरि उद्धव पुलकाई॥४४२॥
कह चरित अमित सुखकारी।
बलदेव सुकुञ्ज बिहारी॥टेक॥
गोपिन की सुनि हाल मुदित मन हस्तीना पुर चित धारी।
अक्रूर सन कहेउ दीन होइ अगिल चरित सवाँरी॥

इन्द्रप्रस्थ पुर जाहु वेगि तुम टिकि रिपु-मित्र निचारी।
आवहु वेगि तुम देखि पाँडु सुत सुनत लहत दुख भारी ॥
अक्रूर सुनि वचन कृष्ण की रथ चढ़ि चलु सुख सारी।
धृतराष्ट्र गृह प्रथम गवन करु हिलि मिलि वैठु सुखारी ॥
विदुर भक्त मिलु प्रेम सहित बहु सुनि सुख कुशल मुरारी।
भेंट लीन्ह अक्रूर सकल सन अँधहि वहुत दुलारी ॥
पुत्र छोह नहिं अघ तजेउ कोइ हरि आज्ञा दियो टारी।
अक्रूर सुधि रामसेवक लेइ कुन्ता भवन पद धारी ॥४४३॥
अक्रूर भवन निज पाई।
कुन्ता बहु हरखाई॥टेक॥
सभ्रम उठि कर धारि आइ कर मिलि शुभ थल वैठाई।
पाव धोआइ खिआइ अन्न शुभ पलँग दसाइ सोआई ॥
नैहर कुशल पुछत बहु रोदत कहु भाईन भलाई।
कस वंस भयो नास सुना अब गृह आये दोउ भाई ॥
देवकी अरु वसुदेव कुशल कहु पुरिजन मित्र सहाई।
कृष्ण सरन अन रहव त्यागि गृह दुख उर पुर न समाई ॥
पाँडु पुत्र सब नारि सहित मिलु अक्रूरहिं शिर नाई।
पाँडु वश कर बोध विविधि करि अक्रूर गृह जाई ॥
कृष्ण ते सकल मित्र रिपु रीति दुख कुन्ता कहु गाई।
सुनि हँसि गहि धरु रामसेवक उर कृष्ण पालु समुदाई ॥४४४॥

दोहा

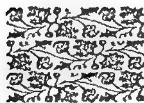
कृष्ण चरित शत उदधि सम गोकुल मथुरा कीन्ह।
धरणि भार हरि मारि खल त्रय पुर कहँ सुख दीन्ह ॥ १ ॥
अष्टादश पौराण कहि शारद सेस सुजान।
उपपुराण पुनि अष्टदश महि कहि लहु कल्यान ॥ २ ॥

भारतादि इतिहास बहु अगम निगम कहि सार ।
सर्व शास्त्र कविगन सकल कहि सुरग लहु नहिं पार ॥ ३ ॥

सोरठा

चरित कृष्ण अवगाह रामसेवक किमि पार लहु ।
श्रुति नहिं लहु करि थाह रामसेवक शठ हठ करत ॥ १ ॥
कलिमल प्रसेउ अघाय रामसेवक भयो सिथिल मन ।
करु हरि बेगि सहाय एक सरन राधा रवन ॥ २ ॥

❀ इति पूर्वा श्रीमद्भागवत मत अन्य बहु पौराण मत मिश्रित ❀



उत्तरार्द्ध



राग टोडी

हरि को चरित सुख प्रद नर नारी के
सुर नर मुनि जस गावत मुरारी के ॥टेक॥
कस घात जब कीन्ह त्रिभुवन सुख दीन्ह
पुरिजन मातु अरु पितु महँतारी के ।
उग्रसेनि राज दीन्ह कस देहँ दग्ध कीन्ह
उपकार सुर मुनि भुवि भार टारी के ॥
मुष्टिकादि बीर मारी मोक्ष सुख दीन्ह वारी
उपकार लोक बेद करु तन जारी के ।
कस नारी दुष्ट चारी रिपु लखु हरि भारी
रोदत बदत पति गुण सुख वारी के ॥
केश बिथुराइ धाइ पितु गृह जाइ गाइ
कस घात सुनि जरासध दुख डारी के ।
क्रोध करि चलु धाइ सेना लेइ पुर आइ
कृष्ण धाम घेरु चहुँ दिशि परचारी के ॥
कृष्ण बलदेव सुनि रिपु उर पुर गुनि
अस्त्र निज गहि ठाढ भयो पुर द्वारी के ।
जरासध बड़ भूप श्यामल गवर रूप
देखि मोहि गयो हरि बदन निहारी के ॥
रिपु मानि हहकारी अस्त्र शस्त्र शिर डारी
कृष्ण बलदेव राजी सैन्या सब मारी के ।

नृप कहँ त्यागी रामसेवक सुकृत जागी
जरा सध गयो गृह रिपु रूप धारी के ॥४४५॥
कृष्ण बलदेव रिपु तजु हरगाय के।
सैन्या रिपु मारी रिपु रिसि उपजाय के ॥टेक॥
ज्वरासध रही थीर श्रवनी श्रमित वीर
जोरि जोरि ल्याइ खोजि रिपु दरसाय के।
ढिग मारू पाइ पाइ कहाँ जाव धाइ धाइ
श्रश उर गुनि रिपु त्याग करु पाय के ॥
तेइस छोहिणि दल ज्वरासध लेइ बल
मथुरा नगर घेरु पुनि शठ श्राय के।
ललकारु देइ गारी कृष्ण राम ठाढ़ द्वारी
सनननन बान चलु बहु बहु धाय के ॥
भिंडी पाल ज्येष्टी चलु जनु भुवि दलि मलु
घट पट घट पननन पननाय के।
तोमर मुशुडी बहु मुगुदल श्रसि गहु
चलत शतघ्नी घन इव घहराय के ॥
कृष्ण बलदेव डाँटी छन महँ सैन्या काटी
ज्वरासध त्यागी शरिरू धार धाय के।
कृष्ण राम जीति पाइ विजय सकल गाइ
ज्वरा सध आयो गृह फौज सब गवाँय के ॥
ज्वरासध पुनि जोरी बीर बहु शिर मोरी
युद्धि करि हारि गृह फिरु सकुचाय के।
कृष्ण बलिराम रामसेवक पुरन काम
चाह नहिं उर जस रहु लोक छाय के ॥४४६॥
चरित अगम वर सुगम मुरारी के।
कहत सुनत अघ हरु नर नारी के ॥टेक॥

ज्वरा सध पुनि पुनि रिपु नाश गुनि गुनि
मथुरा नगर घेरु हरिहिं प्रचारी के।
सननन चलु बान गननन करु गान
मननन फिरु रिपु प्रबल निहारी के॥
चहत शतघ्नी सोर चलत भुशुंडी घोर
कृष्ण बलदेव धीर रहु थीर थारी के।
अस्त्र शस्त्र तोरु डाँटी बीर भुज शीर काटी
रुधिर सरित बहु करु रिपु मारी के॥
तेईस छोहिणि दल ज्वरा सध लेइ बल
सप्त दस चार युद्धि करु ललकारी के।
सप्त दश बार हारी गयो गृह परचारी
अष्टादश रन करि मारब पछारी के॥
कृष्ण बलदेव राजी रिपु दल बधि गाजी
ज्वरासध त्रास नाहिं भुवि रुज टारी के।
अष्टादश रण आइ बीर भाव मन भाइ
आगिल चरित हित रहु सुख सारी के॥
तेईस तेईस दल छोहिणि अमित बल
सप्त दश बार शिर काटि भुवि डारी के।
कृष्ण जस गाइ रामसेवक सरन पाइ
चहुँ जुग रीति हरि रासत दुलारी के॥४४७॥
ज्वरासध कटक बटोरु गृह जाय के।
अष्टादश रण दुइ दिन रहु आय के॥टेक॥
बीर काल यवन न दुरूप मगनन न
खोजत सुबीर मुनि नारद को पाय के।
मुनि पद गहि कहि बीर मोहि देहु सही
तुम बहु जानु गृह गवनु बताय के॥

फल कपोल चिबुक भाल धवल मणि सुदत जाल
भ्रकुटी शुचि नयन आस्य शोभा शतवारी।
शोभित बनमाल लाल ग्रीवँ शुभ्र मणि सुजाल
निम्न चरन उरसि भ्राज मोह पटल टारी॥
शरा चक्र गदा भ्राज भुजा चारि कमल राज
चकित मुचुकुन्द रूप निशद हरि निहारी।
सोवत दर अमित काल देख्यों नहिं जतु जाल
देखत एह रूप परम प्रथम एक जारी॥
अचरज उर अमित कीन्ह अभय ज्ञान कृष्ण दीन्ह
काल पवन धात सकल लोक जन सुखारी।
सूर्यवंश जन्म गाय देवन की करु सहाय
निद्रा सुरदत्त दृष्टि पावकहु दुलारी॥
कृष्ण जन्म निज सुनाय आत्म रूप वर लखाय
द्विभुज रूप तुरित धारु त्यागि भुजाचारी।
देख्यो मुचुकुन्द भूप कृष्ण रूप अति अनूप
रामसेवक प्रेम नेह अस्तुति अनुसारी॥४४९॥
जैति जैति जय कृपाल सकल लोक काल व्याल
महिमा अपार वेद कहत निबुध मारी।
उद्भव थिति नाश हाथ कबहिं नहिं कोपि साथ
भक्तन हित हेतु नाथ रूप अमित धारी॥टेक॥
जैति जय अनत एक भक्तन उर राखु टेक
धरणि भार हरत दुष्ट दैत्य वश मारी।
ब्रह्मा शिव धरत ध्यान सुर नर मुनि रहत ज्ञान
रूप अति अनूप चरित सुनत पाप हारी॥
जैति ब्रह्म अज अनूप निर्गुण गुण वर सरूप
सेवत मुनिवृन्द चरन कमल ध्यान वारी।

पावत बिश्राम धाम होत सकल पूर्ण काम
काम क्रोध लोभ मोह मत्सर रिपु जारी ॥
जैति जय कृपा अगार भव समुद्र करत पार
अधम जन बिलोकि नाथ पालत नर नारी ।
दरश मोहिं दीन्ह नाथ दीन जानि कीन्ह साथ
शीतल कर कज शीश परसि करु सुखारी ॥
जैति दीन बन्धु नाथ शरन चरन कमल माथ
आपन करि तोहि थापि देहु भव उतारी ।
दीन जोग तप बिराग नेक नाहीं कीन्ह जाग
तीरथ ब्रत एक नाहिं सरन गहु मुरारी ॥
जैति जैति जय कृपाल निरखहु लखि जन बिहाल
त्राहि त्राहि त्राहि माम जगत जाल धारी ।
अस्तुति मुचुकुंद कीन्ह रामसेवक सरन दीन्ह
कृष्ण दास आस खास स्वबस उर बिचारी ॥४५०॥

राग श्री

हरि जुग प्रति जुग उपकारी ।
करि चरित जगत बिस्तारी ॥टेक॥
काल यवन गिरि खोह लेइ हरि दुष्ट अरिष्ट निचारी ।
मुचुकुंद दरि मध्य सोवत रहु हरि निचारि रिपु भारी ॥
मुचुकुन्दोपरि शीश तोपि पद पीताम्बर निज डारी ।
आपु गयो छन ओट छिपि प्रभु देखि दुष्ट दियो गारी ॥
दूरि लेइ शठ मोहि कदला सोयेउ टाँग पसारी ।
अस कहि कालयवन हरि लखि उर मुचुकुन्दहिं पद मारी ॥
कोप दृष्टि करि ताकि नृपति वर काल यवन तन जारी ।
काल यवन तन पात जानि हरि नृप ढिग रूप सवारी ॥

रूप चतुर्भुज देखि परम हरि नृप अस्तुति अनुसारी ।
रामसेवक मुचुकुन्द मम अति लहि रस भक्ति मुरारी ॥४५१॥

हरि रूप परम दरसाई ।
मुचुकुन्द नृपति सुखदाई ॥टेक॥
माँधाता सुत सकल चरित निज कहि हरिपद शिरनाई ।
हरि निज जन्म कर्म बहु विधि कहि भक्ति नात गुन गाई ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य देइ हरि बदरी वन को पठाई ।
तप करि तन तजि यमहु अमर मोक्ष की राह बताई ॥
अष्टादश रण जानि महाखल जरासंध चढि आई ।
त्रय निंशति चोहिणि दल गर्जत मारु मारु धुनि लाई ॥
आगिल कार्य विचारि दिखावत भागि चलेउ दोउ भाई ।
तिष्ट तिष्ट कहि दल अपार लेइ चलु पीछे खल धाई ॥
परवरसन गिरि उप गो दोउ खल चहुँ दिशि घेरेउ जाई ।
चहुँ दिशि अग्नि लगाइ जराइ वन रामसेवक सुख पाई ॥४५२॥

राग केदारा

माधव करत दीन सहाय ।
सुजस तिहुँ पुर छाय ॥टेका॥
काल यवन जराइ पर्वत वेगि चढु दोउ भाय ।
जरासंध लेइ कटक पर्वत घेरि धनहिं जराय ॥
जारि जनु दोउ भाय पर्वत शत्रु रारि मेटाय ।
जरासंध लेइ कटक चलु गृह मुदित वाद्य बजाय ॥
मृत्यु मोम कर जानि तेहि हरि दीन्ह यवन पठाय ।
गोकुल मथुरा चरित बहु करि द्वारिका मन लाय ॥
कृष्ण अरु बलदेव प्रमुदित जरासंध बचाय ।
कूदि पर्वत ते झटित हरि वेगि निज पुर आय ॥

देवकी वसुदेव नृप वर देखि हरि हरखाय।
मिलउ हरिसन रामसेवक सकल जन सुख पाय ॥४५३॥

हरि आय पुरि पनिहारि।
राजित लखु नर नारि ॥टेक॥
निर्मित निज माया सराहत चहुँ दिशि अति ओंजियारि।
कनक मई सब धातु राजित भून्य गज मणि द्वारि॥
खचित मणिगन रचित गृह थल पचित नग मणि झारि।
डेहरि न विद्रुम रचित अति शोभित गृह वर द्वारि॥
द्वार शुभग कपाट चहुँ दिशि कुलिश मणि पचिवारि।
उदधि मध्य विराजु नगरी शोभित चहुँ दिशि वारि॥
निर्भय करु हरि नारि नर सब रिद्धि सिद्धि गृह थारि।
विभव भोग विलास करु सब सुरति देश बिसारि॥
मथुरा ते सुख कोटि गुन लहु अधिक कहु श्रुति चारि।
कुशल सुख बहु रामसेवक निरखि बदन मुरारि ॥४५४॥

राग श्री

हरि द्वारावति पुरी आई।
बसि पालत लोग लोगाई ॥टेक॥
नृत्त गान बाजन बहु बाजत सकल पुरी छवि छाई।
अति रमणीय मनोहर लखि पुरि प्रमुदित जन समुदाई॥
रेवत की कन्या रेवती वर तिहुँ पुर तासु बड़ाई।
तासु जोग्य पति नहिं मिलु तिहुँ पुर खोजु रेवत बहु धाई॥
हलधर जन्म सुनि द्वापर बर बैठि रहेउ मन लाई।
सत्र विंशति जुग हलधर पद मन पल सम गयेउ सिराई॥
द्वारावति मह आइ रेवत नृप देखेउ रूप लोनाई।
कन्या मम बर पाइ अनत मनहि मन बार बार पुलकाई॥

बल बुधि अधिक तेज तन राजित रेवती लखु सुरताई।
लखि विवाह गति मातु पिता जन रामसेवक सुखपाई॥४५५॥
बलदेव विवाह निहारी।
सुख लहु तिहुँ पुर भारी॥टेक॥
कुश कन्या जल रेवत गहि कर वेद पढत मुनि भारी।
वेद विहित सकल्प दान विधि हलधर लियो कर धारी॥
वेद घोष जय शब्द तिहूँ पुर सुमन शीश सुर डारी।
अति सुख लहु वसुदेव देवकी नृप उग्रसेन सुरारी॥
नृत्त गान बाजन बहु बाजत द्वारावति सुख सारी।
दान मान सतोष चहुँ दिशि हरषित पुर नर नारी॥
अति अनद लहेउ रोहिणी उर जोइ हलधर महतारी।
भ्रातृ विवाह सो लहेउ अधिक सुख जाकर नाम मुरारी॥
अति उत्सव मगल चहुँ दिशि बहु रेवती विवाह विचारी।
सकल चरित एह रामसेवक हरि त्रय पुर जैति पुकारी॥४५६॥

राग टोडी

हरि को चरित कवि किमि कहु गाय के।
ब्रह्म अनवद्य कृत मानुष जनाय के॥टेक॥
ज्येष्ट बर भाइ मानी गोत्र परिवार जानी
करेउ विवाह बलदेव मन लाय के।
माया परचड हरी भीषम को उर धरी
रूक्म रुक्मिनी उर पुर रहु जाय के॥
भीष्म भिष्म नारी उर कृष्ण को विवाह फुर
कन्या जोग बर उर रहु ठहराय के।
रुक्म कान निज सुनि पितु वाक्य उर गुनि
शिर धुनि धुनि ग्लानि करू सकुचाय के॥

कृष्ण चरवाह गाइ नाहि नृप नीति पाइ
भगिनी विवाह मम किमि करु आय के।
राजा शिशुपाल वर चेदि बस बर घर
करब विवाह पितु सबत बिहाय के॥
लग्न सुविचार करु निज मत उर धरु
मातु पिता पुरिजन मत सुनवाय के।
कृष्ण को विवाह सुनि शिशुपाल सुनि पुनि
हानि लाभ सुख दुख रहु जगदाय के॥
रुक्मिनी स्व सुनि कान पति पद पहिचान
विप्र बोलि कृष्ण ढिग भेजु सिरनाय के।
उत्सव घर रामसेवक सुखद कर रुक्मिनी
विवाह कृष्ण श्याम वर पाय के॥४५७॥

कहि नहि जात घर चरित मुरारी के।
केल करु जग नर तन धर धारी के॥टेक॥
रुक्मिनी को पत्र लेइ द्विज कृष्ण कर देइ
द्वारिका मो जाइ उग्रसेनि सभाचारी के।
पत्री कृष्ण वाचि खोलि विप्र सन बात बोलि
वेगि आवो नाथ मम पत्री को निहारी के॥
सिंह वर भाग जोइ ससक सियार सोइ
नाथ पद माथ धरि कहत पुकारी के।
इन्द्र कर जाग भाग रासभ करत राग
उचित न नाथ उर देखहु विचारी के॥
मातु पितु दीन्ह तोहि राखहु सरन मोहिं
भ्रात छोरि देव शिशुपाल को दुलारी के।
सरन न त्याग करु आइ मम कर धरु
पर पति लेत नाथ नेगु तव नारी के॥

अंबिका भवन जाइ पूजा करु हरखाइ
रथ बैठाइ गृह आनु रिपु मारी के।
द्विज वर साथ नाथ वेगि आइ धरु हाथ
करहु सनाथ रिपु भय रुज टारी के॥
पत्री वर हाल सुनि कृष्ण निज मन गुनि
द्विज वर तोप कीन्ह रथ बैठारी के।
रथ चढि चरु रामसेवक न रिपु दुरु
कृष्ण जन पालनारि वाक्य अनुसारी के॥४५८॥

राग विहाग

जोहत पथ द्विज कर देइ वर पाती।
भीष्म सुता रुक्मिनि दुख लहु उर बार बार पछताती॥टेक॥
हरि सदेस न द्विज लेइ आयेउ प्राण राखब केहि भाँती।
तप्त गात मुख वचन न आवत हरि सुधि लहत जुडाती॥
रात्रि दिवस चिंता उर करु बहु उत्सव पुर न सोहाती।
कृष्ण बिना नहिं रुचत धाम गृह नहिं पुरिजन कुल जाती॥
लोक लाज नहिं आँसु पात करु आवा इव जरु छाती।
लोक थाव नहिं रुचत निभव कोइ नहिं बिवाह बरियाती॥
चितव पथ द्विज दिवस बितावत हरि चिंता बहु राती।
मगल गान करत त्रिय हिलि मिलि सुनि रुकुमिनि सकुचाती॥
अति दयाल तजि नाम कृष्ण वर शिशुपाल जीव घाती।
प्रणत पाल सुधि रामसेवक करि रुक्मिणि उर पुलकाती॥४५९॥
बिना हरि उर अतर दुख होई।
श्याम मुरति उर अतर भावत अपर नृपति नहिं कोई॥टेक॥
शिशुपाल गृह पुर उत्सव अति कुन्दिन पुर गति सोई।
वर कन्या कर नाम लेत सब चैद्य पुरी इत जोई॥

रुक्मीणि धुनि सुनि गुनि करमी जत प्रगट नहीं उर रोई।
द्विज मम हित सोइ गयेउ द्वारिका पत्र मो विधि बरनोई॥
अवधि वितत पुर श्रवन गवन की लग्न विवाह नहिं गोई।
पत्र दीन्ह हरि कर देने हित की द्विज बर पथ खोई॥
मम अपराध खोड़ हरि आवत बीज नहीं शुभ बोई।
पत्री की घर हाल सुनत हरि उर कल्मष देत धोई॥
रुक्मिणि उर हरि रूप नसत ध्रुव हरि उर जग सब लोई।
हरि मए रारात रामसेवक सय वहत नियुध निगमोई॥४६०॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित रथ कृष्ण श्याम शोभित शत कोटि काम
द्विज अनूप सग रग कोटिन छवि डारी।
रुक्मिणि घर हाल सुनत भक्ति पक्ष मनसि गुनत
लीला अवतार अमित कृष्ण अवतारी॥टेक॥
कुंडिन पुर चलत चाल रथारूढ़ भुज बिसाल
शोभा शत काम अग अगन पर वारी।
इष्ट सफल लखत वीर भागि जात पथ न धीर
पावत सुख रस अडोल निरखत नर नारी॥
सुनत हलधर सुजान कलह हाल रिपु प्रधान
कृष्ण गयो अकेल बाल फौद तासु भारी।
अमित कटक लेइ धाय मूशल हल कर स्वलाय
कृष्ण निकट आयो भट हलधर ललकारी॥
श्याम गवर अति अनूप देखत नर नारि रूप
मानहु छवि काम इदु कोटि शत तमारी।
कटक मास निकट धाय कृष्ण कहेउ निहँसि गाय
ब्राह्मण गृह जाइ कहो बात फुर बिचारी॥

रुक्मिणि गृह विप्र जाय कृष्ण चरित सकल गाय
महिमा हरि गाय दान देइ द्विज दुलारी।
आयो शिशुपाल राय अमित कटक साजि धाय
बैठेउ बरात फूलि कृष्ण अरि निहारी॥
कृष्ण बलदेव आय भिष्म सुनत तुरित धाय
पूजा करि विविध शुभ्र आसन बैठारी।
भोजन बहु विधि कराय रामसेवक शीशनाय
मोहेउ नर नारि नगर रूप लहि मुरारी॥४६१॥
कृष्ण श्याम तन अनूप निरखत डरु कुटिल भूप
कुडिन पुर नारि सकल रूप नर लोभाई।
भीष्म सहित नारि देखि रूप कृष्ण मधुर पेखि
कन्यासम तुल्य श्याम निरखत पछताई॥टेक॥
बाल वृंद सग धाय कृष्ण निकट बैठु जाय
नयन पुट पान करत रूप की लोनाई।
दरस परस बाल करत हँसि हँसि कर कर स्व धरत
टरत नाहिं नेक कृष्ण रूप ध्यान लाई॥
कुडिन पुर सकल रचित मणि गन बहु रंग पचित
रत्न धातु सकल खचित शोभा रहु छाई।
चित्रित अति ग्राम धाम पुर कपाट अति ललाम
रचना धरि हाथ कृष्ण सकल शिशु देखाई॥
कृष्ण बाल तोष करत रचना लखि सुख स्व भरत
छन मो लोक सकल कारि स्वास करि बसाई।
बाल प्रेम उरमि पाय सुदर कहि कृष्ण गाय
करि दुलार अमित शिशु नभ वन हरि पठाई॥
रुक्मिणी विवाह जोग हिलि मिलि सब कहत लोग
कृष्ण श्याम रूप अपर भूप न सोहाई।

कृष्ण श्याम तन अनूप एक टक सब देखु रूप
रुक्मिणी निवाह जोग्य इत उत सब गाई ॥
सुर नर मुनि गन समाज मध्य कृष्ण तन विराज
निज निज रुचि भाव दाव निरखत समुदाई ।
कुंडिन पुर सकल लोग रामसेवक कहत जोग
रुक्मिणी निवाह कृष्ण शोभा वर पाई ॥४६२॥

राग टोडी

अंबिका पूजन चलु बहु हरखाय के ।
सखी बहु संग लेइ बाजन बजाय के ॥टेक॥
कृष्ण पद प्रीति करि उर हरि रूप धरि
पत्री महँ भाव दाव प्रथम जनाय के ।
रुक्म बहु वीर जग रुक्मिणी के करु संग
घेरि आगे पिछे चलु चहुँ दिशि धाय के ॥
अस्त्र शस्त्र कर धारी इत उत जनवारी
कौतुक देखत चलु पुरिजन गाय के ।
मंगल सुगान जोर बाजन करत सोर
अमित कोलाहल नगर रहु छाय के ॥
शिशुपाल जरासंध करु बहु छंद बंध
दल लेइ धाइ घेरु देवी मठ आय के ।
करत भुसुंडी सोर तोप धहरात घोर
धरु धनुबान कर खड्ग चमकाय के ॥
कृष्ण बलदेव आइ रथ दल लेइ धाइ
देवी द्वार ठाढ भयो रूप दरसाय के ।
रुक्मिणी को मन भाव पत्री लखि खोजु दाव
रिपु दल देखि उर पुर रहु ठहराय के ।

भयी हाल रुक्म सुनि शिर धुनि उर गुनि,
करेउ गलानि उठि भयो थिर धारी के॥
सप्त करि चलु धाय पुर न बहुरि आय।
बिनु कन्या लिये रिपु मारी परचारी के।
मुख न देखाव आइ रण सन भागि धाइ
कहत उठाइ हाथ पुर नर नारी के॥
अस कहि चलु धाय रथ चढि गारी गाय
अधम निलज नारी-चोर ललकारी के।
तिष्ट तिष्ट तीष्ट शठ किमि भागु करि हठ,
रुक्म अभिमानी घेरि सर चहुँमारी के॥
मुशलन दल मारी बलदेव हल धारी,
कृष्ण सर काटि रिपु अवनि पछारी के।
रथ लेइ बांधि दीन्ह बलदेव दया कीन्ह
रुक्मिणी छोह लखि उर पुर धारी के॥
पतन कराइ शीर अर्ध भाग त्यागि वीर
ज्येष्ट भ्रात वाक्य कृष्ण उर अनुसारी के।
रुक्म बस लाज रामसेवक स्वकृत राज
गृह भाम त्यागु लखि चरित मुरारी के॥४६६॥

राग श्री

हरि जीति लीन्ह वर नारी।
सुर नर मुनि रिपु भय टारी॥टेक॥
जरासध शिशुपाल लेइ दल भागि गयो रण हारी।
कुडिन पुरजन लहेउ महा सुख कृष्ण रूप न विसारी॥
भीष्म लहेउ सुख शोच गई उर कृष्ण भक्ति पर वारी।
सुख लहु वरनम कहि न सकत कवि जस रुक्मिणी महँतारी॥

रुक्म मान मथि गृह जब चलु हरि तिहुँ पुर जैति पुकारी।
सुर मुनि नाग की जैति शब्द सुनि रुक्मिणी अधिक सुरारी॥
भाम भाम की नारि भागि चलु हरहीं न हरि कहु भारी।
अग्य कहत अस साधु नहीं कोइ सो हरि हृदये बिचारी॥
देश ग्राम सुख देन परम हरि आये द्वारिका द्वारी।
हर्ष कोलाहल रामसेवक पुर सुनि जै जीति मुरारी॥४६५॥
हरि द्वारावति महँ आई।
सुनि बाल वृद्ध जन धाई॥टेक॥
श्याम गवर वर रूप विलोकत प्रमुदित जन समुदाई।
रुक्मिणी कर जब हरण सुनेउ सब मनहुँ परानिदु रन पाई॥
शिशुपाल दल जीति मान मथि रुक्म रुक्मिणी भाई।
नारी रत्न गृह लेइ प्रविसेउ पुर करि दोउ भाइ प्रभुताई॥
उग्रसेनि वसुदेव देवकी रोहिणी बहु हरखाई।
करि नेवछावरि वाद्य बजावत बहु विधि रत्न लुटाई॥
रुक्मिणी सम नहीं नारी तिहुँ पुर कहि कहि मंगल गाई।
कृष्ण श्याम तन गौर रुक्मिणी त्रिभुवन छवि रहु छाई॥
मेघ तड़ित लखि छबि शृंगार तन रतिपति सहित लजाई।
कृष्ण रूप लखि रामसेवक जन चहु फल लहि पुलकाई॥४६६॥
रुक्मिणी को बिवाह सोहाई।
त्रयपुर जन जै धुनि लाई॥टेक॥
सुदिन पुर हरि हरि ल्यायो द्वारिका मो बाजत बधाई।
कहावत राक्षसी विवाह एह नतु गोध बीज नाई॥
नतु मानुषी कन्या रुचि करु हरि सुर मुनि गति नहि भाई।
परम शक्ति रुक्मिणी श्रुति गावत जोइ सीता सुखदाई॥
सोइ सीता हित रावण प्रमुदित जनक नगर शठ जाई।
बन ते हरि लेइ गयो गृह अपने रामेउ जतन कराई॥

राम मारि रावण सीता लैइ अवध नगर पुनि आई।
सोई रावण शिशुपाल जासु जग वध हित वैर वढाई॥
रुक्म विवाह हेतु तेहि बोलेउ भग्नी सहित गवाई।
हरि लीला नहिं लखि परु कोइ उर रामसेवक सुख पाई॥४६७॥
रुक्मिणी हरि कहँ अति प्यारी।
चहुँ जुग कहु श्रुति चारी॥टेक॥
ब्रह्माणी रुकुमिणि श्रुति गावत ब्रह्म कृष्ण सुख कारी।
धरि तन सकल भार भुवि हर हरि असुर वंशदल मारी॥
कृष्ण रुक्मिणी हिलि मिलि चहुँ जुग त्रिभुवन जस विस्तारी।
करत निबाह राक्षसी हिलि मिलि कहत सुनत अघ हारी॥
श्याम गवर जोरी अति राजित वेद पठत मुनि भारी।
दुलह दुलहिनि द्वारावति पुर निरखत सब नर नारी॥
नृत्त गान वाजन बहु वाजत बहु फललत सुखारी।
अति उत्साहन जाइ बरनि कोइ मगल विधि अनुसारी॥
रामसेवक रुक्मिणि सरनागत मागत सरन मुरारी॥४६८॥
उग्रसेन सभा छवि छाई।
वरणा तुम जुरु आई॥टेका॥
धर्म न्याय कर धर्म शास्त्र विधि विप्र अमित बैठाई।
उद्धव अक्रूर कृतवरमा बैठत जु न लखि जोई॥
नृप बहु आवत उम सभा लखि राजनीति दरसाई।
बैठि सुभाव सुदेव विराजित राम कृष्ण सुत पाई॥
कोइ छन पारा हिलि मिलि खेलत राजनीति जोइ गाई।
नृत्त गान कोइ छन मन राजित विभव विलाश सुनाई॥
कोइ छन हाँस्य कुशल को बोलावत हँसत सभा समुदाई।
ज्ञान भक्ति कोइ छन हिलि मिलि कहु कोइ छन जज्ञ वडाई॥
तीरथ व्रत कोइ छन सब गावत भूत भविष्य सोहाई।

वर्त्तमान हरि रूप विलोकत रामसेवक मन लाई ॥४६९॥

उग्रसेनि सभा सुखकारी ।
जहाँ हलधर कृष्ण मुरारी ॥टेक॥
धर्म शास्त्र इतिहास विविधि विधि कहत सुनत जनकारी ।
न्याय करत उग्रसेनि सभासद रोइ नीति सुविचारी ॥
राम कृष्ण वर रूप विलोकत प्रजा हरि अनुसारी ।
द्वारावति पुरी अति राजित उदधि लहत सुख भारी ॥
हरि को चरित अगम न सुगम कोइ निरखत रहु नरनारी ।
लखि न परत का करत चरत भुवि का अग जस विस्तारी ॥
कोइ दिवस सत्राजित आयेउ सीमंतक मणि धारी ।
सभा मध्य परकाश भयो अति जनु भुवि उदित तमारी ॥
इच्छा कर बलदेव लेन हित मणि सोइ शीश निहारी ।
दीन्ह नहीं मणि रामसेवक सोइ हरि आगिल जस वारी ॥४७०॥

हरि चरित न लखु मति मोरी ।
कलि कल्मष लहि भोरी ॥टेक॥

जो अज अखिल सर्व उर वासी व्यापक एक घनेरी ।
नर कहँ दूर्जस लागत चोरी हरि कहँ नाहीं थरोरी ॥
कृष्ण राम अवतार लीन्ह नर भुवि कर भार हरोरी ।
अमित असुर वध कीन्ह सुरन हित यह जानत सब कोरी ॥
एस न होत देखि दोउ मूरति श्याम गउर वर जोरी ।
ता कहँ किमि दूर्जस चोरी कहु अमृत महँ विष घोरी ॥
सत्राजित उर हरि वर माया अविशि कीन्ह मति थोरी ।
वधु मारि सम अश्व सहित वन लीन्हेउ हरि मणि छोरी ॥
मागेउ मणि नहिं दीन्ह वधु हित हरि कृत कीन्ह ठगोरी ।
भयेउ सोर चहुँ रामसेवक बहु लगी कृष्ण मणि चोरी ॥४७१॥

हरि प्राकृत सम नर होई ।
जेहि त्रिभुवन नहिं कछु गोई ॥टेक॥
सभा मध्य हलधर मणि जाचेउ सोइ मणि कहिं गइ खोई ।
शत्राजित हरि चोरी लगावत जानि गयो सब कोई ॥
लज्जित होय हरि भुवि शिर नायेउ खोजन चलु मणि सोई ।
साची हित हरि लेइ अमित दल पूँछत पथ मिलु जोई ॥
बन पर्वत कदला गिरि खोजत जीव मिलत जतनोई ।
शत्राजित लघु भ्रात अखेटक खेलत मणि लेइ धोई ॥
अश्व सहित बन व्याघ्र मारु तेहि लरि हरि पट तट टोई ।
साची बहु सग देखि जाइ कहु शत्राजित सुनि रोई ॥
जामवत बालक सोइ मणि लेइ खेलत हिलि मिलि लोई ।
जामवत हित रामसेवक हरि प्रथम बीज रहु धोई ॥४७२॥

राग कल्यान गति ध्रुपद

राजित तन कृष्ण श्याम दायक जन सकल काम
महिमा अपार सेस बेद कहत चारी ।
चोरी मणि शीश धारि खोजत बन जिय दुलारि
साच होन हेतु सग कटक अमित वारी ॥टेक॥
शत्राजित सुनेउ कान अश्व सहित लीन्ह प्रान
भ्राता मम दूरि गहन सघन व्याघ्र मारी ।
मीलत नहिं मणि खरोइ कृष्ण तासु वस्त्र टोइ
मिथ्या कहु चोर मोहि नरक होय भारी ।
कृष्ण जगत साच भयो चोरी दुख सकल गयो
खोजत मणि दूरि जीव देखि बन सुरारी ॥
चरित अपर करत नाथ लीन्हे बहु कटक साथ
चोरी मणि ब्याज लोक शोक भर्म हारी ।

पूर्व वर विचार कीन्ह जनन वो छपाय दीन्ह
भक्त परम जानि ठाढ भयो जाय द्वारी ॥
जामवत सकल बाल देखत तन नर कृपाल
खेलत मणि लेइ शुभ्र भागेउ भुवि डारी ।
रोद बहु मचत जात कंपित अति त्रसित गात
आयो कोइ वधिक द्वार कहेउ शिशु पुकारी ॥
जामवत सुनत कान भायो वस लहु न ज्ञान
गर्जत चलु द्वार मढ़ित शत्रुन को दुलारी ।
कदला ते द्वार आय तर्जन बहु शीघ्र धाय
कृष्ण रूप देखि वीर मानु हरि बिसारी ॥
धीरज नहिं नेक कीन्ह गाली झट प्रथम दीन्ह
रामसेवक देखत तन श्याम वर मुरारी ॥४७३॥
कृष्ण चरित करत परम भक्त को भुलाई ।
लीला नर इव स्व करत सुरति निज गर्वाई ॥टेक॥
जामवत अति सुजान जामक सुत वर प्रधान
ब्रह्मा अवतार सेस वेद विबुध गाई ।
वावन वरनान कीन्ह तीनि अवतार लीन्ह
जामवत हेतु राम कृष्ण निज बताई ॥
रामचद्र भक्त पाय द्वापर हित चरित गाय
कीन्हेउ बैकुठ वास ऋक्ष को सुझाई ।
माया वश ज्ञान हीन जामवत पर अधीन
स्वामी विसराय गर्जि तर्जि कह लड़ाई ॥
बाहु जुद्धि करत घोर चट पट उर होत सोर
वीर धीर जामवत चलत न पराई ।
करते कर फेरि फारि जघन पद टारि बारि
शीशन पर शीश बज्र पर्वत जनु जाई ॥

झपटि लपटि राड़त धाय वीर सुजस अमित गाय
भागत नहिं परत भुम्य शोभा रहु छाई।
वीर रस वखान करत बाहु जुद्धि विशद चरत
लड़त नाहीं नेक डरत लाल, ललचाई॥
अष्ट विंशति दीनानि जुद्धि कीन्ह रस खानि सुद्धि
मृष्टिका प्रहार, कृष्ण, यत्र तन समाई।
जामवत शिथिल गात कंपित अति मृदुल बात
रामसेवक जानि इष्ट चरन शीश नाई॥४७४॥
शोभित गिरि गुहा श्याम जीति भालु होय राम
पूरण सब काम चरित करत धर मुरारी।
सप्त बीस दिवस जुद्धि कीन्हेउ तन द्वन्द्व बुद्धि
पूर्व बरदान कृष्ण आत्म गति विचारी॥टेक॥
जामवत शिथिल गात मृदुल शीघ्र बोलु बात
त्राहि त्राहि त्राहि, सरन पाल रावणारी।
स्वामी जन पाल नाथ धरहु शीघ्र शीश हाथ
शीतल करु गात सकल चूक मम विचारी॥
भालु कीश लीन्ह साथ देखेउ प्रभु उदधि पाथ
ऊपर जल सेतु कीन्ह शिला अमित धारी।
महिमा अपार कीन्ह अभय दान सुरन दीन्ह
हारि भुवि भार रावणादि दुष्ट मारी॥
सीता कहँ लेइ नाथ भालु कीश करि स्वसाथ
अवध नगर आय कीन्ह लोक त्रय सुखारी।
सीतापति दीनबंधु दया कीन्ह दया सिंधु
विभिषन सुग्रीव सरन देइ विपति टारी॥
कीन्ह चरित अमित नाथ त्रिभुवन गति एक हाथ
दूसर नहिं कोपि अविन खाजि भव उतारी।

जैति जय कृपा अगार चरित कीन्ह अति उदार
कहत सुनत उरसि धरत पावत सुखभारी॥
प्रथम कृष्ण देखि रूप अस्तुति करु राम भूप
दरसत तन श्याम राम इष्ट निज पुकारी।
जामवत अति सुजान रामसेवक लहि सु ज्ञान
अस्तुति हरि करत राम रूप वर निहारी ॥४७५॥
जामवत अति सुजान त्रेता जस करि बखान
द्वापर बरनत राम समुझि सुरति लाई।
शोभा शत कोटि काम राम रूप घन सुश्याम
निरखत नहि तुम कृष्ण चरन शीश नाई ॥टेक॥
क्षमा शील क्षमा करो दास जानि मोहि भरो
शीतल कर गात कज हाथ धर छुआई।
कृष्ण कृपा विविधि कीन्ह भक्ति ज्ञान अचल दीन्ह
परसि कज हाथ शीश पीर तन गवाँई॥
विनय कृष्ण सुनत कान पूर्व भक्त रखि सुजान
निज सरूप श्याम राम कीन्ह घन देखाई।
कन्या जामवती नाम त्रिभुवन शोभा ललाम
दीन्हेउँ मणि सहित कृष्ण कज कर लगाई॥
कृष्ण द्वारिका मो आय सकल चरित कहेउ गाय
उग्रसेनि सभा राज सुनत पुलकाई।
शत्राजित नृप बोलाय सभा मध्य कृष्ण गाय
मारेउ वन व्याघ्र अश्व सहित तेरो भाई॥
प्रसेन भाइ हाल पाय शत्राजित कप छाय
कृष्ण बहुरि मणि की हाल कहत दरसाई।
जामवत बाल लीन्ह बहुरि ऋक्ष मोहि दीन्ह
लीजै मणि हाथ बात जानत समुझाई॥

जेहि प्रकार मणि सुपाय दीन्हेउ हरि सकल
गाय शत्राजित लीन्ह सभा मध्य सकुचाई।
कृष्ण मनहु साच भयो दूर्जस कृत चौर गयो
रामसेवक कृष्ण नाम कहत मुक्ति पाई ॥४७६॥

राग टोडी

हरि वर चरित करत सुख सारि के।
निगम अगम निज जस निस्तारि के ॥टेक॥
शत्राजित गति जानु जामवत भक्ति मानु
माया इत उत पेरि स्ववश वारि के।
सूर्य्य प्रेम पहिचानी निज वर भक्त मानी
दीन्हेउँ सेमत मणि अघ रुज टारि के॥
कचन सुअष्ट भार नित्य देत सुख सार
शत्राजित एक दिन गल मणि डारि के।
रुप्रसेन सभा आइ नृप कहँ ललचाइ
पुनि गृह आइ सभासदिन निहारि के॥
शत्राजित भाइ जाको नाम परसेन गाइ
मणि गल लाइ वर सुरति तमारि के।
खेलत अहेर वन अश्वारूढ अति घन
सिंह वध कीन्ह दोउ तन नख फारि के॥
कृष्ण कहँ चोरी लागु माया इत उत जागु
लेइ दल वन खोजु माया स्वविचारि के।
मृतक प्रसेन पाइ अश्व जुत नृप भाइ
दल को देखाइ व्याघ्र चिन्ह वैठारि के॥
मणि नहिं कोइ पाइ थल वैठाइ धाइ
खोजत फिरत वन गयो अद्रि द्वारि के।

द्वादश वितीत दीन रामसेवक मलीन
दल गृह आउ ध्यान करत मुरारि के ॥४७०॥

कृष्ण जामवत हेतु अद्रि दरिजाय के।
करत चरित तिहुँ पुर सुख छाय के ॥टेक॥
द्वारिका मो जन आइ कृष्ण को अद्रिश्य गाइ,
शत्राजित भाइ हाल कहु सब गाय के।
उग्रसेनि आदि सुनि नर नारि शिर धुनि
हाय कृष्ण हाय कृष्ण कहु बिलखाय के ॥
शत्राजित अति शठ चोरी लाउ करि हठ
कृष्ण कानि यश धन गयेउ भुलाय के।
जामवत शिशु देखि कृष्ण कहँ नर लेखि
मणि भुवि डारि गयो बोलि खपराय के ॥
जामवत सुनि कान धाइ आउ बलवान
अष्ट बीस दिन जुद्धि करु लपटाय के।
सीतापति रूप धरी हृदये कोठरि करी
शीतल सुभाव सुकपाट भिड़काय के ॥
साला अस्त्र हलाइ कुजी वर प्रेमताइ
राम रूप रात्रि दिव देखत छुपाय के।
खोलेउ मुरारी सोइ शीतल कपाट जोइ
कन्या दीन्ह धाय देखि अस्त सकुचाय के॥
जामवती ब्याह गाइ नर फल चारि पाइ
द्वारिका मो कृष्ण आइ मणि दरसाय के।
द्वारिका मो आइ रामसेवक सुखद छाइ
बजत बधाइ दुख सकल गवाय के ॥४८०॥

राग केदारा

हरि को चरित किमि कहु गाय ।
कहत मन सकुचाय ॥टेक॥
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य कोइ दरसाय ।
करत क्रीश धारि अजया रूप ब्रह्म गवाँय ॥
शत्राजित कहँ दीन्ह रवि मणि दुर्जस मनहु मेटाय ।
सभा मध्य कहि हाल सब मणि देखत जन समुदाय ॥
शत्राजित मणि लेइ दुर्जस देइ बहुत लजाय ।
छूटै किमि अपराध मम एहि मिसै कर पछताय ॥
देव कन्या रत्न मणि जुत होहिं कृष्ण सहाय ।
दीन्ह कन्या दान मणि जुत कृष्ण कर सचुपाय ॥
नारि लीन्ह हरि छाडि मणिवर थापि थाति जनाय ।
सत्य भामा रामसेवक कृष्ण लहि सुख छाय ॥४८१॥
हरि गुन कहत बुध श्रुति गाय ।
नेहँ हरि पद लाय ॥टेक॥
पाण्डु सुत हित नारि जुत हरि हस्तीना पुर आय ।
चरित अपर विचारि उर पुर बैठु हिलि मिलि जाय ॥
कृतवरमा अक्रूर कहु बहु शत धन्वहिं समुझाय ।
मारि शत्राजितहिं अबहीं लेहु मणि हरखाय ॥
कीन्ह नाहिं बिवाह मम शठ करब तोरि सहाय ।
मारि मणि गहि तुरित आयेउ मित्र भाव मेटाय ॥
कृतवर्मा अक्रूर कहु पुनि जाहु वेगि पराय ।
ईश्वर ते नाहिं लडन हम कोइ भागत सुखपाय ॥
देइ मणि, अक्रूर कहँ शठ चलेउ देश लुकाय ।
सुनत मणि गति रामसेवक कृष्ण आयेउ धाय ॥४८२॥

रागिनी धनाश्री

हरि चरित निगम विस्तारी ।
करि केल मनुज तन धारी ॥टेक॥
शतभामा पितु बध सुनि रोवत सरन पुकारु मुरारी ।
श्रवण सुनत पाण्डव गृहते झट निज गृह गो बनवारी ॥
कृतवर्मा अक्रूर लिल्यो नहिं शत धन्वा को निचारी ।
शत जोजन गयो भागि दूरि सठ मणि अक्रूर कर डारी ॥
हलधर हरि रथ चढ़ि चलु चितवत धाइ धरेउ ललकारी ।
केश धारि कर झपटि पटकि महि शतधन्वहिं हरि मारी ॥
बस्त्र खोलि मणि खोजु न लहु कोउ कहु हलधर ते दुलारी ।
हलधर सुनि गयो जनक नगर घर नृप सुख लहु भारी ॥
मिथिला पुर कछु दिन बसि हलधर कक नर नारि सुखारी ।
कृष्ण द्वारिका रामसेवक पुनि आइ कथा अनुसारी ॥४८३॥
हरि गुण केहि विधि कहु गाई ।
निज शिर जोइ दुरजस लाई ॥टेक॥
शतधन्वा बध कीन्ह न लहु मणि सत्य अनुज को बताई ।
हलधर अनरव भातु उर अतर दिहैं नारि कहँ जाई ॥
जनक नगर काल नस्यो तेहि पुनि हस्तिना पुर आई ।
गदा जुद्धि दुरजोधन कहँ बसि हलधर दीन्ह पढ़ाई ॥
सत्य कृष्ण मणि हाल त्रियन सन कहेउ न कोइ पतियाई ।
लेइ महामणि दीन्ह भाइ कहँ अस त्रिय अनखाई ॥
हरि दुरजस इत उत लहि निज शिर अक्रूरहि खोजवाई ।
लखि सुकाल सुवृष्टि काशी महँ बोलायेउ ठहराई ॥
हरि सवत लहि सभा मध्य मणि अक्रूर दरसाई ।
सत्य बचन हलधर त्रिय हरि लखु रामसेवक सुख पाई ॥४८४॥

राग टोडी

करु हरि चरित मनुज तन धारी के।
सुर मुनि गन सुख प्रद नर नारी के ॥टेक॥

मणि दुरजस पाइ इत उत बहु धाइ
सकल मेटाइ दोस सत्य एक बारी के।
युयुधान आदि वीर संग लेइ चलु धीर
रथ वर साजि निज चरित विचारी के ॥
पाण्डु पुर आइ धाइ हिलि मिलि छेम गाइ
नृप धर्मराज शुभ थल बैठारी के।
कुंता निज रुचि गाइ भ्रातृ सुत ढिग पाइ
कृष्ण योध करु पितृ स्वसा को दुलारी के।
बरस सु एक गयो मास दुइ चारि भयो
खान पान सतकार बढत मुरारी के।
अर्जुन को साथ पाइ वन गयो यदुराइ
यमुना विवाह हित बैठी तपसारी के ॥
अर्जुन की दृष्टि परी प्रश्न कीन्ह सोइ घरी
भमी यमराज शनी सुता हौं तमारी के।
सुनि यमुना की बोल कन्या लखि अनमोल
कृष्ण को बिवाह हित कहु दुखटारी के॥
सुनि को कालिंदी कान वर पायो भगवान
प्रमुदित अति हरि वदन निहारी के।
नारी लेइ आई रामसेवक को सुख दाई
अर्जुन स्वगृह धाइ कहेउ पुकारी के ॥४८५॥

कालिंदी बिवाह सुख रहु चहुँ छाय के।
रसना विनोद हित कहु कवि गाय के ॥टेक॥

अर्जुन लियाईं नारी कृष्ण कर करि प्यारी
कहेउ युधिष्ठर ते इन्द्रप्रस्थ जाय के।
सुनि धर्मराज गाज सजेउ विवाह साज
बोलि विश्वकर्मा शुभ नगर बनाय के॥
गृह बहु रचवाइ चित्रित सुरंग लाइ
माया मोह जाल मणि दीप धरवाय के।
इत उत चहुँ आशा जल महँ थल भासा
थल जल भास ओत पोत समलाय के॥
कृष्ण माया अस कीन्ह भावी बस रचि दीन
भ्रम दुर्योधन के बहु होय धाय के।
थल कहँ जल मानु जल कहँ थल मानु
हाँस सुनि कान रहु वैर को बढाय के॥
रचि पुरछन घरी कृष्ण को बिवाह करी
यमुना को बाम भाग देखि हरखाय के।
उत्सव अति कीन्ह कृष्ण कहँ नारि दीन्ह
अर्जुन चलु संग द्वारिका सुभाय के॥
युयुध न उधो धाइ रथ चढ़ि सुख पाइ
कृष्ण सुख देन्ह बहु द्वारिका मो आय के।
यमुना बिवाह रामसेवक न कहि थाह
सुख हरि दीन्ह जग रूप दरसाय के॥४८६॥

राग श्री

मित्र बिन्दा बिबाह सोहाई।
जेहि तिहुँ पुर बीर लोभाई॥टेक॥
अवंतिका पुरी अति पावन त्रयपुर जेहि शिर नाई।
बिंदा अनुबिंदा दोउ भाई राज पुरी कहँ गाई॥

मित्र विंदा भगिनी हितकर त्रय पुर बीर बोलाई।
कृष्ण आय दल लेइ सभा तेहि स्वयंवर सुनि धाई॥
कन्या लखि जैमाल डारु गल करि विवाह घर आई।
बजत बधाइ सोहाइ विहूँ पुर मित्रविंदा सुख पाई॥
विंदा अनुविंदा सुख लहु बहु करि हरि सुजस बड़ाई।
द्वारावति पुरी अति राजित प्रति दिन उत्सव छाई॥
निति नूतन मंगल सुनि पुरिजन बार बार पुलकाई।
देत परम सुख रामसेवक हरि श्याम रूप दरसाई॥४८७॥

हरि अपर विवाह विचारी।
आइ अवध नगर सुखसारी॥टेक॥
कौशल्या नृप ते कन्या हरि जाचेउ बहुत दुलारी।
सप्त वृषभ की हाल निज पण कहु नृप हरि रूप निहारी॥
सुनत कृष्ण परिकर कटि बांधेउ सप्त नाथु एक बारी।
जैति जैति धुनि भई त्रिभुवन महँ नृप उर सुख लहु भारी॥
वेद विहित विवाह नृप करु हरि भूषन वसन सवारी।
नृत्त गान बाजन सब बाजत वेद घोप अधिकारी॥
नव सहस्र ऐरावत सम गज दइजा दीन्ह सुखारी।
अयुत धेनु त्रयशत दासी दियो नव लाख रथ पट धारी॥
अश्व कोटि नव पद्म अरु नर नाग जिति हित धारी।
करि विवाह लेइ रामसेवक सब गृह आये हरि लेइ नारी॥४८८॥

हरि सप्तम ब्याह विचारो।
कहु वेद पुरान पुकारी॥टेक॥
कैकेयी देश प्रसिद्ध लोक त्रय नाम श्रुति नृप भारी।
कन्या तासु नाम वर भद्रा भयउ विवाह मुरारी॥
अष्टम कृष्णविवाह कहत बुध त्रयपुर जन जुरु भारी।
भद्रा नाम नृपति उत्तम कुल कन्या नृपति दुलारी॥

नाम लक्ष्मण नृप कन्या वर त्रिभुवन नहिं अस नारी।
स्वयवर नृप रचेउ महा सुख कृष्ण सकल भ्रम टारा ॥
मीन वेधि जल निरखि चद्र रवि वाण अधो मुख धारी।
जीति स्वयवर लेइ लक्ष्मण हरि गृह आयो सुखारी ॥
करेउ विवाह अष्ट महँ कोइ अस जस त्रिभुवन निस्तारी।
सकल लोक सुख लेइ परम हरि रामसेवक अघ पारी ॥४८९॥
हरि करत चरित सुखदाई।
सुर नर मुनि कहँ भल धाई ॥टेक॥
षोड्स सहस शाप मुनि लहु जोइ नारि रूप सोइ पाई।
कृष्ण शाप मोचन सुधि कार उर माया प्रबल बोलाई ॥
भौमासुर कहँ प्रबल जानि हरि तेहिं उर वेगि पठाई।
देश देश ऋषि जन्म नारि तन एक ठवर सो वसाई ॥
आतम विवाह हेतु चहुँ दिशि सन शठ निज बल लइ धाई।
षोड्स सहस लेव एक छन महँ इस कहँ कहँ जाव धाई ॥
भौमासुर कन्या नृप लेइ लेइ गृह जोरेसि प्रभुताई।
ममता अधिक भई उर अतर इन्द्र छत्र हरु जाई ॥
वरुण को कान कुडल हरु प्रमुदित साज विवाह जुटाई।
ईश्वर करु सोइ रामसेवक पुर वेद सेस बुध गाई ॥४९०॥

राग टोडी

हरि को चरित पुनि पुनि कहु गाई।
कल्प कल्प भेद सुनि गुनि सचुपाइ के ॥टेक॥
अष्टा वक ध्यान करु हरि रूप उर धरु
जल मध्य बैठि उर पुर पुलकाइ के।
अष्ट अप्सर आइ मुनि देखि पुलकाइ
हरि पति वर मागि गई हरखाइ के ॥

रुकुमिणी आदि आठ यज्ञ ओड़ श्रुति पाठ
कृष्ण सों बियाह मुनिवर घर लाइ के।
भुवि अपसरा आइ कृष्ण लहि सुख पाइ
पुनि रहु अंत कृष्ण रूप मों समाइ के॥
षोडस सहस्र आइ अपसरा पुनि धाइ
हरि पति मांगु मुनि रूप मों लोभाइ के।
सुख देखि अनमोल मुनि को मृदुल बोल
बार बार सुर नारि कहु शिर नाइ के॥
जल सन तीर आइ अंग सब दरसाइ
अष्ट परकार टेढ़ उर सकुचाइ के।
देखि बक्र सब गात हँसि हँसि बोलु बात
मुनि शाप दीन्ह उर पुर रुख रिसाइ के॥
हरि पति मिलु तोहिं शाप लेहु हँसु मोहिं
अंत मो मलिच्छ शुद्र लहु बहु धाइ के।
अप्सरा पराइ रामसेवक सु वर पाइ
अष्टावक्र वाक्य फुर करु भुवि आइ के॥४९१॥
हरि को चरित सुख प्रद नर नारि के।
मुनिवर शाप बरदान करु वारि के॥टेक॥
अष्टावक्र बरदान कल्प एक सुनि कान
हरि मुनि केलकरु नारि बहु कारि के॥
श्रुति विधि वर पाठ रुक्मिणी सुआदि आठ
करि को बियाह मुनि वचन दुलारि के॥
षोडस सहस्र आइ भुवि नर तन पाइ
अष्टावक्र घर किमि रहु दिवि टारि के।
अप्सरा सकल आइ भुवि तल रहु छाइ
इत उत चहुँ देश नारी तन धारि के॥

हरि माया निज पेरी भौमासुर उर घेरी
नारी सब लीन्ह हरि नृपन पछारि के।
इत उत धाइ धाइ नारी सब हरि ल्याइ
षोडस सहस्र निज गृह बैठारि के॥
करत विवाह चाह सग एक उत्साह
कुंडल सुछत्र निज उरसि निचारि के।
कुंडल वरुण लीन्ह इन्द्र निज छत्र लीन्ह
त्रास वसुदेव सब रहु रिसि मारि के॥
नारद तुरित आइ इन्द्र को पेरित धाइ
द्वारिका मो कृष्ण पाइ कहु दुख गारि के।
कृष्ण सुनि कान रामसेवक को वरदान
दीन्ह सुनि लीन्ह लखि चरित मुरारि के ॥४९२॥

राग कल्यान

जयति जयति जय कृपाल पालत जन लखि बिहाल
पाप ताप शाप हरत दुष्ट रिपु मारी।
लीला तन अमित धारि पाप हारि जस मुरारि,
मारेउ खल भूरि धरणि भार दूरि डारी ॥टेक॥
भौमासुर प्रबल जानि इन्द्र वरुण शत्रु मानि
कुंडल शिर छत्र दीन्ह त्रास लहि दुखारी।
नारद मुनिवर धान इन्द्र वरुण लखि सुजान
द्वारिका को भेजु सरन भारि वर मुरारी॥
कृष्ण चन्द्र सुनत धाय नारद मुनि सुजस गाय
गरुड रथ अनूप सत्य भामा मन चारी।
शंख चक्र गदा हाथ रथारूढ नारि साथ
लज्जित रति काम कोटि धनुष वाण धारी॥

रुक्मिणी आदि आठ यरु जोइ श्रुति पाठ।
कृष्ण सो बियाह मुनिवर घर लाइ के।
भुवि अपसर आइ कृष्ण लहि सुख पाइ
पुनि रहु अत कृष्ण रूप मो समाइ के॥
षोडस सहस्र आइ अपसर पुनि धाइ
हरि पति मागु मुनि रूप मो लोभाइ के।
सुघ देखि अनमोल मुनि को मृदुल बोल।
बार बार सुर नारि कहु शिर नाइ के॥
जल सन तीर आइ अंग सब दरसाइ।
अष्ट परकार टेढ उर सकुचाइ के।
देखि बक्र सब गात हँसि हँसि बोलु बात
सुनि शाप दीन्ह उर पुर ख रिसाइ के॥
हरि पति मिलु तोहिं शाप लेहु हँसु मोहि
अत मो मलिच्छ शुद्र लहु बहु धाइ के।
अप्सरा पराइ रामसेवक ब्र बर पाइ
अष्टावक्र वाक्य फुर करु भुवि आइ के॥४९१
हरि को चरित सुख प्रद नर नारि के।
मुनिवर शाप बरदान करु वारि के॥टेक॥
अष्टावक्र बरदान कल्प एक मुनि कान
हरि भुवि केलकरु नारि बहु कारि के॥
श्रुति विधि बर पाठ रुक्मिणी सुआदि आठ।
करि को बिवाह मुनि बचन दुलारि के॥
षोड्स सहस्र आइ भुवि नर तन पाइ
अष्टावक्र बर किमि रहु दिवि टारि के।
अप्सरा सकल आइ भुवि तल रहु छाइ
इत उत चहुँ देश नारी तन धारि के॥

हरि माया निज पेरी भौमासुर उर पेरी
नारी सब लीन्ह हरि नृपन पछारि के।
इत उत धाइ धाइ नारी सब हरि ल्याइ
षोड़स सहस्र निज गृह बैठारि के॥
करत विवाह चाह सग एक उत्साह
कुंडल मुद्रन निज उरसि विचारि के।
कुंडल वरुण लीन्ह इंद्र निज छत्र दीन्ह,
त्रास वसुदेव सब रह रिसि मारि के॥
नारद तुरित आइ इन्द्र को पेरित धाइ
द्वारिका मों कृष्ण पाइ कहु दुरत गारि के।
कृष्ण सुनि कान रामसेवक को वरदान
दीन्ह मुनि लीन्ह लखि चरित मुरारि के॥४९२॥

राग कल्यान

जयति जयति जय कृपाल पालत जन लखि निहाल
पाप ताप शाप हरत दुष्ट दिष्ट मारी।
लीला तन अमित धारि पाप हारि जस सुकारि
मारेउ खल भूरि धरणि भार दूरि डारी॥टेक॥
भौमासुर प्रबल जानि इद्र वरुण शत्रु मानि
कुटल शिर छत्र दीन्ह त्रास लहि दुखारी।
नारद मुनिवर धाम इद्र वरुण लखि सुजान
द्वारिका को भेजु सरन भाखि वर मुरारी॥
कृष्ण चद्र सुनत धाय नारद मुनि सुजस गाय
गरुड रथ अनूप सत्य भामा सग धारी।
शख चक्र गदा हाथ रथारूढ नारि साथ
लज्जित गनि काम कोटि धनुष बाण धारी॥

प्राग जोतिप पुर भौम ग्राम अति वर
जन्न चहुँ दिशा कीन्ह अग्नि पाश वारी।
परवत चहुँ ओर घोर अग्नि ज्वलित करत सोर
नीर अति अथाह पास अगम हरि निहारी॥
षोड्स सहस्र नारि भौमासुर रासु वारि
करन हित विवाह आलम जवन कीन्ह भारी।
जन्न प्रथम तोरि देव शत्रु मारि नारि लेव
सुजस पाप हारि लोकनाथ उर निघारी॥
अभय दान देवन दीन्ह धरनि हरि भार लीन्ह
मारि असुर स्ववस कीन्ह सत भव उतारी।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कहत पाप पुंज छन स्वदहत
चरित हरि उदार रामसेवक हितकारी॥४९३॥
राजित रथ गरुड़ कृष्ण मनहु धृत स्वरूप विष्णु
शरव चक्र गदा धनुप बाण कर सोहाई।
सत्य भामा नारि वाम गौर तन अनूप श्याम
शोभित गति कोटि काम छवि समूह छाई॥टेक॥
प्राग जोतिप पुर प्रवेश करत डरत सकल देश
कृष्ण नगर घेर सकल निरभय हरखाई।
वृष्टि बाण अति स्वर्गीन्ह पर्वत चहुँ तोरि दीन्ह
गदा पाश काटि चक्र अग्नि जल जराई॥
शरव धुनि अपार कीन्ह शत्रुन कहँ त्रास दीन्ह
भौमासुर लेइ त्रिशूल आउ वेगि धाई।
युद्धि भई अति कठोर बाण शूल शब्द सोर
चक्र शिरा वरज लाव कृष्ण रिपु गवाई॥
नरकासुर गिरत माथ धरा शीश जोरि हाथ
अस्तुति बहु कीन्ह कृष्ण चरन शीश नाई।

कृष्ण अभय दान दीन्ह माया निज कर्पि लीन्ह
गृह प्रवेश कीन्ह राज कन्यन हित लाई।।
षोड़स सहस्र नारि मन महँ हरि धरि भारि
कृष्ण भटित लेइ सकल द्वारिका मो आई।
कीन्हेउ निवाह धारि बेद विहित जन दुलारि
देव दनुज मनुज नाग मगल जस गाई।।
षोड़स सहस्र नारि अधिक शत सुआठ धारि
कृष्ण को विवाह गाइ चारिउ फल पाई।
द्वारिका को कृष्ण आय शोभा तिहुँ लोक छाय
रामसेवक श्याम रूप निरखत समुदाई।।४९४।

राग धनाश्री

हरि चरित विशद सुख दाई।
व्रज पुर जस मगल छाई।।टेक।।
षोड़स सहस्र अधिक शत वसु वर नारि बेद बुध गाई।
करि विवाह गृह अमित रचित मणि अति चित्रित दरसाई।।
पारिजात हरि लीन्ह इद्र कर द्वार द्वार गृह लाई।
पुष्प वाटिका वापि कूप वर गृह प्रति गृह करवाई।।
कदली आदि मेवा सब द्वारे ऋतु बसत रहु आई।
तुलसी श्याम मजरि अति राजित पूजत प्रेम बढ़ाई।।
मणि दीपक गृह मध्य ज्वलित अति द्रव्य सुगध सिचाई।
गवाक्षन वर रध्र पवन जुत गध सितल चहुँ जाई।।
सज्जा पलग सुगध रचित बहु चदवाक अधिक लोनाई।
काम निरखि गृह शोभा सकुचत रामसेवक सुख पाई।।४९५।।
हरि चरित करत भुवि आई।
ब्रह्म अखिल नर रूप धारि वर मोहत लोग लोगाई।।टेक।।

नारि अमित गृह करि शोभा वर रूप विशद दरसाई।
भोग विलास कहत कवि सकुचत देखत मैन लजाई॥
हँसौवा एक बार कीन्ह हरि रुक्मिणि सन मुसुकाई।
राज जोग्य तव रूप विशद अति मम ढिग रहे न भलाई॥
शिशुपाल नर जोग्य नृपति तोहिं देत रुक्म तव भाई।
अब तुम जाहु नृपति को भवन कोइ जो नृप तोहिं सोहाई॥
सत्य मानि हरि वचन रुक्मिणी सुधि गिरु देहँ गँवाई।
कृष्ण मूर्छित लखि विकल धरणि सन निज कर गहि बैठाई।
हँसी कीन्ह नहिं सत्य प्रिया कहु हँसौवा सुखदाई।
रुक्मिणी कहु तोहिं सम न कोइ नृप रामसेवक गिरि नाई॥४९६॥

हरि भोग विलास सवारी। -

नर इव हिलि मिलि नारी॥टेक॥
एकक नारि कहँ दशदश सुत भयो कृष्ण सरिस तन धारी।
सकल सुतन कहँ सुत दशदश पुनि कहत सेस श्रुति चारी॥
वश बुद्धि हरि कीन्ह अधिक श्रुवि केवल नर अनुहारी।
छन महँ, जोइ त्रयलोक रचेउ हरि माया गुण विस्तारी॥
नर तन धरि मोह वस बृद्धि करु एह न कोइ अधिकारी।
रुक्म को पुत्री पोत्री भइ जत भेद न कर श्रुति भारी॥
रुक्मिणि पुत्र पौत्र न लखि वर कर निवाह सुख भारी।
रुक्मिणि छोह मोह वश आतुर लोक वेद मत टारी॥
हरि को बैर विसारि सुभग लखि कन्यन करत सुरारी।
चाहत रामसेवक निशि वासर केवल सरन मुरारी॥४९७॥

हरि चरित न लखु कोउ भारी।
साथ भ्रातृ रहु नारि सकल सुत पुरिजन पितु महँतारी॥टेक॥
एक दिवस भोज कट पुर हरि निज माया वर निर्मारी।
इत उत माया प्रविसि सकल उर हरि आज्ञा अनुसारी॥

कोइ वर पुत्र पौत्र निवाहे कहु एह बुध श्रुति चारी।
प्रद्युम्न दसाँव वश सुत पुरिजन सुत आयो भारी॥
कलिआदि नृप सुत खेलन कहु हँसि कर धरि हलधारी।
पासा खेलत हँसत अनृत कहि जीति लीन्ह बहु वारी॥
हँसि हँसि अश्व सुत महँ कहु रहु रुक्म गर्व उर भारी।
लखि गमवोद हँसि रिसि धरि उर हलधर मारु पछारी॥
रुक्मिणि सुनि नहिं कहेउ कछुहि वच्छु जेहिं रहु प्रीति मुरारी।
प्रमुदित रहु सब रामसेवक जन हरि वर बदन निहारी॥४९८॥

राग टोडी

कृष्ण को चरित लोक वेद रहु छाइ के।
कहत सुनत नर नारी मन लाइ के॥टेक॥
कश्यप हरि राय सुत प्रह्लाद मजबूत
नर हरि रूप जेहि ढिग धरु आइ के।
प्रह्लाद सुत जासु जेहि सब देव मातु
नाम वैरोचन निगम कहु गाइ के॥
दान निज मन दीन्ह द्विज मानि देव लीन्ह
हरि गति दीन्ह वरदानि ठहराइ के।
बलि सुत तासु वर हरि रहु जासु घर
वामन सरूप चहुँ युग दरसाइ के॥
बलि सुत वर जेष्ट वाणा सुर घर
जान हित माया हरि पेरु हरखाइ के।
उखा वाणासुर कन्या त्रय पुर एक धन्या
स्वप्न महँ अनरूद्ध लहि पुलकाइ के॥
वर सन कर धरि गलमहँ गल करि
भोग सु विलास करु अग लपटाइ के॥

जाग्रति न देखु कोइ मोहवस बहुरोइ
कहाँ गयो कांत अस सुख उपजाइ के।
पद नख मुनि लाइ रोदु मन चहुँ धाइ
सिर भुवि नाइ बैठु तन मुरझाइ के॥
देखु अस हाल रामसेवक विगत जाल
चित्रलेखा प्रश्न करु हँसि सकुचाइ के॥४९९॥
हरि जस विशद सुखद नर नारि के।
कहु सेस वेद बुध जन सु पुकारि के॥टेक॥
उखा को विवाह सार चरित न कहि पार
स्वप्न रति कीन्ह अनरुद्ध पतिधारि के।
जाग्रती न लहु स्वामी इत उत मन गामी
बैठी ह्व उदास चित श्याम पति धारि के॥
बाणासुर मन्त्री जोइ कूष्माण्ड नाम सोइ
चित्रलेखा सुता चित्र गुण जिन भारि के।
उखा सन प्रश्नकीन्ह पति उखा कहि दीन्ह
चित्रकारी करु चित्रलेखा सु विचारि के॥
दनुज मनुज नाग देव पितृ करि भाग
मुनिन को रूप छन एक मो उतारि के।
वृष्णि वश चित्र कारी वसुदेव रूप वारी
कृष्ण बलदेव जस सस करु सारि के॥
देखत प्रद्युम्न रूप लज्जा धारि रहु चुप
रूप अनरुद्ध पति लखु दुख टारि के।
चित्रलेखा पहिचानो उखापति रति दानी
द्वारिका मो आइ वश देखेउ मुरारि के॥
सोवत उठाइ लीन्ह रथ पवँढ़ाइ दीन्ह
गगन सु मार्ग झट आइ बैठारि के।

उखा को देखाइ रामसेवक को सुख दाइ
उखा उर राखु अनरुद्ध को दुलारि के ॥५००॥
उखा को विहार कवि किमि कहु गाइ के।
पितु रे निवाह पति पाइ हरखाई के ॥टेक॥
अनरुद्ध पति पाइ खमा मो जोइ गाइ
अतर भवन बहु राखत छपाई के।
हरख बिलास जोग रात्रि दिन करु भोग
अग प्रति अग लाइ रहु लपटाई के॥
खेल खेलु अचमाल बिते एहि कछु काल
बाणासुर सुता हाल सुनि आयो धाई के।
चौपरी खेलत साथ कन्या वर धरि हाथ
अनरुद्ध रूप देखि रहेउ लोभाई के॥
कन्या को दुख न जानी भल कहँ मद मानी
मारु मारु कहु अनरुद्ध ढिग जाई के।
युद्धि घनघोर कीन्ह घेरि शठ बाधि दीन्ह
गृह पुनि गयो बहु जतन कराई के॥
उखा दुख बहु पाइ पतिहाल लखि गाइ
हाइ हाइ भाखि रहु उर सकुचाई के।
द्वारिका मो सोर घोर अनरुद्ध कत भोर
पितु मातु बधु गृह रहु पछताई के॥
वर्ष एक मास चारी बिते नारद पुकारी
द्वारिका मो जाइ कहु सकल बुझाई के।
सुनि सत्य बात रामसेवक पुलक गात
कृष्ण सब जातु सभा उठी पुलकाई के ॥५०१॥
कृष्ण को चरित सुख देत नर नारि के।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति विदित पुरारि के ॥टेक॥

नारद वचन सुनि उर हलधर गुनि
कृष्ण पुरिजन मिलि चलु ललकारि के।
शोणित पुरी सु भारी बाणासुर अघकारी
बाँधि अनरुद्ध गृह राखु शठ डारि के॥
भुजा सहस्र पाइ महादेव सेवा लाइ
छेदन परव गर्व तोरि भुज भारि के।
द्वादश छोहिणि दल लेइ घेरु पुर खल
बाणासुर हित शिव आये परचारि के॥
शिव भक्त पक्ष धरु स्वामी ते विरोध करु
कृष्ण हर जुद्धि कर इत उत टारि के।
गुह परद्युम्न युद्धि कर गत भेद बुद्धि
कूपकर्ण कूष्माण्ड हलधर वारि के॥
बलदेव बाणासुर लडत डरत कुर
अपर गिरत भुवि एकक पछारि के।
शाब कृष्ण पुत्र धीर बाणासुर सुत वीर
करत लडाइ सर बुद शिर झारि के॥
सननन चलु बान गननन करु गान
पननन मांसशत श्रोण वीर मारि के।
युद्धि घन घोर रामसेवक करत सोर
हरि हर बोल तिहुँपुर सुख सारि के॥१०२॥

राग कल्यान गति ध्रुपद

राजित हर समाज श्याम गवर तन सु राज
शोभा सब कोटि अग अगन परचारी।
इत उत दल करत मान शूल चक्र गदावान
हरि हर जै जीति हेतु राडत न विचारी॥टेक॥

सर्प बाण शंभु चलत पक्षि जोरि सोर करत
गरुड़ बाण कृष्ण छाड़ि मारत हहकारी।
अग्नि बाण शंभु तजत जल को बाण निरखि भजत
त्रिज्वर ज्वर शंभु छाड़ु शीत हरि पछारी॥
अस्तुति ज्वर शंभु कीन्ह कृष्ण ताहि बर सु दीन्ह
सुमिरत सबाद घोर घोर नर सुखारी।
शंभु को गिराइ दीन्ह शूल कर स्व छीन लीन्ह
बाणासुर भुजा तिन्न काटु सर मुरारी॥
हलधर कूपकर्ण मारु कुष्माड गहि पछारु
मुशल हल धारि हाथ बीर अमित मारी।
शंभु सुतहि भुवि पछारि रुक्मिणी सुत अपर मारि
शाव बाण पुत्र मारि घोख करत भारी॥
शंकर हरि बिजय जानि बाणहिं निज भक्त मानि
कृष्ण चरन धारि शीश अस्तुति अनुसारी।
अभय दान कृष्ण दीन्ह भुजा चारि शुभग कीन्ह
बाण सुर तोख कारि शंभु को दुलारी॥
कन्या बरदान दीन्ह बाण सुर सुजस लीन्ह
शंकर हरि प्रीति रीति एक तत्व धारी।
कीन्हेउ बिबाह बारि उखा अनरूद्ध धारि
रामसेवक द्वारिका अनंदित नर नारी॥५०३॥
कृष्ण को विचित्र चरित कहत श्रुति पुकारी।
शाप ताप पाप हरत करत जन सुखारी॥टेक॥
शाव आदि कृष्ण तनय मूढ़ कवि जो पार गनय
सृष्टि हरि अनंत अंत पार को बिचारी।
उपवन महँ जाइ जाइ क्रीड़ा करु धाइ धाइ
लगी बर पियास कूप निरखत सुत भारी॥

जन्न सकल तनय कीन्ह निम्सत नहिं अभय दीन्ह
कृकला बर रूप भूप अमित जन निहारी।
कीन्हेउ श्रसमर न कृष्ण आयो हरि छाडि धिष्ण
याम कर उठाय लीन्ह कृकला अति भारी॥
कृकला तन त्याग कीन्ह कृष्ण चरन परस कीन्ह
राजा नृग सूर्य वश अस्तुति अनुसारी।
एक गौकी लाख देत विप्र नाहिं सापि लेत
दीन्हेउ मोहि शाप विप्र वचन कौ न टारी॥
सिकता घन बुइ जाल सकै गनित रग माल
दान सम अपार गनत थाह न मुरारी।
कीन्ह न गोहारि दान विप्र शाप अति प्रधान
सुनद एक कीन्ह गर्त उरसि को उपारी॥
अस्तुति नृग नृपति कीन्ह कृष्ण भक्ति ज्ञात दीन्ह
चढ़ि विमान स्वर्ग गयो भुजा चारि धारी।
शाव आदि सुनत कान चकित होय लहत ज्ञान
रामसेवक सरन कृष्ण भव समुद्र तारी॥५०४॥

राग टोडी

कृष्ण निज सुतन ते कहत बुझाइ के।
विप्र कृश देखि पद माथ धरु धाइ के॥टेक॥
हरि चक्र जग मूल इन्द्र वज्र शिव शूल
यम दण्ड घोर शब्द रहु जग छाइ के।
इन्हके मारे न मरु बिप्र क्रोध वेगि जरु
शाप द्विज अग्नि जल जारु जाइ के॥
अद्रि फोरु द्विज शाप वृत्त लता गर्त दाप
नृग नृप धामी अम भूप परु आइ के।

बिनु अपराध नृप कृकला को मारु रूप
दान न सकाई कर रहु पछताइ के ॥
द्विज सखा हरु कोइ आत्म दीन्ह पर जोइ
यस्य हमार माहि कुम बिटराइ के।
धीर होइ मिटा रहु पुनि यम दड सहु
द्विज सखा श्रम नृप रहत डेराइ के ॥
द्विज शाप गारी लेइ लात मारी सहि लेइ
सोइ छत्री तिहुँलोक रहु मुख पाइ के।
शाव आदि मुनि कान कृष्ण मुख बरावान
निम पद शिर नाय रहत फठाइ के ॥
भावी हित कृष्ण यहु होनहार पर यहु
शाव द्विज हाति कर बचन गवाँइ के।
कृष्ण इत्ता जोइ रामसेवक के उर सोइ
भमि फरु कार हरि पद शिर नाइ के ॥१०५॥
आयो बल देव हल मुराल सुधारि के।
ब्रज जन लहु सुख दुख रज हारि के ॥टेक॥
गोपीगन धाइ धाइ पद पर आइ आइ
कृष्ण की बिरह अग्नि सकल निहारि के।
हरि को कुशल सुनि गोपी गन मन गुनि
करत बिहार सुख सहश मुरारि के ॥
मधु मायो यर मास हलधर करु बास
ऋतु मो वसत रज सुख मइ नारि के।
हिलि मिलि खेल कर गोपी हँसि कर धर
जल क्रीड़ा हेतु आलु यमुना निहारि के ॥
बलदेव अद्दा दीन्ह यमुना न कान कीन्ह
कोप घन घोर करि कपुं सरि मारि के।

त्रास लहि आइ धाइ विनय सुनाइ गाइ
बध जनि करु नाथ सुता हौं तमारि के ॥
जीव दान ताहि दीन्ह मगल करषि लीन्ह
अभय परम कीन्ह सरिता विचारि के ।
जल क्रीड़ा बहु कीन्ह गोपिन को सुख दीन्ह
बलदेव तेज बल लखु सुख धारि के॥
भोग सु विलास करु उर लाइ गल धरु
तज तन छन राखु बहुत दुलारि के ।
बलदेव धीर रामसेवक अचल धीर
गोपीगन राखु हरि नाम को पुकारि के ॥५०६॥

बलदेव क्रीड़ा करु गोकुल मो आइ के ।
गोपीगन मिलि सुख रस उपजाइ के ॥टेक॥

मदिरा जो भई रेवा सत्री करु सब सेवा
नारी भोग सग रण मध्य धरवाइ के ।
भोग शौख्य प्रद जानी रण उन मत मानी
मदिरा इव नृप रहु हरखाइ के ॥
बलदेव पान करी मदिरा स्वपुर धरी
गोपी सग रहु रात्रि दिव उर लाइ के ।
वानर द्विविद नाम रहा जोइ सग राम
भ्राता जो मैन्द्र मंत्री धर कपिराइ के ॥
नर्कासुर सखा जानु कृष्ण कहँ रिपु मानु
खोजत फिरत बन रहत छपाइ के ।
मुनि थल भ्रष्ट कारी मूत्र स्वपुरिस धारी
वृक्ष उत्पाटि गृह पावक लगाइ के ॥
बलदेव ढिग आइ देखु नारि लपटाइ
त्रास बहु दीन्ह गुद लिंग दरसाइ के ।

गोपीगन त्रास पाइ बलदेव लखि धाइ
मदिरा सुपान कोस फोरु दरवाइ के ॥
मूशल सुधारि मारी कीश कहँ दीन्ह तारी
जस बलदेव विहँ पुर रहु छाइ के।
सुख बर देइ रामसेवक सुजस लेइ
द्वारिकामो आउ गोपीगन को बुझाइ के ॥५०७॥
हरि करु चरित श्रवनि कज टारि के।
लखत न कोइ जोग माया बिस्तारि के ॥टेक॥
बलदेव गोकुल मो बास दुइ मास करु
कृष्ण रहि द्वारिका स्वचरित निवारि के।
करुषा पुरी को राजा हरि सम करु साजा
भूषन बसन बर भुजा चारि धारि के॥
शङ्ख चक्र गदा धारी कर-कज कंज धारी
मिथ्या बासुदेव साच कहत पुकारि के।
नृप को पौंड्र नाम दूत भेजु हरि धाम
बासुदेव नाम निज किमि कहु धारि के॥
युद्धि करु आइ आम छाडु मिथ्या मम नाम
अस दूत वाक्य सुनु अपर मुरारि के।
उग्रसेनि आदि सभा हँसि कीन्ह कहि प्रभा
कृष्ण बोलु युद्धि हित दूत स्वदुलारि के॥
सुनि को पौंड्र हाल लखु नहिं निज काल
काशीराज साथ लेइ आयो धनु धारि के।
रोहिणि सतीनि उँ काटी पौंड्रक को मारु डाँटी
काशीपति शिर राज द्वार दीन्ह डारि के।
काशीराज पुत्र ओइ किया पितु करु सोइ
कुंडल सहित शिर अग्नि कुंड जारि के॥

कृष्ण जस गाइ रामसेवक सरन पाइ
काम क्रोध लोभ मोह मत्सर मारि के ॥५०८॥
कृष्ण को चरित जन सुख लहु गाइ के।
सुनत गुनत उर मन ठहराइ के ॥टेक॥
कहत सुदच्छिणा को नाम नहिं काम को
काशी राज पुत्र रहु वैर बढाइ के।
कृष्ण सन रहु याम शिव सेइ राहु काम
कुत्सित जज्ञ फल कुत्सित पाइ के॥
खोजत फिरत दाव पायो माया मन भाव
अग्नि ज्वलित सुख चहुँ दिशि धाइ के।
द्वारिका पुरी निहारी चहुँ दिशि अग्नि जारी
त्राहि त्राहि कहु जन कृष्ण ढिग आइ के॥
कृष्ण चक्र लेइ धाइ माया अग्नि जारि लाइ
काशी भस्म कीन्ह चक्र राज गृह जाइ के।
कृष्ण ढिग चक्र आइ रिपु दल मारि धाइ
चरित त्रिशाद तिहुँपुर जस छाइ के॥
कलि काल अघ कारी काशी रक्ष जानि जारी
कृष्ण चक्र शिवजन सकल बसाइ के।
द्वारिका को नर नारी सुख लहु अधिकारी
कृष्ण को सरूप देखि मन चितलाइ के॥
बलदेव गृह आइ गोपिन को सुख छाइ
हिलि मिलि सुख लहु जस प्रगटाइ के।
करत कलोल राम रामसेवक मृदुल बोल
हरि हलधर पद जन शिर नाइ के॥५०९॥
कृष्ण चरित मुनि कहत विचारि के।
सुख प्रद तिहुँ लोक गति नर नारि के ॥टेक॥

लक्ष्मण सुकन्या दुर्योधन की अति धन्या
करत विवाह सु स्वय वर सवारि के।
नृप बहु बोलि लीन्ह सभा करवाइ दीन्ह
कृष्ण सुत शाम नारि वदन निहारि के॥
कन्या हरि लीन्ह सोइ नहिं जयमाल कोइ
रथ चढ़ि चलु वृक सरिस विडारि के।
यश कौरव कोप कीन्ह झट रथ गहि लीन्ह
युद्धि घन घोर करि बाँधु देइ गारि के॥
द्वारिका मो कहि जाय नारद सकल लगाय
उग्रसेनि सुनि चलु दल हहकारि के।
बलदेव शान्ति करु कलह न उर धरु
उद्धव सग लेइ चलु मुशल सुधारि के॥
हस्तीना पुर आये सुनि अध सुत धाये
बलदेव हित पुरी जन गन झारि के।
भिष्म द्रोणाचार्ज आइ आयो बाल्हिक धाइ
करु पूजा अध-सुत आरती उतारि के॥
बलदेव हेतु प्रीति भीलनी कहत रीति
मानी दुरयोधन बोलत रीति टारि के।
कृष्ण निंदा सुनि रामसेवक हृदय गुनि
बलदेव गति मति चरित मुरारि के॥५१०॥

राग श्री

बलदेव मुशल हलधारी।
जीव शाँति रुचति नहिं मारी॥टेक॥
दुर्योधन उर गर्व अधिक लखि कीन्ह क्रोध अति भारी।
किमि दुर्योधन कहत बचन कटु मम कुल कहँ देइ गारी॥

मम पद की पनहीं सब टारत यदुकुल भयो अधिकारी।
उग्रसेनि किमि युद्धि कराहिं मोहिं द्वारपाल समधारी॥
भोजन संग कराइ बढावल किमि करु मोर मुरारी।
दुर्योधन अस कहि गृह गो जब हलधर गर्व निहारी॥
जाकी उर भय लोक्य डरत वर कृपालहे थिर थारी।
निंदा ताकी करत महा शठ देव दइ मद टारी॥
लगल कोपि नभ करपन करु कंपित भयो नर नारी।
हलधर सरन आइ पद सिर धरु रामसेवक जन जारी॥५११॥
हलधर उर शांति सोहाई।
पालत लोग लोगाई॥टेक॥
त्राहि त्राहि दुर्योधन कहु बहु शीश कमल पद नाई।
हलधर कीन्ह दया तहि ऊपर अभय दीन्ह समुदाई॥
दुर्योधन अपराध छमा हित कन्यादान ठहराई।
शाव लक्ष्मणा लखि जोरी वर नृत्तगान करवाई॥
अति उत्साह करत विभो वर बाजन विविध बजाई।
बिधिवत कीन्ह विवाह मुदित मन विप्र स्वस्ति धुनि लाई॥
द्वाए न शाठी सहस बारह गज दाइज दीन्ह बढ़ाई।
द्वादश नियुत तुरग रथ धर धन शाठि सहस्र देखाई॥
दासी सहस दीन्ह कन्या जुत हलधर गृह लेइ आई।
गंगा कर्षन कीन्ह जबहिं तब रामसेवक सुरत छाई॥५१२॥
हरि करत चरित सुख सारी।
हरत भार भुवि भारी॥टेक॥
शाव वियाह कीन्ह हस्तिनापुर अपर जहाँ तहँ बारी।
पुत्र पौत्र विवाह सोहावन पावन जस बिस्तारी॥
अति आनद कंद पुर बाढव उमगत सुख रसनारी।
हर्ष सरीत चहुँ दिशि आवत जनु बरषा अधिकारी॥

देवकी रोहिणी उर उदधि कोटि सम नहिं अघात थिर धारी ।
अति उत्सव नभ न होइ कोइ कृष्ण अमित तन धारी ॥
वर दुलहिनि अधिकार कहाँ अस मंगल निधि दुख टारी ।
लीला तन पुरुषोत्म उत्म कहत सत श्रुति चारी ॥
द्वारावति करि पुरिय चरित करु सुख लहु पुर नर नारी ।
भयपुर सुख लहु रामसेवक धुर गहि वर सरन मुरारी ॥५१३॥
कोइ सुर मुनि लखि नहिं पाई ।
हरि माया की अधिकाई ॥टेक॥
नरकासुर वध कीन्ह कृष्ण जब नारि सकल गृह ल्याई ।
षोड़स सहस्र अधिक सत वसु त्रिय गृह गृह बजत बधाई॥
देव सकल अचरज उर लहु बहु कृष्ण एक ठहराई ।
नारि अमित किमि तोष भोग करु कहि विधि प्रीति बढाई ॥
हेतु परिच्छा नारदमुनि कहँ सुर हरि भवन पठाई ।
आइ प्रथम गृह देखु कृष्ण कहँ उत्सव अति सुख दाई ॥
कोइ गृह पासा खेलत नारि सन कोइ गृह सिसन खेलाई ।
जज्ञा दान कोइ गृह अति उत्सव सजत निबाह सहाई ॥
करव जनेव अखेटक चलु कोइ कूप बापि दरसाई ।
जत गृह तत कृत कृष्ण करत लखु नारद उर सकुचाई ॥
पुष्प वाटिका आदि केल लखि मुनि हरि पद सिरनाई ।
लज्जित मुनि कहँ देखि प्रथम हरि कुशल पूँछु मुसुकाई ॥
महिमा लखि न कहत कछु नारद जनु उर बुद्धि गवाई ।
कृष्ण रूप उर धारि स्याम वर निधि गृह मुनिवर जाई ॥
अति विह्वल मुनि प्रेम भक्ति रस करु हरि अमित बड़ाई ।
ब्रह्मादिक सुख रामसेवक लहि हिलि मिलि हरि जस गाई ॥५१४॥
हरि चरित कहत श्रुति चारी ।
कलि कल्मष भव रुज हारी ॥टेक॥

वंश वृद्धि नर इव जग सुक करु असुर वश खल मारी।
सुर नर मुनि कहँ देत त्रिविध सुख अवनि भार वर टारी॥
मत्त कच्छ सूकर नर हरि तन वामन द्विज तन धारी।
कला अंश बिभूति अमित तन अवतार सुमुरारी॥
हरत पाप सुख देत जनन कहँ चरित सकल सुख कारी।
सब अवतार सत्य बुध श्रुति कहु राम कृष्ण अवतारी॥
जुग विशेष दोउ चरित अगम करु सय पालत नर नारी।
तहि महँ कृष्ण चरित अद्भुत करु जेहि भ्रम लहु सुर भारी॥
कीन्ह पुरी निर्माण उदधि महँ तेहि जन राखु सुरारी।
अलौकिक बहु चरित कृष्ण करु रामसेवक सुख सारी॥५१५॥
हरि तन धरि करु प्रभु ताई।
सोइ वेद सेस बुध गाई॥टेक॥
द्वारावती पुरी अति पावन देखत जन समुदाई।
बैठि कृष्ण माया निज पेरत इत उत जग भरमाई॥
साधु असाधु रंक राजा उर देव दनुज प्रगटाई।
निज कृत करन हेतु सोइ माया दृढ जन मनसि बसाई॥
अजै अरु विजय कोशाप दीन्ह मुनि तीनि जन्म गति पाई।
वश कौरवा वैर बढन हित जेहि भुवि भार गवाई॥
जरासंध की मृत्यु भीम कर तेहि बल गर्व बढाई।
नृपन जीति खल निज गृह राखेउ एह हरि माया बडाई॥
राजसूय मख युधीष्टिर मन हरि माया ठहराई।
कार्य सिद्धि तेहि रामसेवक हरि शिशु पालादिक आई॥५१६॥

दोहा

अमित कार्य एक ठौर करि हरि हरु वर भुवि भार।
कहत सुनत सोइ नारि नर वेगि होत भव पार॥१॥

राजसूय वर जज्ञ महँ सकल नृपति जुरु आय।
शिशुपाल बध होय ध्रुव द्विज वर शाप मेटाय ॥ २॥
ज्वरासध बध ब्याज सोइ छूटै यदि भूपाल।
अध सुत ते पाडु ते जेहि होय बैर बिशाल ॥ ३॥
बीर भार जेहि जाइ ध्रुव धरणी लहु बिश्राम।
समते बिषम जनाइ हरि करत सकल जग काम ॥ ४॥
युधिष्टिर मन थीर करु राजसूय वर जाग।
हरि माया इत उत करत रुचि पति उर धरि ताग ॥ ५॥

राग धनाश्री

एक द्वारिका मो द्विज वर आये।
हिलि मिलि जहु नृपन पठाये ॥टेक॥
कृष्ण कीन्ह सनमान बिप्र कर सभा मध्य सुख छाये।
कुशल प्रेम कहि दीन्ह पत्रिका नृपन की सुधि दरसाये ॥
ज्वरासध दुख दीन्ह नृपति कहँ पद शृखल पहिराये।
बदो मोचि बध करहु नाथ खल नाना दुख सब पाये ॥
त्राहि त्राहि सरनागत तव हरि कहत चरन शिर नाये।
राजसूय की हाल सोइ छन युधिष्टिर मुख गाये ॥
कृष्ण मूक होय नर इव सोइ छन वेगि उद्धो के बोलाये।
सुनत कृष्ण की हाल सुनत पग शीघ्र उद्धव आयो धाये ॥
दूत सग नृप हाल कृष्ण कहि पत्री खोलि बँचाये।
कृष्ण अभीष्ट स्व रामसेवक गुनि उद्धव सोइ बनाये ॥५१७॥
हरि उद्धो वचन वर मानी।
लखि मत्रिन बुद्धि सयानी ॥टेक॥
मम अभीष्ट सोइ कहु उद्धव पुर भक्त शिरोमणि ज्ञानी।
उद्धव की वर बुद्धि कृष्ण निज मन उर बहुत बखानी ॥

राजसूय मख प्रथम देखब हम हित अनदिस पहिचानी ।
नृपन की बदी छुड़ाइय तब द्विज करि रिपु को तन हानी ॥
जाइ विप्र अब कहहु नृपन सन निकट मोहिं अब जानी ।
निर्भय रहु दिन रयन चयन करु तजि उर शोच गलानी ॥
जय पूर करु जब रिपु मारब सुनि हरि की वर बानी ।
विप्र जाइ कहु सकल नृपति सन आन करहिं हरि आनी ॥
सुनि द्विज वचन सकल नृप पुलकित जनु सूखत तरु पानी ।
कृष्ण सरिस नहिं रामसेवक कोइ दीन बधु दिन दानी ॥५१८॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित श्रीकृष्ण चद हरन सकल मोह फद
रथारूढ जन समूह मनहु नखत भारी ।
बाजत मृदग ढोल अपर वाद्य मधुर बोल
शख अधिक करत सोर दुदुभि धुनि भारी ॥टेक॥
हलधर नहिं कीन्ह गवन कृष्ण राखि दीन्ह भवन
रक्षा करु नृपति शत्रु आव ताहि मारी ।
पाण्डवन की हाल गाय राजसूय मख लखाय
नारद पथ कर अकाश गवन करु सुरारी ॥
सैन्य अमित चलत साथ खड्ग आदि अस्त्र हाथ
गज रथवहु अश्व उष्ट्र आदि पशु सवारी ।
शकट चलत रव अपार रेणु उड़त जल सुधार
होत गगन तुमुल नाद धरणि भार टारी ॥
शिविका घन शुभ्र राज रत्न जड़ित मणि सुभ्राज
रुक्मिणी देइ आदि कृष्ण चढी सकल नारी ।
पुत्र सकल कृष्ण साथ विप्र चरन नाय माथ
बाजी रथ चलत नाग सैन्य निज दुलारी ।

सकल देश ग्राम तजत कुरुक्षेत्र आइ भजत
बहुरि देश ग्राम तजत आयो सुरसारी ॥
हस्तीनापुर निकट आय स्वस्ति सकल द्विजन गाय
बाजन सब बजत नाद शाजन अधिकारी ।
जयति जयति होत सोर मंगल चहुँ ओर रोर
इत उत उर चाह दरस परस बर मुरारी ॥
बादल आनंद कंद देखत कर कृष्ण चंद
रामसेवक सकल जनन कृष्ण भव उतारी ॥५१९॥
राजित श्री कृष्ण श्याम शोभा शत कोटि काम
मनहु मणि समूह मध्य नील मणि सोहाई ।
बाजन बहु करत सोर गज रथ नहिं तुरँग थोर
जन समूह नारि पुत्र वृंद रहु लोभाई ॥टेक॥
पाँण्डु वश सुनत धाम कृष्ण आयो निकट ग्राम
पूजा निधि झटित लीन्ह बाजन बजवाई ।
स्वस्ति स्वस्ति विप्र पठत सुनत पाप पुंज कटत
आगे करि सगुन पाँडु वश चलेउ धाई ॥
प्राण गये प्राण पाय हर्ष यथा तथा धाय
हिलि मिलि जस जोग भाव समुझि शीश नाई ।
नैनन जल चलत धार सींचत अंग अंग अगार
प्रेम बिवश कुशल क्षेम पूँछत सकुचाई ॥
चले गृह लेवाय जबहिं बाजन पुनि बाजु तबहिं
मंगल सब द्रव्य थार कलश शिर धराई ।
गान होन लागु क्षिप्र स्वस्ति पठत चलत विप्र
ध्वज पताक तोरण गृह गृहे द्वार छाई ॥
कलसा केदली अपार दीप माल सकल द्वार
पुंगी फल पान फूल लाजा दरसाई ।

नृत्त गान वार मुखी करत देखि कृष्ण सुखी
माँगत अरु वदी सूत कृष्ण सुजस गाई ॥
धूप दीप द्वार द्वार करत नारि वार वार
निरखत वर वर्ण श्याम आरती देखाई ।
दान मान तोष करत मगन कहँ सुख स्वभरत
रामसेवक धर्मराज रत्न वहु लुटाई ॥५२०॥

रागिनी धनाश्री

हरि युधिष्टिर गृह आई ।
तिहुँ पुर शोभा रहु छाई ॥टेक॥
अति उत्सव करु मुदित युधिष्टिर वहु विधि रत्न लुटाई ।
हरि पत्नीन सन मिलि सन नारी शुभ आसन वैठाई ॥
पुर नारी हरि रूप विलोकत गृह कृत तजि वहु धाई ।
भीमार्जुन सहदेव नकुल मिलि प्रेम नीर ढरकाई ॥
शुभ थल वास देइ प्रति दिन हरि भोजन विविधि कराई ।
अति आनद नेहँ निति वाढत निरखत नाहिं अघाई ॥
तिर्पित करु खाडव अर्जुन जुत अग्नि चहुँ दिशि लाई ।
सभा वैठु अर्जुन सग खेलत अखेटक समुदाई ॥
युधिष्टिर की प्रीति परम लखि मास कछुक रहु छाई ।
कार्य सकल हरि हाथ विलोकत रामसेवक सुख पाई ॥५२१॥
कृष्ण सुनदन निहारी ।
वैठु सभासद भारी ॥टेक॥
ब्राह्मण चत्रिय वैश्य महाजन आचार्य सुख कारी ।
प्रश्न युधिष्टिर कीन्ह सभा महँ सुनत सकल मुरारी ॥
क्रतुराज गोविंद श्रवन करु राजसूय अति भारी ।
चक्रवर्ती लायक मख वर दीजै विभौ मोहि एहि वारी ॥

अज्ञा कृष्ण दीन्ह बर क्रतु कहि उद्धव कहनी बिचारी।
नृपन जीति एह जज्ञ करा बर भ्रातन कहु भट बारी॥
दच्छिण दिशि सहदेव गवन करु उत्तर पार्थ धनु धारी।
प्रतीची दिशि नकुल वीर बर प्राची भीम सुग्र मारी॥
नृपन जीति बहु धन लेइ आयेउ दुष्ट अमित खल मारी।
जज्ञ हेतु धन रामसेवक लहि नृप भयो परम सुग्वारी॥५२२॥

राग कल्यान गति चंचरीक

राजित तन घन सुश्याम सभा मध्य छवि ललाम
कोटिन शत काम अंग अंगन पर वारी।
चहुँ दिशि नृप बर समाज मध्य कृष्ण चन्द्र भ्राज
नयन पुट पान करत प्रमुदित नर नारी॥टेक॥
अर्जुन सहदेव भ्राज नकुल भीम अति बिराज
जीति नृपन दिशा चारि दुष्ट रीष्ट मारी।
राजसूय मख अनूप आय जुरे अमित भूप
यज्ञ करन हेतु धन समूह भवन डारी॥
जरासंध नृपति मानि भीम हाथ मृत्यु जानि
बध उपाय आय उद्धव बचन को बिचारी।
संग भीम सेनि लीन्ह अर्जुन कर साथ कीन्ह
जरासंध भवन चले रूप द्विज सुधारी॥
ब्राह्मण बर करि अचार गयो जरासंध द्वार
भोजन बर काल देवदत्त कहि पुकारी।
आये बटु दूरि धाय कार्य सिद्धि करहु राय
नहिं अदेय तोहि नृपति देहु अन्न दुलारी॥
शरीर नष्ट होय कोइ धन समूह जाय सोइ
एह विचारि नृपति द्विजन करत नाहिं द्वारी।

रतिदेव शिवि कृपाल राजा बलि अति दयाल
तन धन एन्ह दीन्ह नाहिं विप्र वचन टारी ॥
राजा हरिचंद्र दीन्ह प्रजन सहित स्वर्ग लीन्ह
कृष्ण बहु सराहि जरासध को निहारी।
जरासध दीन्ह दान वचन सुनत विप्र कान
रामसेवक सकल कार्य सिद्धि करु मुरारी ॥५२३॥
राजित नृप द्वार कृष्ण सकल लोक एक धिष्ण
महिमा अपार विप्र वेष वर बनाई।
सुर नर मुनि करत कार हरत सकल धरणि भार
चहुँ जुग श्रुति चारि करत चरित की बड़ाई ॥टेक॥
छल बल सुर हेतु करत सकल लोक शोक हरत
ब्रह्म अज अनादि रूप राखु भुवि छपाई।
छल करि द्विज रूप धारि दान लीन्ह बलि दुलारि
इन्द्रहिं सोइ दीन्ह राज सुजस जगत छाई।
जरासध द्वार आय द्विज सरूप वर देखाय
मागत वरदान नृपति भाव बहु देखाई ॥
जरासध जानि विप्र मृदुल बोल बोलु छिप्र
भावै मन माँगु सोइ देव शिर गँवाई।
बोलेउ श्रीकृष्ण तोहि मागत सोइ देहु मोहिं
द्वन्द्व युद्धि काम नाहिं अपर धन सोहाई ॥
क्षत्रियन कहँ युद्धि काम आर्यो सुनि प्रबल नाम
देहु हर्षि युद्धि दान मोदक ठहराई।
अर्जुन एह भीम जानु मो कहँ श्रीकृष्ण मानु
शत्रु तव पुरान तोहि दीन्ह नृप बताई ॥
सुनत जरासध हँसा उघरवर कारि खँसा
मद बुद्धि युद्धि गाय दानी दरसाई।

मथुरा सुपुरी त्यागु छीव त्रसित रण ते भागु ।
गयो उदधि सरण नाहि युद्धि तोहि भलाई ।
अर्जुन नहि रणो धीर भीम मोहि समान बीर
कृष्ण उरसि भाव सोइ रामसेवक गाई ॥५२३॥

गदा युद्ध करत घोर होत तिहुँ लोक सोर
भीमसेन जरासंध इत उत परचारी ।
चट पट झट बजत ताल गर्जत जनु मेघकाल
त्रसित लोक शोक ग्रसित लड़त हटकारी ॥टेक॥
गदा गदा टारि देत इत उत पुनि कपि लेत
चट पट चट चट पटात गहि गहि शिर मारी ।
बाहर पुर लड़त जाय उठत गिरत धरात धाय
गर्जत अनुनय पात बार बार हारी ॥
युद्धि अगना बनाय सहती विचित्र लाय
दक्षिण छण वाम फिरत गदा कर सुभारी ।
शोभित दोउ बीर धीर निर्भय रण लड़त बीर
नट इव बहु करत कलाप लड़त [illegible] ॥
मनहु गजराज लड़त दंत लाय [illegible] पकरत
शोभा करि कर उठाय देह सुधि बिसारी ।
बाहु युद्धि करत घोर तिहुँ पुर अति शब्द [illegible]
तड़ तड़ तड़ बजत ताल डरत लोक भारी ॥
उरसों उर लाय रोष इत उत पुनि [illegible] देत
मनहु वज्रपात [illegible] टरत नाहि टारी ।
जानुनि सो जानु लाय पग पै कर गहत धाय
इत उत बहु गिरत गिरत [illegible] ॥
द्वंद युद्ध घोर करत नेक नाहि [illegible]
लड़त रात्रि दिवस एक एक को [illegible]

देखत सुर रण बिहार बोलत नहिं कोइ प्रकार
रामसेवक कृष्ण पार्थ ओट होय निहारी ॥५२३॥
राजित रणधीर बीर गदा युद्ध करत थीर
भीम जरासंध एक एकन परचारी।
द्वंद्व युद्ध होत घोर गदा शब्द करत सोर
निरखत त्रयलोक्य धरणि हरत पुरुष नारी ॥टेक॥
गदा गदा गदा मारि कर पसारि भुजा बारि
कटि पद सब संधि धारि बीर रस पुकारी।
चूर्ण पाद कटि को कथा द्विरत क्रोध अर्क यथा
उभय तुर्जि गर्जि लडत बीर रस दुलारी॥
हाथ पाव संधि धसत अद्रि बेधि जयहिं खंसत
सप्त बीस दिवस युद्धि करत दोउ सुखारी।
भीम हृदय हारि गयो विह्वल तन छिन भयो
त्राहि त्राहि भाखु प्राण राखु अब मुरारी॥
जरा देवी नाम जोइ जन्म काल जोड़ सोइ
जरासंध नाम ताहि कहत पुरुष नारी।
कृष्ण सोइ ललाय दीन्ह बिटप फारि बिलग कीन्ह
भीम बेगि करो अर्द्ध अंग खल बिदारी॥
एक पाद पद दबाय दूसर पद कर उठाय
गुद मुख समान भीम दीन्ह बेगि फारी।
हर्षित तिहुँ लोक भयो अवनि भार सकल गयो
अर्जुन श्रीकृष्ण मिल्यो भीम भुजा धारी॥
मागध के राज दीन्ह जरासंध तनय लीन्ह
रामसेवक कृष्ण अति दयाल को बिचारी ॥५२४॥
राजित अति तन ललाम लाजित लखि कोटि काम
शोभा शत छवि शृंगार देखि रहु लजाई।

स्निग्ध नील मणि सुभ्राज नील कमल मडल राज
मेघ नील शत गँभीर श्याम तन सोहाई ॥टेक॥
भूषन सब अंग राज पीत बसन तड़ित भ्राज
दशन चमक भाल तिलक छवि अनूप पाई।
कुंचित कच केश माल मनहु मधुप लटक व्याल
नासिका शुक तुडन पज पकज वर लोनाई॥
चिबुक अधर कल कपोल श्रवण कुंडल मधुर बोल
शोभा तिहुँ लोक आइ वदन रहु समाई।
ग्रीव दरस मान भ्राज उदर त्रिवली विराज
शोभित वनमाल कंध वृषभ लहि बड़ाई॥
सोहत उरु भृगु सुलात रचित मनहु मणि सुजात
केहरि कटि गति मराल पृष्टि भाग छाई।
भुजा वर विशाल भ्राज करी कर समान राज
अँगुली कर कञ्ज भानु कोटि नख देखाई॥
जघन शुभ्र पाद पृष्टि देखत मुनि ध्यान दृष्टि
अंकुश ध्वज चिन्ह कुलिश कंज तल ललाई।
मणिगन रवि शशि समाज नख की जोति मोति भ्राज
गंगा जेहि निभित ताप शाप अघ नशाई॥
राजसूय मख कराय हस्तिनापुर सुख लखाय
देव दनुज मनुज रूप देखत समुदाई।
निरखि निरखि पाण्डु वश रामसेवक महा अश
रात्रि दिवस सहित शक्ति मुदित पञ्च भाई॥५२५॥

राग विहाग

कहत बहू सुदामा वर नारी।
अति पतिव्रत न कोइ पटतर त्रिय पति अज्ञा अनुसारी॥टेक॥

हाथ जोरि शीश मोरि विनय जुत भरता करत दुलारी ।
एक दिवस कर जोरि नारि सन कहत प्रेम जल ढारी ॥
श्रीपति जगपति नाथ सकल सुर साइ तुव मित्र मुरारी ।
हरि नारायण देव श्रुति बुध कहु पालत द्विज कुल भारी ॥
सोइ हरि अब द्वारावति पुरि बसि राज करत धनधारी ।
दान देत करि यज्ञ त्रिविध विधि दीनन अधिक पुकारी ॥
पीडित सब परिवार अन्न बिनु सखा नाथ दनुजारी ।
जाइ लेइ धन आइ अमित गृह बस परिवार सुखारी ॥
सुनत सुदामा नारि वचन प्रिय धन रुचि उर पुर टारी ।
दरस हेतु रुचि रामसेवक बहु हरि इच्छा उर धारी ॥५२६॥

चलत पुनि सुदामा द्विज चारी ।

हरि दरसन हित लालच बाढत विनय सुनत बहु नारी ॥टेक॥
ऊपायन बिनु किमि चलु हरि ढिग राज द्वार त्रिय भारी ।
मुष्टि चारि पृथक तदुरा बर दीन्ह पाचि बहु द्वारी ॥
मलिन वस्त्र अति फाट पोढ नहिं ग्रथि दीन्ह सुविचारी ।
चलत सुदामा हरि सनमुख जब प्रेम नयन जल ढारी ॥
धन हित प्रेम न नेक करत उर दरस हेतु अधिकारी ।
मागत नहिं धन लहब महत सुख हरि वर वदन निहारी ॥
राज द्वार अति भीर महाजन मम किमि होय पठारी ।
दूरि दूरि मोहि कहहिं भूरि जन फिरौं न तब देहिं गारी ॥
कुचिट वस्त्र तन मलिन रक लखि द्वार पाल मोहि मारी ।
किमि कहु राम सेवक गति द्विजवर जानत सकल मुरारी ॥५२७॥

चलत पथ सुदामा पछताई ।

हरि दरसन हित लालच बाढत चलत कछुक दूरि धाई ॥टेक॥
दरस हेत चलु अग्र धाय बहु फिरत रक कदराई ।
भ्रमर नीर इव इत उत चल द्विज प्रेम अग्र अधिकाई ॥

कृष्ण द्वार अति भीर हरित चलु देखत लोग लोगाई।
तेज सुदामा तनहि विराजत रवि शशि शत छिपि जाई॥
राह बतावत सकल मुदित जन कृपा कृष्ण रहु छाई।
ड्योढी तीनि हाकि चौथे चलु कृष्ण देखि हरषाई॥
सभ्रम उठि पद शीश नाय मिलि खिन सकल बिहाई।
नयन नीर अन्हवाइ धारि कर लेइ पलग बइठाई॥
पाव धोइ जल लाइ नयन शिर गृह सींचेउ समुदाई।
पथ श्रम हरि हरि दीन्ह विविध सुख करि द्विज अमित बडाई॥
भाग्य अपानि सराहि गृही बनि द्विज पद प्रीति बढाई।
मैं नहिं मिलन हेतु तव गृह गयो दीन्ह दरस तुम आई॥
जस ब्रह्मण्य देव तस करु हरि द्विज पद शिर बहु नाई।
द्विज पत्नी रुचि रामसेवक करु हरि द्विज लहि सुख पाई॥५२८॥

राग श्री

श्री कृष्ण भक्त सुखदाई।
शुभ चरित लोक तिहु छाई॥ टेक॥
सुदामहि द्विज पाइ भवन निज हिलि मिलि कुशल सुनाई।
गुरुकुल की सब हाल कहेउ हरि विद्या जहाँ दोउ पाई॥
पत्नी सुदामा की भाग्य सराहत प्राकृत इव निज गाई।
मम हित तोहिका दीन्ह नारि तव जो पतिरत्त मोहाई॥
अति सयानि मोहि पर दाया करु लखि देवर भउजाई।
भक्ति सहित मोहि देइ फूल दल किंचित पाइ अघाई॥
सकुचि सुदामा पृथुक ग्रन्थिवर गहि कर कारव चौराई।
हरि हँसि चाँपि मूष्टि एक तन्दुल बहु सराहि सोइ खाई॥
दूसरी मूष्टि लेत रुक्मिणी कर गहि पति स्व बुझाई।
दीन्ह विभव सुख राम सेवक हरि भक्ति अचल प्रगटाई॥५२९॥

हरि चरित मनो मल हारी ॥
सुदामहि दियो अचल भक्ति धन दुख दरिद्र को टारी ॥टेक॥
सुदामा बसि रात्रि चयन कार हरि आज्ञा सिर धारी ।
भवन गवन करु हरि सन हिलि मिलि भक्ति भाव अनुसारी ॥
उर पछुतात चलत पथ द्विज नहिं सयानि मम नारी ।
धन हित कृष्ण भवन मोहिं भेजेसि कछु नहिं दीन्ह मुरारी ॥
पथ भन्तन हित नहिं दुइ दाना निज गृह बहुत दुलारी ।
पुनि निज मन गुनि कहत सुदामा धन लहि बहु अधिकारी ॥
भक्ति न रहु उर होइ अधिक मद हरि नहिं दीन्ह विचारी ।
करत अनुग्रह अधिक दासपर मोहि कियो अधिक सुरारी ॥
हरि ब्रह्मण्य देव हितकारी आदर सुजस सवारी ।
मुदित सुदामा आये ग्राम ढिग रामसेवक बलिहारी ॥५३०॥

राग विहाग

निरखु गृह सुदामा पुर द्वारी ।
दूरिहीं ते लखु अमित ध्वजा गृह कनक कलश ओजियारी ॥टेक॥
तारण झालरि मोती लगी बहु कनक मई चहुँ वारी ।
अति विचित्र पुर धवल धामवर कनक खम्भ अधिकारी ॥
मणि गन भूरि दूरि मन चमकत चित्रित सकल अटारी ।
जनु द्वारावति पुरिय विराजत शोभा चहुँ गच ढारी ॥
कुलिश कपाट गवाक्ष ललित चहुँ जनु विधि स्व करहिं सवारी ।
गज रथ तुरग अपार भूरि भट अस्त्र शस्त्र कर धारी ॥
चकित विलोकत पर्ण कुटी कहा कहवा गई मम नारी ।
यदुवा के भूप तुरत अस रचि गृह यह सका उर मारी ॥
चकित चहुँ दिशि नगर विलोकत गहि प्रिय घर पैठारी ।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु गहु गहि चरन मुरारी ॥५३१॥

सुदामा देखत भवन डरे ।
कवन नृपति मम टारि कुटीवर लीन्हेसि नारि हरे ॥टेक॥
सूदामा पत्नी पति देखत चहुँ दिशि नगर घरे ।
दासी साजि संग आरति वर गहि पति चरन परे ॥
इत उत किमि भरमत बहु स्वामी चलु अब वेगि घरे ।
गृह तव भवन गवन करु स्वामी कहि अस हाथ धरे ॥
दीनबन्धु श्रीपति जगपति जोइ सोइ हरि कृपा करे ।
गृह परवेश सुदामा करु निज भक्ति न हरि की टरे ॥
विभव विलास सकल गृह पूरित माणिक दीप बरे ।
दास कोटिन दासी गृह प्रविशत हरि दारिद्र हरे ॥
कृपा परम हरि जानु सुदामा पट रिपु आपु मरे ।
विभव अधिक सुख रामसेवक लहु भक्ति न उर बिसरे ॥५२२॥

दोहा

दीन दयाल न कृष्ण सम, सुर नर मुनि महँ कोय ।
जासे कहु मैं दीन होइ, दीन नाथ ढिग सोइ ॥१॥
हरि दरबार मो रहत सब, जाचन हित जब जोग ।
अर्थ धर्म रुचि कामना, मोक्ष मागु सुरग भोग ॥२॥
केहि पेहि हाथ पसारउ, त्यागि जगत प्रय नाथ ।
भक्ति ज्ञान अब देहु मोहिं, मागत पद धरि हाथ ॥३॥
सूदामा धन अचल लहि, वमन सरिस करु त्याग ।
भक्ति ज्ञान रस अधिक सुख, जानि करत जप जाग ॥४॥

सोरठा

कृष्ण चरन धरु माथ, रामसेवक कल्यान तव ।
सकल जगत एक नाथ, भवनिधि ते करु पार ध्रुव ॥५॥

राग वसन्त गति होरी

द्वारावति वसि येरा करत सुख सोरी ।
हलधर कृष्ण रूप जा देखत श्याम गौर शुभ जोरी ॥टेक॥
नारि पुत्र परिवार पुरी जन करत कलोल घनोरी ।
रात्रि दिवस बाजन बहु बाजत नृत्य होत सब ठोरी ॥
वापी कूप तड़ाग उदधि जल वन उपवन चहुँ ओरी ।
शीतल मंद सुगंध पवन चलु सुरस बरसत निशुधोरी ॥
बारह मास सोहावन अति पुर फाल्गुन रंग रचोरी ।
केशर अबिर गुलाल कुंकुमा दधि घृत रस बहु घोरी ॥
छिरकत एक सो एक उडावत चलु पिचुकारि करोरी ।
बाजत ढोल मृदंग झाल डफ गोमुख शख घनोरी ॥
हरि हलधर पुर नारि सकल नर हिलि मिलि रंग मलोरी ।
ज्ञान भक्ति रस रंग चहुँ चलु रामसवक अस होरी ॥५२३॥

राग श्री

हरि चरित कहौं किमि गाई ।
अति अद्भुत कहु निगम अगम बुध मो मति नाहिं समाई ॥टेक॥
जो अज अखिल अलख अविनासी पूरण त्रय पुर छाई ।
एक ब्रह्म अद्वैत सनातन निर्गुण गुण न जनाई ॥
सोइ भक्ति हित अमित धारि तन हरत भार भुवि आई ।
अति लीला ब्रज वासिन हित करि गोपिन रूप लोभाई ॥
कसादिक शिशुपाल शाल्व वधि राज रूप करवाई ।
दुर्योधन युधिष्ठिर नृप सन उर पुर वैर बढाई ॥
वीर वधन हित मच्यो महारण अर्जुन ज्ञान सिखाई ।
भारत वर करवाइ मारि भट पाण्डव सुतन बचाई ॥

वीर भार निज वंश को देखत चाहत वेगि मिटाई।
एहू कौतुक लखि रामसेवक उर हरि पद गह सुख पाई ॥५३४॥

हरि निज मन माहँ विचारी।
सोइ सकल्प को टारी॥ टेक॥

मम अवतार न रहई भार भुवि वीर भार अब भारी।
अपर खलन वध कीन्ह यथोचित सकल भार भुवि हारी॥
मम परिवार अपार भार बहु एक एक धनुधारी।
अखिल लोक मिलि वश सुरासुर मम परिवार न मारी॥
विप्र शाप सन मरहिं वेगि यह तब भुवि होय सुखारी।
अनोन्य करि कलह मरहि रण अस मम कुल अधिकारी॥
माया हरि निज इत चालत सुजस अठात बिस्तारी।
मुनिन वृन्द हरि रूप को लालच शिशुन अज्ञता डारी॥
हरि इच्छा नहिं टारि सकत कोइ सुर नर मुनि जन झारी।
भय पुर सुख लहु रामसेवक बहु गहि वर सरन मुरारी ॥५३५॥

राग कल्यान गति ध्रुपद

देखत श्री कृष्ण चन्द हरत सकल मोह फन्द
यदुकुल समुदाय लड़त सिंधु तट पुकारी।
विप्र शाप अचल पाय माया हरि सरसि छाय
मदिरा करि पान मित्र शत्रुवर निहारी ॥टेक॥
सननन सन चलत यान गनन पथ करत गान
मननन मन लड़त वीर धीर हीय धारी।
भिंडिपाल चलत जात तोमर असि वर कराल
परसु घन कठोर शूल तीक्ष्ण सर डारी॥
अस्त्र शस्त्र बहु प्रचार गनत नहिं लहत पार
लड़त बन्धु सकल एक एक सन परचारी।

जरासंध मम हित बध करु हरि शिशुपालहिं रिपु भारो ॥
भारत में रथ हांकि जतन करु अस हरि मम उपकारी ।
तेहि बिनु किमि अब रहु धरणी तल अस उपकार बिसारी ॥
विदुर सग धृतराष्ट्र प्रथम गयो तप करि मिलेउ मुरारी ।
परिचित कहँ राज्य दीन्ह सुख रामसेवक भो सुखारी ॥५३९॥

राग केदारा

सुर मुनि करत भक्त बखान ।
सेस वेद बुध कहत सारद बार बार पुरान ॥टेक॥
भक्त की महिमा अगम सुनि नेक नहिं पुलकान ।
तासु हृदय बखान कहु सुर अज्ञ कुटिल मलान ॥
सकल ब्रज जन हस्तिनापुर द्वारका परधान ।
विरह बश हरि धाम लहु सब जाइ कृष्ण समान ॥
श्रवण करि नहिं करत रति जोइ अज्ञ गति सोइ स्वान।
शास्त्र पठि नहिं प्रीति हरि पद कहत देव अपान ॥
शास्त्र पढ नहिं भक्ति करु हरि कहत ताहि सुजान ।
भक्ति करि हरि लहत निज तीन सोइ वर ज्ञान ॥
भक्ति बिन सतोष नहिं उर फिरत जग बौरान ।
मागु हरि सन रामसेवक भक्तिवर वरदान ॥५४०॥
सब जग कृष्ण एक अधार ।
करत सार असार ॥ टेक ॥
'मणि गन सम'सब जीव त्रय पुर कृष्ण कर वरतार ।
राखि उर इत उत नचावत जगत रुचि व्यवहार ॥
पाप पुण्य दोउ बीज रोपत जगत तरु हितकार ।
स्वर्ग नर्क सुख दुख फलोदय होत बारहिं बार ॥
धरतभगवत धर्म जोइ नर रहत एक अचार ।

लहत मोच्छ नहि फिरत जग सोइ कृष्ण तासु अगार ॥
कृष्ण उद्भव करत पालन जन्म लेत हजार ।
कर्म करि वधि असुर गण बहु हरत धरणी भार ॥
रूप कृष्ण अनूप श्रुति कहु कोटि शत बरमार ।
ध्यान उर करि राम सेवक होहु भव निधि पार ॥५४१॥

दोहा

कृष्ण सच्चिदानन्द घन, पूर्ण एक सब काल ।
भक्त हेतु लीला अगम, तन धरि करत कृपाल ॥



(समाप्त)

स्थायी ग्राहकों के लिये नियम।



१—आठ आने प्रवेश फीस देकर प्रत्येक सज्जन "सरस्वती-साहित्य-सदन" के स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। यह आठ आना न तो कभी वापस दिया जाता है, और न किसी हिसाब में मुजरा दिया जाता है।

२—स्थायी ग्राहकों को ग्रन्थमाला के कुल ग्रन्थ पूर्व प्रकाशित और आगे प्रकाशित होने वाले—पौनी कीमत में दिये जाते हैं।

३—किसी उचित कारण के बिना यदि किसी ग्रन्थ का वी० पी० वापस आता है तो ग्राहक का नाम ग्राहक श्रेणी से अलग कर दिया जाता है।

४—"प्रवेश फीस" के आठ आने म० आ० से पेशगी भेजना चाहिये। किसी ग्रन्थ के वी० पी० में भी प्रवेश फीस जोड़ ली जा सकती है।

५—स्थायी ग्राहक केवल एक ही प्रति पौनी कीमत में पा सकते हैं। हाँ, अधिक प्रतियाँ लेना चाहें तो ।।) प्रति पुस्तक के हिसाब से प्रवेश फीस जमा कर चाहे जितनी प्रतियाँ ले सकते हैं।